"समकालीन छापाकार "राकेश बानी"

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु – शोध प्रबन्ध

विभागाध्यक्षा एवं निर्देशिका
श्रीमति संतोष
ललित कला विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा0)

शोधार्थी
अंजली
स्नातकोत्तर
(अन्तिम वर्ष)

ललित कला विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद मारकण्ड़ा

2021–2022

‘राकेश बानी’

ललित कला विभाग,
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा0.)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ललित कला स्नातकोत्तर, (ड्राईंग एण्ड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा, अंजली ने ''समकालीन छापाकार राकेश बानी'' शीर्षक पर मेरे निर्दशन में प्रस्तुत लघु – शोध प्रबंध को पूरा किया है। इसने पूरी मेहनत और लग्न से उक्त शोध कार्य सम्पन्न किया है। इस महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य पहले नहीं किया गया है।

हम इसके उज्जवल भविष्य एवं सफल जीवन की कामना करते है।

दिनांकः **सहायक प्रोफेसर महेश धीमान**

प्रमाण पत्र

मैं अंजली, यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध ''समकालीन छापाकार राकेश बानी'' विषय मेरे स्वयं के प्रयास से किया गया है। मैनें इसे पूरी मेहनत और लग्न से सम्पन्न किया है। यह अप्रकाशित लघु शोध है।

निर्देशक — **शोधार्थी**

सहायक प्रोफेसर महेश धीमान — **अंजली**

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद (मा0)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ललित कला स्नातकोत्तर, (ड्राईग एण्ड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा, अंजली ने ''समकालीन छापाकार राकेश बानी'' शीर्षक पर लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबंध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ। इसने पूरी मेहनत और लग्न से यह लघु–शोध कार्य सम्पन्न किया है।

हम इसके उज्जवल भविष्य एवं सफल जीवन की कामना करते है।

दिनांकः................ **प्राचार्या**

डॉ. श्रीमति सुनीता पाहवा

विषयानुक्रमणिका

आभार	**पृष्ठ संख्या**
प्राक्कथन	
प्रथम अध्यायः	
– भारतीय छापाकला का इतिहास	01 – 14
– छापाकला का परिचय	
द्वितीय अध्याय :	
– 'राकेश बानी प्रसिद्व समकालीन छापाकार'	15 – 29
– जीवन परिचय	
– शिक्षा व कलायात्रा	
– प्रदर्शनियां व पुरस्कार	
तृतीय अध्यायः	
– राकेश बानी जी का कलात्मक वर्णन	30 – 33
– विशेष माध्यम	
– प्रेरणा स्त्रोत	
चतुर्थ अध्यायः	
– ''समकालीन भारतीय छापाकला में ''राकेश बानी'' का योगदान''	34 – 35
पंचम अध्याय :	
– साक्षात्कार	36 – 41
– निष्कर्ष	42 – 42
– संदर्भ ग्रंथ सूची	43 – 43
– चित्र संग्रह सूची	44 – 44
– चित्र सूची	45 – 68

प्राक्कथन

हमेशा से ही एक कलाकार के लिए उसकी कलाकृति उसकी भावव्यिक्ति का एक माध्यम रही हैं। किंतु यह भी सच है कि हर कलाकार की कलात्मक शैली तथा अभिव्यक्ति के तरीके में समय के साथ अनेकों परिवर्तन भी आते हैं। हम अगर किसी भी व्यक्ति के जीवन काल को अपने शब्दों में लिखना चाहते हैं तो वह कर पाना बहुत कठिन होता है। विशेष व्यक्ति के व्यक्तित्व व उसकी कला पर जब हम लिखते हैं और राकेश बानी जैसे प्रसिद्ध छापाकार की कला को अपने शब्दों में व्यक्त करना कोई आसान कार्य नहीं है। फिर भी यह मेरा एक प्रयास रहा है।

प्रस्तुत लघु शोध कार्य प्रबंध राकेश बानी उभरते हुए समकालीन छापाकार पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

☞ **प्रथम अध्याय** में छापाकला का परिचय दिया है। जिसके अंतर्गत भारतीय छापाकला का विस्तार का संक्षिप्त विवरण मिलता है।

☞ **द्वितीय अध्याय** के प्रथम खंड में राकेश बानी के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। द्वितीय खंड के अंतर्गत राकेश बानी की शिक्षा व कला यात्रा का वर्णन किया है तथा तृतीय खंड में इन की उपलब्धियो ं की विवेचना की गई है। जिसके अंतर्गत इनके पुरस्कारों, छात्रवृत्तियों, प्रदर्शनीयों, कार्यशालाओं आदि को शामिल किया गया है।

☞ **तृतीय अध्याय** के अंतर्गत राकेश बानी की कलाकृतियों में प्रस्तुत तकनीकों तथा विशेष मध्यम तथा और प्रेरणा स्त्रोत का मूल्यांकन किया गया है।

☞ **चतुर्थ अध्याय** में भारतीय छापाकला में समकालीन छापाकला का राकेश बानी के योगदान पर प्रकाश डाला गया है।

☞ **पंचम अध्याय** में राकेश बानी के साथ हुई साक्षात्कार को लिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसमें उन्होंने अपनी कला संबंधी विचारों के बारे में बताया हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध की सफलतापूर्वक प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है। कुछ भी अशुद्धियां रह जाना स्वाभाविक है। आशा है कि विद्वान समीक्षक उन्हे अलक्षय करने की कृपा करें। मैं आपकी आभारी रहूंगी।

आभार

मेरे लघु शोध प्रबंध का विषय 'समकालीन छापा कार राकेश बानी' है। मेरे इस लघु शोध कार्य को करने में जिन महानुभावों व शिक्षक का संपूर्ण सहयोग मुझे प्राप्त हुआ है, उनके प्रति आभार व्यक्त किए बिना मेरा इस शोध कार्य का आलेख संपूर्ण नहीं होगा।

अब मैं उन सभी विद्वानों के प्रति आभार प्रकट करना अपना सौभाग्य समझती हूं जिनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सहयोग से शोध कार्य को मैंने पूर्ण किया। इस लघु शोध प्रबंध को इस रूप में परिक्षणर्थ प्रस्तुत करते हुए सर्वप्रथम आर्य कन्या महाविद्यालय में ललित कला विभाग अध्यक्ष श्रीमती संतोष व निर्देशिका का आभार व्यक्त करती हूं , जिन्होंने इस लघु शोध प्रबंध को पूर्ण करने में मेरा उचित मार्गदर्शन किया है। मैं अपने अध्यापक महेश धीमान व सहायक प्रोफेसर किरण खेवड़या का भी आभार व्यक्त करती हूं। मैं आदरणीय 'राकेश बानी' का भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूं , जिन्होंने मेरी शंकाओं, समस्याओं का निदान कर इस शोध की निपटान राह दिखाई है। मैंने जब भी उनसे सहयोग चाहा उन्होंने मेरी सहायता की और अपना मूल्यवान समय निकाला और अपने विचार साझा किए, और इस लघु शोध प्रबंध का मार्गदर्शन दिया।

मैं अपने माता—पिता के प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहती हूं जिन्होंने मुझे इस कार्य के लिए मेरा उत्साहवर्धन किया। मेरे इस लघु शोध कार्य को संपूर्ण करने हेतु सुविधा उपलब्ध प्रदान की।

मैं अपनी सहेलियों की भी और अधिक आभारी हूं तथा मैं अटेंडेंट श्रीमती सुषमा जी की आभारी हूं जिन्होनें समय—समय पर हमें पुस्तकें प्रदान की और मैं टाइपकर्ता का भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने मेरा भरपूर साथ दिया।

यदि इस लघु शोध प्रबंध का पाठकों को कुछ लाभ प्राप्त होगा तो मैं स्वयं के इस प्रयास को सफल मानूंगी।

शोधकर्त्री

अंजली

प्रथम अध्याय

भारतीय छापाकला का इतिहास

छापाकला का परिचय :–

छापाकला को ग्राफिक शब्द के रूप में परिभाषित किया गया है। ''ग्राफिक की उत्पत्ति ग्रीक शब्द ''ग्राफिकोस'' और लैटिन शब्द ''ग्राफिक्स से हुई है जिसका अर्थ होता है लिखना या अंकन करना। जैसे आज हम प्रागैतिहासिक गुफाओं के चित्रों को देखते हैं अर्थात आदि मानव ने भाषा लिपि को तो बहुत बाद में विकसित किया लेकिन इस भाषा के बीच जो उसने प्रतीक व आकृतियां ही भाषा लिपि में बदल गई। मनुष्य ने सर्वप्रथम अपनी भावनाओं व विचारों को व्यक्त करने के लिए सर्वप्रथम भाषा का ही प्रयोग किया। चाहे वह किसी भी रुप में हो, उस मानव ने अपनी भावनाओं व विचारों को सुरक्षित रखने व भावी पीढ़ी को संप्रेषित करने के लिए चित्रों व चिन्हों का प्रयोग प्रारंभ किया और इन चित्रों से लिपि का विकास हुआ। जिसके कारण दस्तावेजों में पुस्तकों के द्वारा इन विचारों व ज्ञान को सुरक्षित रखा जाने लगा।

प्रत्येक प्रिंटिंग प्रक्रिया में एक मैट्रिक्स – ब्लॉक की आवश्यकता होती है। यह ब्लॉक पत्थर, प्लेट, काष्ठ या स्टेलिस कुछ भी हो सकता है। एक समय था जब हम किसी कलात्मक कार्य को प्रतिलिपि या नकल नहीं बना पाते थे। ठप्पा विधि प्राचीन काल से ही सिक्के व मोहरे बनाने के लिए प्रयोग में लाई जाती थी। किंतु इस तरह के कार्य ललित कला में शामिल नहीं किए जाते थे। हालांकि छापा चित्रकला का नवीन विकसित रूप है। जो रेखाओं पर आधारित है। ये रेखाएं किसी मजबूत चिकनी सतह (लकड़ी, धातु, कठोर, कागज या अन्य पदार्थ से बनी हो सकती हैं)। मनचाहे आकार से उकेरी जा सकती हैं। किसी कलात्मक कार्य सुलेखन कार्य अन्य कृति की समान्यतः कागज पर छाप लेना एक तरह की यांत्रिक विधि है।

सबसे पहले किसी कलाकार द्वारा एक कठोर चिकनी सतह पर रेखाओं को मनचाहे आकार से जाल बनाया जाता है, जिसे ब्लाक, स्क्रीन या नकरात्मक कहा जाता है।

यह किसी चित्र की मूल प्रति होती है। उसके बाद कागज या अन्य किसी सतह पर एक यांत्रिक प्रक्रिया द्वारा इसके छाप ली जाती है। रेखाओं को उकेरने के लिए कलाकार तांबा, जिंक, पॉलीमर, प्लेट का प्रयोग करता है। लिथोग्राफी के लिए पत्थर, एल्युमिनियम या पॉलीमर का प्रयोग किया जाता है।[1]

सामान्यतः सभी जानते हैं कि मुद्रण का तात्पर्य छपाई से है। अर्थात किसी भी स्तर पर वैज्ञानिक विधियों के समायोजन द्वारा स्पष्ट और सुनियोजित छाप लेने की क्रिया को मुद्रण कहते हैं।

---

1 डॉ0. दवेन्द्र कुमारी, भारतीय चित्रकला का इतिहास (ललित कलाओं के पाठ्यक्रम पर आधारित पुस्तक, संस्करण : दिल्ली), 108.

जैसे मनुष्य को जीने के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता पड़ती है, ठीक उसी प्रकार मानव के दैनिक जीवन में मुद्रण की आवश्यकता अनुभव की जाती है। जिस के सहयोग से वह अपने विचारों एवं संदेश को ज्यादा से ज्यादा लागों तक संप्रेषित कर सकता है। मुद्रण के प्रारंभ में धार्मिक पुस्तकों का ही मुद्रण अधिक किया जाता था।[2] आज चाहे सरकारी कामकाज का प्रश्न हो, पुस्तकों के प्रकाशन का या विज्ञापन की उत्कृष्ट छपाई का हो। क्योंकि समय के परिवर्तन के साथ–साथ छपाई माध्यमों में नवीनता का समावेश होता रहता है।

आधुनिक युग में मुद्रण एक ऐसा माध्यम बन गया है जो मनुष्य के ज्ञान और विचार को श्रेणीबद्व रूप से संचारित करते हुए स्थाई बनाता है। पूर्व काल में छपाई एक सीमित परिवेश में थी वह मानव की आंतरिक संतुष्टि के लिए काफी नहीं थी। इसलिए इसमें भी वैज्ञानिक उन्नति के साथ–साथ परिवर्तन जारी है। जो लकड़ी के ब्लॉक से प्रारम्भ होकर लैटरप्रेस की लिथोग्राफी, ऑफसेट, ग्रेव्योर, स्क्रीन प्रिंट, फ्लेक्सोग्राफी एवं लेजर मुद्रण आदि के रूप में है।

छापा कला दो शब्दों छाप व कला से मिलकर बना है जिसका अर्थ– छाप के द्वारा किसी कला को उजागर करना और छाप अर्थात एक सतह से दूसरी सतर पर छपाई की प्रक्रिया को कहते हैं। अंग्रेजी विद्वान् 'चार्ल्स डिक्नस' ने मुद्रण की भाषा को बताते हुए कहा है कि स्वतंत्र व्यक्ति के व्यक्तित्व को बनाए रखने में मुद्रण महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रारंभिक रूप
से मुद्रण एक कला थी लेकिन आधुनिक युग मे ं पूर्णता तकनीकी आधारित हो गया है।
छापाकला की तकनीकों को आमतौर पर निम्नलिखित चार श्रेणियों में विभाजित किया जाता है :–

- ब्लाक की ऊभरी सतह से छपाई।
- ब्लाक की गहरी सतह से छपाई।
- ब्लाक की समतल सतह से छपाई।
- स्टेंसिल के द्वारा छपाई।

मुद्रण प्रक्रिया :–

रिलीफ :– इस प्रणाली में ब्लाक के उभार द्वार तरह से छापा लिया जाता है अर्थात जो भाग छापा नहीं जाता वह नीचे दबा रहता है। इसके लिए रेखांकन को ब्लाक पर विभिन्न उत्पीड़न यंत्रों द्वारा बनाया जाता है। इस प्रणाली में कठोर रोलर के द्वारा उभरी स्तर पर स्याही लगाकर छापा प्रदान किया जाता है। इस प्रक्रिया को रिलिफ प्रिंटिंग कहा जाता है। इसके अंतर्गत वुडकर, लीनोकट आदि आते है।

2 नरेन्द्र सिंह यादव, ग्राफिक डिजाईन (जयपुर – राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 2008), 145.

वुडकटः— वुडकट प्रिंटमेकिंग का सबसे पुराने और सरल रूपों में से एक है। छवि को लकड़ी के एक ब्लाक में काटने के लिए विभिन्न उपकरणों का उपयोग किया जाता है और छवि बनाने के लिए स्याही को ब्लाक से कागज पर स्थानांतरित करने के लिए हाथ से रगड़ा जाता है या एक प्रेस के माध्यम से पारित किया जाता है। यह लोकप्रिय माध्यम है। वुडकर को 17वी—18वीं शताब्दी के दौरान पूर्ण रूप से विकसित हुई।

लिनोकटः— लिनोकट जिसे लिनोलियम कट भी कहा जाता है। लिनोलियम की एक शीट से बने प्रिटं का प्रकार जिसमें राहत में एक डिजाइन काटा जाता है। प्रिंटमेकिंग की यह प्रक्रिया वुडकट के समान है। लेकिन लिनोलियम वुडकट की तुलना में अधिक विविध प्रकार के प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं। कभी—कभी इस की कोमलता इसकी खामी बन जाती है।

अतः सतह उत्कीर्णन प्रणाली :— इस प्रणाली में ब्लाक की गहरी सतह से छापा लिया जाता है। इसमें जिस तरह का छापा लिया जाता है। वह डिजाइन या अंकन सतह के अंदर गहराई से उकेरा जाता है। इस प्रक्रिया में प्रिंट लेने के लिए स्याही मूल सतह के नीचे लगाई जाती है। यह प्रणाली में ब्लाक की सतह के गहराई में स्याही लगाकर छापा प्राप्त किया जाता है। इसमें ब्लाक जहां गहराई होती है वहां स्याही ठहर जाती है और पूरे ब्लाक को साफ करने से ऊपर लगाई जाती है।

मेजोटिन्ट :— इस प्रक्रिया में सतह पर दांतदार धातु के उपकरण को हिलाकर धातु मुद्रण प्लटे को इंडेंट करना शामिल है। प्रत्येक गड्ढे में स्याही होती है। और यदि इस स्तर पर मुद्रित किया जाता है, तो छवि ठोस काली होगी। हालांकि प्रिटं मेंकर प्लटे के क्षेत्रों की स्याही—धारण क्षमता को कम करने के लिए खुरदरी सतह को धीरे धीरे रगड़ कर प्रिंट तैयार किया जाता है।

एक्वाटिन्ट :— इस शब्द की उत्पत्ति इटालियन शब्द 'एक्वाटिन्टा' से हुई है। प्रिंटमेकिंग के रूप में इसे 18वीं शताब्दी के अंत में विकसित किया गया था। इस तकनीक में धातु प्लटे को समान मात्रा में रेजिन से ढक कर उसे पिघला कर प्लेट की सतह से चिपका दिया जाता है। इस प्लेट को अम्ल में डालकर अलग—अलग स्थानीय प्रभाव प्राप्त किए जाते हैं।

प्लैनोग्राफिक :— प्लेनओग्राफी प्रिंटिंग का अर्थ है— एक सपाट सतह से छपाई, एक उभरी हुई सतह या छितरी हुई सतह के विपरीत। लिथोग्राफी और ऑफसेट लिथोग्राफी प्लानोग्राफीक प्रक्रिया है जो इस संपत्ति पर निर्भर करती है कि पानी तेल के साथ मिश्रित नहीं होगा। इस प्लेट या पत्थर पर

टश (चिकना पदार्थ) लगाने से छवि बनाई जाती है। (लिथोग्राफी शब्द –लिथो से आता है। पत्थर के लिए, और ग्राफ खींचने के लिए) अर्ध शोषक सतह के कुछ हिस्सों को मुद्रित किया जाता है।

लिथोग्राफी :– 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लिथोग्राफी का आविष्कार किया गया था। शुरुआत में बवेरियन चूना पत्थर का उपयोग मुद्रण, सतह के रूप में किया गया था। इसके आविष्कार ने पहले के प्रिंटमेकिंग रिलीफ या इंटग्लियों विधियों की तुलना में अधिक व्यापक रेजं के निशान और टोन के क्षेत्रों को प्रिटं करना संभव बना दिया।

स्टेंसिल के द्वारा छपाईः– इस प्रणाली में प्रिटं लेने के लिए स्टेंसिल का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए इसे स्टैंसिल माध्यम के द्वारा प्रिंट में स्याही को तैयार ढांचे या स्टैंसिल के माध्यम से कागज में छापा जाता है। इसकी छपाई के लिए एक विशेष प्रकार के महीन जालीदार सिल्क के कपड़े का प्रयोग किया जाता है। इस वजह से भी इसे सिल्कस्क्रीन भी कहा जाता है। इस प्रणाली के द्वारा आज के व्यवसायिक युग में अधिकतर व्यवसाय से संबंधित अन्य चीजों में इसका प्रयोग किया जाता है। जैसे अखबार, मैगजीन,
पुस्तक।

वैदिक सिद्धांत के अनुसार परमेश्वर की इच्छा से ब्रह्मांड की रचना और जीवन की उत्पत्ति हुई। इसके बाद 'ध्वनि' प्रकट हुआ। ध्वनि से 'अक्षर' तथा अक्षरों से 'शब्द' बने। शब्दों के योग को 'वाक्य' कहा गया। ज्ञान के प्रसार का यह तरीका असीमित तथा असंतोषजनक था, जिसके कारण मानव ने अपने, पूर्वजों और गुरुजनों के श्रेष्ठ विचारों, मतों व जानकारियों की लिपिबद्ध करने की आवश्यकता महसूस की। इसके लिए लिपि का आविष्कार किया तथा पत्थरों व वृक्षों की छालों पर खोदकर लिखने लगा। इस तकनीकी से भी विचारों को अधिक दिनों तक सुरक्षित रखना संभव नहीं था। इसके बाद लकड़ी को नुकीला छीलकर ताडपत्रों और भोजपत्रों पत्थरों पर लिखे मिले हैं।

सन् 105 ई0. में चीनी नागरिक टस्–त्साई–लून ने कपास एवं सलमल की सहायता से कागज का आविष्कार किया। सन 712 ई0. में चीन में ही ब्लाक प्रिंटिंग की शुरुआत हुई। अविष्कार सन् 1955 में ग्लैंन, अलास ने किया। कोलोग्राफ में सतह को कोलॉज की भांति तैयार किया जाता है। कोलोग्राफ प्रिंटिंग इटैग्लियों या रिलीफ किसी भी प्रणाली में की जा सकती है।

सेरीग्राफी छापा प्रणाली :– सेरीग्राफी जिसे सिमक, स्क्रीनिंग, स्क्रीन प्रिंटिंग या सेरिग्राफ प्रिंटिंग के रूप में भी जाना जाता है। एक स्टैसिल आधारित प्रिटं प्रक्रिया है। जिसमें स्याही को एक महीन स्क्रीन के माध्यम से कागज के नीचे डाला जाता है। स्क्रीन मूल रूप से रेशम के बुने होते थे लेकिन अब वह बारीक बुने हुए पॉलिस्टर या नायलॉन से बने होते हैं।

मोनोटाइप व मोनोप्रिंट :– एक मोनोटाइप हर बार एक साफ प्लेट से शुरू होता है और हालांकि मोनोटाइप का एक रन समान हो सकता है। कोई भी हिस्सा उसी तरह से पुनः प्रस्तुत नहीं किया जाता है। अधिकांश जेली प्रिंट मोनोटाइप होते हैं, क्योंकि जेली प्लेट में कोई स्थाई चिन्ह नहीं होता है। प्रत्येक प्रिंट के लिए स्टेंसिल बिछाए जाते हैं और एक साफ, अचिहित प्लेट पर स्याही लगाई जाती है। एक मोनोप्रिंट एक रीप्रिंट करने योग्य प्लेट के साथ बनाया जाता है, लेकिन इस तरह से जो इसे अद्वितीय बनाता है। मानोटाइप का एक रन ऐसा प्रिंट होंगे जो एक दूसरे से भिन्न होते हैं, लेकिन प्रत्येक प्रिटं में कुछ भाग्य या पैटर्न दोहराया जाता है। एक विषय पर भिन्नता। विभिन्न रंगों और प्रभावों के लिए नक्काशी पर स्याही लगाई जा सकती है और मिटाया जा सकता है। लकड़ी के ब्लाक हाथ से रंगे प्रत्येक छाप के लिए एक अलग तरीके से एक कोलोग्राफ प्लटे में हेरफेर किया जा सकता है।

विस्कोसिटी तकनीकीः– यह तकनीक वर्तमान में विकसित छपाई की एक अंतरराष्ट्रीय चलित प्रणाली है। इस प्रणाली के विकास में कृष्णा रेड्डी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस प्रक्रिया में केवल एक प्लेट की, भित्र ऊंची, नीची सतह के द्वारा बहुरंग छापा प्राप्त किया जाता है। भित्र नमी के रोलर (कठोर, माध्यम, और मुलायम) द्वारा अलग–अलग रंगों को प्लेट पर लगाए जाते हैं। सबसे नर्म रोलर को प्लेट की सबसे नीचे की सतह तक स्याही लगाने के लिए प्रयोग किया जाता है और ऊपरी सतह पर रंग लगाने के लिए कठोर रोलर का प्रयोग करते हैं। प्लेट को प्रेस के द्वारा एक ही बार दबाव देते हुए नम पेपर पर रंगीन छापा बनाया जाता है।[3]

कोलोग्राफ चित्रणः– कोलोग्राफ चित्रण तकनीक में आपारम्परिक वस्तुओं के प्रयोग से एक विस्तृत और विविध प्रकार की उभार व अंन्तः सतह तैयार की जाती है। इसका परिणाम अक्सर तैलचित्र और ग्राफिक दोनों कलाओं के गुणों को समाए होता है। संयोजी ग्राउंड की विशेष सतह व सामग्री के गुणों का अध्ययन करते हुए उन्हें प्रयोग किया जाता है। यह प्रक्रिया किसी भी प्रकार की बनावट और प्रयुक्त सामग्री से उत्पन्न गहरे व उभरे प्रभाव को छापने से एकदम सक्षम है।

एचिंगः– एक छापा तकनीक है जिसमें धातु की प्लेट पर प्रतिरोधी ग्राउंड लगाकर एक नुकीले उपकरण की सहायता से ड्र□इंग की जाती है। इस प्रकार ड्राइंग वाले स्थान से ग्राउंड उतर जाता है। अब जब इसे अम्ल से भरे टब में डाला जाता है तो उस जगह में अम्ल में प्लेट को रखा जाता है जहां से ग्राउंड हटा होता है। जब इस प्लेट पर स्याही लगाकर साफ की जाती है। जिससे प्रिंट कागज पर स्थानांतरित हो जाता है।[4]

3 डॉ0. सुनील कुमार, भारतीय छापाचित्रकला आदि से आधुनिक काल तक (दिल्ली : भारतीय कला प्रकाशन, 2000), 49.
4 डॉ0. सुनील कुमार, भारतीय छापाचित्रकला आदि से आधुनिक काल तक (दिल्ली : भारतीय कला प्रकाशन, 2000), 174.

छापाचित्रण का इतिहासः–

यदि छापाचित्रण की इतिहास की बात की जाए तो लगभग 3000 ईसा पूर्व सुमेरियन सभ्यता में छपाई के शुरुआती प्रणाम मिलते हैं। शुरुआत में पत्थरों पर उत्कीर्ण कर आकृतियां व शब्द अंकित किए जाते थे और फिर उसकी छाप गीली मिट्टी पर लिया जाता था और इस तरह से किसी एक लेख की कई सारी अनुकृतियां तैयार की जाती थी। चीन में मिले प्रमाणों से ज्ञात होता है कि दूसरी शताब्दी के लगभग काष्ठ के ठप्पे से प्रिंटिंग की तकनीक अपनाई जाने लगी। काष्ठ ठाप्पों द्वारा छुपाई के प्रथम प्रमाण के रूप में जापान में लगभग 8वीं शताब्दी में बौद्ध धर्म से संबंधित मुद्रण हुआ। 6वीं व 7वीं शताब्दी के लगभग मिस्त्र में काष्ठ ठप्पों द्वारा कपड़ों पर छपाई के प्रमाण भी मिले हैं। किंतु छपाई के सबसे ठोस प्रमाण के तौर पर पूर्वी तुर्किस्तान की एक गुफा से प्राप्त वह स्क्रॉल है जिस पर वांग के द्वारा 868ई0. में बौद्ध धर्म के 'डायमंड सूत्र' का मुद्रण है। कागज के आविष्कार या खोज की बात करें तो जो प्रमाण हमें मिलते हैं वह यही इंगित करते हैं कि सबसे पहले चीन में इसे तैयार करने की विधि आई।

भारतीय छापा कला की शुरुआत तथा विकासः–

भारत का पहला प्रिंटिंग प्रेस 1556 में सेल पॉल कॉलेज, गोवा में स्थापित किया गया था। 30 अप्रैल 1556 में को लोयोला के सेट इम्बाटियस को लिखे एक पात्र में फादर गैस्पर, क□लेज एबिसिनिया में मशीनरी कार्य को बढ़ावा देने के लिए पुर्तगाल में एबिसिनिया के लिए एक प्रिंटिंग प्रेस ले जाने वाले जहाज की बात कही गई। कुछ परिस्थितियों के कारण, इस प्रिंटिंग प्रसे को भारत में आने से रोक दिया गया था। परिणाम स्वरूप 1589 में गोवा में जुआओ डे बुस्टामांटे के माध्यम से मुद्रण कार्य शुरू हुआ।[5]

यूं तो छापाकला की धारणा अत्यंत प्राचीन है। प्रागैतिहासिक काल में मानव गुफाओं तथा शैलाश्रयों में रहा करता था। कालांतर में अभिव्यक्ति का स्थाई बनाने के लिए उसने आकृतियों का सहारा लिया और यही आकृतियां धीरे–धीरे चित्र लिपि बन गई। भारतवर्ष में अनेक गुफा चित्र हैं, परंतु भोपाल के पास भीमबेटका की गुफाओं में चित्रों के अलावा कुछ हाथ की आकृतियां भी मिली हैं, जोकि शिलाखण्ड़ पर छपी हुई प्रतीत होती है।

धीरे–धीरे मानव सभ्यता के विकास के साथ कृषि की उपयोगिता बढ़ने लगी। एक कबीले द्वारा दूसरे कबीले से विनियम के लिए मानव ने मिट्टी के द्वारा मुद्रण बनाना आरंभ कर दिया। यह आकृति मोहरे गोलाकार तथा आयताकार होती थी। कालांतर में इन सिक्कों तथा परिवारिक विनियम के लिए प्रचलन हो गया। समय के साथ ये ठप्पें लकड़ी और धातु के बनने लगे। लकड़ी के ठप्पों द्वारा वस्त्रों पर छपाई का कार्य भी किया जाने लगा। जिसका विवरण पौराणिक काल में भी मिलता है।

---

5 डॉ0. सुनील कुमार, भारतीय छापाचित्रकला आदि से आधुनिक काल तक (दिल्ली : भारतीय कला प्रकाशन, 2000), 34.

प्रारंभ में मनुष्य धातुओं के ज्ञान तथा व्यवहार से अनभिज्ञ था। वह पत्थरों के ही शस्त्रों से अपना काम चलाया करता था। इन चित्रों के विषय प्रधानतया युद्ध या वनचरों का आखेट हैं। ऐसे चित्र गुफाओं के भीतर चट्टानों

पर मिलते हैं। 4000–3000ई0. पूर्व के चीन, मध्य एशिया और भारत में जिस नवीन सभ्यता का निर्माण हुआ इतिहासकारों ने उसको मृत्पात्रों का नाम दिया है। इन भू–भागों के संपूर्ण मानव समाज ने मिट्टी के पकाए हुए बर्तनों पर सुंदर संकलन किया तथा पशु एवं मानव की आकृतियां अंकित की। भारत में इस प्रकार के पकाए हुए अलकृत मिट्टी की कृतियां, बर्तन, नाल, मोहनजोदड़ो, हड़प्पा खुदाई उसे उपलब्ध हुए हैं।

मुद्रण युग से पहले की पांडुलिपियां:–

भारत में संस्कृत, अरबी, फारसी और विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में हस्तलिखित पांडुलिपियों की पुरानी और समृद्ध परंपरा थी। पांडुलिपि या ताड़ के पत्तों या हाथ से बने कागज पर नकल कर बनाई जाती थी। कभी–कभी तो पत्रों पर बहे तरीन तस्वीरें भी बनाई जाती थी। फिर उन्हें उम्र बढ़ाने ख्याल तख्तियों की जिम्द में यातील पर बांध दिया जाता था। 19वीं सदी के अंत तक छपाई आने के बाद भी पांडुलिपि या छापी जाती रही लेंकिन पांडुलिपियों के कागज बहुत ही नाजुक होते थे और वे मूल्य में काफी महंगी भी होती थी। उनका रखरखाव बहुत ही मुश्किल होता था। इस दुविधा को देखते हुए बाद में मुद्रण के संसार ने इस निर्माण में एक नया मोड़ ला दिया। बाद में इस परंपरा में किताबों के द्वारा व्यापकता प्राप्त की। जिसके बाद भारत में मुद्रण के क्षेत्र में भी एक व्यापक मोड आया।

भारत में मुद्रण का आगमन:–

प्रिंटिंग प्रेस पहले पहल 16वीं सदी में भारत के गोवा में पुर्तगाली धर्म प्रचारकों के साथ आया। सर्वप्रथम 1556 में गोवा में पुर्तगालियों धर्म प्रचारकों के द्वारा छापा मशीनें भारत और लाई गई। उन्होंने लिस्बन से छापा मशीनें और चल टाइप का आयात किया और 6 दिसंबर 1556 को समुद्री जहाज द्वारा गोवा में लकड़ी की दो पहली छापा मशीनें उतारी व इन मशीनों की स्थापना की गई।[6]

अंग्रेजी भाषा प्रेस भारत में काफी देर तक विकास नहीं कर पाया था। यद्यपि इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी 17वीं सदी के अंत तक छापेखाने का आयात शुरू कर दिया। इस समय प्रिंट मेकिंग का उपयोग केवल प्रति उत्पादन के लिए किया गया था। हालांकि इस बात के प्रमाण हैं कि सिंधु घाटी सभ्यता के समय तक भारत में बड़े पैमाने पर दोहराव की अवधारणा का उपयोग हुआ था।

6 भारत और समकालीन विश्व – 2 (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसाधन परिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, संस्करण – 2000), 120.

उदाहरण के लिए, मूल रूप से लकड़ी, हड्डी, हाथी दांत और गले जैसी विभित्र सतहों पर तांबे की प्लेटों और नक्शो पर जानकारी उत्कीर्ण की गई थी। फिर भी कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए एक मीडिया के रूप में प्रिटं मेकिंग जैसे कि आज मान्यता प्राप्त है। भारत में अस्सी साल पहले उभरा था।

भारत में मुद्रण प्रारंभिक काल से चल टाइप के द्वारा शुरू हुआ। गैस्पार डी लियो द्वारा लिखी गई किताब कम्पेडियां सिपिरिचुअल दा विड क्रिस्ट। 1561 में गोवा में छपी थी। इस पुस्तक को भारत में सबसे शुरुआती मुद्रित संकलन के रूप में दर्ज किया गया। कुछ वर्षों बाद 1568 में पहला सचित्र कवर गोवा में कॉन्स्टिट्यूशन डॉ0. अससीस्पिसाद पुस्तक के लिए छापा गया था। चित्रण पारंपरिक द्वार या प्रवेश द्वार की एक छवि वुडब्लॉक की रिलीफ तकनीक का उपयोग करके की गई थी। 1556 और 1588 के बीच ऐसी तरह किताबें गोवा में छपी थी।

इंटैग्लियों प्रिंटिंग की प्रक्रिया भारत में डेनिश मशीनरी, बार्थोलोमेव जंगनबेलग द्वारा शुरू की गई थी। उन्होंने द एवेंजेलिस्टस एंड द एक्टस आपफ द एपॉस्टम्स' नाम की पुस्तक प्रकाशित की जो कि ट्रान्मबेक्यूर में छपी थी। इस पुस्तक में शुरुआती पृष्ठ में भूरे रंग की छाया में एक नक्काशी छपी थी। यह भारत में रंग मुद्रण के पहले दर्ज उदाहरणों में से एक बन गया। ग्रामेटिका दमुलिका' की एक अन्य पुस्तक, प्लेट उत्कीर्णन का सबसे पहला उदाहरण प्रदर्शित करती है। 1767 में ब्रिटिश चित्रकार टिली केटल में मद्रास की यात्रा की कई अन्य कलाकारों ने इसे तुरंत बाद और 1767 और 1820 के बीच अन्य देशों के साठ शौकिया कलाकारों ने भारत का दौरा किया। इनमें से कई कलाकारों ने काम किया और आखिरकार ब्रिटिश भारत की राजधानी कोलकाता में बस गए। इस समय के दो प्रमुख कलाकार 'विलियम व डैनियल' और थामस डेनियल थे। 1786 में डेनियल्स ने एक एल्बम, जिसमें कोलकाता के बारह दृश्य में 1875ई0. में स्थापित 'मेया स्कूल ऑफ आर्ट' शामिल हैं। शिक्षण के दौरान कई छापा तकनीकों से नव कलाकारों का परिचय करवाया गया है। जिसमें मुख्यतः वुडकर, वुड व एन्ग्रेविग और लिथोग्राफी शामिल थी। इसे सृजनात्मक माध्यम के बजाय चित्रों के सामूहिक उत्पादन के माध्यम से रूप को में पढ़ाया जाता था।

भारतीय लिपि का मुद्रणः—

पहली मुद्रित भारतीय भाषा तमिल थी। डॉक्टिना वर्णम, तमपीरन वनक्कम— 1558 में चीन से आयातित कागज के साथ 1539 पुर्तगाली कैटेचिस्म अनुवाद था। जेसुइट फादर ने 20 अक्टूबर 1578 को केरल में पहली भारतीय भाषा की पुस्तक छापी। 1602 में को चीन के पास वैपिकोटा में जेसुइटस ने चैल्डियन प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की।

1579 में इंग्लैंड के जेसुइट थॉमस स्टीफन गोवा पहुंचे। वह कोकणी साहित्य के विकास के लिए जिम्मेदार हैं। उनका मुख्य काम मराठी भाषा में पुराण, क्रिस्टा, रामायण के हिंदू महाकाव्य के बाद बनाया गया। रचोल सेमिनरी प्रेस, 1616 में छपी है पहली पुस्तक थी। मिगुएल डे अल्मेडा की जार्डिम

डे पास्टोरेस, जो 1658 – 1659 से गोवा में छपी थी। एक प्रमुख कोकंणी कार्य था। पुर्तगाली में धार्मिक विषयों पर कुछ 40 पुस्तकें 17वीं शताब्दी के दौरान गोवा में प्रकाशित हुई थी।

पीजे थॉमस के अनुसार ''यह अंबालाकाद में था कि तमिल और मलयालम में काफी छपाई 1663, 16 के बाद की गई। 1670 में अंम्बालाकद प्रेस पडर दे नोबिली के काम को छापने में व्यस्त था।[7]

इस बात के प्रमाण हैं कि मलयाली लिपि की पुस्तक पहली बार उसी शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रकाशित हुई थी। ऐसा लगता है कि अंबालाकाद में ऐसे केरल की विजह से पहले टीपू सुल्तान द्वारा संचालित था। हमले के दौरान, चर्च और मदरसा पूरी तरह से नष्ट हो गए थे।

यह 1706 तक चला, जब बार्थोलोमस जेगेबेल एक डिनेश मशीनरी थारंगम्बरी पहुंचे, कि भारत में मुद्रण फिर से बढ़ सकता है। लगभग 1712–13 में प्रिंटिंग प्रेस का आगमन हुआ और पहला प्रकाशन टैक्यूबार प्रेस द्वारा निर्मित किया गया।

प्रेस से पहला तमिल प्रकाशन 1713 में बड़े पैमाने पर दर्ज किया गया था। जिसे 1714 में न्यू टेस्टामेटं द्वारा जीनबर्ग के मांग पर समर्थन किया गया था।

आधुनिक भारतीय छापाकलाः–

ललित कला के माध्यम के रूप में छापा तैयार करने की प्रथा ने 1919 में रविंद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित कला भवन की स्थापना के साथ ही लोकप्रियता प्राप्त कर ली थी, किंतु इससे भी पूर्व टैगोर भाइयों द्वारा स्थापित एक कला संगठन 'बिचित्र क्लब' था, जहां चित्रकला और छापाकला की नई शैलियों का पता चला। तीनों टैगोर भाइयों, अबनीन्द्रनाथ, गगनेंद्रनाथ, और समरेन्द्रनाथ ने अपने ही निवास स्थल जोड़ासाँको के बरामदे में इस क्लब को स्थापित किया, जहां कलाकार एकत्रित होकर पेंटिंग तथा छापाचित्रण के विषय में विचार विमर्श किया करते थे। उन कलाकारों ने मुद्रण को आर्थिक गतिविधि से सांस्कृतिक गतिविधि में एक रूप में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखी।

भारत में बिताए गए अपने समय के दौरान ब्रिटिश अपनी शिक्षा प्रणाली शुरू करने और शिल्पा डिजाइन उम्मुख बाजार में भारतीय शिल्प की मांग को पूरा करने के साधन प्रदान करता है।

मद्रास में कला विद्यालय की स्थापना 1850 में डॉक्टर अलेक्जेडर हंटर द्वारा की गई थी। अंग्रेजों द्वारा इसी अवधि के दौरान स्थापित किए गए। अन्य स्कूलों में 1854 के कोलकाता में स्कूल ऑफ इंस्टिट्यूट आर्ट्स शामिल था। सर जे.जे. 1866 में मुंबई में स्कूल ऑफ आर्ट्स, जयपुर में जेपीपोर स्कूल ऑफ इंस्ट्रियल आर्ट् 1866 में और लाहौर में मेयी स्कूल ऑफ आर्ट्, 1875 में स्थापित किए गए।

---

7 डॉ0. सुनील कुमार, भारतीय छापाचित्रकला आदि से आधुनिक काल तक (दिल्ली : भारतीय कला प्रकाशन, 2000),108.

19वीं सदी के अंत तक एक नई तरह संस्कृति भी आकार ले रही थी। छापा खानों की बदलती तादाद के साथ छवियों की कई नकली या प्रतियां अब बड़ी आसानी से बनाई जा सकती थी। राजा रवि वर्मा जैसे चित्रकारों ने आम खपत के लिए तस्वीरें बनाई। राजा रवि वर्मा भारत के पहले कलाकार थे। जिन्होंने प्रिंटमेकिंग का प्रयोग एक कलात्मक माध्यम के रूप में ही नहीं बल्कि अपनी कला को जन–जन तक पहुंचाने के लिए अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने 19वीं शताब्दी के अंत में अपना स्वयं लिथोग्राफी प्रेस मुंबई के घाटकोपर में स्थापित किया, जिससे राजा रवि वर्मा प्रेस के नाम से जाना जाता था। उनके द्वारा बनाए गए ओलियोग्राफ तथा कैलेंडर इत्यादि छापा कला के क्षत्रे में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।[8] भारतीय जनता में अचानक रवि वर्मा के चित्रों की मांग बढ़ने के कारण 1894 ई0. में वडादेरा के तत्कालीन दीवाना राजा सर माधवराव के परामर्श से मुंबई में मुद्रणालय स्थापित किया गया। ये मुद्रित चित्र भारत के कोने कोने में लोकप्रिय थे।

1919 में टैगोर द्वारा स्थापित कला भवन की स्थापना के साथ ललित कला माध्यम के रूप में प्रिंटमेकिंग में भी अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त की। टैगोर द्वारा स्थापित एक पूर्व संगठन बिचित्र क्लब था – जहां चित्रकला और प्रिंट मेकिंग की नई शैलियों की खोज की गई थी। तीन टैगौर भाइयों अबनिन्द्रनाथ, गगेद्रं नाथ और समरेन्द्रनाथ ने अपने जीरासॉको निवास के बरामदे को क्लब के रूप में बदल दिया। बिचित्रा क्लब का नेतृत्व करने वाले तीन भाइयों में से कलाकार गगेन्द्रनाथ टैगोर ने लिथोग्राफी में विशेष रूचि ली और 1917 में अपना स्वयं का लिथोग्राफी प्रेस से स्थापित किया। उन्होंने बाद में अपने प्रिंट का एक एमबद भी प्रकाशित किया।

नंदलाल बोस बिचित्र क्लब के साथ जुड़े हुए एक अन्य कलाकार थे। जो उस समय कला भवन का कार्यभार संभाल रहे थे। हालांकि समय के साथ अधिक से अधिक कलाकार एक कला के रूप में प्रिंटमेकिंग से परिचित हुए और इसे अक्सर आगे बढ़ाया।

कृष्णा रेड्डी प्रसिद्ध छापा चित्रकार है। सन् 1925 में आंध्र प्रदेश में जन्म हुआ। कृष्णा रेड्डी ने अपने अथक प्रयासों द्वारा छापाकला के क्षत्रे में विभिन्न तकनीकों का प्रयोगात्मक आयाम को स्थापित किया। उनकी छापा कला में भारतीय कला की जड़े दिखाई देती हैं। तत्पश्चात न्यूयार्क विश्वविद्यालय में कला की प्रोफेसर व मुद्रण विभाग के निर्देशक बने। इन्हें छापा चित्रकारी में विशिष्ट प्राप्त है। इन्होंने विविध प्रकार की कठोर प्लेटो का प्रयोग अपने विशिष्ट तकनीक एंचिग व इंटेग्लियो के द्वारा आकृति मुद्रण करने के लिए किया था। इनकी प्रसिद्ध कलाकृतियां है– पैस्टरिट, वाटरलिलि, व्हर्लपूल. इनके इन कलात्मक कार्यों की ख्याति के परिणाम स्वरूप भारत सरकार ने इनको पदम विभूषण से सम्मानित किया है।

---

8 डॉ0. ममता चतुर्वेदी, समकालीन भारतीय कला (जयपुर– राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ 2008), 18.

सोमनाथ होरे :– सोमनाथ होरे का जन्म सन् 1921 में बांग्लादेश के चिता गंगा नामक स्थान पर हुआ। सोमनाथ ने अपनी द्वंद इच्छाशक्ति के चलते चीनी काष्ठ चित्रकारी, लिनोकट तथा बहुरंगी काष्ठ उत्कीर्णन व इटेग्लियो चित्र तकनीक में विशिष्टता प्राप्त की। अपनी चित्र तथा छापा चित्रों पर राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। आप वस्तुतः चित्र छापा चित्र व मूर्ति शिल्प में अपनी अभिव्यक्ति का उचित माध्यम कोसते रहे तथा इस प्रयास में आप छापा चित्रकार के रूप में अधिक पहचाने गए। गत 40 वर्षों में आप समकालीन छापाचित्रण परिदृश्य में सर्वोपरि रहे हैं।[9]

केजी सुब्रमण्यमः– एक असाधारण कलाकार है। इनका जन्म सन् 1924 में केरल में हुआ था। इन्होनें कला की शिक्षा के लिए विश्व भारती स्थित कला भवन में 1944 से 1948 शिक्षा ग्रहण की। इन्होंने विनोद बिहारी मुखर्जी, नालंदा बोस और रामकिंकर बैज जैसे कला गुरुओं के सानिध्य में कला की बारीकियों को सीखा। लिथोग्राफी के अलावा सुब्रमण्यम ने सिंगल शीट डिस्प्ले प्रिंट में भीपारंगात हासिल की। उन्होंने अपने अध्याय के दौरान उन्होंने छापा कला के विकास में काफी मदद की।

1960 और 70 के दशक में ज्याति भट्ट जैसे छापा कलाकार, जिन्होंने बड़ौदा में भी अपना प्रशिक्षण प्राप्त किया। ज्योति भट्ट ने एमएस यूनिवर्सिटी बडौदा में पेंटिंग की पढ़ाई की। उन्होंने प्रिंटमेकिंग पर ध्यान केंद्रित किया। इंटैग्लियो और स्क्रीन प्रिंटिंग का आभास करते हुए उन्होंने कई अन्य कलाकारों को प्रभावित किया। वह डिजिटल प्रिंटिंग फोटोग्राफी और होलोग्राफी में भी शामिल है।

हरेनदासः– जैसा कि जाना जाता है कि वह मास्टर भारतीय प्रिंटमेकर्स में से एक थे। उन्होंने लिनोकट ड्राईपांइट, नक्काशी और लकड़ी की नक्काशी में काम किया। Ukiyo-e से प्रभावित होकर, दास ने बहु रंगिया प्रिंटों के साथ भी प्रयोग किया। ग्रामीण लोगों के प्रति आजीवन समर्पण का परिचय देते हुए उन्होंने केवल अध्ययन किया, बल्कि गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्रास्ट कोलकाता मे ं व्याख्याता के रूप मे ं भी काम किया।

के लक्ष्मा गोड :– के लांबा गौड के प्रिटं ग्रामीण और शहरी अनुभवों के एक जानबूझकर मिश्रण पर जोर देते हैं। विभिन्न प्रकार की विषयगत सामग्री में गौड के रूप में ग्रामीण इलाकों में कामुकता की एक नई दृष्टि के लेंस के माध्यम से व्यक्त किए जाते हैं। तत्पश्चात बड़ौदा में ही ग्राफिक कला का विशेष अध्ययन किया। देश विदेश की विविध कला प्रदर्शनी में भाग लेने के साथ एक प्रदर्शनकारियों भी आयोजित की।

---

9 डॉ0. ममता चतुर्वेदी, समकालीन भारतीय कला (जयपुर– राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी – मानव संसाधन विकास – संस्करण – 2016), 122.

अंतर्राष्ट्रीय छापा चित्रकला का इतिहासः—

इतिहास साक्षी है कि मनुष्य की प्राचीन दृढ़ इच्छाशक्ति रही है कि वह अपने दैनिक जीवन, अनुभव, विचार और ज्ञान को संचारित करें। इसलिए वह इन्हें भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के साथ सुरक्षित रखता आया है। सर्वप्रथम उसने शारीरिक भाव विचार प्रकट किए। धीरे—धीरे वह सबके अतिरिक्त आंखो द्वारा दिखाई जाने वाली सतह चट्टानों पर अंकित करने लगा।

प्रारंभिक काल का रूप आज भी स्पष्ट देखा जा सकता है। दक्षिणी फ्रांस और उत्तरी स्पेन के चित्र लगभग 30000 से 60000 वर्ष पुराने हैं। सामग्री और संसाधनों की कमी होते हुए भी यह चित्र अद्भुत उदाहरण है। आज भी यह चित्र हमारी आज की सोच विचार के समय से बहुत आगे हैं।

अक्षरों का उद्गम एवं विकासः—

निश्चित रूप से कोई नहीं जानता की भाषा और लेख की स्थापना से पहले मानव का कितने युगों का इतिहास है। लेकिन अपने विचारों का चित्र छपाई के अनेक प्रकार की कला से व्यक्त होता है, कि मानव को सभ्यता के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मानव को याद दिलाने के लिए स्तूप प्राचीनतम समृति चिन्ह के रूप में जाने जाते हैं। लेकिन जैसे—जैसे पीढ़ियां बीतती गई और जनजातियां बदलती गईं। किसी भी चीज की पहचान करने के लिए चिन्ह तक संभव नहीं थी।

चिन्ह या छाप इसी प्रारंभिक प्रणाली के विकास स्वरूप हैं। परंतु जैसे—जैसे उनका स्वरूप बढ़ने लगा साधारण बारीकियों के चित्रण को छोड़ दिया।

चित्रलिपि का ध्वयान्मक लेखनों में होते हुए मिश्रित परिवर्तन के उदाहरण मैक्सिकल लेखो ं में स्पष्ट देखे जा सकते हैं। इस बदलती प्रगति के कारण धीरे—धीरे प्रतीकों धवन्यात्मक प्रतीक का एक संपूर्ण समूह का विकास हुआ जिसे आज वर्णमाला के नाम से जानते हैं।

मिट्टी की तख्ती एवं कीलाक्षर उत्कीर्णनः—

जब चीन में छापा कला और कागज का निर्माण काफी उन्नत अवस्था में था। उस समय मध्यम पूर्व और पश्चिमी सभ्यता के लोग कीलाक्षर शैली में शिलाओं व मिट्टी पर अपने रिकार्ड अंकित कर रहे थे। मैसोपोटामिया की खुदाई में मिट्टी की मोहर के सर्वप्रथम प्रयोग होने के प्रमाण मिलते हैं।

चीन में लगभग 105 ई0. में सुईलुज के द्वारा कागज के अविष्कार के 1000 वर्ष पश्चात पश्चिम की तरफ कागज की यात्रा शुरू हुई। प्रथम छपाई मशीन लगने का श्रेय मेक्सिको को जाता है। इंग्लैंड में विलियम कैक्सटन ने सर्वप्रथम एक छापा मशीन की स्थापना की और अंग्रेजी भाषा की पुस्तकें छपी।

सन् 1745ई0. तक कलाकारों ने छपाई के दौरान ही विभिन्न रंगों के इस्तेमाल करने में सफलता पा ली थी।

अम्लांकन एचिंग का पारम्भः–

रेखा उत्कीर्ण सुगम तकनीक होने के कारण अम्लाकन का 16वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों से ही अत्यधिक रूप से प्रयोग किया गया। मुक्त रेखाओं अक्सर प्रकृति से सच्चे भाव को गति प्रदान करती हैं। रेखाएं भिन्न–भिन्न मिटाइयों, गहराई सुझाती हैं। जो बाद में विभिन्न भागों को एक के बाद एक अम्लक्षरित और स्टोपिन्ग आऊट की नई तकनीकों के विकास के द्वारा 17वीं शताब्दी एक पूरक माध्यम के रूप में विकसित हुई और इस माध्यम की अलग पहचान बन गई। 19वीं शताब्दी में चामर्स जैक पहला कलाकार था जो अब अम्लांकन के प्रति रूप से समर्पित था। जैक बारवीजो स्कूल का पहला सदस्य था। जहां उसने एक विद्यार्थी के रूप में 17वीं शताब्दी के रेम्ब्रा और अन्य इंच कलाकारों के काम अध्ययन किया। व उनकी मुक्त और स्वैच्छिक प्रवृति से बहुत प्रभावित रहा। उसने सम्मिश्रण किया और 'ल मौलिक' में ड्राइप्वाइंट मैजोटिन्ट और दांतेदार चक्र का मिश्रित प्रयोग किया है।

लिथोग्राफी की खोजः–

लिथोग्राफी की खोज सन 1796 ई0. में न्यूनिम्ब के एलॉय स्नफमंडर ने की। पत्थर की शिला में छपने की विधि प्राचीन काल से ही प्रयोग में आने लगी है। इंग्लैंड में एक्वाटिंट का परिचय पाल सैंडी ने कराया। इंग्लैंड में यह छपाई तकनीक के साथ भारत पहुंची।

भारत में सबसे पहले 1556 ईस्वी में गोवा में पुर्तगाली ईसाई मशीनरीयां स्थापित हुई। 6 दिसंबर 1556 को समुद्री जहाज द्वारा गोवा में लकड़ी की दो पहली छापा मशीनें लाई गई।

सैरीग्राफी का विकासः–

सैरीग्राफी या सिमकस्क्रीन स्क्रीन प्रिंटिंग कला और उद्योग दोनों में लंबे इतिहास के साथ एक आवश्यक सरल प्रक्रिया की पहचान करने के तरीके हैं। अंग्रेज सैमुअल साइमन ने 1907 में पश्चिम दुनिया में सबसे अधिक परिचित्र स्क्रीन प्रिंटिड फार्म का पेटेंट कराया था। जबकि यूरोप को 18वीं शताब्दी में इस प्रक्रिया से परिचित कराया गया था।

प्रथम विश्व युद्ध प्रारंभ होने के बाद जब छापा कला उत्पादन बढ़ रहा था। सॉन फॉसिसको के जान पिमसवर्थ ने एक बहुरंग प्रणाली का विकास किया। चयन प्रणाली से जाने वाली इस तकनीक में एक स्क्रीन के भित्र भागों को बंद करते हुए अलग–अलग रंगों में छापा जाता है।

द्वितीय अध्याय

'राकेश बानी' प्रसिद्ध समाकालीन छापाकार

मनुष्य की सभी बौद्विक कियाए उसी समाज के भीतर होती है, जिसमें वह रहता है। अतः इन पर सामाजिक, आर्थिक, परिस्थियिां का प्रभाव पड़ना तय होता है। कोई कलाकार किस रूप में दुनिया को देख और महसूस कर रहा होता है। वह उसकी अभिव्यक्ति से प्रदर्शित होता है। इस प्रकार अपने यहां के एक प्रतिष्ठत एंव प्रसिद्व कलाकार राकेश बानी है।

राकेश बानी एक प्रसिद्ध समाकालीन छापाकार हैं, जिन्होंने छापाकला में भिन्न–भिन्न तकनीकों, रंगो तथा टेक्सचरों का प्रयोग कर उसे अलग रूप प्रदान किया है। राकेश बानी ने समाकालीन कला के संदर्भ में बहुत सी कलाकृतियां प्रस्तुत की तथा इस प्रकार भारत के कला क्षेत्र में अपना निरंतर योगदान दिया। यह अपने नए अनुभव और अविष्कारों के साथ आगे बढ़ रहे। राकेश बानी ने लगभग सभी माध्यमों में काम किया है– जैसे एचिंग, लिथोग्राफी, वुडकट आदि माध्यमों मे ं काम किया। राकेश बानी सभी माध्यमों में काम करते हैं और कुछ नया करने की चाह रखते हैं। इनकी रूचि विशेष रूप से छापाकला में थी और अपनी इसी रूचि के कारण समकालीन भारतीय छापाकला में राकेश बानी एक सफल छापाकार के रूप में उभर कर सामने आए।

जीवन परिचयः–

राकेश बानी एक प्रसिद्ध समकालीन छापाकार है जिन्होंने छापाकला में तकनीको,ं रंगों और टैक्सचरों का प्रयोग कर उन्हें एक अलग रूप प्रदान किया है। राकेश बानी का जन्म सन् 1975 में जिला बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में हुआ। यह अपने एक सफल कलाकार बनने का श्रेय अपने माता–पिता और अपने शिक्षकों को देते हैं। उनके पिता एक सरकारी कर्मचारी थे तथा उनके सफल होने के पीछे उनके पिता का बहुत सहयोग रहा। राकेश बानी बताते हैं कि उनकी कला में रुचि उन्हें स्कूली कक्षा के दौरान पता चली, इन्हें अलग–अलग स्थानों पर रहने का मौका मिला। राकेश बानी बताते हैं कि जब वह स्कूल में थे तो उन्हें काफी वर्षों बाद पता चला कि उनकी कला में काफी रूचि है।

स्कूल में काफी ऐसे विषय थे जिनमें ड्राइंग करके दिखाना होता था। वह उन चित्रों को बहुत ही लगन से बनाया करते थे। इनके मित्र भी इनसे अपनी ड्राइंग का काम करवाया करते थे। यह देखते हुए इन्हें इनके भूगोल के अध्यापक ने इनकी प्रशंसा की और यह रूचि उनके अंदर उनके पिता से आई, क्योंकि उनके पिता एक सरकारी दफ्तर में काम करते थे, जहां उन्हें नक्शे बनाने होते थे। वह गांव, इलाकों और सडकों का नक्शा बनाया करते थे और उनकी ड्राइंग देखकर इनका भी मन करता था कि वह भी ड्राइंग करें। जब भी वह ड्राइगं करते थे तो उन्हें उनके स्कूल के अध्यापक बहुत शाबाशी दिया करते थे।

स्कूल की शिक्षा के दौरान कक्षा 11वीं और 12वीं में उनके अध्यापकों ने उन्हें बहुत प्रोत्साहित किया और उन्हें प्रेरित किया कि वह ऐसे कला करते रहें तथा उन्हें बहुत सी कला प्रतियोगिता में शामिल किया। कुछ समय के बाद उनके भूगोल के अध्यापक ने उन्हें सलाह दी कि उनको आगे जाकर कला के क्षेत्र को ही चुनना चाहिए। राकेश बानी बताते हैं कि उनकी स्कूली शिक्षा के दौरान उन्हें यह सूचना नहीं थी कि ड्राइंग भी ऐसा विषय है जिसमें अपना भविष्य बनाया जा सकता है। अपने शिक्षकों की सलाह से प्रेरित होकर वह कला क्षेत्र में आने के लिए उत्साहित हुए। कक्षा बारहवीं के बाद उन्होंने फाइन आर्ट्स क□लेज के बारे में तलाश करनी शुरू की।

फिर उन्हें पता चला कि उनके जन्म स्थान से कुछ पूरी दूरी पर खेरागढ़ में एक कॉलेज है, जिसका नाम इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय है। उन्होंने वहां अपना दाखिला करवाया तथा 2 साल के बुनियादी पाठ्यक्रम के बाद उन्हें पता चला कि उनकी रुचि छापा कला में है, क्योंकि उन्हें रिलीफ, वुडकट, एंचिग, यह सब माध्यमों में के बारे में जानकारी मिली तथा उनका मन छापाकला की ओर आकर्षित हुआ। फिर उन्हें पता चला कि ग्राफिक भी एक ऐसा विषय है जिसमें वह अपने पढ़ाई कर सकते हैं। उन्होंने अपने शिक्षकों व अपने मित्रों का बहुत सहयोग मिला अपने कॉलेज की शिक्षा के दौरान उन्होंने बहुत से प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया तथा इन्हें कुछ पुरस्कार भी मिले और छापाकला राकेश बानी के जीवन का हिस्सा बन गया।

इनकी रूचि छापाकला में बदलती देख इनके शिक्षकों और इनके परिवार वालों का पूरा सहयोग मिला। मास्टर डिग्री भी इन्होनें इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ से ही की। जिसमें उन्होंने काफी प्रदर्शन किया। व प्रतियोगिताओं में भाग लिया। कुछ पुरस्कारों को अपने नाम किया। छापाकला के प्रति लगन को देखकर इनके शिक्षक इनसे बहुत प्रसन्न रहते थे और इनके परिवार वाले भी इन पर गर्व महसूस करते थे। बी.एफ.ए और एम.एफ.ए के दौरान इन्होंने बहुत से कार्यशाला में हिस्सा लिया। वो नाग दास जी, जोकि इनके एक शिक्षक हैं, जिन्हें वह अपना गुरु जी मानते हैं, उनसे इन्होंने कला की तकनीकों, को सिखा तथा कला की बारीकियों को भी जाना।

छापाकला के क्षत्रे में नए नए प्रयोग किए, जिसमें उन्होनें अपनी कला को एक नया आयाम प्रदान किया। इसी के चलते उन्हें अपने इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय में एक सर्वश्रेष्ठ छात्र के रूप में पहचाना जाने लगा। राकेश बानी अपने चित्रो ं मे ं मानव आकृतियो ं को अधिक महत्व देते हैं। यह अपने चित्रों में मानव संवेदनाओं को दर्शाते हैं। इनके अधिकतर काम छापाकला में ही हैं। छापाकला के अलावा, इन्हे ं मूर्तिकला और फोटोग्राफी में भी रुचि है। लेकिन इनकी अधिकतर रुचि छापाकला में रही रही है। इन्होंने अपनी कला यात्रा के दौरान भारत के अतिरिक्त बाहरी देशों की भी यात्राएं की और अपने कला यात्राओं से इन्होंने काफी कुछ सीखा। इन्होंने चीन, जापान, मकाउ और यूरोप जैसे अनेक देशों में कला यात्रा की और इसी के चलते इन्होनें अपनी कला में बहुत योगदान दिया।

शिक्षा व कलायात्राः–

राकेश बानी की स्कूली शिक्षा के दौरान ही उनके शिक्षकों ने उन्हें कला के लिए प्रेरित किया और इसी प्रकार उनकी कला यात्रा शुरू हो गई। जैसे–जैसे स्कूली शिक्षा खत्म होने पर आई और उनकी कला के प्रति रुचि बढ़ती गई। अपने इसी रुचि के कारण इन्होंने सन 1998 में इंदिरा संगीत विश्वविद्यालय ललित कला में स्नातक डिग्री प्राप्त की। इन्हें छापा चित्रण विषय में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। इससे प्रभावित होकर उन्होंने अपने सनातन की शिक्षा के लिए छापा चित्रण विषयों को ही चुना।

इनकी शिक्षा खैरागढ़ के इंदिरा कला गांधी संगीत विश्वविद्यालय से रही। इन्होंने बी.एफ.ए और एम.एफ.ए वहीं से ही की। अपने कॉलेज की शिक्षा के दौरान वह बहुत सी प्रयोग प्रयोगिताओं में हिस्सा लेते रहे। उनके पिता व अध्यापक उन्हें एक सफल कलाकार बनते हुए देखना चाहते थे।

उन्होंने भारत और अंतरराष्ट्रीय देशों में अपनी कला यात्रा की। वह बताते हैं कि उनकी कला यात्रा कॉलेज शिक्षा के दौरान ही शुरू हो गई थी। खेरागढ़ में कोई बड़ी प्रतियोगिता व प्रदर्शनी नहीं होती थी। उस समय दिल्ली में बहुत सी प्रदर्शनीयां होती थी और उन तक वह संदेश नहीं आता था। इन्हें कोई भी प्रदर्शनी की सूचना डाक या उनके विरिष्ठ मित्रों से ही मिलती थी। उस समय बहुत से प्रतियोगिताओं में काम भेजा। तब प्रिंट भेजना बहुत ही आसान हुआ करता था। प्रिंट को रोल कर डाक के माध्यम से किसी अन्य जगह पर भेजा जाता था। इसके चलते इन्हें बहुत से पुरस्कार भी मिले। कुछ समय के बाद राकेश बानी के काम की पहचान होनी शुरू हो गई। जब इनका काम किसी प्रतियोगिता में जाता था तो तब लोग देखते थे कि यह काम किस जगह से आया और उसी के चलते कुछ समय बाद खेरागढ़ का नाम प्रसिद्ध होने लगा।

आज के समय में खेरागढ़ का नाम प्रिटं मेकिंग के क्षत्रे में बहुत है और इसी तरह से मेरी कला यात्रा का जीवन शुरू हुआ और मुझे मेरे अध्यापकों का बहुत सहयोग मिला। वह मुझे हमेशा से ही प्रोतसाहित किया करते थे। उनके शिक्षकों व मित्रों के सहयोग के कारण वह अपनी कला यात्रा कर पाए और उन्होंने भारत के साथ–साथ अंतरराष्ट्रीय यात्रा भी की। उन्होंने भारत के अलावा चीन, जापान, मकाउ, इटली, यूरोप और ऐसे अन्य देशों की यात्रा की।

अंतर्राष्ट्रीय यात्रा में चीन की यात्रा उनकी पहली अंतरराष्ट्रीय यात्रा रही जो उन्होंने अपनी नौकरी के दौरान की। उनकी छत्तीसगढ़ की नौकरी के दौरान उन्होनें यू.पी.एस.सी का इंटरव्यू दिया उनका इटंरव्यू दिल्ली में था, जहां बहुत से राज्यों से शिक्षक आए थे। उस इंटरव्यू में उन्होंने मुझसे यह प्रश्न पूछा कि आप कभी विदेश गए हैं? तो राकेश बानी ने जवाब दिया कि उन्होंने विदेश यात्रा तो नहीं की, लेकिन अपना काम विदेश अवश्य भेजा है। लेकिन मुझे कभी खुद विदेश जाने का मौका नहीं मिला। लेकिन यह प्रशन उनके दिमाग में छप गया, कि उन्होनें विदेश यात्रा के बारे में क्यों पछ्रा। उन्हें ऐसा लगता है शायद यह उनकी कमी है कि वह कभी विदेश नहीं गए। फिर राकेश बानी ने एक

विदेशी प्रदर्शनी जो चीन में थी वहां अपना काम भेजा और उस प्रदर्शनी के लिए कुछ कलाकारों का नाम आया जिन्हें चीन जाना था, जिनमें से एक नाम राकेश बानी का भी था।

2007 में राकेश बानी को चीन की कला यात्रा पर जाने का अवसर मिला और चीन की कला यात्रा इनके लिए काफी आनंददायक रही। वहां से इन्होनें बहुत कुछ सीखा। जिसका प्रभाव इनके काम पर भी पड़ा। 2009 में इन्होंने चाइना की यात्रा की तथा वहां से इनकी अंतरराष्ट्रीय कला यात्रा जारी रही।

2011 में यह जापान गए तथा वहां बहुत सी प्रदर्शनी में हिस्सा लिया और कुछ पुरस्कारों को अपने नाम किया। 2012 में फिर यह मकाउ गए। इनका कहना है कि अलग–अलग देशों में अलग–अलग सीखने को मिलता है और जापान जैसे देश ने इनको बहुत प्रभावित किया। इस तरीके से विदेशी यात्रा का सीलसीला जारी रहा। 2014 में यह इटली गए और इन्हें लगातार हर साल के बाद दोबारा जाने का अवसर मिला। विदेशी यात्रा से इनके काम में बहुत बदलाव आए और जिस विश्वविद्यालय में इन्होंने पढ़ाई की उसी विश्वविद्यालय मे ं ही नौकरी करने का अवसर भी मिला।

वहां इन्होनें एक अध्यापक के रूप में कार्यभार संभाला। फिर कुछ साल चंडीगढ़ में अध्यापक रहे तथा वर्तमान समय में यह कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में अध्यापक हैं। उन्होंने बताया कि वह लगभग 25 बर्ष से अध्यापक हैं। राकेश बानी के लिए सर्वाधिक सौभाग्य की बात यह थी कि उन्हें सोमनाथ होरे सनंत कार और के.जी सुब्रमण्यम जैसे महान कलाकारों के मार्गदर्शन म` कार्य करने का अवसर मिला।

उपलब्धियां :–

राकेश बनी ने अपने जीवन में काफी अधिक मात्रा में प्रदर्शनीयों व कार्यशालाओं में भाग लिया। उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों की प्रदर्शनीयों में अपने कामों का प्रदर्शन किया। उन्होंने कला के क्षेत्र में एकल और सामूहिक सभी तरह की प्रदर्शनीयां की हैं। उनके छापा चित्रों के लिए उन्हें अनेकों बार सम्मानित किया गया है। इनकी कलाकृतियों को भारत और बाहर के अन्य देशों की आर्ट गैलरी में संगठित करके रखा गया है।

'राकेश बानी' प्रसिद्ध समाकालीन छापाकार

पुरस्कार और सम्मान (राष्ट्रीय और राज्य)

2021 – मानद – विश्व समकालीन ग्राफिक कला के विकास के लिए विशेष पुरस्कार, by ग्राफिक कला का 10वां अंतर्राष्ट्रीय त्रैवार्षिक, बिटोला– आईटीजी बिटोला, मेकेडोनिजा।

2021 – Bodio Lomnago . की 11वीं ExLibris प्रतियोगिता लाइब्रेरी में माननीय उल्लेख से ''डिविना कॉमेडिया'', कॉयूनडिबोडि योलोम्नागो, वारेस, इटली द्वारा।

2020 – हिमप्रस्थ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन कला प्रदर्शनी ''वसधुंरा'' – कला और पारिस्थिति की सांस्कृतिक विरासत हिमालय की, ग्राफिक्स श्रेणी में, देहरादून, उत्तरांचल, भारत।

2017 – द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय में राहत मुद्रण में किए गए ग्राफिक कार्य के लिए पट्टिका से सम्मानित किया गया।

बुक प्लेट की प्रदर्शनी।

2017 – सोलस्टिजियो द्वारा अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता का तीसरा पुरस्कार, द एनचांटेड वुड्स।

2016 – एस्टेट कॉन्स्टेंटाइन गोफस, एथेंस, ग्रीक के एक्सलिब्रिस वाइन लेबल में दूसरा स्थान पुरस्कार।

2016 – मिनीप्रि टंइंटरनेशनल डे पाराण 2016 में ''विशषे डिप्लोमा'' का पुरुस्कार, पराना, अर्जेंटीना.

2016 – नामिक केमल विश्वविद्यालय, तुर्की द्वारा प्रथम अंतर्राष्ट्रीय मेल कला
द्विवार्षिक में प्रथम पुरस्कार।

2015 – ''उत्कृष्टता जरूी पुरुस्कार'' द्वितीय अतंर्राष्ट्रीय में कला मिनीप्रिटं +मिश्रित मीडिया में प्रवेश करें।

2015 – मारिया को समर्पित येलबुगा के एक्सलाइब्रिस के पहले त्रैवार्षिक में डिप्लोमा से सम्मानित किया गया।

2015 – प्रथम अंतर्राष्ट्रीय में ग्राफिक कार्य के लिए स्वतंत्र रूप से चुने गए विषय के लिए पट्टिका का बुक। प्लेट की प्रदर्शनी।

2014 – मिनीप्रिटं इंटरनेशनल डे पाराण 2014, पराना में ''विशषे डिप्लोमा'' का अर्जेंटीना.।

2014 – 7वीं अंतर्राष्ट्रीय एक्सलाइब्रिस प्रतियोगिता में माननीय उल्लेख और दूसरा विशेष पुरस्कार।

''लाइब्रेरी ऑफ बोडियो लोम्नागो, कॉम्यून डिबोडियो लोम्नागो, (वीए) इटली **2012** – सूचना विभाग की 40वीं वर्षगांठ पर EXLIBRIS प्रतियोगिता Hacettepe विश्वविद्यालय, अकांरा, तुर्की में प्रबंधन।

2000 – नोकिया आर्ट्स अवार्ड्स – सिगांपुरु में एशिया पसैफिक।

पुरस्कार और सम्मान (राष्ट्रीय और राज्य)

2020 – ऑलइंडिया फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट सोसाइटी, नई दिल्ली द्वारा 10वीं अखिल भारतीय डिजिटल कला इंडिया।

2018 – प्रफुल्ल आर्ट फाउंडशेन, मबुंई, भारत द्वारा डिजिटल कला में रजत पदक परुस्कार।

2017 – ए.आई.एफ.ए.सी.एस द्वारा 90वीं वार्षिक अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी (प्रिटं मेकिंग ऑल इंडिया फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट सोसाइटी, नई दिल्ली, भारत।

2017 – प्रफुल्ल आर्ट. द्वारा प्रिटं मेकिंग की श्रेणी में हरियाणा राज्य के लिए मेरिट अवार्ड फाउंडेशन, मुंबई, भारत।

2017 – प्रफुल्ल आर्ट फाउंडशेन, मबुंई द्वारा फोटोग्राफी श्रेणी में थानेसर सिटी इंडिया।

2016 – प्रफुल्ल आर्ट फाउंडेशन, मुबंई द्वारा प्रिटं मेकिंग श्रेणी में थानेसर सिटी इंडिया।

2014 – ऑल इंडिया फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट सोसाइटी, (एआईएफएसीएस)
द्वारा चौथी अखिल भारतीय डिजिटल कला नई दिल्ली, भारत।

2012 – हरिंयाणा ललित कला संस्थान (एचआईएफए) द्वारा दूसरा हरियाणा समकालीन कला पुरस्कार, करनाल, हरियाणा, भारत।

2011 – रिसर्च लिकं द्वारा स्वर्ण पदक, अकं – 91, खडं – (9), नवबंर – 2011, इंदौर,(एमपी), भारत।

2011 – ''कर्मभूमि सम्मान'', हरियाणा ललित कला संस्थान, (H.I.F.A.) हरियाणा, भारत द्वारा।

2011 – ए.आई.एफ.ए.सी.एस., नई दिल्ली, भारत द्वारा 83वीं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी।

2007– राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ, भारत द्वारा 11वीं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी।

2007– वार्षिक कला प्रदर्शनी, चंडीगढ़ ललित कला अकादमी, चंडीगढ़, भारत।

2006 – 48वां राष्ट्रीय अकादमी पुरस्कार, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, भारत।

2006 – 19वीं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, लोकमान्य तिलक पुरस्कार, पुणे, भारत।

2005 – 8वीं अखिल भारतीय कला प्रतियोगिता, लोकमान्य तिलक पुरस्कार, पुणे, भारत।

2005 – पंजाब वार्षिक कला पुरस्कार, पी.एल.के. चंडीगढ़, भारत।

2005 – 77वीं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी ए.आई.एफ.ए.सी.एस. नई दिल्ली भारत।

2004 – चंडीगढ़ ललित कला अकादमी, चंडीगढ़, भारत द्वारा वार्षिक कला प्रदर्शनी।

2003 – दक्षिण मध्य क्षेत्र संस्कृति , नागपुर, भारत द्वारा अखिल भारतीय कला प्रतियोगिता।

2002 – DWE, राजकीय कला प्रदर्शिनी, महाकोसल कलापरिषद, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत द्वारा।

2000 – मिलेनियम अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी ए.आई.एफ.ए.सी.एस द्वारा भोपाल (राज्य स्तर), भारत में।

2000 – ''आकृति सैलाब'' बिहार, भारत द्वारा आयोजित कला की पहली अखिल भारतीय प्रदर्शनी

2000 – 66वीं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, इंडियन एकेडमी ऑफ फाइन आर्ट अमृतसर, भारत द्वारा।

2000 – मिलेनियम ड्राइंग, अखिल भारतीय ड्राइंग प्रदर्शनी, पंजाब ललित कला अकादमी, चंडीगढ़, भारत।

1999 – 65वीं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, इंडियन एकेडमी ऑफ फाइन आर्ट अमृतसर, भारत द्वारा।

1999 – नोकिया आर्ट्स अवार्ड्स (राष्ट्रीय स्तर) नई दिल्ली, भारत।

1999 – ''अवंतिका'' कला की 7वीं अखिल भारतीय प्रदर्शनी नई दिल्ली, भारत।

1998 – ''अवंतिका'' कला की छठी अखिल भारतीय प्रदर्शनी नई दिल्ली, भारत।

1998 – 69वीं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी ए.आई.एफ.ए.सी.एस. नई दिल्ली भारत।

1995 और 1996 – दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर, भारत द्वारा 9वीं और 10वीं अखिल भारतीय कला प्रतियोगिता।

1993 और 1994 – रायपुर (छ.ग.) भारत में नूतन कला संगम द्वारा कला की 5वीं और 6वीं अखिल भारतीय प्रदर्शनी

छात्रवृति और फैलोशिप

2006 – मानव संसाधन विकास मंत्रालय, सांस्कृतिक विभाग द्वारा जूनियर फेलोशिप, नई दिल्ली भारत।

1998 – मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा युवा कलाकारों को राष्ट्रीय छात्रवृत्ति , सांस्कृतिक विभाग, नई दिल्ली, भारत। एकल शोः

2020 – कला परिवार समूह, भारत द्वारा अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन एकल कला प्रदर्शनी। (20 दिसंबर 2020 से 14 जनवरी 2021)

2020 – निरंतर कला समूह, चंडीगढ़, भारत द्वारा ग्राफिक प्रिटं और ड्राइंग का ऑनलाइन सोलो शो। (19 नवंबर से 30 नवंबर 2020)

2016 – ''समकालीन बुकप्लेट आर्टिस्ट –108'', कुन्स्टम्यूजियम में एक्सलिब्रिस वर्क्स का सोलो शो।

अंतरराष्ट्रीय प्रिंट कार्यशाला

2018 – IIIAF- 2018, ग्राफिक्स विभाग, इंदिरा संगीत और ललित में इंदिरा अंतर्राष्ट्रीय ग्राफिक कला। महोत्सव कला विश्वविद्यालय, खैरागढ़, जिला–राजनांदगांव, छत्तीसगढ़, भारत। (22 से 31 जनवरी 2018)

2017 – IIIAF- 2017, इंदिरा अंतर्राष्ट्रीय छापकला महोत्सव, ग्राफिक्स विभाग में, इंदिरा संगीत और ललित कला विश्वविद्यालय, खैरागढ़, जिला–राजनांदगांव, छत्तीसगढ़, भारत। (5 से 14 जनवरी 2017)

2012 – पेन्हाक्रिएटि व सटेंर, मकाउ में डेमोप्रिटं कार्यशाला, (4 जनू से 18 जनू 2012 तक) 15 दिनों के लिए।

2011 – आर्ट स्टूडियो इटुकाइची में कलाकार के रूप में अतंर्राष्ट्रीय प्रिटं कार्यशाला – निवास, अकिरुनोसि टी, टोक्यो, जापान। (सितंबर से नवंबर 2011 तक) तीन महीने के लिए।

2009 – गआुनलान प्रिट ं ओरिजिनल में कलाकार–इन–निवास के रूप में अतंर्राष्ट्रीय प्रिटं कार्यशाला उद्योग, आधार, गुआनलान, चीन। (4 दिसंबर से 26 दिसंबर 2009 तक) 21 दिनो ं के लिए।

अंतर्राष्टीय प्रदर्शनी

2021 – ''ईस्ट मीट्स वस्ट'', डेली न्यूज चौथा संस्करण, केटोवाइस में सिलेसिया विश्वविद्यालय द्वारा कार्यक्रम, Cieszyn में कला संकाय, ललित कला संस्थान, पोलैंड।

2020 – BIAMT, वेस्ट यूनिवर्सिटी मिसोआरा, रोमानिया द्वारा लघु कला के अंतर्राष्ट्रीय द्विवार्षि 5वां संस्करण।

2020 – कॉलेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट द्वारा सेंटेनियल, एक ऑनलाइन अंतर्राष्ट्रीय दृश्य कला प्रदर्शनी, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत ।

2020 – इंटरनेशनल मिनिएचर आर्ट फेस्ट, चटगांव आर्ट क्लब, चटगांव, बांग्लादेश।

2020 – SI MUOVE ऑनलाइन प्रदर्शनी, डिप्लोमैटिक आर्ट, टिमिसोआरा, रोमानिया द्वारा आयोजित।

2020 – अंतर्राष्ट्रीय लघु कला उत्सव –

2021 – चटगांव कला क्लब, ढाका, बांग्लादेश द्वारा।

2020 – ड्राइंग और पेंटिंग विभाग, एमएल और जेकेएन द्वारा आयोजित वेब पोर्टल पर अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी। राज्य ललितकला अकादमी, यूपी, भारत के तत्वावधान में गर्ल्स क□लेज, सहारनपुर।

2020 – मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोल□जी द्वारा 3 दिवसीय ऑनलाइन अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी, देहरादून, उत्तरांचल, भारत – 20 से 23 अगस्त 2020 तक।

2020 – संस्कारभारती और ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन कला प्रदर्शनी। इंडिया

प्रकाशित लेख

2012 – पर लिखित लेख (भारतीय मुद्रण की यात्रा ''अतीत से वर्तमान तक'') पहली मकाऊ प्रिटं मेकिंग त्रवैार्षिक प्रदर्शनी, मकाऊ, चीन के लिए। प्रकाशित शोध पत्रः–

2020 – ''भारतीय कला के सन्दर्भ में राय कृष्णदास का कला चितंन'', में प्रकाशित पेपर कलात्मक कथन, (प्रभाव कारक – 7.719) वॉल्यूम। XI नंबर II, जुलाई – दिसंबर– 2020, सह–लेखक। आईएसएसएन (पी) 0976–7444,

(ई) 2395–7247।

2020 – ''समकालीन बुकप्लेट डिजाइन और अवधारणा'' कलात्मक कथन में प्रकाशित पेपर, (ए पीयर रिव्यूड जर्नल ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स) आईएसएसएन (पी) 0976–7444, (ई) 2395–7247, वॉल्यूम। इलेवन, नंबर 1, प्रभाव कारक – 7.719 (एसजेआईएफ), जनवरी– जून। 2020, सह–लेखक।

2019 – ''प्रिटं मेकिंग – पारंपरिक से आधनिुक दृष्टिकोण तक'' कलात्मक वर्णन में प्रकाशित पेपर, (ए पीयर रिव्यूड जर्नल ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स) आईएसएसएन (पी) 0976–7444, (ई) 2395–7247, वॉल्यूम। एक्स, नंबर II, प्रभाव कारक – 7.719 (एसजेआईएफ), जुलाई दिसंबर 2019

2017 – ''स्वतंत्रता के बाद भारतीय कला के रुझान और परंपरा पर पुनर्विचार'' पेपर प्रकाशित हुआ, कलात्मक कथन, (ए पीयर रि व्यूड एंड रेफरीड इंटरनेशनल जर्नल), आठवीं, नंबर 2, दि संबर– 2017

वेबिनार

2020 – दो दिवसीय वेबिनार में भाग लिया ''नवाचार का मार्ग: 21 वीं सदी में तकनीकी परिवर्तन'' महामारी युग "अलीगढ़ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, अलीगढ़, यूपी द्वारा आयोजित। 6 और 7 जुलाई, 2020 को।

2020 – जूम पर लाइव, एक इंटरैक्टिव सत्र के लिए ''प्रिटं मेकिंग– तकनीकी और अभिनव'' पर व्याख्यान प्रस्तुत किया, अप्रोच'', एपीजे कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, जालंधर, पंजाब द्वारा 30 जून, 2020 को आयोजित किया गया।

2020 – ''महामारी के दौरान आईसीटी के माध्यम से धीरज'' पर एक सप्ताह के अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार में भाग लियाः संभावनाएं और मुद्दे'', अलीगढ़ कॉलेज ऑफ एजुकेशन (एसीई) द्वारा 26 जून से 1 जुलाई, 2020 तक आयोजित किया गया

2020 – उद्यमिता द्वारा आयोजित ''आत्मनिर्भर भारत के लिए कौशल विकास'' पर वेबिनार में भाग लिया, विकास प्रकोष्ठ, एम एम स्कूल ऑफ फार्मेसी, एमएमयू, सादोपुर, अंबाला, श्री के सहयोग से विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय, दुधोला, पलवल, सरकार। हरियाणा, 24 जून, 2020।

2020 – ''भारतीय अर्थव्यवस्था का पुनरुत्थानः पोस्ट के दौरान प्रबंधकीय रणनीतियाँ'' पर राष्ट्रीय वेबिनार में भाग लिया, कोविड–19 एरा'' का आयोजन वाणिज्य और आईक्यूएसी विभाग, राम कृष्ण द्वारिका कॉलेज द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। पटना, बिहार 14 जून 2020।

2020 – ''सकारात्मक और नकारात्मक व्यवहार COVID–19 से जुड़े'' पर वेबिनार में भाग लिया, द्वारा, आयोजित अलीगढ़ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, 24 जून, 2020 को।

2020 – दो दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार में भाग लिया ''कोविद के दौरान और पोस्ट के दौरान तनाव को कम करने में कला और संगीत की भूमिका– 19 का लॉकडाउन'' राजकीय ललित कला के सहयोग से डीएस डिग्री कॉलेज, अलीगढ़ द्वारा आयोजित, अकादेमी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 21 मई – 22 मई, 2020।

व्याख्यान और प्रदर्शन

2021 – एस. शोभा सिहं के स्नातकोत्तर छात्रों को प्रिटं मेकिंग पर व्याख्यान और प्रदर्शन दिया गया 5 अक्टूबर।

2021 को ललित कला वि भाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, पंजाब।

2021 – दो दिवसीय राष्ट्रीय में प्रिंट मेकिंग कार्यों पर प्रदर्शित प्रदर्शन और

स्लाइड प्रस्ततिुकरण वसतां महिला, क□लेज, के एफआई, राजघाट किला, राजघाट द्वारा आयोजित प्रिटं मेकिंग पर कार्यशाला, वाराणसी, चित्रकला विभाग, वसंत कन्या महाविद्यालय, कमच्छा के सहयोग से, दूसरे दिन वाराणसी, उत्तर प्रदेश। 11 सि तंबर 2021।

2021 – पीजीटी फाइन आर्ट्स ड्राइगं टीचर्स की 5 दिवसीय कार्यशाला में वुडकट पर व्याख्यान और डेमो दिया गया शिक्षा निदेशालय, पंचकुला, हरियाणा, भारत द्वारा आयोजित हरियाणा का।

2021 – रिफ्रेशर कोर्स में रिसोर्स पर्सन के रूप में आमंत्रित, (2 सप्ताह) विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स (ऑनलाइन) में सगीत और विभाग द्वारा आयोजित ''प्रिटं मेकिंग'' दिनांक– 27 फरवरी 2021 पर व्याख्यान दिया गया यूजीसी केद्रं , राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

2020 – प्रस्तुत ऑनलाइन व्याख्यान– 29 जून 2020 को सात दिवसीय आभासी में लकड़ी कट ड्राइगं और पेंटिंग विभाग, एमएल और जेएनके द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला सहप्रदर्शन गर्ल्स कॉलेज, सहारनपुर, यू.पी. 2020 – ललित कला विभाग, ग्राफिक एराहिल में ''कला में प्रिटं मेकिंग की खोज'' पर व्याख्यान प्रस्ततु किया, विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तरांचल, 22 फरवरी, 2020 को।

2019 – एस. शोभा सिहं विभाग में प्रिटं मेकिंग तकनीक पर एक दिवसीय व्याख्यान प्रदर्शन ललित कला, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, पंजाब, भारत। 12 फरवरी 2019 को।

राष्ट्रीय राज्य स्तरीय शिविर और कार्यशालाएं

2020 – रामरंग, पांच दिवसीय पेंटिंग ऑनलाइन कला शिविर, दक्षिण मध्य क्षेत्र संस्कृति द्वारा आयोजित केंद्र और कलंतर फाउंडेशन, नागपुर, महाराष्ट्र, भारत (25 से 29 नवंबर 2020)

2020 – सात दिवसीय संकायविकास कार्यक्रम ''शैक्षणिक प्रति मान बदलावः की आवश्यकता'' पर घंटा'', एमएल और जेएनके गर्ल्स कॉलेज, सहारनपुर, यूपी द्वारा आयोजित। 27 जून से 3 जुलाई 2020 तक।

2020 – साइबरगॉजी पर एक सप्ताह की राष्ट्रीय स्तर की ऑनलाइन कार्यशाला में भाग लियाः शिक्षण की नई कला, अलीगढ़ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, अलीगढ़, भारत द्वारा आयोजित 26 मई से 1 जून 2020 तक आयोजित किया गया।

2020 – ऑनलाइन रिसर्च मेथडोलॉजी वर्कशॉप, आरईएसटी सोसाइटी रिसर्च इंटरनेशनल (एक स्वायत्त) आरईएसटी ट्रस्ट, भारत का निकाय) घटना तिथि : 18 अप्रैल से 20 अप्रैल 2020 (3 दिन की कार्यशाला),

2019 – ओपन हैंड आर्ट स्टूडियो में चंडीगढ़ ललित कला अकादमी द्वारा 19 वीं की टक्कर, कला ले क□र्बूसि यर सेंटर, सेक्टर – 19, चंडीगढ़, यूटी (19 से 21 नवंबर 2019 तक)

2014 – पूर्व छात्र ''सिल्वर जबुली' प्रिटं मेकिंग कार्यशाला और सगोष्ठी, ग्राफिक्स विभाग, इंदिरा कला में सगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, छत्तीसगढ़, भारत (18 से 22 अगस्त 2014)

2013 – राष्ट्रीय ललि त कला केंद्र, खारवेल नगर, भवुनेश्वर में प्रिटं मेकिंग वर्कशॉप, उड़ीसा, भारत (16 से 22 मार्च 2013)

2013 – ''विगंसऑफ एक्सप्रेशन'' ललित कला के एस. शोभा सिहं विभाग में राष्ट्रीय प्रिटं मेकिंग कार्यशाला पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, पंजाब, भारत (19–21 जनवरी 2013)

समूह शो

2018 – ''बेल्ट एंड रोड'', ट्रेसिगं द एसेन्स ऑफ आर्ट – ग्रेवर एंड वडु , पजिंन इंटरनेशनल लियाओ कला, संग्रहालय, लियाओहे, चीन में पंजिन आर्टिस्ट एसोसिएशन द्वारा एग्राफिक कला प्रदर्शनी।

2018– पंजाब कला भवन, सेक्टर– 16, चंडीगढ़, भारत में 10वां ''अनटाइटल्ड'' ग्रुप शो।

2017– 9वां ''अनटाइटल्ड'' ग्रुप शो पंजाब कला भवन, सेक्टर– 16, चंडीगढ़, भारत में

2017– राष्ट्रीय ललिंत कला केंद्र में ''डी नोवो'', अंतर्राष्ट्रीय समूह प्रदर्शनी के लिए आमंत्रित कलाकार, लखनऊ, यूपी, भारत।

2016 – पंजाब कला भवन, सेक्टर–16, चंडीगढ़, भारत में 8वां ''अनटाइटल्ड'' ग्रुप शो

2016 – ''समूह'' महान के.जी.सुब्रमण्यन की स्मतृि मे ं ग्राफिक प्रिटों की एक प्रदर्शन दरबार हॉल कला केंद्र, कोच्चि , केरल में (8 सितंबर से 12 सिंतंबर 2016)

2015 – मिनीप्रिटं गोवा, गोवा, भारत द्वारा दसूरा सस्ंकरण मिनी प्रिटं की राष्ट्रीय प्रदर्शनी।

2014 – पंजाब कला भवन, सेक्टर– 16, चंडीगढ़, भारत में 7वां ''अनटाइटल्ड'' ग्रुप शो

2014 – ''मास्टर्स– 2'' विभाग के शिक्षकों की समूह कला प्रदर्शनी, धारोहर गैलरी, केयूके, कुरुक्षेत्र मे।ं

2014 – ''मास्टर्स'' विभाग के शिक्षकों की वार्षिक कला प्रदर्शनी, संग्रहालय और आर्ट गैलरी, ललित कला विभाग में, कुरुक्षेत्र विश्ववि द्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत।

2013 – जहांगीर आर्ट गलैरी, मबुंई, भारत में इंटरनेशनल क्रिएटि व आर्ट सटेंर द्वारा ''प्रिटं एक्सचेंज प्रदर्शनी'' 24 से 30 जून 2013 तक।

2013 – ''शो स्टॉपर'': दक्षिण पूर्व से इंप्रेशन, इना कौर द्वारा क्यूरेटकि या गया ग्रुप शो, चौराहे गैलरी में, एसपीसी क्लियर व□टर कैंपस, फ्लोरि डा– 33765, यूएसए।

(प्रिंट पोर्टफोलिया एक्सचेंज प्रोजेक्ट आमंत्रण चयनित अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय एवं एक्सचेंज पोर्टफोलियो)

2016 – इंटरनेशनल क्रिएटि व आर्ट सटेंर, मबुंई, भारत में प्रिटं एक्सचेंज, सस्ंकरण का आकार– 25।

2013 – इंटरनेशनल क्रिएटि व आर्ट सटेंर, मबुंई, भारत में प्रिटं एक्सचेंज, सस्ंकरण का आकार– 25।

2010 – अतंर्राष्ट्रीय प्रिंट एक्सचेजं , दक्षिणी शीतकालीन उत्तरी ग्रीष्मकालीन, ऑस्ट्रेलिया, संस्करण का आकार – 22

2010 – इंटरनेशनल लिटलेस्ट प्रिटं एक्सचेंज, बोर्बो निस, आईएल 60914, सस्ंकरण का आकार – 50

2009 – आईपीई, इंटरनेशनल प्रिटं एक्सचेंज, ग्रीन डोर ओपन एक्सेस प्रिटं मेकिंग स्टूडियो डर्बी , यकूे , सस्ंकरण आकार – 10 .

2009 – अतंर्राष्ट्रीय प्रिटं एक्सचेंज, दक्षि णी शीतकालीन उत्तरी ग्रीष्मकालीन सक्रांति , कनाडा, सस्ंकरण का आकार – 21

2009 – इंटरनेशनल लिटलेस्ट प्रिटं एक्सचेंज, बोर्बो नि स, आईएल 60914, सस्ंकरण का आकार – 50

2009 – प्रिटं जीरो स्टूडियो, सिएटल, 98133 द्वारा इंटरनेशनल प्रिटं एक्सचेंज सस्ंकरण का आकार –15।

राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय प्रदर्शनी में भागीदारी

2020 – ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित राष्ट्रीय ऑनलाइन कला प्रदर्शनी।

2020 – सोलएंडस्पिरिट आर्ट सोसाइटी, हरि याणा द्वारा राष्ट्रीय ऑनलाइन कला प्रदर्शनी के लिए प्रशंसा प्रमाण पत्र।

2017 – इंडियन एकेडमी ऑफ फाइन आर्ट्स, अमृतसर, पंजाब, भारत द्वारा कला की 83वीं अखि ल भारतीय प्रदर्शनी।

2017 – यशस्विनी फाउंडेशन, भोपाल, म.प्र., भारत द्वारा मि नी–आर्टवर्क की फिनेक्स्ट पुरस्कार और राष्ट्रीय प्रदर्शनी

2017 – सीमा कला पुरस्कार, सीमा गैलरी, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत द्वारा

2017 – जिले में गीता जयंती महोत्सव में भाग लिया। सोनीपत (8 वें – 10 दिसंबर 2017) हरियाणा, भारत

2017 – इंडियन एकेडमी अ□फ फाइन आर्ट्स, अमृतसर द्वारा 82वीं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी मे ं भाग लिया, इंडिया।

2015 – दृश्य कला द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कला प्रदर्शनीः ड्राइंग और पेंटिंग विभाग, दिगंबर जैन कॉलेज, बड़ौत (बागपत) यू.पी.

2015 – विरसा विहार सोसाइटी, टेलर रोड, अमृतसर, पंजाब द्वारा कला की पहली अखिल भारतीय प्रदर्शनी।

संग्रह

1. मप्र के शिक्षा मंत्री 1996.
2. ललित कला केद्रं भुवनशे वर, भारत।
3. एस.सी.जेड.सी.सी. नागपुर, भारत।
4. कला भवन, विश्वभारती, शांति निकेतन, भारत।
5. नोकिया मोबाइल फोन कंपनी, नई दिल्ली और सिगांपरु ।
6. नेहरू आर्ट गैलरीभि लाई, छत्तीसगढ़, भारत।
7. पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब) भारत।
8. कलावर्तन्यास, उज्जैन (म.प्र.) भारत।
9. चंडीगढ़ ललित कला अकादमी, चंडीगढ़, भारत।
10. उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, कला ग्राम, चंडीगढ़, भारत।
11. बाल भवन, पंचकुला, हरियाणा, भारत।

12. ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, भारत।
13. जिंदल स्टील ग्रुप, नई दिल्ली, भारत।
14. आर्ट हेरिटेज गैलरी, नई दिल्ली, भारत।
15. आर्ट फोलियो, चंडीगढ़, भारत।
16. ए.आई.एफ.ए.सी.एस., नई दिल्ली, भारत।
17. सरकारी संग्रहालय और आर्ट गैलरी, चंडीगढ़, भारत।
18. गैलरी रासा, कलकत्ता, (पश्चिम बंगाल), भारत
19. Gradska.GalerijaUzice & UZICE की सिटी गैलरी

तृतीय अध्याय

राकेश बानी का कलात्मक वर्णन

भारत में कला सत्यम् शिवम् एवं सुंदरम् के दार्शनिक अवधारणा में सन्निहित रही है। नृत्य संगीत और साहित्य की तरह कला भी सर्वशक्तिमान को समर्पित एक चित्रात्मक विधि है।

कलाकार भूतकाल और भविष्य को सोचता हुआ वर्तमान में रहकर अपनी कृति को जन्म देता है। उसे साकार रूप प्रदान करता है। इस प्रकार स्मृतियों में भूतकाल का अंश तो रहता ही है, साथ–साथ भविष्य की छवियां का भी अंश देखने को मिलता है। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है, जहां मनुष्य अपने अस्तित्व को अगरता प्रदान करने का प्रयास किया और इस ग्रह पर विभिन्न विधियों से स्वयं को चिन्हित करना चाहा। इसी तरह राकेश बानी भी समकालीन कलाकार हैं। यह भी अपनी कलाकृतियों के माध्यम से अपनी भावनाओं को दर्शाते हैं। जिस प्रकार एक योगी, योग से ईश्वर को प्राप्त करता है, उसी प्रकार एक कलाकार अपनी कलाकृतियों के माध्यम से उस अमरत्व को प्राप्त करता है।

राकेश बानी ने अनेक माध्यमों में काम किया है। जैसे– प्रिंटमेकिंग, पेंटिंग, मूर्तिकला इत्यादि। लेकिन अधिक काम वह प्रिंटमेकिंग में ही करते हैं। विषय के आधार पर वह अपने माध्यम का चयन करते हैं, जिससे मुझे पता चला कि माध्यमों की परणता का कितना अत्यधिक ज्ञान है इन्हें, और भी एक अच्छे कलाकार को यह ज्ञान होना भी बहुत आवश्यक है। जिससे कि उसकी कार्य कार्यशैली निखर कर आती हैं।

राकेश बानी ने अपने चित्रों में मानव संवेदनाओं को दर्शाया है। वह अपने अत्यधिक काम फिग्यरटिव ही करते हैं। वह अपना ज्यादा काम एचिंग माध्यम में ही करते हैं। राकेश बानी का काम बहुत ही परिकल्पना से भरा होता हैं।

उनका Metamorphosis नामक प्रिंट बहुत ही काबीले तारीफ है। राकेश बानी की यह विचारधारा भी रहती है कि प्रत्येक व्यक्ति मेरे कार्य को अपनी नजर से देखें, जो कि मेरी नजर से, जिस के कारण मुझे भी एक नये अनुभव की अनुभूति हो और मेरा अनुभव और प्रभावशाली बन जाए। इस प्रकार राकेश बानी ने अपने कार्यों, विषयों को भिन्न–भिन्न भागों में दिखाने का प्रयास किया है। उन्होंने ज्यादातर अपने कामों में मानव संवेदनाओं को दर्शाया हैं। वह चाहे किसी भी माध्यम में किया हो।

विशेष माध्यमः–

छापा कला के विभिन्न माध्यमों में राकेश बानी अपने छापा चित्रों में मानव संवेदनाओं का चित्रण करने में कार्यशील हैं। उन्होंने ग्राफिक की सभी विधाओं में काम किया है, जिसमें उन्होंनेः–

1. काष्ठ उत्कीर्णन
2. लीनो उत्कीर्णन

3. लिथोग्राफी

4. इटेंलियो आदि में कार्य किया।

अगर हम राकेश बानी के कामों पर गहरी दृष्टि डालते हैं तो हम पाते हैं कि उन्होंने अपने जीवन के अलग–अलग पड़ाव में उन्होंने अलग–अलग विषयों में काम किया है। वह छापा कला के सभी माध्यमों में काम करते हैं। लेकिन हाल के वर्षों में वह एचिंग में काम कर रहे हैं। इंटैग्लियों उनका एक मनपसदं माध्यम है। इस माध्यम में यह अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में सक्रिय रहते हैं। इंटैग्लियों माध्यम में उनकी रेखाएं काफी शक्तिशाली और लयात्मक हैं। वह एक ही प्लेट पर कई रंगों का प्रयोग करते हैं। इनके काम बहुत ही अलग नजर आते हैं। यह बताते हैं कि उन्होंने काष्ठ उत्कीर्णन, इंटैग्लियो, लिथोग्राफी सब करना पसदं है। अपनी शिक्षा के दौरान उन्होनें बहुत से माध्यमों में काम किया है।

बी.एफ.ए के दौरान उन्होंने बहुत से माध्यमों में काम किया है। तो वह अपने काम को बहुत लगन से करते थे और कई–कई घंटों लगातार काम करते थे। उनके लिए सभी माध्यम बहुत ही प्रेरित रहे। शुरुआती समय में वह लिथोग्राफी, इंटैग्लियो जैसे सभी माध्यमों में काम करते थे। उनकी इनकी शिक्षा के दौरान ही इनकी रूचि बड़े–बड़े काम करने में थी। अपनी शिक्षा के दौरान ही इनका काम करने में उत्साह आया। वह अपने काम में मानव संवेदनाओं को दर्शाते थे और उनका अधिकतर काम उसी विषय पर है।

इंटैग्लियो :–

शुरुआती समय में उन्होंने अनेकों कार्य किये। लेकिन इंटैग्लियो माध्यम उनका मनपसंद है। वह अपना अधिक काम उसी माध्यम में करते हैं, क्योंकि उसमें जो काम करते हैं उसमें हेरफेर की बहुत गुंजाइश होती हैं। वैसे तो ग्राफिक के सभी माध्यम ही मुझे पसंद है, लेकिन हर कलाकार के कुछ माध्यम मनपसंद रहते हैं।

इंटैग्लियों में हम अपनी इच्छा अनुसार छोटे–बड़े हर तरीके का काम कर सकते हैं। लिथोग्राफी भी एक अच्छा माध्यम है, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि उस माध्यम में कुछ सीमाएं हैं। मैंने अपने कला यात्रा में चंडीगढ़ में लिथोग्राफी पर बहुत काम किया है।

लेकिन हाल के वर्षों में इंटैग्लियो माध्यम मुझे करना मुझे करना पसदं है। एचिंग मेरा मनपसंद माध्यम है, क्योंकि यह ऐसा माध्यम है जिसमें हम अपनी इच्छा अनुसार रुक–रुक कर भी काम कर सकते हैं और मैंने ज्यादातर और अपने बड़े–बड़े काम एचिंग में ही किए हैं। मैं अपना विशेष माध्यम एचिंग को ही मानता हूं।

प्रेरणा स्त्रोतः—

हर व्यक्ति के जीवन में कोई ना कोई प्रेरणा स्त्रोत अवश्य होता है। जैसे ही राकेश बानी के जीवन में प्रेरणा स्त्रोत उनके अध्यापक व उनके कुछ मित्र रहे। आरंभ में वह जब छात्र थे, तब किसी भी तरह की ज्यादा सुविधा नहीं थी। उस समय में कोई भी सामाजिक मीडिया नहीं हुआ करता था। ना ही किसी मोबाइल फोन की सुविधा होती थी, केवल उस समय सूची पत्र के द्वारा सूचना मिलती थी।

राकेश बानी बताते हैं कि उनकी क□लेज शिक्षा के दौरान उन्हें भारत भवन में एक सूची पत्र मिला जो कि उनके विरिष्ठ मित्र लेकर आए थे। तब उन्होंने अपनी पहली बार उसे देखा और उनको ऐसा लगा कि यह हमारे पास भी होना चाहिए था। उस सूची पत्र की सहायता से वह भारतीय व अंतरराष्ट्रीय कलाकारों के काम देखा करते थे। राकेश बानी के अंदर छुपे कलाकार को उनके विरिष्ठ मित्रों और शिक्षकों ने खोज निकाला। जिसकी वजह से आज उन्हें राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान हासिल हुई। वह अपने शिक्षक का जिक्र हमेशा करते हैं। जिन के सहयोग से वह आज यहां तक हैं।

वह श्री वि नाग दास जी को अपना गुरु मानते हैं, जो कि एक प्रसिद्ध कलाकार हैं। इन्हीं के कारण बानी एक अच्छे कलाकार के रूप में उभर कर आए। राकेश बानी के शिक्षक उनके कामों को देख कर बहुत प्रसन्न होते थे, क्योंकि वह अपने काम बहुत लगन व धैर्य के साथ करते थे। मैगजीन की सहायता से उन्हें बड़े—बड़े कलाकारों के बारे में जानने और उनके काम देखने को मिले। जैसे की— अनुपम सूद, सोमनाथ होरे, ज्योति भट्ट। यह इन कलाकारों से बहुत प्रसन्न थे।

राकेश बानी फिगरटिव काम करना ज्यादा पसंद करते हैं। उन्हें अनुपम सूद का काम काफी पसंद था। शिक्षा के दौरान वह उनके कामों को देख कर बहुत कुछ सीखते थे। ऐसे ही इनके कार्यों की प्रक्रिया जारी रही। वह अपने वरिष्ठ मित्रों से छापा कला के अनेक—अनेक माध्यम सीखते रहते थे। राकेश बानी ने वास्तव में बहुत कुछ सीखा। वह उन अनुभवों को कभी नहीं भूल सकते। उनके शिक्षक उन्हें हमेशा याद रहते हैं। उनके शिक्षकों की कड़ी में उनको अनुपम सूद, ज्योति भट्ट आदि कलाकारों का सहयोग प्राप्त हुआ। महान कलाकार नाम की एक किताब आती थी, जिनमें कई कलाकारों का नाम देखने को मिलता था। उन्हें सबसे ज्यादा प्रेरणा अपने शिक्षकों व अनेक तरह के सूची पत्र देखकर मिली। इन्हें ज्योति भट्ट के काम अत्यधिक पसंद थे। ज्योति भट्ट ने अपने हर एक माध्यम में लंबी यात्रा तय की है। उन्होनें छापा कला में एक नई नई सामग्री व माध्यमों का प्रयोग किया है और अनुपम सूद और ज्योति भट्ट जैसे कलाकारों का प्रभाव राकेश बानी पर साफ देखा जाता है। विश्वविद्यालय में होने वाली वार्षिक कला गतिविधियों के लिए अपने गुरुओं की सलाह लेते रहते थे। अब के समय में राकेश बानी युवा कलाकारों के लिए खुद एक प्रेरणा के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। बानी के अनुसार इन सभी कलाकारों का उनके जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जिसका वर्णन उन्होंने अपने जीवन के प्रेरे णा स्त्रोत के रूप में किया है।

चतुर्थ अध्याय

समकालीन भारतीय छापाकला में राकेश बानी का योगदान

समकालीन भारतीय छापाकला मे ं राकेश बानी ने बहुत बढ़–चढ़कर योगदान दिया है। राकेश बनी ने छापा कला को बहुत ही गहनता से लिया है। राकेश बानी में वैसे तो भारत की कई कलाओं में योगदान दिया है, जैसे– छापाकला, चित्रकला आदि पर राकेश बानी ने बहुत अधिक योगदान दिया है। राकेश बानी भारतीय कला को विदेश तक लेकर गए और वहां पर अनेक प्रदर्शनीयां की और भारत कला को विदेश में फैलाया। इन्होंने विदेश की कई यात्राएं की। वे विदेश जाते थे और उनकी कार्यशाला में जाकर काम करते थे और उनका कार्य भी देखते थे।

राकेश बानी के योगदान से मानव संवेदनाओं से विचारों की अभिव्यक्ति और सामाजिकता देखने को मिलती है। वह चाहते हैं कि कला का सही रूप तैयार हो और समाज के आगे प्रस्तुत हो, ताकि समाज उसका पूरा आनंद ले सके। इन्होंने कई राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनीयों में भाग लिया।

राकेश बानी ने इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय से अपनी डिग्री की तथा कुछ महीने वहां उन्होंने अध्यापक के रूप में नौकरी भी की, जिसमें उन्होंने कार्य सीखा। जो इनके शिक्षक रहे उनके निर्देशन में अध्यापक बनने का मौका मिला। जब वह 2001 में चंडीगढ़ आए, वहां भी इन्होंने चंडीगढ़ आर्ट कॉलेज में एक अध्यापक के रूप में 6 साल काम किया। यह भी इनका एक योगदान रहा। अभी वह 15 साल से कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं। इस यात्रा में इन्होंने बहुत से छात्रों को पढ़ाया और कुछ छात्र ऐसे भी हैं जो उसी विश्वविद्यालय में अध्यापक का कार्यभार संभाल रहे हैं। यह अपना इसे एक प्रमुख योगदान मानते हैं।

राकेश बानी एक अच्छे शिक्षक हैं। वह अपनी शिक्षा का प्रसार कर रहे हैं, जिससे बच्चों का भविष्य अच्छा बन रहा है। वह हमेशा अपने छात्रों की मदद के लिए तैयार रहते हैं और अच्छे से सिखाते हैं। इन्होंने बहुत से एकल और समूह शो भी किए हैं। अपने कामों को समाज के सामने रखा, जिससे सभी ने पसंद किया और उनके कार्य को समझा और अब के समय में उनके कुछ छात्र भी समूह शो करते हैं और आने वाली नई पीढ़ी को आगे बढ़ने का मौका प्रदान करते हैं। जिससे उनका उत्साह बढ़ता है। राकेश बानी ने अपने अच्छे बुरे वक्त के बीच में एक कलाकार निरंतर बिना रूके अपने कार्य को अहम मानते हुए नए आयाम की कृतियों का निर्माण कर रहे हैं। राकेश बनी 25 वर्ष से इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। नए नए माध्यमों को अपने काम मे ं प्रयोग किया और इनका छापाकला में प्रमुख योगदान माना जाता है।इनके काम फिगरेटिव। इसी विषय के जरिए उन्होंने समाज में अपनी पहचान बनाई और उन्हें देश–विदेश के कई कलाकार जानते हैं। उनके काम से उनकी पहचान होती है। राकेश बानी ने कई कला संस्थाओं के सदस्य बन अपना पूरा योगदान दिया है। उन्होंने छापा कला में एक अहम भूमिका निभा उसे एक नया रूप प्रदान किया है। अपने काम में फिगरेटिव इन चित्रो ं को दर्शाया और समकालीन भारतीय छापा कला को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैलाया।

पंचम अध्याय

साक्षात्कार

राकेश बानी एक अच्छे कलाकार होने के साथ—साथ एक मददगार और अच्छे इंसान भी हैं। प्रस्तुत लघुशोध लिखने में राकेश बानी ने मेरा पूर्ण सहयोग दिया है। उनके सहयोग से मेरा यह लघुशोध लिखने का प्रयास सफल रहा है। मैं उनकी बहुत आभारी हूं क्योंकि उन्होंने मेरे इस कार्य के लिए अपना कीमती समय मुझे प्रदान किया व मुझे हर प्रकार की सहायता प्रदान की। उन्होंने मेरे प्रश्नों का भली—भांति में सरलता से उत्तर दिया।

प्र01. आपकी नजर में कला क्या है ?

उत्तरः— कला जिंदगी जीने का तरीका है। कला मेरी नजर में वह है जो अपने भावो ं को व्यक्त करने में विधि अपनाते हैं। वह कला है जिस चीज से हमें खुशी मिलती है। अपने आप को समझना, अपने आपको जानने की प्रक्रिया ही कला है।

प्र02. छापा कला की परिभाषा आपके शब्दों में क्या है? एक अच्छा प्रिटं कैसा होना चाहिए?

उत्तरः— किसी भी चित्र को जब दूसरे कागज पर स्थानांतरित किया जाता है, उसे प्रिंट कहा जाता है। आजकल डिजिटल माध्यम भी आ गए हैं। मैं अपने खुद के काम में इन सारी चीजों का प्रयोग करता हूं, कि ऐसा होना चाहिए। बर्निश, लाइन, इतना ही इंच होना चाहिए। यह सारी चीजें मैं सोचकर करता हूं। लेकिन सबका अपना तरीका होता है। अगर बात एक अच्छे प्रिंट की हो तो वह प्रिंट में कागज से उसकी प्रिंटिंग तक सभी चीजें एकदम सही होनी चाहिए। प्रिटं हमेशा धैर्य मे ं रहकर करना चाहिए।

प्र03. क्या आप ने छापा कला के अलावा किसी अन्य माध्यम में काम किया है ?

उत्तरः— यूं तो मेरी हमेशा से ही छापा कला में विशेष रूचि रही है। मेरा शौक पेंटिंग और मूर्तिकला में भी काफी काम किया है। मैं छापा कला के अलावा भी पेंटिंग और अन्य माध्यमो ं में काम किया है, और मुझे आगे भी बहुत काम करना है। मैं वर्तमान समय में भी छापा कला के साथ—साथ इन माध्यम द्वारा भी चित्रण करता रहता हूं। मैंने छापा चित्रण में विशेषकर इटेग्लियों का माध्यम का ज्यादा प्रयोग किया है।

प्र04. आप कला को अपने शुरुआती समय और अब के समय में कैसे देखते हैं ?

उत्तरः— मुझे सबसे बड़ा बदलाव ड्राइंग का लगा। हमारी उम्र के हिसाब से हमारा दिमाग तैयार होता है। शुरू में यह सोचता था कि ड्राइंग सुंदर दिखाई दे, परंतु अपनी कॉलेज शिक्षा के दौरान मैंने यह देखा कि काम में फीलिंग ज्यादा महत्वपूर्ण है। अपनी आयु के साथ साथ ही बदलाव आते रहते हैं। एक बदलाव यह भी होता है कि हर तरह का उतार—चढ़ाव आता है। जिसमे ं हम काफी ऊपर भी जाते हैं और नीच` भी आते हैं। समय के साथ—साथ अपने काम में बदलाव लाना काफी आवश्यक हो गया है।

प्र05. आपका विशेष मनपसंद माध्यम क्या है ?

उत्तरः— वैसे तो मुझे छापा कला के सभी ही माध्यम पसंद है लेकिन मुझे इटेग्लियों में काम करना पसंद है। एचिंग मेरा एक मनपसंद माध्यम है। जिसमे ं मुझे एक खुशी महसूस होती है। एक कारण यह भी है कि एचिंग माध्यम में काम करते समय हम कुछ समय रुक कर भी इस कार्य को शुरू कर सकते हैं।

प्र06. आप अपने कामों में रंगों में टैक्सचरों का प्रयोग किस आधार पर करते हैं ?

उत्तरः— मेरा मानना है कि किसी कलाकृति का टैक्सचर ही उसे सुंदर बनाता है। तथा इसी के कारण प्रिंट आकर्षक प्रतीत होता है। ये टेक्सचर सतह के आधार पर विभिन्न परिणामों में प्राप्त होते हैं। तरह—तरह की सामग्री के आधार पर टेक्सचर से प्राप्त किए जा सकते हैं। मेरे सभी कामों में रंगों और टेक्सचरों की एक अहम भूमिका रहती है। तथा हमें काम करने से पहले सोचना पड़ता है कि हम इस

काम में क्या टेक्सचर दे और कई बार ऐसा भी होता है कि काम करते समय अपने आप टेक्सचर उभर कर आता है। रंगों में टेक्सचर के आधार पर मैंने अपने कामों को प्रभावशाली बनाया है। पहले से ही हमें यह सोचना पड़ता है कि हम इसे कैसे करना है, और बहुत सारे टेक्सचर उसी समय भी आ जाते हैं और वह मेरे काम के साथ जाता भी है।

प्र07. आपके छापा चित्रों की विषय वस्तु क्या है ?

उत्तरः— मेरा विषय मानवीय संवेदनाओं को लेकर है। यही मेरे चित्रों की मुख्य विषय वस्तु रही है। दैनिक जीवन में विभिन्न विषयों सामाजिक समस्याओं को मैंने अपने चित्रों में दर्शाने का प्रयास किया है। मैंने अपने चित्रों को भिन्न—भिन्न मानवकृतियों द्वारा प्रदर्शित किया है। मैंने मानव के जीवन के विभिन्न पहलुओं को अपने छापा चित्रण में दर्शाने का प्रयास किया है। हमारे दिमाग में हमेशा एक सोच चलती रहती है। अगर बात नहीं भी कर रहे हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि कुछ सोच नहीं रहे। हमारे दिमाग में हर समय कुछ ना कुछ चलता रहता है। अगर यह होता, तो तब क्या होता, सामाजिक हिंसा तथा वर्तमान समय में महिलाओं पर होने वाले दुर्व्यवहारों को लकेर भी कई छापा चित्र बनाए हैं। मनुश्य के विभिन्न संबंधों को भी मैंने अपने छापा चित्रों में प्रस्तुत किया है।

प्र08. अभी तक छापा कला के क्षेत्र में आपने जितना भी काम किया है उस में से सबसे मनपसंद काम कौन सा रहा ?

उत्तरः— जैसा कि सबको पता ही है कि किसी भी कलाकार का मनपसंद काम वह होता है जिसमें उसे प्रशंसा मिलती है। मेरी मेरे लिए सभी ही काम मनपसंद रहे हैं। ऐसा नहीं है कि सभी काम सभी को ही पसंद आए। कुछ मेरे काम ऐसे भी हैं जो मुझे पसंद आए, लेकिन दूसरों को नहीं अच्छे लगे। इसलिए मेरा मानना यही है कि जिस काम में ज्यादा वाह—वाही मिले वही काम एक कलाकार का मनपसंद बन जाता है। लेकिन एक मेरा बड़ा काम है Metamorphosis जो कि मुझे मनपसंद कामों में से एक है। वह मुझे बहुत अधिक पसंद है।

प्र09. छापा कला के अलावा आप की कौन—कौन सी कलाओं में रुचि हैं ?

उत्तरः— मैंने छापा कला के लगभग सभी माध्यमों में काम किया है और उसी में मेरी विशेष रूचि भी है। लेकिन अगर बात छापा कला के अलावा की जाए तो मुझे मूर्तिकार का काम करना अधिक पसंद है। मेरा मन है कि मैं आगे भी यह काम करूं, क्योंकि अभी तक के सफर मे ं मैंने कुछ इसमें बड़ा काम नहीं किया है। लेकिन मुझे मूर्तिकार के काम में अपनी एक विशेष रुचि दिखाई देती है।

प्र010. एक सफल कलाकार बनने के लिए किन किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है ?

उत्तरः— एक सफल कलाकार बनने के लिए सभी को कोई ना कोई कठिनाइयां अवश्य आती हैं। अगर बात की जाए तो शिक्षा के दौरान हमें पैसे की बहुत तंगी रहती थी। जिसके कारण बहुत सी कठिनाइयां आई, लेकिन कई जगह ऐसी होती हैं जहां आप जा नहीं पाते, क्योंकि पैसे की कमी कहीं ना कहीं अवश्य रहती है। विदेश यात्रा करने से पहले सोचना पड़ता था। मुझे मेरे जीवन में क□लेज की शिक्षा के दौरान बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बहुत से कलाकार ऐसे हैं जो पैसे की वजह से कई देशों में प्रदर्शनीयों में नहीं जा पा रहे।

प्र011. आपको कला के क्षेत्र में किस कलाकार का सहयोग मिला ?

उत्तरः— मूल रूप से कॉलेज के जो अध्यापक हैं हम सभी से कुछ ना कुछ उन से सीखते हैं। अगर गुरु की बात की जाए तो सिर्फ एक ही का सबसे ज्यादा सहयोग रहा। वह मेरे अध्यापक विनोद दास जी हैं। वह एक बहुत अच्छे छापा कार हैं। एक अध्यापक भी आपको तभी सहयोग देता है जब उन्हें यह प्रतीत हो कि यह बच्चा भी कुछ कर सकता है। एक शिक्षक उसी को ही सहयोग करता है, जो उसे लगन से काम करता हुआ दिखे। उसी प्रकार हमारे भी शिक्षक हमसे खुश ही रहे हैं। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा। उसने अभी भी मेरी काफी बातचीत होती रहती है, काम को लेकर चर्चा चलती ही रहती है और यह बहुत कम होता है कि आपके शिक्षक आपको आज भी सहयोग कर रहे हैं। और मैं उनमें से एक हूं।

प्र012. प्राचीन छापा कला और समकालीन छापा कला में क्या बदलाव आए?

उत्तरः— अगर हम प्राचीन छापा कला की बात करें तो उस समय काम करने की कुछ सीमाएं थी और इतने अच्छे पेपर और इंक नहीं मिलती थी। फिर भी कुछ कलाकारों ने बहुत ही मास्टर काम किए हैं और आज के कलाकार उन्हीं के कामों से प्रभावित हैं। बस यह कह सकते हैं कि उनके काम आज भी जिंदा है। सभी बहुत पसंद करते हैं और समकालीन छापा कार उन्हीं के कामों को कर रहे हैं। बस उन में कुछ बदलाव देखने को मिलते हैं। तब कहीं माध्यमों और मशीनों की सुविधा कम थी।

प्र013. आपने अपनी कला यात्रा में भारतीय छापा कला और अंतरराष्ट्रीय छापा कला में क्या अंतर पाया?

उत्तरः— कला यात्रा के दौरान मैंने भारतीय और अंतरराष्ट्रीय छापा कला में यह अंतर पाया कि हमारे भारत में प्रिंट मेकिंग को ज्यादा लोग नहीं जानते। प्रिंट की मार्केट बहुत कम है। अगर अंतर किया जाए तो भारत में लोग सिर्फ इसे पढ़ाई तक ही सीमित रखते हैं और बाद में इसे छोड़ देते हैं। लेकिन अंतरराष्ट्रीय कलाकारों ने यह है कि वह इसे बहुत ही लगन के साथ लंबे समय तक करते हैं और इस काम को छोड़ते नहीं। यूरोप, चीन जैसी कई देशों में प्रिंट मेकिंग की बहुत ही मान्यता है।

प्र014. भारत के अलावा आपने विभिन्न देशों में काम किया इनमें से किस देश ने आपको ज्यादा प्रभावित किया ?

उत्तरः— मैंने भारत के अलावा बहुत से देशों में कार्य किया जिसमें से मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित जापान ने किया। वहां के लोग बहुत ही साधारण हैं और सब की बहुत सहायता करते हैं। भारत में छापा कला में प्रयुक्त होने वाली सामग्री सरलता के साथ उपलब्ध हो जाती है, लेकिन बाहरी देशों में बहुत सी बड़ी—बड़ी मशीनें हैं। वहां बहुत सी प्रदर्शनी भी होती है। वहां के लोगों को छापा कला का एक विशेष ज्ञान है, जिस कारण वहां के लोगों में जागरूकता है। जापान में मैंने 3 महीने व्यतीत करे जहां से मैंने बहुत कुछ सीखा और मुझे मेरे बहुत से मित्रों का भी सहयोग मिला और मेरे लिए जापान की कला यात्रा बहुत प्रभावित रही।

प्र015. कला क्षेत्र को लेकर आप की क्या उम्मीद है और आप नई पीढ़ी के कलाकारो ं को क्या संदेश देना चाहते हैं ?

उत्तरः— मैं बस यही कहना चाहता हूं कि अधिक से अधिक कार्य करो, जो आपको खुशी दे, वही कार्य करो और अपनी कला को अधिक बढ़ावा बढ़ावा दो। कला आनंद का एक अनुभव है, क्योंकि कला एक ऐसा माध्यम है जो आपको आम जिंदगी से अलग लेकर जाता है और प्रिंट मेकिंग एक ऐसा माध्यम है जिसको काम करने में आनंद प्राप्त होता है। आपको काम लगातार करना चाहिए और नई पीढ़ी को मैं यह संदेश देना चाहता हूं कि हमारे देश में बहुत सी ऐसी जगह हैं जिन्हें प्रिंट मेकिंग के बारे में जागरूकता नहीं है। एक अच्छी कला करने के लिए हमें ज्यादा पैसे की जरूरत नहीं होती। हमें कला में कभी भी फंसना नहीं चाहिए। कला एक आजादी है। कला को बनाने के लिए वातावरण बहुत महत्वपूर्ण है। अगर चारों तरफ एक अच्छा वातावरण हो तो आप एक अच्छी कला को जन्म देंगे।

निष्कर्ष

भारतीय कला जिसे आधुनिक के नाम से संबोधित करते हैं। आधुनिक कला भारतीय में कला क्षेत्र में नई पीढ़ी द्वारा प्रस्तुत क्रांति का एक स्तर है। समय के साथ यह कला सारे देश के नवयुवक कलाकार वर्गों में आ चुकी है। यह बात सही है कि कला के क्षेत्र में जो क्रांति आई है, उससे कलाकृतियां आमजन के घरों तक पहुंच पाए हैं।

इस शोध के अंतर्गत राकेश बानी के जीवन के महत्वपूर्ण पक्षों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है। राकेश बानी ऐसे कलाकार हैं, जो कला जगत में निरंतर एक नया आयाम स्थापित कर रहे हैं। कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान बनाने के बावजूद भी वे समय, सादगी से भरपूर हैं। वह ऐसे अध्यापक हैं, जो अपने आसपास के समाज में मानव संवेदनाओं का एक सच्चा निरूपण करते हैं। उनकी छापाकृतियों को देखकर व उनके विषय को उनकी भावनाओं को भली भांति समझा जा सकता है। वह अपना काम फिगरेटिव करते हैं।

उन्होंने समाज के निरंतर बदलते स्वरूप के साथ रोज नए अनुभवों व सवेंदनाओं के बीच से उनकी कला सदैव मौजूद रही है। उनके कार्यों में रेखा, रंगों के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक ऐसा कलाकार जिसने मात्र अपनी अभिव्यक्ति को नहीं बल्कि, कला जगत को एक नया आयाम दिया। अपने इस समकालीन भारतीय छापाकार राकेश बानी के जीवन व कार्यों का पूरी तन्मयता व सजगता के साथ अध्ययन किया है। जिसमें स्वयं छापा कार राकेश बानी द्वारा दिया गया समय मेरे लिए अनमोल धरोहर है, जिसके सरल स्वभाव एवं स्नेह व्यक्तित्व के कारण मेरा यह अध्ययन पूर्ण हुआ है।

(सन्दर्भ ग्रन्थ सूची) – Books

1. डॉ0. सुनील कुमार, छापाचित्र कला आदि से आधुनिक काल तक (दिल्ली : भारतीय कला प्रकाशन, 2000)
2. डॉ0. ममता चतुर्वेदी समकालीन भारतीय कला (राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2016)
3. डॉ0. दवेन्द्र कुमारी, ललित कलाओं के पाठ्यक्रम पर आधारित पुस्तक , संस्करण – दिल्ली।
4. डॉ0. ममता चतुर्वेदी, समकालीन भारतीय कला (जयपुर) राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 2008
5. नरेन्द्र सिंह यादव, ग्राफिक डिजाईन (जयपुर) राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 2006

Website

1. utpakash basu, block printing/
2. https://pace prints.com/techniques
3. https://www.britanica.com/Technology/linocut
4. https://www.metmuseum.org/material and techniques/ print making/ engraving
5. https://www.moma.org/drypoint
6. https://www.tate.org Uk/art/mezzothint/Aquatint
7. https://historyflame.in
8. https://hindi.knowledge universe online.com /https history / bhart–Ka mudran.sanskar.php
9. https://EruinADennis, John D Jenkins, Graphic Art 1982

Magazine

1. https://www.daily Art Magazine/ Seven Indian Printmaker

Youtube

1. Art keeper 2021, Art Keeper Conversation with Rakesh Bani Interview
2. Vishwas Govind, Govind Viswas Conversation with Rakesh Bani, 2021
3. D’estate solstizio, Solstizio destate Interview to Rakesh Bani 2017

(चित्र संग्रह सूची)

शीर्षक नाम		माध्यम
1. Nature VII	**-**	**Etching & Aquatint & callography**
2. Lost Life	**-**	**Etching & Aquatint**
3. Untitled	**-**	**Etching, Aquatint Serigraphy & Embossing**
4. Digital Drawing I	**-**	**Mixed Media**
5. Image in-between mind	**-**	**Etching & Aquatint**
6. Memories	**-**	**Etching & Aquatint**
7. Untitled	**-**	**Drypoint**
8. Victory	**-**	**Etching & Aquatint**
9. Towards Eternity	**-**	**Etching & Aquatint & Embossing**
10. Towards Eternity – II	**-**	**Etching & Aquatint**
11. Tempatation & Beauty – IV	**-**	**Digital**
12. Potrait of Angle	**-**	**Engraving or Aquatint**
13. Delighting Spring	**-**	**Etching & Aquatint**
14. The Shell	**-**	**Etching & Aquatint**
15. Metamorphois	**-**	**Etching & Aquatint**
16. Creator	**-**	**Woodcut**
17. Mute Dialogue	**-**	**Etching & Aquatint**
18. Memories	**-**	**Etching & Aquatint**
19. Metamorposis	**-**	**Etching & Aquatint**
20. Mute Dialogue	**-**	**Collography**
21. Eye catcher	**-**	**Etching & Aquatint**
22. The Past recalls II	**-**	**Etching & Aquatint**
23. Metamorphosis – VII	**-**	**Etching & Aquatint**
24. Eye Catcher	**-**	**Etching & Aquatint**

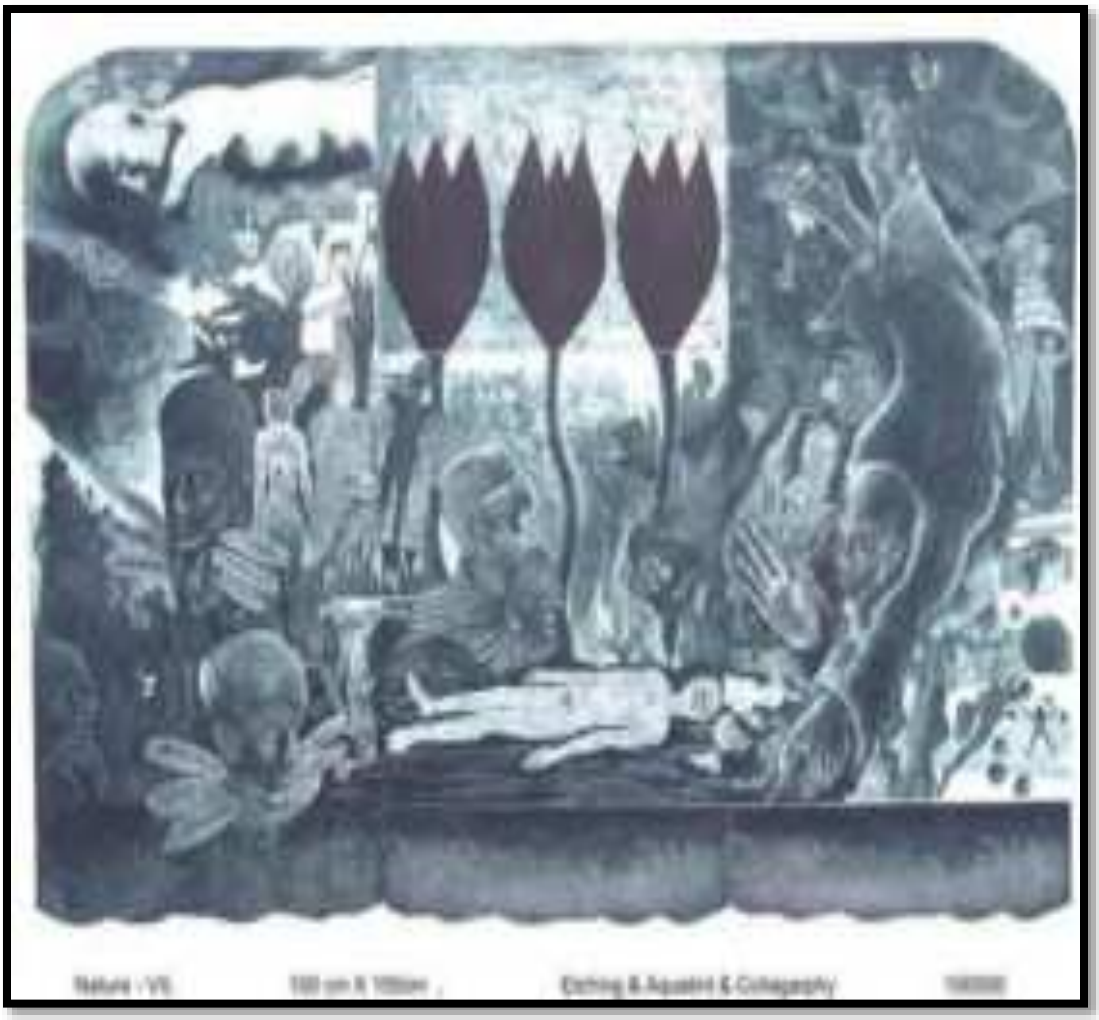

Nature VII - Etching & Aquatint & callography

Lost Life - Etching & Aquatint

Untitled - Etching, Aquatint Serigraphy & Embossing

Digital Drawing I – Mixed Media

Image inbetween mind - Etching & Aquatint

Memories - Etching & Aquatint

Untiled - Drypoint

Towards Eternity - Etching & Aquatint & Embossing

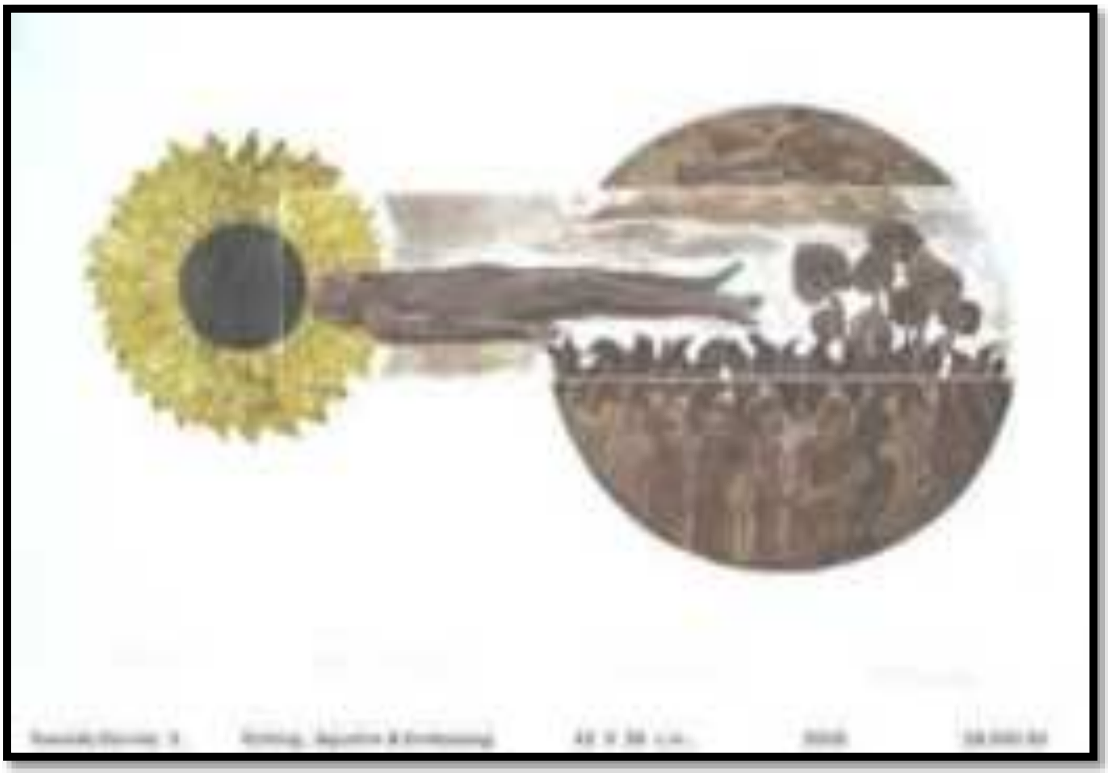

Victory - Etching & Aquatint

Towards Eternity – II - Etching & Aquatint

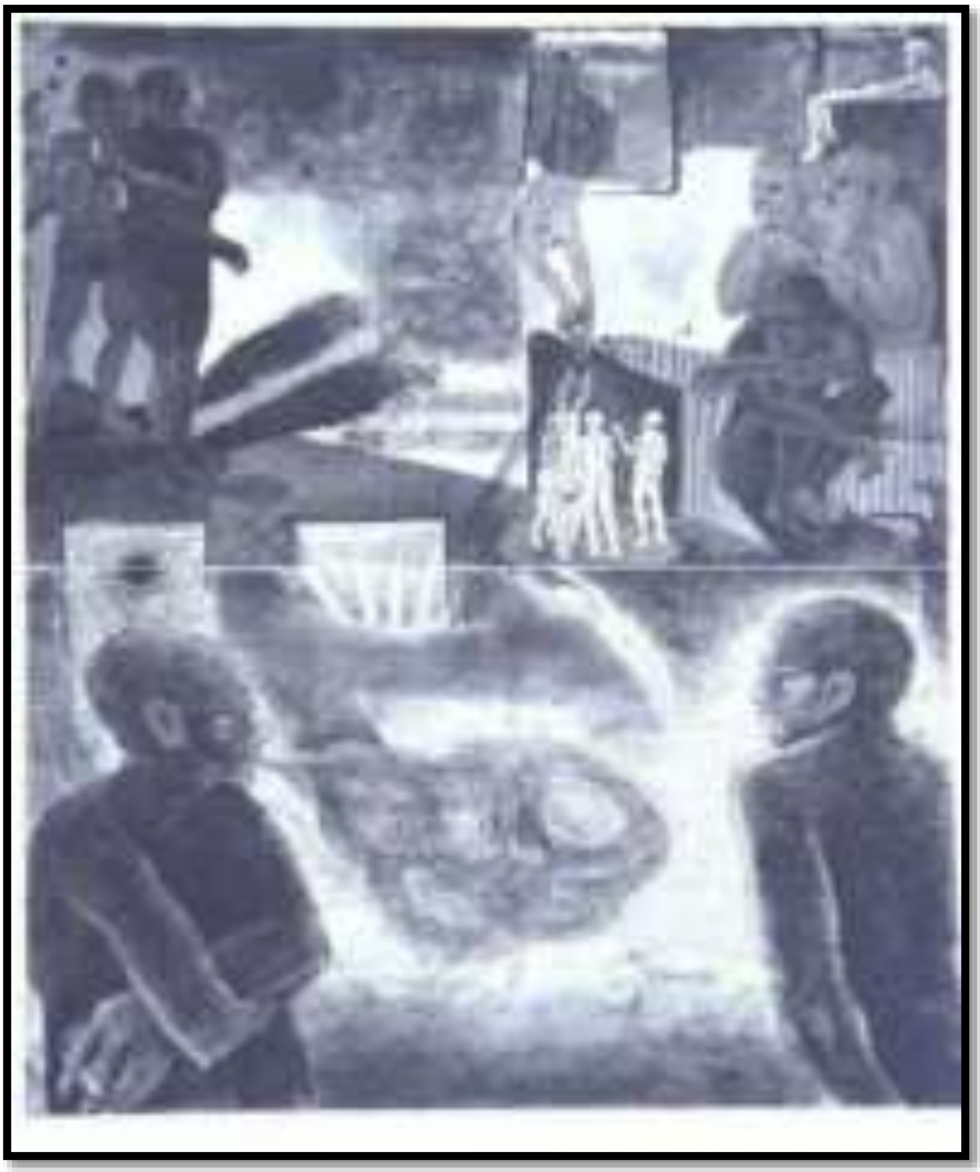

Tempatation & Beauty – IV – Digital

Portrait of Angle - Engraving or Aquatint

Delighting Spring - Etching & Aquatint

The Shell - Etching & Aquatint

Metamorphosis - Etching & Aquatint

Creator - Woodcut

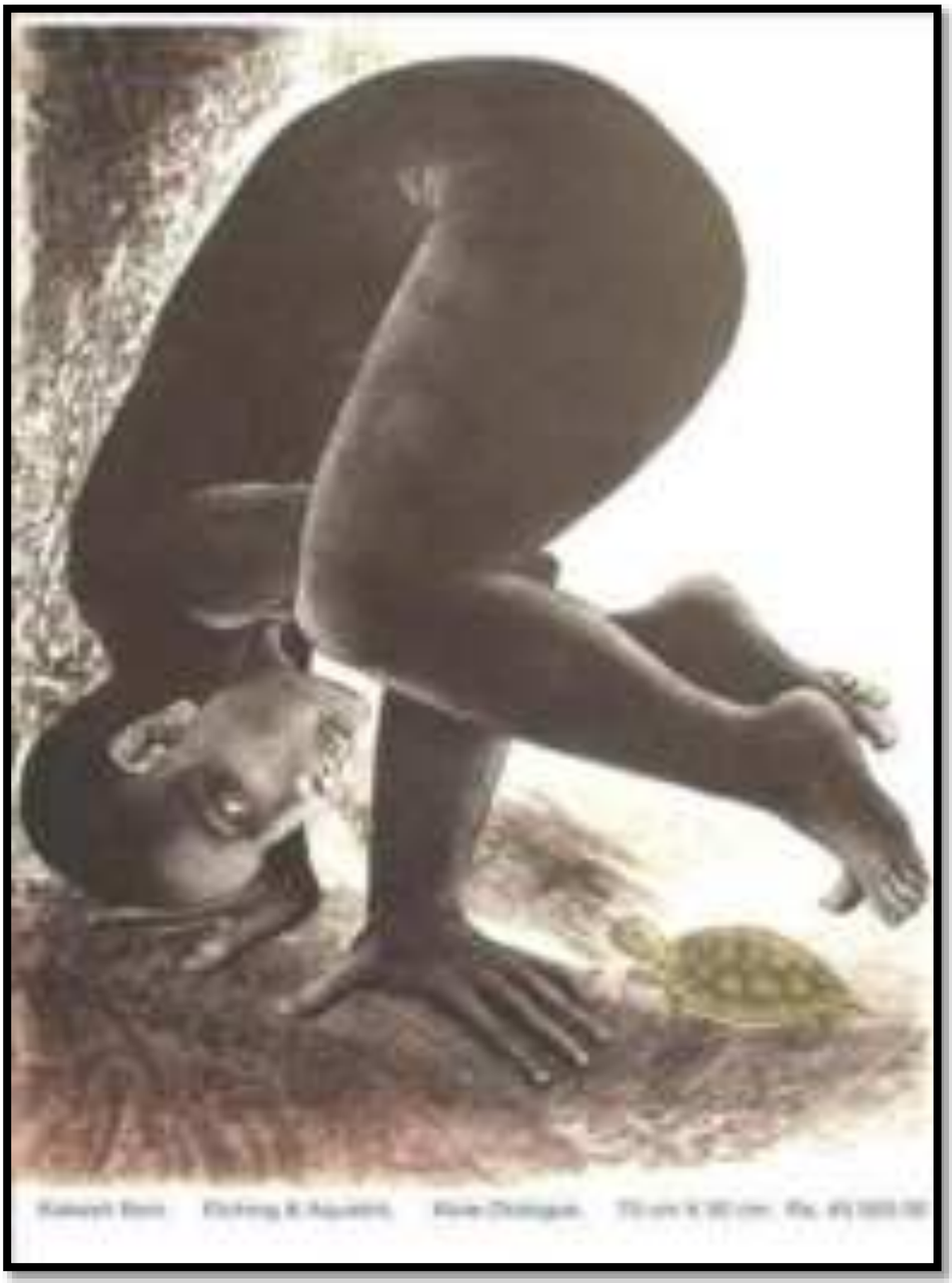

Mute Dialogue - Etching & Aquatint

Memories - Etching & Aquatint

Metamorposis - Etching & Aquatint

Mute Dialogue - Collography

Eye catcher - Etching & Aquatint

The Past Recalls II - Etching & Aquatint

Metamorphosis – VII- Etching & Aquatint

Eye Catcher - Etching & Aquatint

“प्रमोद आर्य का कला में योगदान” के संदर्भ में।

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु – शोध प्रबन्ध

विभागाध्यक्षा एवं निर्देशिका
श्रीमति संतोष
ललित कला विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा0)

शोधार्थी
अंजू देवी
स्नातकोत्तर
(अन्तिम वर्ष)

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद मारकण्ड़ा

2021–2022

श्री प्रमोद आर्य जी

ललित कला विभाग,

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद (मा0.)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ललित कला स्नातकोत्तर, (ड्राईंग एण्ड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा, अंजू देवी ने ''प्रमोद आर्य का कला में योगदान'' शीर्षक पर मेरे निर्दशन में प्रस्तुत लघु – शोध प्रबंध को पूरा किया है। इसने पूरी मेहनत और लग्न से उक्त शोध कार्य सम्पन्न किया है। इस महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य पहले नहीं किया गया है।

हम इसके उज्जवल भविष्य एवं सफल जीवन की कामना करते है।

दिनांकः **श्रीमती संतोष एसो. प्रोफेसर**

प्रमाण पत्र

मैं अंजू देवी, यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध ''प्रमोद आर्य का कला में योगदान'' विषय मेरे स्वयं के प्रयास से किया गया है। मैनें इसे पूरी मेहनत और लग्न से सम्पन्न किया है। यह अप्रकाशित लघु शोध है।

निर्देशिका	**शोधार्थी**
श्रीमती संतोष एसो. प्रोफेसर	**अंजू देवी**

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद (मा0)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ललित कला स्नातकोत्तर, (ड्राईग एण्ड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा, अंजू देवी ने ''प्रमोद आर्य का कला में योगदान'' शीर्षक पर लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबंध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ। इसने पूरी मेहनत और लग्न से यह लघु–शोध कार्य सम्पन्न किया है।

हम इसके उज्जवल भविष्य एवं सफल जीवन की कामना करते है।

दिनांकः................

प्राचार्या

डॉ0 श्रीमति सुनीता पाहवा

विषयानुक्रमणिका

आभार	**पृष्ठ संख्या**
प्राक्कथन	
प्रथम अध्यायः	
– आधुनिक चित्रकला का इतिहास	01 – 11
द्वितीय अध्याय :	
– जीवन परिचय	12 – 20
– प्रमोद आर्य की कला यात्रा	
– प्रदर्शनी एवं पुरस्कार	
तृतीय अध्यायः	
– प्रमोद आर्य के कलात्मक कार्य	21 – 28
चतुर्थ अध्यायः	
– प्रमोद आर्य की कला शैली	29 – 33
– चित्रों में संतुलन	
– अमूर्त कला	
– विषय एंव रंग	
पंचम अध्याय :	
– प्रमोद आर्य से साक्षात्कार	34 – 38
– उपसंहार	39 – 40
– संदभ ग्रंथ सूची	41 – 41
– चित्र संग्रह सूची	42 – 42
– चित्र सूची	43 – 67

प्राक्कथन

प्रमोद आर्य ऐसे व्यक्तित्व है, जिनका जीवन कला के लिए समर्पित है। वे जीवन के अस्तित्व का वर्णन तथा जीवन के स्नेह पूर्ण व्यवहार को अपनी कला में दिखाते है, जो हम सभी के जीवन के एक खास हिस्से को दर्शाती है।

प्रमोद आर्य कल्पनाशील होते हुए गंभीर स्वभाव के कलाकार है। ईश्वर ने इस संसार की सबसे सुंदर कृति मानव को बनाया है। इस संसार के मानव भिन्न–भिन्न प्रकार की खोज करते है। कुछ लोगों को भगवान ने अनन्त, असीम कृपा से बनाया है। उनके व्यक्तित्व को निखारा हे। स्वतंत्र आत्मा वाले कला प्रेमी प्रमोद आर्य जी भी उनमें से एक है।

आधुनिक भारतीय कलाकार प्रमोद आर्य जी ने कला के जीवन में बहुत ख्याति प्राप्त कर ली है और आगे भी अग्रसर हैं। कला उनके जीवन का मूल उद्देश्य है। उनके चित्रण के विषय ह्रदय को छू जाते हैं। इनके ज्यादातर कार्य परिदृश्य हैं। उनका कहना है कि कला हमें जीवन जीना सिखाती है।

इस लघु शोध प्रबंध के लिए सामग्री एकत्रित करना उसको नियमित करना मेरे लिए उत्साह का कार्य रहा है। मेरी प्रारंभिक कल्पना इस अध्ययनों से सुदृढ़ हुई है लेकिन साथ–साथ नए प्रश्न भी सामने आए हैं।

☞ **प्रथम अध्याय** में आधुनिक चित्रकला के इतिहास को संक्षिप्त रूप से वर्णन करने का प्रयास किया है।

☞ **द्वितीय अध्याय** में प्रमोद आर्य के जीवन का परिचय पर प्रकाश डाला है।

☞ **तृतीय अध्याय** में प्रमोद आर्य के कलात्मक कार्य का वर्णन किया है।

☞ **चतुर्थ अध्याय** में प्रत्यके प्रमोद आर्य की कला शैली के चित्रों में संतुलन विषय एवं रंग अमूर्त कला के बारे में लिखा है।

☞ **पंचम अध्याय** में प्रमोद आर्य के साक्षात्कार को लिया गया है।

अंत में उपसंहार संदर्भ ग्रंथ सूची और चित्र संग्रह सूची को प्रस्तुत किया गया है। इसमें लघु शोध प्रबंध के माध्यम से स्थापित की गई मौलिक मान्यताओं को प्रतिपादित किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र सावधानी पूर्वक प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है तो भी कुछ अशुद्धियां रह जाना स्वभाविक है। आशा है कि विद्वान शिक्षक उन्हें अलक्ष्य करने की कृपा करे। इस शोध पत्र में जो त्रुटियां रह गई हैं, उनके लिए दोषी मैं ही हूं। अतः इसके लिए मैं विद्वानजनों से क्षमा प्रार्थी हूं।

अंजू देवी

शोधकर्त्री

आभार

मेरे इस लघु शोध कार्य को करने में जिन महानुभावों व शिक्षक का संपूर्ण सहयोग मुझे प्राप्त हुआ है, उनके प्रति आभार व्यक्त किए बिना मेरा इस शोध कार्य का आलेख संपूर्ण नहीं होगा।

अब मैं उन सभी विद्वानों के प्रति आभार प्रकट करना अपना सौभाग्य समझती हूं जिनकी प्रेरणा, सहयोग और प्रोत्साहन से मैं इस कार्य को साकार रूप दे पाई।

सर्वप्रथम मैं कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के अंतर्गत स्थित आर्य कन्या महाविद्यालय में ललित कला विभाग अध्यक्ष श्रीमती संतोष व निर्देशिका का आभार व्यक्त करती हूं , जिन्होंने इस लघु शोध प्रबंध को पूर्ण करने में मेरा उचित मार्गदर्शन किया है। मैं डॉ. राम विरंजन विभागाध्यक्ष, ललित कला विभाग कुरुक्षेत्र, विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र की धन्यवादी हूं कि इस विषय को सफलतापूर्वक चलाने में आर्य कन्या महाविद्यालय शाहबाद मारकंडा की सहायता की।

मैं आदरणीय कलाकार प्रमोद आर्य जी का भी ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने अपना मूल्यवान समय निकालकर अपने विचार साझा किए तथा शोध निष्कटक राह दिखाई।

इसके साथ साथ में अपने परिवार जनों का भी ह्रदय की गहराइयों से आभार प्रकट करती हूं, क्योंकि उनके सहयोग के कारण ही मैं इस शोध कार्य को संपूर्ण करने में सक्षम हो पाई। मैं अपने गुरु आदरणीय श्री महेश धीमान व आदरणीय सहायक प्रोफेसर श्रीमती किरण खेवरिया के प्रति भी कृतज्ञ हूं जिन्होंने मेरी इस कार्य के दौरान मेरी शंकाओं और समस्याओं का निदान किया तथा निरंतर प्रोत्साहित करते रहे।

मैं आर्य कन्या महाविद्यालय में ललित कला विभाग अध्यक्ष श्रीमती संतोष व निर्देशिका का आभार व्यक्त करती हूं। मैं अपने सहपाठियों का भी आभार व्यक्त करती हूं तथा मैं अटेंड़ेट श्रीमती सुषमा जी की आभारी हूं , जिन्होंने समय–समय पर हमें पुस्तकें प्रदान की और मैं टाइपकर्ता का भी ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूं जिन्होनें मेरा भरपूर साथ दिया।

यदि इस शोध प्रबंध पाठक व अन्य शोधार्थी के लिए भविष्य में सहायक व लाभप्रद हुआ, तो मैं स्वयं के इस प्रयास को सफल मानूंगी।

शोधकर्त्री

अंजू देवी

प्रथम अध्याय

आधुनिक चित्रकला का इतिहास

कलाः—

कला शब्द का अर्थ आत्मिक है। यह हमारी आत्मा से संबंधित है, क्योंकि कला हमारे मन से जुड़ी है। यह हमारी आत्मा की आवाज है। कला हर इंसान के अंदर छुपी हई है, परंतु कुछ लोग उसे प्रकट कर पाते हैं, कुछ नहीं। जो इंसान कला को प्रकट कर पाता है वह आनंद अनुभव करता है। जिस तरह हमें पूजा करके, भक्ति करके उनका नाम जप कर आनंद अनुभव होता है। इससे हमें आत्मिक सुख अनुभव होता है। कला हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। देखा जाए तो हमारे जीवन के हर कार्य में कला है फिर चाहे वो सिलाई, कढ़ाई, पेंटिंग, खाना—पकाना या पढ़ाना आदि सब कला है।

जिस तरह परमात्मा हमारे अंदर है, परंतु हम उसे बाहर ढूंढते रहते हैं, हर जगह तलाशते रहते हैं, परंतु वो तो हमारे अंदर बसते हैं। वो तो हर जगह व्याप्त है, ककंर में, पत्थर में, पहाड़ों में, पेड़ों में, हर जगह विद्यमान है परंतु इंसान उसे फिर भी तलाश करता रहता है। अगर हम अपने ह्रदय की मलिन प्रवृत्तियों को हटाकर देखें तो भगवान हर इंसान में दिखाई देंगे। उसी तरह कला हर इंसान के अंदर है। जीवन जीना भी एक कला है, कि हम उसे किस तरीके से जी रहे हैं, हंस कर या रो कर या प्रभु का सिमरन करके या दुखी होकर। यह तो हम पर निर्भर करता है।

कला ''सत्यम शिवम सुंदरम'' भी कही जाती है अर्थात जो सत्य है, जो शिव है, जो सुंदर है वही कला है।

कला को किसी बंधन में नहीं बांधा जा सकता। कला बंधनों से रहित है। किसी ने कहा कि जिस तरह संगीत बंधन से रहित होता है, उसके सुर बंधे हुए नहीं होते अर्थात जिस तरह एक संगीतकार नदी, पहाड़, पेड़, झरने, रंगीन वादियों को देखकर गाना गाए बिना नहीं रह सकता, उसी प्रकार एक लाकार भी अपने भावों को प्रकट किए बिना नहीं रह सकता।

कला का अर्थ :—

कला का अर्थ है— सुंदर, मधुर, कोमल और सुख देने वाला एवं शिल्प, हुनर अथवा कौशल।

कला का जन्म भावनाओं से होता है। कला के विषय में कुछ भी कहा जा सकता है, क्योंकि कला के निर्धारण में कुछ ऐसे तत्व शामिल होते हैं जिनसे कलाकारों की कला के संपूर्ण स्वरूप में परिवर्तन नहीं होता। कला मानव निर्मित है इसलिए कला को मानव के जीवन चक्र से कैसे अलग किया जा सकता है। शास्त्रों के अध्ययन से पता चलता है कि 'कला' शब्द का प्रयोग ऋगवेद में हुआ।

''यथा कला, यथा शफ, मंध, शृण स नियामाते।''

कला शब्द का यथार्थवादी प्रयोग 'भरतमुनि' ने अपने नाट्यशास्त्र में प्रथम शताब्दी मे किया।

''नं तज्ज्ञांन न तच्छिल्यं न साविधा — न सा कला।''

अर्थात ऐसा कोई ज्ञान नहीं जिसमें कोई शिल्प नहीं, कोई विद्या नहीं, जो कला न हो।

कला की अवधारणाएं :–

विद्वान एवं कला मर्मज्ञों ने कला को जिस प्रकार परिभाषित किया है, उससे प्रायः ललित कला की ध्वनित होती है।

'प्लेटो के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति सुंदर वस्तु को अपना प्रेमास्पद चुनता है, अतः कला का प्राण सौंदर्य है। उन्होंने कला को सत्य की अनुकृति माना है।

'हीगल' ने कला को आदि भौतिक सत्ता को व्यक्त करने का माध्यम माना है।

'क्रोचे' की दृष्टि से कला बाह्य प्रभाव की आंतरिक अभिव्यक्ति है।

'टाल्सटॉय' की दृष्टि में कला, रेखा, रंग, ध्वनि, शब्द आदि के द्वारा भावों की अभिव्यक्ति जो श्रोता, दर्शक, पाठक के मन में भी वही भाव जागृत कर दे, कला है।

'फ्रॉयड' ने कला को मानव की दमित वासनाओं का उभार माना है।

'हरबर्ट रीड' अभिव्यक्ति के आह्लादक या रंजक स्वरूप को कला मानते हैं।

'टैगोर' के अनुसार, मनुष्य कला के माध्यम से अपने गंभीरतम अंतर की अभिव्यक्ति करता है।[1]

योरोप में कला को 'आर्ट' कहा जाता है। इस (आर्ट) शब्द की उत्पत्ति लेटिन शब्द आर्स या आर्टेम में मानी जाती है। ये शब्द 'अर्र' धातु से बने हैं। जिनका अर्थ पैदा करना, बनाना या फिट करना है। श्री भोलानाथ तिवारी के शब्दों में, "शारीरिक या मानसिक कौशल जिसका प्रयोग किसी कृत्रिम निर्माण में किया जाए, वही कला है।" यहाँ तीन बातें सामने आती हैं– पहली तो यह है कि 'कृत्रिम निर्माण' ही कला है। इसका एक छोटा सा उदाहरण है, मिट्टी के खिलौने। कलाकार मिट्टी लेता है और प्राकृतिक रूप को एक कृत्रिम रूप में बदल देता है। यह गीली मिट्टी से विभिन्न प्रकार के रूप बनाता है। यह रूप बनाना ही कृत्रिम कार्य है। दूसरी बात यह है कि कला में कर्तव्य प्रधान है जबकि विज्ञान में ज्ञान। तीसरी बात यह है कि वही कला है जिसमें कौशल का प्रयोग हुआ है।[2]

"ऑक्सफोर्ड जूनियर ऐनसाइक्लोपीडिया" में यह बात कही गई है कि– "यद्यपि कला एक शाश्वत मानव क्रिया है परंतु इसकी परिभाषा करना संसार भर में सबसे कठिन कार्य है।"

उपरोक्त कलाओं के सारी ही परिभाषाऐं से यह ज्ञात होता है कि सब परिभाषाऐं एक ही दिशा में ले जाती हैं। कुछ ढंग अलग अलग है, परंतु सब वही अभिव्यक्ति की बात कहते हैं। अभिव्यक्ति के साथ कौशल जुड़ा हुआ है।

---

1 डॉ0. रीता प्रताप, भारतीय चित्रकला एंव मूर्तिकला का इतिहास (जयपुर : राजस्थान हिंन्दी अकादमी, 2009), 6.
2 लोकश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला (इंडियाः कृष्ण प्रकाशन मीडिया, 1970), 2–3.

समाज में कला :–

कला व्यक्तित्व की तात्कालिक व स्पष्ट अभिव्यक्ति है। यह एक प्रकार से व्यक्तित्व व सामाजिक समायोजन की प्रक्रिया है। किसी भी संस्कृति में पाए जाने वाले सामाजिक मूल्यों बाध्यताओं और निषेधों को कला के रूप में व्यक्त किया जाता है।

मानव की विभिन्न दैनिक क्रियाओं जैसे– कार्य, व्यवसाय, मनोरंजन, धर्म, उत्सव, राज्य, व शासन आदि के लिए समाज में कुछ मानदंड होते हैं। सामान्य जन इन मानदंडों के अंतर्गत ही अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इसलिए एक युग की सभी कलाकृतियों पर एक मूल भाव एक 'मोटिफ' या नक्शा रहता है।

कला का दूसरा कार्य व्यक्ति और वातावरण के परस्पर संबंधों में संतुलन लाना है यदि कभी संतुलन न रहे तो उस समाज का जीवन टूट जाता है। कला जीवन का अभिन्न अंग न रहकर, अलग पड़ जाती है। इसका एक अच्छा उदाहरण यह भी है कि औद्योगिक क्रांति के बाद का समाज है। इसमें तकनीकी प्रगति की बाढ़ आई और इस बाढ़ में ऐसी सामाजिक परिस्थितियां बनी कि व्यक्ति कला को भूल गया। अब कला न जीवन का अभिन्न अंग रही और न ही मानव की रूचि का केंद्र या उसका लक्ष्य। व्यक्ति जीवन की पागल रफ्तार में बहा जा रहा है। कला कुछ उच्च और संपन्न लोगों का मनोरंजन या सजावटी सामग्री बची है। समाज में कला उसकी लय, शक्ति और संजीवनी ऊर्जा बनती है। कला एक प्रकार का सुरक्षा यंत्र भी है, किसी समाज की कला व्यक्ति तथा समाज की मौलिक आवश्यकताओं का रूप है, क्योंकि इसी में किसी विशेष स्थान व काल में किसी एक सामाजिक समूह की इच्छाएं, मूल्य और अनुभव समाहित है, इसलिए जितने सामाजिक समूह होते हैं उतने ही कला के प्रकार भी होते हैं।

कुछ संस्कृतियां समाप्त हो जाने पर भी अपनी कला सामग्री के रूप में जीवित रहती है। उदाहरण के लिए हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त सामग्री उस समय के सांस्कृतिक जीवन व जीवन शैली को प्रकट करती है।

भारत में कला :–

भारत में कला का बहुत महत्व है। भारतीय वांग्डमय में शब्द 'कला' का पहला प्रयोग ऋग्वेद में मिलता है। (ऋ. 847/16) इसके बाद शत्पथ ब्राह्मण, तैत्रीय, ब्राह्मण, अरणायक और अर्थवेद में भी 'कला' शब्द का प्रयोग है।

☞ सारी भारतीय कला में ध्वनि लय और भीतर संगीत है। ध्वनि के मूल सिद्धांत को सारी कलाओं में अपनाया गया है।

☞ भारतीय कला रूप प्रतिनिधि नहीं और न ही ये किसी का चित्र है। इन रूपों, चाहे मूर्ति हो, चित्र हो, वास्तव में कोई प्रतिरूप नहीं है। न ये शरीरशास्त्र के अनुरूप है।

☞ भारतीय कला रस–प्रधान और भावों के संगति उत्पन्न करती है। भरतमुनि के अनुसार प्रत्येक रंग, रेखा, ताल, ध्वनि, भाव से संबंधित है।[3]

कला का इतिहासः–

मानव जीवन के साथ ही किसी न किसी रूप में कला का अभ्युदय माना जाता है। लाखो वर्ष पूर्व से ही जब मानव गुहावासी था उसमें कलाभिरुचि थी, जिसका पता हमें उस समय के प्राप्त पत्थर के बने अस्त्र–शस्त्र आदि से चलता है। क्योंकि आदि काल में मानव पत्थर के ही बने अस्त्र–शस्त्र प्रयोग करता था, उसे पाषाण काल कहा गया है। पाषाण काल को तीन भागों में बाटां गया हैः–

☞ पुरापाषाण काल (पोलियोलिथिक) 4,000,00 से 10,000 वर्ष पूर्व

☞ मध्य पाषाण काल (मीजोलिथिक) 10,000 से 3,000 वर्ष पूर्व

☞ नवपाषाण काल (नियोलिथिक) 4,500 से 3,000 वर्ष पूर्व

हमारे देश में भिन्न–भिन्न भागों में मध्य पाषाण काल का अंत तथा नवपाषाण काल का आरंभ अलग–अलग समय में हुआ। उपरोक्त कालक्रम भारत को ध्यान में रखकर ही दिया गया है।

भारत में प्रागैतिहासिक काल की चित्रकला की खोज का आरंभ सबसे पहले अंग्रेजों ने ही किया था जो यहां शासन करने आए थे। हमारी संस्कृति और कला को समझने की जिज्ञासा से प्रेरित होकर उन्होंने यह खोज प्रारंभ की। काकबर्न ने मार्च 14, 883 ई0 की डायरी में लिखा कि विजयगढ़ दुर्ग के पास हरनी–हरन नामक गुफा में उन्हें साम्भर, बारहसींगे आदि अनेक शुओं के चित्र प्राप्त हुए। यहीं पर एक गेंडे के शिकार का चित्र है जिसमें 6 आदमी भाले से हमला कर रहे हैं। लोहरी गुफा में लोहे फलक का भाला तथा शिकार का चित्र मिला।

पाषाण काल में ही मानव ने गुफा चित्रण करना शुरू कर दिया था। होशंगाबाद और भीमबटे का क्षेत्रों में कंदराओं और गुफाओं में मानव चित्रण के प्रमाण मिले हैं। इन चित्रों में शिकार, शिकार करते मानव समूहों, स्त्रियों तथा पशु–पक्षियों आदि के चित्र मिले है। अजंता की गुफाओं में की गई चित्रकारी कई शताब्दियों में तैयार हुई थी।

भीमबेटका का महत्व यह है कि यहां पर गुफाओं में मानव समुदाय वास्तव में रहता थे तथा उनके द्वारा बनाऐ व उपयोग में लाए गऐ औजार व हथियार अपने मूल स्थानों पर ही दबे रह गऐ।

भारतीय पुरातत्वेता ननि गोपाल मजूमदार मोहनजोदड़ो की खुदाई करने के लिए वहां पहुंचे थे। परंतु जब वे अपने इस उत्खनन शिविर में मजदूरों को वते न बाट रहे थे तभी बलूची डाकुओं के दल ने उन पर आक्रमण कर दिया। भारत में इस प्रकार की सामग्री मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, लोथल, नामक स्थानों में खुदाई के बाद प्राप्त हुई है। मिट्टी के बर्तनों पर लाल रंग और काले रंग से नमूने बनाए गए हैं। यह सामग्री राष्ट्रीय संग्राहलय में प्रचुर मात्रा में सुरक्षित है। जिन बर्तनों पर नमूने बने हुए हैं हजारों वर्ष के

3 लोकश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला (इंडिया : कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 1970), 7.

बाद वह चमक आज भी इन बर्तनों में है। इन्हीं स्थान सिंधु नदी के पास होने से ''सिंधु घाटी की सभ्यता'' कहा जाता है।

जोगीमारा गुफाऐं, मध्य प्रदेश के सरगुजा रियासत में, अमरनाथ नामक स्थान पर, नर्मदा नदी के उद्‌गम स्थान पर स्थित है। यह गुफा 10 फुट लंबी 6 फुट चौड़ी और 6 फुट ऊंची है। भारत वर्ष में एक सुंदर पौराणिक कथा है जो कि 'चित्रलक्षण' में दी हुई है, जिसमें चित्रकला के शुभारंभ का पता चलता है। प्राचीन समय में भयजित या नग्नजित नामक एक राजा था। उनके राज्य में एक ब्राह्मण के पुत्र की आकाल मृत्यु हो गई। जब राजा के पास ब्राह्मण पहुंचा तो राजा ने योग बल से यमराज को बुलाया और उसे जीवित करने को कहा, परंतु जब यमराज नहीं माना तो राजा ने उससे युद्ध किया तभी ब्रह्मा जी प्रकट हो गए तो उन्होंने राजा से उस ब्राह्मण पुत्र का चित्र बनाने को कहा, तभी राजा ने चित्र बनाया और ब्राह्मण ने उस में प्राण डालकर जीवित कर दिया, इसको पृथ्वी का प्रथम चित्र माना जाता है।

लगभग 200 ई0 पू0. तक 'हीनयान' बौद्व धर्म के अनुसार महात्मा गांधी के चित्र या मूर्तियों का निर्माण नहीं होता था। धर्म प्रचार या उनके अस्तित्व को प्रदर्शित करने के लिए उनके छत्र, चरण पादुका या सिंहासन आदि को प्रदर्शित किया जाता था।[4]

इन मूर्तियों का विषय भारतीय तथा बौद्व है, परंतु उनमें यूनानी शैली की छाप है। इसी कारण कुछ विद्वानों ने इन इण्डो यूनानी बौद्व कला का नाम दिया। कलाकारों ने इन मूर्तियों द्वारा भगवान बौद्व के जीवन की घटनाओं का प्रदर्शन किया तथा बोधिसत्व परंपरा की भी मूर्तियां बनाई।

भगवान बौद्व के जन्म, बोध, धर्मचक्रप्रवर्तन संबंधी अनेक मूर्तियों का निर्माण हुआ। भगवान बुद्व की मुद्राऐं भारतीय है, जैसे ध्यान मुद्रा, अभय मुद्रा आदि।[5]

स्टीन और लिकोक की खोज के अनुसार ये अजन्ता के चित्रकार तिब्बत व पूर्वी तुर्किस्तान पहुंचे। जहां उन्होनें बिल्कुल अजंता जैसी कलाकृतियां, भित्ति चित्र तथा झंडों के रूप में बनाई। खोतान इन कलाओं का केंद्र था। परंतु कुछ समय बाद मुसलमानों के वहां पहुंच जाने से यह कला तथा बौद्व धर्म दोनों ही समाप्त हो गए।

इसी समय मूर्ति, शिल्प तथा वास्तुकला की बहुत उन्नति हुई और बहुत से भव्य मंदिर तथा मूर्तियां आदि बने जो कि हिंदू या ब्राह्मण धर्म से संबंधित थे। आक्रमणकारियों ने इनमें से अधिकांश को नष्ट कर डाला।

मध्यकाल को दो भागों में बांटा गयाः—

1. पूर्व मध्यकाल
2. उत्तर मध्यकाल

---

4 लोकश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला (इंडिया : कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 1970), 29.
5 लोकश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला (इंडिया : कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 1970), 29.

राजस्थानी शैली के चित्र विभिन्न राजाओं के दरबार में ही बने जो केवल मनोरंजनार्थ थे। इस प्रकार चित्रकार मूल्यवान कृतियां तैयार करते थे, परंतु धीरे–धीरे यह चित्र जन–सामान्य तक पहुंच गए। कुछ विद्वानों ने इस शैली को और भी प्राचीन साबित करने का प्रयत्न किया है, क्योंकि इस समय रामानुज के संप्रदाय के अनुयायियों में सुर, तुलसी, मीरा तथा चैतन्य महाप्रभु आदि ने देश में हिंदू वैष्णव धर्म का प्रचार या प्रसार पराकाष्ठा को पहुंचा दिया था।

सन् 1609 में जोधपुर के राजा उदय सिंह के आठवें पुत्र किशन सिंह को जयपुर जोधपुर, अजमेर आदि से घिरी जो जागीर उतराधिकार में मिली थी, किशनगढ़ के नाम विख्यात हुई। 6 वर्ष राज्य करने के बाद जहांगीर के यहां डेढ़ हजारी मसंबदार के पद पर चला गया था।[6]

मुगल चित्रकला शैली का विकास चित्रकला की स्वदेशी भारतीय शैली और फारसी चित्रकला की शैली के एक उचित परिणामस्वरूप हुआ था। इस शैली की शुरुआत बाबर (1526–30)से मानी जाती थी। उसे फारसी कलाकार बिहजाद को संरक्षण देने वाला कहा जाता था।

अकबर की चित्रकला और अपने दस्तावेजों के लिए समर्पित एक पूरे विभाग 'तस्वीर खाना' के रूप में औपचारिक कलात्मक स्टूडियो बनाया। मुगल चित्रकला जहांगीर के शासनकाल में अपने पराकाष्ठा पर पहुंच गई। शाहजहां पिता और दादा विरूद्व कृत्रिम तत्वों की रचना पसंद करता था और यूरोपीय प्रभाव से प्रभावित था। औरंगजेब ने चित्रकला को प्रोत्साहित नहीं किया। उस काल दौरान चित्रकलाओ की गतिविधियों में अवरोध हुआ।

बाबर तैमूरिया वंश का ही था जिसने भारत में मुगल राज्य की नींव डाली। यह बिहजाद को बहुत पसंद करता था, क्योंकि उसने अपने आत्म–चरित्र, –बाबर नामा' में उसकी बहुत प्रशंसा की थी। बाबर का पुत्र हुमांयू भी कला का शौकीन था। पहाड़ी कला का जन्म गुलेर में ही हुआ। 1780 ईसवी के लगभग जब गुलेर शैली अपने निखार पर थी, इसने कॉंगड़ा में प्रवेश किया है और यह कॉंगड़ा शैली के नाम से प्रसिद्व हुई। पहाड़ी चित्रकला का विकास में यहां की प्राकृतिक छवि तथा सुंदर वातावरण ने चार चांद लगा दिए। पहाड़ी शैली की अलग–अलग विशेषताएं हैं। जैसे– बसोहली, कांगड़ा, गुलैर आदि में कुछ ना कुछ अंतर दिखाई पड़ता है।

पहले बसोहली शैली चित्रों को तिब्बती कहा जाता था, क्योंकि कुछ गहरे लाल किनारी वाले, पीले व लाल सपाट रंगों से बने चित्र अमृतसर के बाजारों में 'तिब्बती' कहकर बिकते थे। सर्वप्रथम बसोहली शैली के चित्रों का उल्लेख हुआ था।

'बसोहली शैली' का जन्म पहाड़ी लोक कला के तथा मुगल कला के समन्वय में हुआ था। झीने परदे व पुरुषों के कपड़े मुगल शैली के हैं और चेहरा स्थानीय लोक कला पर आधारित है।

---

6 लोकश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला (इंडिया : कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 1970), 67.

औरंगजेब के कट्टरता के कारण वैष्णव धर्म ही जहां कहीं अवसर मिलता पनपने लगता था। पंजाब की पहाड़ियों में सबसे अधिक शांति का वातावरण था, इसलिए यहां वैष्णव धर्म का प्रचार एवं प्रसार हुआ। वैष्णव धर्म के बसोहली शैली को बहुत प्रेरणा मिली।

सत्रहवीं और अठारवीं सदी की शुरुआत में प्राथमिक रंगों का अधिक प्रयोग और कई प्रकार के चेहरे पर शैली की चित्रकला का प्रमुख गुण था, जो पश्चिमी हिमालय की तलहटी में यानि जम्मू और पंजाब में अधिक प्रचलित था।

चित्रकला की यह शैली मनकोट, नुरपुर, कुल्लू, मंडी, सुकेत, बिलासपुर, कांगड़ा और गुलेर के पहाड़ी राज्य तक फैल गई। देखने में इस शैली के चित्र बहुत सुंदर और आनंददायक है, वे मानव प्रेम तथा रोमांच से ओत–प्रात है। परंतु उनमें अध्यात्मिकता छिपी हुई है। नायक कृष्ण जो परमात्मा का प्रतीक है और नारी आत्मा है, जो परमात्मा से मिलने के लिए कितने कष्ट उठाती है।

आधुनिक भारतीय कला का इतिहास :–

आधुनिक कला 1970 के दशक से विस्तरित अवधि के दौरान किए जाने वाले कलात्मक कार्यों का संदर्भ देता है। आधुनिक कला की शुरुआत विन्सेन्ट वैन गॉग, पॉल सिजैन, पॉल गॉगुइन, जॉर्जेस श्योरा और हेनरी डी टूलूज, लाट्रेक जैसे ऐतिहासिक चित्रकारों ने की, आधुनिक 'कला' का मतलब है कि आज की कला, वर्तमान की प्रचलित कला, नए जमाने की कला, नए युग की कला अथवा 21वीं शताब्दी की कला यह शब्द कालवची है। 'आज की कला' जब कहा जाता है तो इसका मतलब होता है, कला का वह रूप जो समाज में आज प्रचलित है। जैसी कला हम देख रहे हैं। इससे भी आधुनिक कला का अर्थ स्पष्ट नहीं होता, क्योंकि आज हमारे बीच कई तरह की कलाएं दृष्टिगोचर होती हैं। सभी को हम आधुनिक नहीं कह सकते, आज प्रचलित कला वह वह रूप प्राचीन कला से भिन्न हैं। वही आधुनिक हो सकता है। इसका स्वरूप नया होता है। कला का नया स्वरूप तभी मिलता है जब वह नई मान्यताओं पर आधारित होती है।

आधुनिक कला का इतिहास मुख्य रूप से आधुनिक कलाकारों के कला संबंधी दृष्टिकोणों में हुए परिवर्तनों का इतिहास है। जीवन के दार्शनिक मूल्यों में परिवर्तन होते ही उसका जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। कलाकार का व्यक्तित्व स्वतंत्र होते ही सर्जन क्षत्रे में कलाकार की आत्मिक अभिव्यक्ति व विशुद्ध सौंदर्य के बीच शुरू हुआ।

आधुनिक कला का अध्ययन करते समय 'आधुनिक' शब्द को केवल काल–निर्देशक मानना होगा। सौन्दर्य, आत्मिक अनुभूति, कल्पना आदि सर्जनशीलता तत्वों का स्पष्ट व विशुद्ध रूप आधुनिक काल की जिन कला शैलियों में दृष्टिगोचर हो गया है उन सभी कला शैलियों को आधुनिक कला में सम्मिलित करते हैं। आधुनिक कलाकार की कलानिर्मित के कार्य – कारण

हो बैठे हैं। अनुभूति की अपरिपक्वता के कारण हो या किसी और कारण से, आधुनिक कलाकार के विचारों में आत्यांतिकता आ गई है। कि कलाकार का व्यक्तित्व व चिरन्तन तत्व– जसमें शायद ही कोई आधुनिक कलाकार विश्वास करता होगा– का संबंध पूर्ण रूप से टूट गया है।

आधुनिक कलाकारों के तीन प्रमुख विचारधाराएँ हैः –

- पहली विचारधारा के अनुसार कलाकार वस्तु के बाह्य रूप के सादृश्य जैसे प्रतीकात्मक दर्शन को अधिक पंसद करता है।
- दूसरी के अनुसार वह अपनी कलाकृति को सामाजिक महत्व के निर्मित मानने के बजाय आंतरिक आवश्यकता की पूर्ति मानता है।
- तीसरी विचारधारा के अनुसार वह कलाकृति का मूल्यांकन या रसग्रहण करते समय उसके ससौन्दर्यात्मक गुणों का विचार करता है व उसके संदेशात्मक महत्व नहीं देता।[7]

आधुनिक कला के तीन प्रमुख प्रवाह :–

- पहली कला– प्रवाह में कलाकृति के वस्तुनिरपेक्ष रूप का विचार प्रधान है।
- दूसरे में कलाकार के आत्मिक अभिव्यक्ति पर बल दिया जाता है।
- तीसरे में कलाकार के कल्पनाविलास को साकार किया जाता है।[8]

आधुनिक कला में जड़वाद को अत्यंत महत्व प्राप्त हो गया है। जड़वादी दृष्टिकोण के कलाकार जड़ सौंदर्य को ही सत्य की अनुभूति का मूल्य आधार मानते हैं, किंतु इस अर्थ में दृश्य सौंदर्य का कलाकृति में प्रतिरूप दर्शन व अपर्याप्त एवं तुच्छ मानते हैं। आधुनिक कलाकार आंतरिक या अंतर्मन की अनुभूति को ही सत्य के साक्षात्कार को एकमेव साधन मानते हैं, किंतु ये कलाकार ईश्वर, धर्म, मानवता, राष्ट्र नीति, मानवनिर्मित मूल्यों को काल्पनिक–अर्थात–असत्य मानते हैं, व उने प्रति अश्रद्व हैं।

भारतीय चित्रकला के विकास में जैन और बौद्धकाल की कलाकृतियों का अपना बहुत योगदान रहा। जैनों ने धार्मिक सुधार के कारण साहित्य के निर्माण पर जोर दिया और ताड़पत्र, भोजपत्र, कागज एवं कपड़े पर अनेकानेक पोथियों को लिखा इनके बीच बीच में उन्होनें सुंदर चित्र चित्रित किए। बौद्ध काल की महान कला का संग्रह केंद्र अंजता है। जो महात्मा बुद्ध के जीवन की घटनाओं तथा जातक कथाओं पर आधारित है। इन चित्रवलियों में इन कला की आरंभिक अंतिम दोनों चरणों की कला दिखाई देती है।

---

7 र.वि.साखलकर, आधुनिक चित्रकला का इतिहास (राजस्थानः हिंन्दी ग्रंथ अकादमी, 2015), 4.
8 र.वि.साखलकर, आधुनिक चित्रकला का इतिहास (राजस्थानः हिंन्दी ग्रंथ अकादमी, 2015), 4.

श्रीलंका में ''सिगिरयाँ की गुफाओं'' में भी इस कला शैली का परिपक्व दिखाई देता है। भारत में ''बाध' , 'बादामी, सितन्नवासल में बौद्ध कला का वर्णन है।

भारतीय चित्रकला के इतिहास में 'गुजरात शैली, जैनशैली तथा उपभ्रंश शैली का नाम इसलिए उल्लेखनीय है कि उनके द्वारा जहां भारतीय चित्रकला का उज्जवल अतीत अलौकिक होता है, वहां उनके सामागम से सुनहरे भविष्य की पृष्ठभूमि का निर्माण होता है।

मुस्लिम धर्म की शुरुआत के साथ ही ईरान में जो कला शैली पनपी व प्रचलित हुई वह प्राचीन भारतीय चित्रकला की आधारशिला थी। इसमें उनकी गहरी छाप निहित थी। इस्लाम में मानव या जीव धारियों को चित्रित करना धर्म निषिद्ध था, यही कारण मुगल चित्रकला में सूक्ष्म अलांकरिक आलेखनों एवं ज्यमितिय रूपकारों का आत्यधिक विकास होकर रूप निखर कर आया। धीरे–धीरे पशु–पक्षियों, मानव कृतियों, एवं फूल–पत्तियों का अंकल लोकप्रिय हो गया।

भारतीय सभ्यता और संस्कृति गौरवन्वित करने का श्रेय राजस्थान की चित्रकला को भी रहा है। राजस्थान में चित्रकला के प्रति अभिरुचि और उसका मौलिक स्वरूप परंपरागत रूप से प्रचलित रहा है। राजस्थानी चित्रकला की निम्नाकिंत चार शैलीयां है। जिसमें अनेक शैलियां, उपशैलियां पनपी और विकसित हुई तथा एक दूसरे से प्रभावित होती रही। तथा मेवाड़ शैली, हाडोती शैली, ढूंढाह शैली इन शैलियों की भौगोलिक संरचना और राजपूत राजवंशों की संस्कृति परंपरा ने जो विशिष्टता प्रदान की है, कि वे चित्रकला में सहज ही झलकती है।

भारतीय चित्रकला के इन सभी कालों के बाद भारतीय चित्रकला का निर्माण हुआ। मुगल साम्राज्य के पतन के साथ उत्तरी भारत में राजनीति अर्थव्यवस्था हिल चुकी थी, किंतु दक्षिण भारत में अनेक राज्य स्थिर रूप से कला के विकास में अपना योगदान दे रहे थे।

आधुनिक चित्रकला का काल 18वीं शताब्दी से लेकर वर्तमान तक माना गया है। भारत में अंग्रेजों के आगमन के समय तक पहाड़ी तथा मुगल शैलियों की ऊर्जा क्षीण पड़ चुकी थी। और उस पर अंग्रेजों के आगम ने गहरा आघात किया। अंतिम मुगल बहादुर शाह जफर की मृत्यु से मुगल साम्राज्य का सूर्यास्त हो गया और अंग्रेजी साम्राज्य का सूर्य उदय हो गया। अंग्रेजी साम्राज्य की जड़े मजबूत होने के कारण भारत में पश्चात्य संस्कृति का फैलाव होने लगा। 19वीं सदी में दक्षिण की कला में मुगल तत्वों के साथ साथ ही यूरोपीय तत्वों का बहुत सम्मिश्रण होने से इसमें भी पहले के समान सौंदर्य नहीं रहा। 19वीं शताब्दी में भारत वर्ष के कई स्थानों पर कुछ स्थानीय शैलीयां अभी चल रही थी। जिनमें कालीघाट की पट चित्रकला, नागद्वार के पट चित्र, तंजौर शैली तथा मैसूर शैली आदि प्रमुख थी। 18वीं सदी में मुगल शैली के चित्रकारों पर ब्रिटिश चित्रकारों की कला का बहुत प्रभाव पड़ा। उनके कला में यूरोपीय तत्वों का बहुत अत्यधिक मिश्रण हो गया। इसी प्रकार जो नई शैली विकसित हुई उसे ''कंपनी शैली'' या ''पटना शैली'' कहने लगे जो आधुनिक भारतीय कला का आधार बिंदु माना गया है। आधुनिक भारतीय चित्रकार 19वीं शताब्दी के संदर्भ में एक ऐसे चित्रकार का जन्म हुआ जिसे भारत के महान चित्रकार का स्थान दिया गया है। जिसे आधुनिक भारतीय चित्रकार का जन्मदाता माना जाता है।

वह महान कलाकार ''राजा रवि वर्मा'' है। राज रवि वर्मा ने भारतीय साहित्य और आध्यात्मक को अपनी कला का आधार बनाया और यूरोपीय तकनीक ने उसे जनता तक पहुंचाया।

इसी प्रकार आचार्य रविंद्र नाथ टैगोर और गगनेंद्रनाथ टैगोर ने भी आधुनिक चित्रकला के विकास को गति प्रदान की। जिस तरह अमृता शेरगिल पश्चिम और पूर्व की कला का संगठन कराने वाली अग्रदूत थी। उसी तरह यामिनी राय भी लोक शैलीर को अपनाकर कलाकृतियों का निर्माण किया। आधुनिक कला जगत में महान कलाकार नंदलाल बसु, राग बिहारी बोस, एन.एस.के हैब्बर, तथा विनोद बिहारी मुखर्जी आदि कलाकारों ने योगदान दिया।

इसी प्रकार भारतीय समकालीन कला में भी महान कलाकार अपना योगदान दे रहे हैं। जैसे– एम.एफ. हुसैन एवं आत्मदीक्षित चित्रकार है। हुसैन एक आतम दिक्षित चित्रकार थे। हुसैन भारतीय चित्रकला जगत के सिरमोर भी थे। उसी प्रकार सतीश गुजराल जो एक मूक–बधिर होते हुए भी अपने कार्य से विमुख या निराश नहीं हुआ। अपनी उत्कृष्ट कला के माध्यम से देश–विदेश में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंचे।

भारतीय समकालीन महान कलाकार ज्योति भट्ट, शांति देव, मनजीन बावा, कृष्ण खन्ना आदि ने आधुनिक चित्रकला को अपनी कलाकृतियों के द्वारा संसार में अलग पहचान दिलवाई है। इन महान कलाकारों ने भारतीय प्राचीन कला को अपना विषय बना कर आधुनिक चित्रकला को अलग रूप दिया है।

कला संस्कृति की वाहिका है। भारतीय संस्कृति के विविध आयामों में व्याप्त मानवीय एवं रसात्मक तत्वों उसके कला रूपों में प्रकट हुये हैं। कला का प्राण है रसात्मकता। रस अथवा आनंद भारतीय कला जहां एक और वैज्ञानिक और तकनीकी आधार रखती है, वहीं दूसरी और भाव एवं रस का सदैव प्राण तत्व बना कर रखती है। भारतीय कला को जानने के लिए उपवेद, शास्त्र, पुराण और प्राचीन साहित्य का सहारा लेना पड़ता है। कला का मानक कला स्वरूप अपने आप में निहित है। भारतीय कला 'संस्कृति प्रधान' होने से 'धर्म प्रधान' हो गई है। वास्तव में धर्म ही भारतीय कला का प्राण है। भारतीय कला धार्मिक है।

द्वितीय अध्याय

जीवन परिचय

आधुनिक भारतीय चित्रकला में प्रमोद आर्य प्रसिद्ध चित्रकार हैं। जिनका जीवन कला के लिए समर्पित है। कला के जीवन में कदम रखना बहुत आसान होता है, परंतु उस जीवन में आगे बढ़ने के लिए अति मेहनत और लगन की आवश्यकता होती है जो कि बहुत अधिक कठिन कार्य है। लेकिन एक मेहनती कलाकार के लिए कुछ भी कठिन नहीं होता। कुछ कलाकार ऐसे होते हैं जो अपनी भावना तथा ललित कल्पना की संवेगात्मक हर के साथ सृजनरत हैं। तो कुछ कलाकार वस्तु परख वैज्ञानिक अन्वेषक की बौद्धिक सूक्ष्मता से कलाकृतियों का निर्माण करते हैं।

कहा जाता है कि कलाकार एक सृष्टा होता है जो अपनी कलाकृतियों के माध्यम से समाज में उदय भावनाओं को स्थापित करता है। वह लोगों के सक्ष्म जीवन को पूरी व्याख्या प्रस्तुत करता है। चित्रकार कलाकार श्रेणी का महत्वपूर्ण अंग होता है। जिस प्रकार परमात्मा स्वयं एक कलाकार है। जिसने प्रकृति की संरचना की है, उसी प्रकार एक चित्रकार ने भी परमात्मा की नकल कर प्रकृति की प्रत्येक वस्तु की सृजना अपने पट की है।

आज के कलाकार जिनमें नाम तथा पैसे की होड़ लगी हुई है। जहां पर आजकल चित्रण आनंद के लिए नहीं केवल नाम के लिए हो रहा है, वही साहित्य और तूलिका के धनी, सौंदर्य और प्रेम के ज्ञाता श्री प्रमोद आर्य जी ने कला को महत्वता दी है। कलाकार अपनी अनुभूति और विचार कला के माध्यम से व्यक्त करता है। उसकी कला में समाज का रस, प्रेम, वात्सल्य, घृणा, श्रृंगार, भक्ति आदि को देखा जाता है। वो अतीत के जिन संस्कारों को ग्रहण करता है वही वर्तमान में पनपते हैं। यह भी तत्व मिलकर चित्र का निर्माण करते हैं और उसका दृष्टिकोण का विकास करते हैं।

प्रमोद आर्य एक प्रगतिशील चित्रकार हैं, वो चित्रण आनंद एवं संतुष्टि के लिए करते हैं। जरूरी नहीं है कि एक अच्छा कलाकार बहुत प्रसिद्धि प्राप्त किए हुए हो। प्रमोद आर्य जी भी एक ऐसे चित्रकार हैं जो आधुनिक चित्रकारों की दौड़ से दूर रहकर कला में डूबे रहना चाहते हैं। प्रमोद आर्य जी सरल स्वभाव के कलाकारों में से हैं, जिन्होंने धन का मोह त्याग कर सच्चे मन से कला की साधना की है और इनका यह भी कहना है कि चित्रकला संसार की सबसे संजीवन वस्तु है। मनुष्य जो देखता है वही अनुभव करता है। कला मनुष्य के भावों को प्रकट करती है। जिन चीजों की वह कल्पना करता है। उन्हें ही पेंटिंग के रूप में चित्रित करता है। उन्होंने अपनी कला का बड़ी तीव्रता से विस्तार किया। उनकी कला में 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' का अद्‌भुत मेल है।

प्रमोद आर्य जी ने जीवन के दुख को चित्रित करने की बजाय सुख को प्रकट करने का सहारा लिया है, अपनी कल्पना और विचारों को कैनवस पर उतारना प्रमोद आर्य जी की खूबी है।

आरंभिक जीवन

श्री प्रमोद आर्य जी का जन्म 20 जून 1967 में नैनीताल में हुआ। इनका बचपन पहाड़ों में ही बीता। वहां का खुला मैदान होता है। उनके आसपास प्रकृति ही प्रकृति थी। वहां की जिंदगी में संघर्ष बहुत था जिसका प्रभाव प्रमोद आर्य जी के जीवन पर पड़ा। वहां पर जैसे बादल होते थे, धूप होती थी या कभी ठंड तो उन सबका इन पर बहुत प्रभाव पड़ा। इनके माता–पिता बहुत सरल मधुर भाषी और धार्मिक विचारों वाले हैं। इनका स्वभाव बहुत शांत है।

प्रमोद आर्य जी ने किसी भी कार्य या वस्तु के लिए कभी हठ नहीं किया। कला के गुण इन्हें अपने परिवार से ही हासिल हुए। इनके बड़े भाई भी चित्रकारी में रुचि रखते थे। वे प्रमोद आर्य जी को भी कला के बारे में ज्ञान देते थे। जिससे प्रमोद आर्य जी की भी कला में रुचि बढ़ती गई। ग्रामीण क्षत्रे में रहते हुए प्रमोद आर्य जी के चित्रों में वहां की खुशबू समाई हुई है। गांव के खुले खुले मैदान, बड़े–बडे घर, पशु–पक्षी और वहां की संस्कृति आज भी प्रमोद आर्य जी का मन मोह लेते हैं।

प्रमोद आर्य जी को ठंडा मौसम बहुत प्रिय लगता है। उनका मानना है कि यह ऋतु रंगों से भरपूर होती है। हर तरफ खुशी का माहौल होता है। ऐसे में कला के प्रति कल्पना शक्ति जागृत होती है। जिसमें रेखाओं को नऐ–नऐ आकार मिलते है। कला एक चित्रकार के अच्छे विचार हैं जिन्हें, वह चित्रों की सभ्यता के द्वारा पेश करता है। किसी भी चित्रकार द्वारा चित्रकला की एक अलग पहचान होती है, उसके द्वारा प्रयोग किए गए रंगों को देखकर उसके विचारों की गहनता का आभास होता है।

प्रमोद आर्य जी ने जिस मंजिल को आज छुआ है, उसमें उनकी मेहनत और लगन के साथ–साथ उनके माता–पिता का भी आशीर्वाद रहा है। प्रमोद आर्य जी की कला साधना में उनकी आंतरिक आध्यात्मिकता रूप है। उनका मानना है कि आत्मा और परमात्मा एक हैं। जब दोनों का मिलन होता है तो सृष्टि की रचना होती है। वे परमात्मा का ध्यान करके जब तुलिका चलाते हैं तो सचमुच चित्र भी आध्यात्मिक हो जाते हैं।

शिक्षा :–

चित्रकला आदि काल से चली आ रही है। मानव ने अपने विचारों को सर्वप्रथम किसी भाषा से नहीं अपितु रेखाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया था। कलाकार सदैव नवीनता की खोज में रहता है। कला एक चित्रकार के अपने विचार हैं जिन्हें, वह चित्रों की सजीवता के द्वारा पशे करता है। किसी भी चित्रकार द्वारा चित्रित चित्रकला की एक अलग पहचान होती है। प्रमोद आर्य जी एक ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने कठिन परिश्रम से कला के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है। इनकी कला हमेशा दर्शकों को संदेश देती है।

प्रमोद आर्य जी बचपन से ही शिक्षा में रुचि रखते हैं क्योंकि उनके परिवार में पहले से ही शिक्षा का आधार है। इनकी प्राथमिक शिक्षा उत्तरांचल से हुई और उसके बाद इन्होंने राजस्थान आर्ट स्कूल से 5 वर्ष का एप्लाइड़ आर्ट से डिप्लोमा किया। इसके साथ–साथ इनकी पेंटिंग में भी विशेष रुचि रही है। जब यह राजस्थान बी.एफ.ए. करने गए थे तब उन्होंने वहां नौकरी भी की और उसके बाद ये दिल्ली आ गए। वहां पर इनकी बहन रहती थी, तो ये वहीं पर रहने लगे और फिर दिल्ली के आर्ट कॉलेज में इन्होंने एम.एफ.ए. के लिए आवेदन किया और वहां पर इनको एडमिशन मिल गया।

समय के साथ–साथ उनके कला का रुझान और अधिक बढ़ता गया। कला क्षेत्र में रुचि अब इनकी आदत बन चुकी थी। यह आधुनिक चित्रकार के रूप में नजर आते हैं, उनके सरल स्वभाव और मधुर भाषा के कारण उनसे बातें करके समय कैसे कट जाता है, इसका अहसास ही नहीं होता। उनकी बातें सुनकर गहराई में उतरने का मन करता है। प्रमोद आर्य जी अपने आप को बहुत खुशकिस्मत मानते हैं कि उन्होनें कला को अपने जीवन का आधार बनाया। इन के चित्रों को देखकर ऐसा आभास होता है कि कला के उपासक अपनी कला शैली में निरंतर बदलाव व नयापन लाने के लिए तत्पर हैं।

शिक्षण के रूप में कार्य :–

प्रमोद आर्य जी एक अच्छे कलाकार होने के साथ–साथ एक आदर्श शिक्षक और कला समालोचक भी हैं। यह एक अचल और अच्छे कला शिक्षक हैं, जो अपने और विद्यार्थियों के मध्य दूरी नहीं के बराबर रखते हैं। यही कारण है कि वह एक लाके प्रिय शिक्षक हैं। वे अपने शिष्यों को कला शिक्षा में निपुण होने का ज्ञान देते हैं और उनकी पूर्ण स्वतंत्र शैली को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

कला शिक्षण में गहरी रूचि के कारण ही वह अनेक वर्षों से अध्यापन कर रहे हैं। जब वह बात करते हैं तो छोटा हो या बड़ा, इतना सम्मान देते हैं, इनमें कोई अहंकार की भावना नहीं है।

प्रमोद आर्य की कला यात्रा

प्रमोद आर्य की कला यात्रा का सफर उनके कॉलेज के समय से ही शुरू हो गया था। इन्होंने राजस्थान कला स्कूल से 5 वर्ष का एप्लाइड आर्ट से डिप्लोमा किया। पर इनको पेंटिंग का शौक था। शुरुआती वर्षों में उन्हें कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, परंतु समय के साथ–साथ उन्होंने कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की।

कला के विषय में पूर्ण अध्ययन के साथ–साथ वे अभ्यास पर भी जोर देते थे। प्रमोद आर्य जी कोई भी चित्र बनाने से पहले कोई सोच विचार नहीं करते जब उनके सामने कैनवस लगी होती है, तो उस समय उनके मन में जो भाव रहते हैं, वह उन भावों को कैनवस पर उतार देते हैं। वह अपने काम को ही भगवान मानते हैं। वे पूरे ह्रदय से अपने कलाकृति को पूरा करते हैं। उन्हें प्रत्येक कार्य सफाई से करना पसंद है तथा वे विश्वास करते हैं कि जीवन में स्वपन देखना ही काफी नहीं है, उन्हें पूरा करने के लिए प्रयास भी आवश्यक है। उनकी वाणी में नम्रता है, जिससे छात्र भी निसंकोच होकर अपने प्रश्न पूछते हैं। उन्होनें नर्मता, प्रयासों में दृढ़ निश्चय से अपना एक अलग मुकाम बनाया है, जो भी व्यक्ति उनके संपर्क में आता है उनका प्रशंसक बन जाता है।

भारत के बड़े–बड़े शहरों में उन्होनें अपनी कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगाई। जुलाई 1992 से अक्टूबर 1994 तक ललित कला संकाय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में व्याख्याता के रूप में कार्य किया। शुरुआती वर्षों में इन्होनें वास्तविक काम किया, परंतु जैसे–जैसे इनका अनुभव कला के क्षत्रे में बढ़ता गया इनके काम में सहजता और सरलता आने लगी और धीरे–धीरे अमूर्तन कार्य की ओर अग्रसर हुए।

प्रदर्शनी एवं पुरस्कार

➢ योग्यता और अनुभव :–

☞ राजस्थान कला विद्यालय, जयपुर से 5 वर्षीय डिप्लोमा 1987

☞ कॉलेज ऑफ आर्ट नई दिल्ली से M.F.A 1992

☞ नवंबर 1994 से अगस्त 2003 तक लेक्चरर महिला पॉलिटेक्निकल कॉलेज कोटा राजस्थान के रूप में कार्य किया।

☞ वर्तमान में सितंबर 2003 से गवर्नमेटं कॉलेज ऑफ आर्ट, चंडीगढ़ में एसोसिएट प्रोफसेर के रूप में कार्य किया।

☞ राष्ट्रीय कलाकार निर्देशिका में सूचीबद्ध राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा जारी।

पुरस्कार

☞ साहित्य कला परिषद, नई दिल्ली 1985 द्वारा अखिल भारतीय युवा कला प्रदर्शनी।

☞ 1987 में राजस्थान राज्य ललित कला अकादमी द्वारा अखिल राजस्थान छात्र पुरस्कार।

☞ चंडीगढ़ 1987 में अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी में योग्यता पुरस्कार।

☞ 1988 में क्रिएटर ग्रुप अंबाला द्वारा अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी में मेरिट अवार्ड।

☞ रविंद्र भवन, ललित कला अकादमी आर्ट गैलरी में समूह शो, ''अनटाइटल्ड़'' 2011 की नई दिल्ली।

☞ समूह शो ''नॉस्टैल्जिया'' भारत के समकालीन कलाकार जवाहर कला केंद्र, जयपुर राजस्थान 2011

☞ भारत सरकार में पौधे और रोटरी क्लब द्वारा आयोजित समूह शो 'अर्थ कनेक्शन' संग्रहालय आर्ट गैलरी चंडीगढ़ 2011

☞ सरकार में ग्रुप शो 'आर्ट फाइल'। संग्रहालय कला दीर्घा चंडीगढ़ 2011

☞ ग्लास पैलसे आर्ट गैलरी, चंडीगढ़ में ग्रुप शो 2011

☞ पंजाब ललित कला अकादमी आर्ट गैलरी, चंडीगढ़ में ग्रुप शो ''अनटाइटल्ड'' 2012

☞ समूह शो ''समकालीन प्रसन्नता'' भारत के कलाकार पर, समनवाई आर्ट गैलरी, जयपुर, राजस्थान।

☞ 2012 सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम, नई दिल्ली 2012 में पेंटिंग और मूर्तियां प्रदर्शनी।

☞ ग्रुप शो ''कलर हार्मनी'' पेंटिंग और मूर्तिकला जहांगीर आर्ट गैलरी मुंबई 2013 की प्रदर्शनी

☞ पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ 2013

संग्रह

☞ नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली।

☞ सरकार संग्रहालय चंडीगढ़।

☞ भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, राष्ट्रपति भवन, शिमला।

☞ एआईएफएसीएस, नई दिल्ली।

☞ समकालीन कला दीर्घा, कोटा।

☞ आकार प्रकार आर्ट गैलरी, जयपुर।

☞ उद्योग विभाग, हरियाणा सरकार।

☞ आई.एस.आई मानक भवन, नई दिल्ली।

☞ सिटको, चंडीगढ़।

☞ साइबर सुरक्षा केद्रं चंडीगढ़।

☞ चंडीगढ़ ललित कला अकादमी।

☞ जनसंपर्क विभाग, हरियाणा।

☞ उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, कलाग्राम चंडीगढ़।

☞ भारत और विदेश में आईटीसी समूह और अन्य कई निजी संग्रह।

शिविर

☞ ऑल इंडिया फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स सोसायटी नई दिल्ली, ऑल इंडिया जूनियर नेशनल आर्टिस्ट पेंटिंग कैंप रफी मार्ग, नई दिल्ली 2001

☞ इटंरएक्टिव न्यू मीडिया कार्यशाला में भाग लिया 2004 में ललित कला अकादमी, नई दिल्ली।

☞ चंडीगढ़ ललित कला अकादमी द्वारा जल रंग कार्यशाला 2005, 15 जून 2008 से 21 जून 2008 तक राष्ट्रपति भवन, शिमला के भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान में एक सप्ताह के लिए निवास कलाकार।

☞ यूजीसी प्रायोजित राष्ट्रीय चित्रकला कार्यशाला की केएमवी जालंधर पंजाब 2008

☞ 11वें कला मेला राज्य ललित कला अकादमी, जयपुर में 2002 में सम्मानित किया गया।

☞ मूर्तिकला में राज्य AIFACS पुरस्कार, 2004 में चंडीगढ़ ललित कला अकादमी।

☞ पंजाब ललित कला अकादमी चंडीगढ़ द्वारा राज्य कला प्रदर्शनी में मेरिट सर्टिफिकेट अवार्ड 2010

एकल शो

☞ त्रिवणी आर्ट गैलरी में पेंटिंग का सोलो शो, त्रिवेणी कला संगम नई दिल्ली 1999

☞ कला मेले में पेंटिंग का एकल शो, 2002 में जवाहर कला केंद्र, जयपुर।

☞ पेंटिंग एलायंस फ्रैकाइस आर्ट गैलरी का सोलों शो, हिबिस्कस गार्डन के पास, चंडीगढ़ 2009

☞ गैलरी नंबर 3 ललित कला अकादमी में पेंटिंग का एकल शो, रविंद्र भवन, नई दिल्ली 2012

डुओ शो

☞ कंटेम्पररी आर्ट गैलरी, कोटा 2003 में डुओ शो।

☞ पेंट ब्रश और छेनी लड्डू सराय का डुओं शो नई दिल्ली 2010

समूह शो

☞ ललित कला अकादमी में ग्रुप शो ''वाडंर्स'' रविंद्र भवन, नई दिल्ली 1992

☞ जवाहर कला केद्रं , जयपुर 1992 में ग्रुप शो ''वांडर्स''।

☞ ताज पैलेस में समूह शो, नया 1997

☞ सरकार में समूह शो। संग्रहालय आर्ट गैलरी सुनामी राहत कोष 2005 के लिए चंडीगढ़।

☞ पंजाब कला भवन में ग्रुप शो ''अनटाइटल्ड'' रोज गार्डन, चंडीगढ़ 2006

☞ ललित कला संकाय एम.एस. विश्वविद्यालय में समूह शो ''पेटल्स' बड़ौदा, गुजरात 2008

☞ ग्रुप शो कलर्स ऑफ इंडिया पेंटिंग और प्रिंट की प्रदर्शनी, स्पेस फॉर न्यू आर्ट विंडसर द्वारा आयोजित कनाडा में कॉमन ग्राउंड आर्ट गैलरी कनाडा 2009

☞ ग्रुप शो ''090909 समकालीन कला प्रदर्शनी'' विजुअल आर्ट गैलरी, भारत पर्यावास केंद्र, नई दिल्ली 2009 रविंद्र नाथ टैगोर में समूह शो ''नॉस्टैल्जिया 09'' कला प्रदर्शनी केंद्र, आईसीसीआर, कोलकाता 2009

☞ ठाणे कला भवन तानशा आर्ट गैलरी, ठाने, मुंबई 2010 में समूह शो ''पेंटागन रंग''

☞ पंजाब ललित कला अकादमी आर्ट गैलरी में ग्रुप शो अनटाइटल्ड'' चंडीगढ़ 2010

☞ ठाणे कला भवन में समूह शो तन्शा आर्ट गैलरी , पेंटागोन हयुज'' ठाणे मुंबई 2010

☞ ललित कला अकादमी आर्ट गैलरी, पंजाबारी गुवाहाटी, असम 2010 में ग्रुप शो ''नॉस्टैल्जिया 10'' भारत के समकालीन कलाकार

☞ पंजाब ललित कला अकादमी आर्ट गैलरी में ग्रुप शो, अनटाइटल्ड'' 2011 का चंडीगढ़

☞ कलाग्राम 2009 में जनसंपर्क विभाग और उत्तर क्षेत्र संस्कृति केंद्र चंडीगढ़ द्वारा पेंटिंग कार्यशाला।

☞ चंडीगढ़ ललित कला अकादमी द्वारा सरकार में पेंटिंग कार्यशाला। संग्रहालय आर्ट गैलरी चंडीगढ़ 2009

☞ जवाहर कला केंद्र और पर्यटन विभाग राजस्थान द्वारा आयोजित रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान में अखिल भारतीय कलाकार शिविर 2010

☞ अखिल भारतीय ललित कला और शिल्प सोसायटी नई दिल्ली। अखिल भारतीय वरिष्ठ राष्ट्रीय कलाकार चित्रकारी शिविर रफी मार्ग, नई दिल्ली 2012

☞ पर्यटन सप्ताह चंडीगढ़ स्ट्रीट आर्ट पेंटिंग वर्कशॉप का आयोजन CITCO चंडीगढ़ द्वारा 2012

☞ पेंटिंग समन्वयक ''सिम्फनी'' कला और प्रौद्योगिकी राष्ट्रीय चित्रकला कार्यशाला और मूर्तिकला कार्यशाला पीईसी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, सेक्टर 12, यूटी चंडीगढ़ द्वारा आयोजित नवंबर 2015

☞ राजकीय महिला महाविद्यालय, रोहतक हरियाणा द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय चित्रकला कार्यशाला 2016

- ☞ स्टेट ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ द्वारा आयोजित 17वीं कॉलिजन पेंटिंग वर्कशॉप 2017

सहभागिता

- ☞ कला की राष्ट्रीय प्रदर्शनी 1986, 1994
- ☞ कला की अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी डब्ल्यू.एलआरए विश्व कांग्रेस 1993
- ☞ चतुर्थ भारत भवन समकालीन भारतीय कला का द्विवार्षिक 1992
- ☞ वार्षिक कला प्रदर्शनी AIFACS 1995
- ☞ अखिल भारतीय जल रंग कला प्रदर्शनी AIFACS 1987
- ☞ राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी 1993, 1994, 1995
- ☞ राजस्थान राज्य कला प्रदर्शनी 1994, 1995, 1996, 1999, 2000 और 2001
- ☞ दिल्ली राज्य कला प्रदर्शनी 1984, 86
- ☞ चंडीगढ़ ललित कला अकादमी 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009
- ☞ पंजाब ललित कला अकादमी 2004, 2005

तृतीय अध्याय

प्रमोद आर्य के कलात्मक कार्य

चित्र संख्या 01 :–

पेंटिग का नाम :– मैजेस्टिक गोल्ड़

माध्यम :– एक्रेलिक

आकार :– 70 X 70 इंच

सतह :– कैनवस

इस कृति को कलाकार ने ऐक्रेलिक रंगों से कैनवस पर बनाया है। चित्र में संतरी, हरे, पीले और भूरे रंगों का प्रयोग किया है। इसमें रंगों की दुनिया को दिखाया है। इसमें उन्होंने बताया है कि रंगों का आपस में कितना गहरा तालमेल है अर्थात एक खूबसूरत रिश्ता बना हुआ है। अगर रंग न हो तो हमारी जिंदगी फीकी लगेगी। रंग हमारी जिंदगी में बहार लाते हैं और खुशियां लाते हैं।

चित्र संख्या 02:–

पेंटिग का नाम :– राइजिगं ऑरेंज

माध्यमः– एक्रेलिक

आकारः– 122 X 122 सेंटीमीटर / 48 X 48 इंच

सतह :– कैनवस

इस कृति में कलाकार ने प्रकृति को दिखाया है। जैसे कई बार बारिश होती है, धूप होती है, कभी छांव होती है। यह पेंटिंग एक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवास पर बनाई गई है और मौसम अक्सर रचना का तत्व होता है। समय के अनुसार बदलता रहता है। कला में परिदृश्य पूरी तरह से काल्पनिक होते हैं। इस कृति में गहरे लाल रंग का प्रयोग किया गया है। इस पेंटिंग को अमूर्त कला में दर्शाया गया है।

चित्र संख्या 03:–

पेंटिग का नाम :– हरे रंग में शांति

माध्यम :– एक्रेलिक

आकार :– 178 X 178 सेटींमीटर / 70 X 70 इंच

सतह :– कैनवस

इस चित्र में नीले, हरे और पीले रंग का प्रयोग किया गया है। यह कृति ऐक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवस पर बनाई गई है। इस चित्र में जैसे ठंड के समय में ओस गिरती है, जो ठंडक होती है, बूंदों की दर्शाया गया है। परिदृश्य पेंटिगं को अमूर्त कला में दिखाया गया है। परिदृश्य आकाश, हरियाली,

बारिश आदि के रूप में विविध हो सकता है। चित्र में बहुत बारीकी से कार्य किया गया है। नीचे धरातल में गहरे रंग का प्रयोग किया गया है। जिससे प्रकृति में निखार आया है।

चित्र संख्या 4 :—

पेंटिग का नाम :— नीले रंग का स्पलैश

माध्यम :— एक्रेलिक

आकारः— 70 X 70 इंच

सतहः— कैनवस

इस कृति में कलाकार ने गहरे नीले और सफेद रंग का प्रयोग किया है। यह कृति ऐक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवस पर बनाई गई है। इस कृति में समुद्र के पानी के तेज बहाव को दर्शाया गया है, कि किस तरह समुद्र में पानी की लहरें बहती हैं। इन कृतियों में प्रकृति के मनोभावों को दिखाया गया है।

चित्र संख्या 5 :—

पेंटिग का नाम :— पीली पंखुड़ियाँ

माध्यमः— एक्रेलिक

आकार :— 70 X 70 इंच

सतह :— कैनवस

इस कलाकार ने ज्यादातर पेंटिंग कैनवस पर ही की है। इन्हें बड़े पैमाने के काम करना ज्यादा पसंद है। इस कृति में गहरे पीले रंग का प्रयोग किया गया है। इस कृति में बसंत के मौसम को दिखाया गया है कि बसंत के मौसम में फूल गिरे हुए होते हैं और चारों तरफ हरियाली छाई होती है। हर जगह शुद्ध वातावरण दिखाई पड़ता है, तो उनको देखकर हमारे मन में जो विचार आते हैं उनको इस पेंटिंग में दिखाया गया है कि बसतं के मौसम में कैसे आनंद की तरंगे दौड़ने लगती हैं। वन, उपवन, भांति—भांति के पुष्पों से जगमगा उठते हैं।

चित्र संख्या 6 :—

पेंटिग का नाम :— नीले रंग में मानसून

माध्यक :— ऐक्रेलिक

आकार :— 70 X 70 इंच

सतह :— कैनवस

इस कृति में मानसून के मौसम को दिखाया गया है कि उस समय कैसा रोमांटिक मौसम होता है। यह कृति में गहरे नीले रंग का प्रयोग किया गया है। यह कलाकृति एक ऐक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवस

पर बनाई गई है। इस पेंटिंग में नीले रंग में मानसून को अमूर्त कला में दिखाया गया है। इस कलाकृति में कलाकार ने मन के भावों को रंगो द्वारा सामने लाने की कोशिश की है।

चित्र संख्या 7 :–

पेंटिग का नाम :– रिपलिंग सिल्वर

माध्यमः– ऐक्रेलिक

आकार :– 70 X 70 इंच

सतहः– कैनवस

इस चित्र में यह दिखाया गया है कि जब पत्थरों के बीच में से नदी बहती है तो पत्थरों पर सिल्वर कलर की चमक दिखाई पड़ती है। इस कृति को बड़ी बारीकी से बनाया गया है। कलाकार ने इसमें आसमानी सिल्वर और हल्के भूरे रंग का प्रयोग किया है। इस कृति को ऐक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवस पर बनाया गया है। इस पेंटिंग में कलाकार ने अपने मन के भावों को उजागर किया है।

चित्र संख्या 8:–

पेंटिग का नाम :– हरी घाटी

माध्यमः– ऐक्रेलिक

आकारः– 70 X 70 इंच

सतह :– कैनवस

प्रस्तुत चित्र में कलाकार ने प्रकृति को दिखाया है। इस कृति में हरे और पीले रंग का प्रयोग किया है। यह पेंटिंग एक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवस पर बनाई गई है। पृष्ठभूमि में हरा रंग किया गया है और टेक्सचर दिया गया है। इस चित्र में रंगों की दुनिया को दिखाया गया है। इसमें उन्होंने बताया है कि रंगों का आपस में कितना गहरा तालमेल है अर्थात एक खूबसूरत रिश्ता बना हुआ है। रंग बिना किसी आकृति के भी खूबसूरत लग सकते हैं। इस चित्र में यह संदेश दिया गया है कि अगर रंग न हो तो हमारी जिंदगी बेरंग लगेगी।

चित्र संख्या 9:–

पेंटिग का नाम :– चांदी का पत्थर

माध्यमः– ऐक्रेलिक

आकारः– 70 X 70 इंच

सतह :– कैनवस

इस कृति में कलाकार ने छोटे–छोटे सिल्वर पत्थरों को रंगो द्वारा बड़े ही अच्छे ढंग से बनाया है। इस कृति में नीले, हरे और सिल्वर रंग का प्रयोग किया गया है। पृष्ठभूमि में हल्का नीला और सफेद रंग का टेक्सचर दिया गया है कि कैसे धूप के कारण पत्थर चमकते हैं। उनको दिखाया गया है।

चित्र संख्या 10:–

पेंटिग का नाम :– मैजेंटा की महिमा

माध्यमः– एक्रेलिक

आकारः– 70 X 70 इंच

सतक :– कैनवस

इस चित्र में कलाकार ने गुलाबी और जामुनी रंग का प्रयोग किया है। यह पेंटिंग एक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवस पर बनाई गई है। मैजेंटा एक फूल का नाम है कि जब वह फूल जमीन पर गिरता है तो कैसे बिखर जाता है। इस चित्र में कलाकार ने इंसान और फूलों का रिश्ता बताया है कि कितना गहरा रिश्ता है। फूल हमें खुश रहना सिखाते हैं, चाहे हम दुख में हो या सुख में। फूलों को देख कर हमारे चेहरे पर प्रसन्नता आ जाती है। हमें प्रकृति से जुड़कर रहना चाहिए।

चित्र संख्या 11 :–

अनटाईटल**:-**

इस कृति में कलाकार ने प्रकृति को बड़े ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। इसमें आकाश में सूरज को दिखाया गया है। यह कृति एक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवस पर की गई है। इस में भूरे और आसमानी रंग का प्रयोग किया गया है। इसमें पहाड़ों को दर्शाया गया है।

चित्र संख्या 12 :–

अनटाईटल**:-**

यह कृति ऐक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवस पर बनाई गई है। इसमें हल्के रंगों का प्रयोग किया गया है। उगते हुए सूरज को दिखाया गया है। इसमें पानी के बहाव को दिखाया गया है। कलाकार ने अपनी पेंटिंग में प्राकृतिक का विवरण किया है।

चित्र संख्या 13:–

अनटाईटल**:-**

इस कृति में गहरे रंगों का प्रयोग किया गया है। यह पेंटिंग एक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवस पर बनाई गई है। इसमें लाल और काले रंग का प्रयोग किया गया है। यह बड़ी बारीकी से कार्य किया गया है।

चित्र संख्या 14:—

अनटाईटल**:-**

इस कृति में कलाकार ने हल्के रंगों का प्रयोग किया है। काले रंग से पेड़ों को बनाया गया है। यह पेंटिंग दिखने में बहुत खूबसूरत लगती है।

चित्र संख्या 15:—

अनटाईटल**:-**

इस कृति में आसमान और पहाड़ों को दर्शाया गया है। इसमें आसमानी और हरा और भूरे रंगों का प्रयोग किया गया है अर्थात सुंदर सा टेक्सचर दिया गया है। यह पेंटिंग प्रकृति का विवरण करती है। इसमें हल्के रंगों का प्रयोग किया गया है।

चित्र संख्या 16:—

अनटाईटल**:-**

इस चित्र में कलाकार ने पीले रंग का सुंदर टेक्सचर दिया है। यह पेंटिंग एक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवस पर बनाई गई है। इसमें पीला और हल्का हरे रंग से प्रकृति को दर्शाया है। कलाकार की यह पेंटिंग बहुत सुंदर है। इसमें उन्होंने अपने मन के भावों को उजागर किया है।

चित्र संख्या 17:—

अनटाईटल**:-**

इस कृति में हल्के रंगों का बड़ी सावधानी से प्रयोग किया गया है। इसमें हरा आसमानी और फीका गुलाबी रंग प्रयोग किया गया है तथा बड़ा ही सुंदर टेक्सचर दिया गया है। इस पेंटिंग में बड़ी बारीकी से कार्य किया गया है।

चित्र संख्या 18:—

अनटाईटल**:-**

इस कृति में कलाकार ने समुंदर में पानी के बहाव को दिखाया है तथा छोटे—छोटे पत्थरों को बिखेरे हुए दिखाया है। यह पेंटिंग कैनवस पर की गई है। इसमें पानी के लहराते हुए का सुंदर चित्रण किया गया है।

चित्र संख्या 19:–

अनटाईटल**:-**

यह कृति पूरी तरह से प्रकृति पर प्रभावित है। इसमें गहरे और चमकीले रंगों का प्रयोग किया गया है तथा छोटी–छोटी सूखी झाड़ियों को दर्शाया गया है। इसमें हरा, भूरा और नीले रंग का प्रयोग किया गया है। यह पेंटिंग कैनवस पर बनाई गई है।

चित्र संख्या 20:–

इस चित्र के अंतर्गत कलाकार ने बड़ा ही सुदंर टैक्सचर दिया है तथा हल्के रंगों का प्रयोग किया गया है। इस पेंटिंग में बड़ी सावधानी से बारीकी कार्य किया गया है तथा रंगों के साथ खेला गया है। यह पेंटिंग एक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवस पर बनाई गई है।

चित्र संख्या 21 :–

अनटाईटल**:-**

इस कृति को कलाकार ने बड़े ही सुंदर तरीके से बनाया है। यह पेंटिंग एक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवस पर की गई है। इसमें हल्के तथा मन को शांत रखने वाले रंगों का प्रयोग किया गया है। इसमें हरे रंग द्वारा टैक्सचर दिया गया है।

चित्र संख्या 22 :–

अनटाईटल**:-**

इस कृति में बादलों को दर्शाया गया है। इसमें आसमानी, पीला, हरा और भूरे रंग का प्रयोग किया है। इसमें प्रकृति का सुनहरा विवरण किया गया है तथा बड़ा सुंदर टैक्सचर दिया गया है। यह पेंटिंग एक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवस पर बनाई गई हैं। इसमें कलाकार ने मन के भावों को व्यक्त किया है।

चित्र संख्या 23 :–

अनटाईटल**:-**

इस कृति में आसमानी और हरे रंग का प्रयोग किया गया है तथा रंगो द्वारा टेक्सचर दिया गया है। यह पेंटिंग कैनवस पर बनाई गई है। कलाकार अपने मन के भावों को पेंटिंग के माध्यम से प्रकट करता है।

चित्र संख्या 24 :–

अनटाईटल**:-**

इस कृति में गहरे रंगों का इस्तेमाल किया गया है। यह पेंटिंग कैनवस पर बनाई गई है। इसमें लाल, भूरे और हल्के आसमानी रंग का प्रयोग किया है। यह कार्य बड़ी बारीकी से किया गया है तथा बड़ा ही सुंदर टैक्सचर दिया गया है।

चित्र संख्या 25 :–

अनटाईटल**:-**

इस कृति में प्रकृति का विवरण किया है। यह पेंटिंग कैनवस पर एक एक्रेलिक रंगो द्वारा बनाई गई है। इसमें हरे और पीले रंग का प्रयोग किया है। हरे रंग के ऊपर पीले रंग से बड़ा सुंदर टैक्सचर दिया गया है। एक कलाकार की कल्पना पर हमारे आसपास की प्राकृतिक सुंदरता का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा है। इन पेंटिंग में प्रकृति को ही दर्शाया गया है।

चतुर्थ अध्याय

प्रमोद आर्य की कला शैली

साधारण शब्दों में तकनीक किसी भी कार्य को करने का तरीका अथवा विधि है, किंतु कला के क्षेत्र में तकनीक कलाकार के द्वारा प्रयोग की गई प्रक्रिया को माना जाता है। कलाकार जो कुछ भी अपने आसपास से व अपने गुरु से ग्रहण करता है, उसका अपने अनुभवों के आधार पर नवीनीकरण करता है। जो उसकी पहचान बनाने में बहुत अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यही कलाकार की निजी तकनीक कहलाती है।

जहां तक चित्रण का संबंध है, तकनीक शब्द साधारण तथा उन उपयोगों को इंगित करता है, जो रेखा व रंग से चित्रमय आकारों की अभिव्यक्ति हेतु सौन्दर्य सिद्धांतों के आधार पर विभिन्न माध्यमों का प्रक्षय लेना होता है और किसी भी कलाकार की तकनीक का मूल्यांकन उसके चित्रों के वर्गीकरण और विश्लेषण से निर्धारित होता है।

स्वयं प्रमोद आर्य का कहना है कि अनेक प्रदर्शनों तथा कार्यशालाओं से उन्हें कुछ ना कुछ सीखने को मिलता है। नई नई तकनीक देखने को मिलती है। वह अपने कला प्रेमियों और नई कलाकार पीढ़ी को भी यही संदेश देते हैं कि कार्यशाला में तथा प्रदर्शनों में जाकर इंसान को बाहर के कला जगत का पता चलता है। तकनीक का ज्ञान बढ़ता रहता है। जिस प्रकार एक कवि अपने विचारों, अपनी भावनाओं को कविता के माध्यम से प्रकट करता है, उसी प्रकार एक कलाकार भी अपनी कला के माध्यम से अपने भावों को कला में उजागर करता है। अपनी अपनी कला में सभी लोग यंत्रों का सहारा लेते हैं। ठीक उसी प्रकार एक चित्रकार अपने अनुभूतियों व भावनाओं को रंगों व तूलिका द्वारा चित्रित करता है।

प्रमोद आर्य जी को आरंभ से ही परिदृश्य चित्रण में विशेष रूचि रही है। इनके द्वारा चित्रित चित्रों में आत्मीयता तथा कृतज्ञता की भावना उजागर होती है। प्रमोद आर्य ने कला के बारे में कहा है कि– ''कला जो भावना है, आपकी जो अभिव्यक्ति है, वही कला है''।

इन्होनें परिदृश्य और अमूर्त चित्रों का चित्रण किया। इनके चित्रों में आधुनिकता की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। कला के सच्चे उपासक से जिस तन्मयता की हम आशा करते हैं, वह इन में विद्यमान है। ये अपने चित्रों को अनेक जगहों पर प्रदर्शनीयों में भेजते हैं। जब वह अपना कार्य बाहर भेजते हैं तो उन्हें बहुत अच्छा महसूस होता है। उन पर जब भी कोई विपरीत स्थिति आई, जिसने उन्हें थोड़ा परेशान कर दिया। उन्होंने स्वयं को आसानी से संभाल लिया।

इनके चित्रों में नई नई तकनीक देखने को मिलती है। इनके चित्रों को देखकर ऐसा आभास होता है कि कला के उपासक अपने कार्य कला शैली में निरंतर बदलाव व नयापन लाने को तत्पर हैं। कला के क्षेत्र में जो स्थान एवं योगदान प्रमोद आर्य जी का है, वह स्वयं में बहुत बड़ी बात है। जिससे भविष्य में इन्हें एक सक्षम कलाकार के रूप में जाना जाएगा।

वे एक सहज तथा आम जनजीवन के करीब पहुंच सकने वाले कला शैली की साधना में डूब गए। उन्होंने महसूस किया कि कला कोई मानव जीवन से परे की वस्तु नहीं है बल्कि, यह तो हमारे आसपास हर जगह विद्यमान है। इसलिए उसने अपने आसपास की वस्तुएं या अपने भावों को सुंदर ढंग से कैनवस पर चित्रित किया है।

इन के चित्रों में गहरे चटकीले रंगों का प्रयोग है, जो दर्शकों की प्रेरणा का स्त्रोत है। वे हरदम अपनी कला में नयापन लाने की कोशिश करते रहते हैं। इनका कहना है कि अगर कला में कुछ नया बदलाव नहीं आएगा तो कला सड़ जाएगी। वह भरपूर परिश्रम कर रहे हैं।

प्रमोद आर्य जी को प्राकृतिक चिन्हों को चित्रित करना बहुत पसंद है। खुला आसमान उनके स्वतंत्र होने का प्रतीक हैं। प्रमोद आर्य जी को अपने जीवन के एक–एक पल को जीना आता है। वे अपने अद्भुत व्यक्तित्व से सभी को अपना बना लेते हैं और अपने चित्रों में भी वह एक नई लहर डाल देते हैं। ये अपने चित्रों को बहुत ही आकर्षक और लयात्मक रंगों से पेश करते हैं, क्योंकि जीवन के साथ–साथ चित्रकला में वर्ण का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

चित्रों में संतुलन :–

संतुलन शब्द का प्रयोग मात्र चित्रकला में नहीं अपितु , जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जीवन की क्रिया संतुलित होने पर ही सुचारु रुप से आगे बढ़ सकती है। यदि चित्रकार के जीवन में संतुलित रूप का दर्शन करना हो तो उनके चित्रों का बारीकी से निरीक्षण करना आवश्यक है। जितना चित्रकार का जीवन सदा होगा, इतना ही उसका कला के प्रति नजरिया विस्तृत होगा।

प्रमोद आर्य भी अपने चित्रों में संतुलन और तालमेल करने के लिए अपना ही सूत्र है। उन्होंने अपने चित्रों में केंद्रीय आकृति को प्रमुखता देने के लिए उसे सही प्ररिप्रेक्ष्य में चित्रित किया। प्रमोद आर्य ने कला जगत में अपनी एक निजी पहचान बना कर चित्रकला के क्षत्रे में अपना एक सुदृढ़ स्थान बना लिया है। उनकी रचनाओं में कलात्मकता, लय और संतुलन का भाव प्रधान होता है।

प्रकृति और मानव का संबंध टूट रहा है। प्रकृति ही मानव को जीने की प्रेरणा देती है और उसके साथ–साथ मानव को प्रकृति की सुंदरता की अनुभूति कराती हैं। इनमें प्रकृति के अनेक रूप – जंसे पहाड़, नदियां, सागर, पेड–पौधे, फूल के अनेकों रूप तथा रंग भी मानव को सबसे अधिक आकर्षित करते हैं।

अमूर्त कला :–

अमूर्त कला एक रचना बनाने के लिए आकृतियों, रूप, रंगों और रेखाओं की दृश्य भाषा का उपयोग करती है। जो कला के पारंपरिक दृश्य संदर्भ की तुलना में काफी स्वतंत्रता के साथ मौजूद हो

सकती है। अमूर्तता कला में कल्पना के चित्रण में वास्तविकता से प्रस्थान का संकेत देती है। कलाकृति जो स्वतंत्र भाव से बनाई जाती है। उदाहरण के लिए विशिष्ट रूप से रंगों और रूपों को बदलना, जिससे देखने वाले पर प्रभाव पड़े, वही अमूर्त कला कहलाती है। प्रमोद आर्य जी भी अपनी बहुत कलाकृतियों में अमूर्त कला दिखाते हैं।

अमूर्तता कला में कल्पना के चित्रण में वास्तविकता से प्रस्थान का संकेत देती है। ज्यामितीय या अमूर्त और गीतात्मक अमूर्त अक्सर पूरी तरह से अमूर्त होते हैं। आंशिक रूप से अमूर्तता को अपनाने वाले बहुत से कला आंदोलनों में उदाहरण के तौर पर फाविज्म है, जिसमें रंगों को विशिष्ट रूप से और सच्चाई के बरक्स बदला जाता है।

पॉल गउगिन, जॉर्जेस सेरात, विसेंट वैन गॉग और पॉल सेजेन द्वारा पोस्ट इंप्रेशनिज्म के प्रचलन ने 20वीं शताब्दी की कला पर बहुत प्रभाव पड़ा और इससे 20वीं सदी की अमूर्तता का आगमन हुआ।

विषय एवं रंग :–

प्रत्येक कलाकार अपनी कार्यक्षमता के अनुसार कार्य सामग्री का प्रयोग करता है। प्रमोद आर्य जी ने अपनी कार्यशाला में सृजन के लिए विभिन्न वस्तुओं का निर्माण किया और उन्हें अच्छे से प्रयोग भी किया। इनके काम का विषय परिदृश्य रहा है जो भी वस्तु उनके मन को अच्छी लगी थी, ये उसी का चित्र बना देते। इन्होंने प्रकृति से गहरा लगाव है। इसलिए उनके काम में भावुकता झलकती है।

प्रमोद आर्य जी एक बहुत ही सादा और सुलझे हुए कलाकार हैं। यह कैनवस पर रंगों के साथ खेलते हैं। ये एक्रेलिक रंगों को पानी की सहायता से कैनवस पर ऐसे लगाते हैं कि वह कैनवस की तरह पर मोती बनकर उभर जाते हैं। वे बहुत ही अच्छे ढंग से टेक्सचर की संरचना करते हैं।

प्रमोद आर्य जी का मानना है कि कला सबके लिए आसान नहीं होती। इसे सीखना एक ऐसी विधि है जिससे आनंद की अनुभूति होती है। जब कला में आनंद होता है, तब खुद ही मन में कल्पना का विकास होता है। जिससे अनेक प्रकार की पेंटिंग तैयार हो जाती है। यह असीम खजाना है, जो कभी खत्म नहीं होता और कलाकार अपनी भावनाओं को चित्र के माध्यम से पेश करता है।

परंतु कलाकार को इससे भी आगे जाना पड़ेगा तभी वह कुछ नया सीख पाएगा। क्योंकि चित्रकार हमेशा कुछ नया सीखने को तत्पर रहता है। उन्होंने ऐसे रंगों और विषयों को उठाया जिन्हें आसानी से जनता समझ सके। जो हमारी आंखों को अच्छा लगे और हमारे मन को छुए वह सुंदर है और कला भी सुंदरता का ही रूप है।

प्रमोद आर्य जी जब भी कैनवस को देख कर उसे चित्रित करने लगते हैं तो उसके विषय में डूब जाते हैं और फिर कल्पना की उड़ा नें मन में इधर–उधर घूमने लगती हैं, जिसे वे कैनवस पर

उतार देते हैं। बचपन में जब प्रमोद आर्य ग्राम में रहते थे तो वहां पर प्रकृति, पेड़, पौधे, पहाड़ आदि को देखकर उन्हें चित्रित करने लगते थे।

कलाकार प्रत्येक वर्ग से संबंधित उनकी अच्छाई और बुराई दोनों को चित्रित करता है। चित्रों के विषयों में पक्षी, पेड़, पौधे, पत्थर, पहाड़ तथा अन्य कई रूपांतर उन्होंने अपने विशेष शैली में चित्र फलक पर चित्रित किए। लैंडस्केप पेंटिंग जिसे लैंडस्केप आर्ट के रूप में भी जाना जाता है। जैसे– पहाड़, घाटियों, पेड़ों, नदियों और जंगलों जैसे प्राकृतिक दृश्य विशेष रूप से जहां मुख्य विषय एक विस्तृत दृश्य हैं।

कला में लैंडस्केप के दृश्य पूरी तरह से काल्पनिक हो सकते हैं। प्रमोद आर्य जी अपने कामों में गहरे रंगों का प्रयोग करते हैं। इनकी पेंटिंग मन को भावुक करने वाली होती है।

पंचम अध्याय

प्रमोद आर्य से साक्षात्कार

प्रश्न 01 :– कला क्या है? कैनवस के साथ संवाद या कैनवस के माध्यम से संवाद ?

उत्तर :– कला जो भावना है, आपकी जो अभिव्यक्ति है, वही कला है। कला मनुष्य के भावों को प्रकट करती है। एक कलाकार का कैनवस के साथ संवाद होना बहुत जरूरी है। मुझे ऐसा लगता है कि जब इसमें बाहरी दुनिया का या और किसी चीज का हस्तक्षेप होगा, तो कला का जो अपना स्वरूप है वह नहीं रहेगा, वह कहीं खो जाएगा। एक कलाकार को अपने भीतर के भाव को जैसा उसके अंदर आ रहा है, उसको वैसा ही कैनवस पर उतार देना चाहिए।

प्रश्न 02 :– आप की शिक्षा कब और कहां से संपन्न हुई ?

उत्तर :– मेरी स्कूल की शिक्षा नैनीताल से हुई और उसके बाद मैंने राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट से 5 का वर्ष का एप्लाइड आर्ट से डिप्लोमा किया। बी.एफ.ए. करने के बाद दिल्ली के आर्ट कॉलेज से एम. एफ.ए किया। और इसके साथ–साथ पेंटिंग में मेरी बहुत रूचि है।

प्रश्न 3 :– किससे प्रेरित होकर आपने कला में रुचि दिखाई ?

उत्तर :– मेरे जो बड़े भाई हैं, उनको कला का बहुत शौक था। पर वह ऐसे ही कलाकार थे। उन्होंने ऐसी कोई शिक्षा नहीं की थी। पर वह बहुत ही अच्छा काम करते थे, उनसे प्रभाव पड़ा। और दूसरा मैं पहाड़ों में रहा हूं तो मुझे प्रकृति से बहुत ज्यादा लगाव था। तो इन कारणों से प्रेरित होकर मेरी कला में रुचि हुई।

प्रश्न 04 :– आपको कौन से माध्यम में कार्य करना अच्छा लगता है ?

उत्तर :– सबसे पहले मैंने वाटर कलर से कार्य करना शुरू किया और ऑयल पेस्टल और एक्रेलिक से भी मुझे कार्य करना अच्छा लगता है। इसलिए ज्यादातर में इन तीनों मीडियम में काम करना पसंद करता हूं।

प्रश्न 05 :– जब आप कोई पेंटिंग बनाते हैं, तो पहले विषय के बारे में सोचते हैं या अकस्मात ही जैसे लकीरें बन जाए उन से कुछ निकल आता है ?

उत्तर :– जब कैनवस मेरे सामने लगता है तो उस समय मेरे मन में कुछ नहीं होता। पहला बिंदु पहली लाइन जो मैंने वह बिंदु वह लाइन मुझे बताती है कि मुझे आगे क्या करना है और पेंटिंग खुद ही बन जाती है। पर कई बार ऐसा होता है पेंटिंग रूठ जाती है, तो कई बार आसानी से मान भी जाती है। कई बार पेंटिंग हमें घूमाती है, तो कई बार हम पेंटिंग को घुमाते है। कोई पक्षी आता है, कोई भी तत्व आता है, कोई भी भाव आता है, मैं उसको हूबहू कैनवस पर उतार देता हूं। इस तरह कलाकृतियां चलती रहती हैं।

प्रश्न 06 :– आपका कोई ऐसा पसंदीदा रंग जिसे आप अपने कार्य में अधिक प्रयोग में लाते हैं ?

उत्तर :– मतलब समय अनुसार मेरे रंगों की पसंद का बदलाव हुआ। जैसे मेरा पूरा बचपन पहाड़ों में बीता तो अपने आसपास जितने भी हम रंग देखते हैं नीला, हरा उन्हीं से मैं ज्यादा प्रेरित था। पर ज्यादातर हरा रंग मैंने ज्यादा देखा बचपन में तो, वही रंग दिमाग में बैठ गए। तो मेरा सबसे पसंदीदा रंग हरा है। इन्हीं रंगों से मैं कार्य करने में आरामदायक अनुभव करता हूं और वैसे मैं एक एप्लाइड कलाकार भी हूं तो कई बार हमारी पढ़ाई का तरीका भी ऐसा है कि रंगों को ज्यादा केद्रं नहीं करते।

प्रश्न 07 :– नौकरी की तलाश में आपके क्या संघर्ष रहे ?

उत्तर :– देखा जाए तो नौकरी की तलाश में मैंने बहुत ज्यादा संघर्ष तो नहीं किए क्योंकि उसका कारण यह था, कि मैं स्टेप बाय स्टेप कार्य करता रहा। मेरा जो मुख्य विषय था वह एप्लाइड कला से है तो बी.एफ.ए करने के बाद दिल्ली में मुझे निजी नौकरी मिलती रही। इस तरह से मैंने वहां 3 साल

तक काम किया। वहां पर मैंने कलाकार के लिए या विज्ञापन के लिए भी काम किया और फिर उसके बाद चंडीगढ़ में मुझे नौकरी मिल गई। मैं मतलब नौकरी के लिए बड़ी जगहों पर नहीं भटका।

प्रश्न 08 :– आप का ज्यादातर काम परिदृश्य पर है ऐसा क्यो ं ?

उत्तर :– हां, मैं जो पेंटिंग करता हूं वह परिदृश्य करता हूं। यह एक तरह का अभिव्यक्ति है। मेरे मन में जो विचार होते हैं, उस तरीके से मैं काम करता हूं। सामने देखकर मैं कार्य नहीं करता और वैसे मेरा पूरा बचपन पहाडों में बीता तो मुझे प्रकृतिक से बहुत ज्यादा लगाव है।

प्रश्न 09 :– कला के अलावा भी क्या आपकी कोई रुचि रही ?

उत्तर :– हां, थोड़ा बहुत घूमने फिरने का शौक है, गाना सुनने का शौक है। जैसे हम काम करते हैं तो थोड़ा बहुत गाना सुन लेते हैं। पर इसको मैं यह नहीं कहूंगा कि ज्यादा ही शौक है।

प्रश्न 10 :– क्या समय के साथ आपके काम में कोई बदलाव आया ?

उत्तर :– हां, ऐसा है, समय के साथ–साथ काम में बहुत बदलाव आता है। मेरे काम के भी स्टाइल में बदलाव आया है। हम जब गहराई से काम करते है। बहुत वास्तविक काम करते हैं, उस समय हमें ऐसा लगता है कि हम लोगों को दिखा दें कि हमें क्या आता है। लेकिन धीरे–धीरे जैसे ही एक लंबे समय तक हम काम करते हैं, हमारे अंदर एक प्रौढ़ता आने लगती हैं। हम धीरे–धीरे सरलता में आ जाते हैं। काम में सहजता आ जाती है। काम धीरे–धीरे बहुत सरल हो जाता है। जैसे जब हम बच्चे होते हैं कुछ अलग तरीके के कपड़े पहनते हैं, जब जवान हो जाते हैं, काफी गहरे रंग के कपड़े डालना शुरू करते हैं। लेकिन जब हमारे अंदर प्रौढ़ता आ जाती है हम सरलता की तरफ बढ़ते जाते हैं और हमारे जो रंग हैं और जो काम है वह भी सरलता की ओर बढ़ता जाता है। जब कोई नई कविता लिखने लगता है, तो शुरू में वह काफी भारी भारी शब्दों का प्रयोग करता है, लेकिन धीरे–धीरे उसके शब्दों में सहजता आने लगती है। इसी तरह काम में थोड़ा बहुत बदलाव आना तो निश्चित है।

प्रश्न 11 :– आपके अनुसार कला समाज के लिए कैसे महत्वपूर्ण है ?

उत्तर :– कला समाज में इंसान के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। जब समाज में कला होगी तो लोगों में सोचने समझने की जागरूकता आएगी। जैसे शिक्षा का होना जरूरी है, तो समाज में कला का होना भी बहुत जरूरी है। कला जीवन जीने का तरीका सिखाती है।

प्रश्न 12 :— आपने जब तक कला के क्षेत्र में जितना भी कार्य किया है, आपको उसमें सबसे मनपसदं कार्य कौन सा लगा ?

उत्तर :— मनपसंद कार्य तो सारे ही होते हैं। हां, यह जरूरी होता है कि जब हम कोई काम करते हैं उसके करने के बाद कई बार हमें ऐसा लगता है कि अरे नहीं काम कुछ अच्छा नहीं है, लेकिन बाद में वही काम अच्छा लगने लगता है। कई बार पेंटिंग रूठ जाती है, तो कई बार आसानी से मान भी जाती है। कई बार पेंटिंग हमें घूमाती है, तो कई बार पेंटिंग को हम घूमाते हैं। एक कलाकार के लिए यह बताना बहुत मुश्किल है क्योंकि वह अपने भावों से कार्य करता है।

प्रश्न 13 :— जैसा कि आप अब अध्यापक हैं, तो कितना योगदान होता है, एक अध्यापक का कलाकार जीवन में ?

उत्तर :— हां, ऐसा है कि जो कला की पढ़ाई करते हैं वो एक विद्यार्थी और अध्यापक का जो संबंध है, उस पर बहुत असर डालता है। अगर हमने अपने अध्यापक को काम करते हुए देखा है, तभी हमारे मन में काम करने की इच्छा जागृत हुई। जब हम पढ़ते थे तो हमारे समय में मोहन शर्मा जी थे और भी बहुत ज्यादा अध्यापक थे, जो काम करते रहते थे। उनसे प्रभावित होकर हम भी अपना काम शुरू करते थे। एक अध्यापक का बहुत महत्व होता है कलाकार के जीवन में।

उपसंहार

कला जीवन के रूप सौंदर्य की वृद्धि करने व मानवीय भावनाओं की पूर्ति करने का अनुपम साधन है। कला उतनी ही पुरानी है, जितना मानवीय जीवन। यह मानव जीवन की अभिव्यक्ति भी है तथा सम्प्रेषण का माध्यम भी। हर संस्कृति में मानव की मूलभूत आवश्यकताओं के साथ कला जुड़ी हुई है। इससे मनुष्य अपने भावों को व्यक्त करता है, धारणाओं को बनाता है, आशाओं को संजोता है तथा भय की अभिव्यक्ति करता है। मानवीय जीवन की आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति का यह माध्यम है। यह मानव की आत्मा से जुड़ी हुई है।

ईश्वर ने इस संसार की सबसे सुंदर कृति मानव को बनाया है। इस संसार के मानव भिन्न भिन्न प्रकार की सोच रखते हैं। सभी अपने–अपने ढंग से कार्य करते हैं, कुछ लोगों को भगवान ने अनंत असीम कृपा से बनाया है। उनके व्यक्तित्व को निखारा है। प्रमोद आर्य जी भी उन कलाकारों में से एक हैं। यह एक मेहनती और लग्नशील कलाकार हैं। इन्होंने अपने कला जीवन में जुट कर कार्य किया और अभी भी अपने कला पथ पर चलते जा रहे हैं। पेंटिंग में इनकी रुचि अब इनकी आदत बन चुकी है। उन्होंने कई स्थानों पर अपनी कलाकृतियों की प्रदर्शनीयां लगाई हैं।

अपनी अलग पहचान बनाना एवं उस पहचान को कायम रखना अत्यंत जटिल कार्य है। किंतु स्वभाव में विनम्र एवं कर्मठ अत्यंत जटिल कार्य करने वाले प्रमोद आर्य जी ने न केवल कला क्षेत्र में अपनी पहचान ही बनाई है, बल्कि उसे कायम रखने में भी वह अत्यंत सफल हुए हैं। इनकी यही ताकत इन्हें मजबूत बनाती है।

इस शोध के अंतर्गत मैंने श्री प्रमोद आर्य जी को महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रकाश में लाने का एक कलाकार के रूप में उनके अद्भुत व्यक्तित्व, उनकी कलाकृतियों व उनकी छिपी भावनाओं को प्रकाश में लाने का प्रयाास किया है। और मैंने उनके योगादान को दर्शाया है।

जिनमें कुछ ना कुछ सीखने की प्रवृत्ति रहती है। उनका जीवन मार्गदर्शक है। भारतीय कला क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान बनाने के बावजूद भी वह सौम्य सादगी से भरपूर हैं। प्रमोद आर्य जी तूलिका की सहायता से अपने कार्य को इतना सुंदर और स्पष्ट कर देते हैं कि ह्रदय में अंतरमय तृप्त हो जाती है।

इन्होनें अपने चित्रों में लैंडस्केप दिखाए हैं, इनकी कलाकृतियां रहस्य से भरपूर हैं। प्रकृति और समाज में निरंतर बदलते रूप के साथ रोज नए अनुभव व संवेदनाओं के बीच से उनकी कला सदैव गुजर रही है। प्रमोद आर्य जी के चित्रों में सामाजिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, विश्व की अधानता, उनके अनुभवों के आधार पर मिलती है। वह सरल, सीधे व अपने कार्य में तल्लीन रहने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उन्होंने कला के क्षेत्र में व्याप्त प्रसिद्धयों को प्राप्त किया है।

निस्वार्थ भाव से पेंटिंग करना इनका स्वभाव है। यही भाव इनकी कृतियों में भी झलकता है। स्वभाव से विनम्र एवं कर्मठ अत्यंत जटिल कार्य करने वाले श्री प्रमोद आर्य जी ने कला क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है। यही ताकत उन्हें मजबूत बनाती है। इनको प्रकृति से बहुत ज्यादा लगाव हैं।

जब से इनके मन में चित्रकला सीखने का विश्वास उत्पन्न हुआ और वे इस और आगे बढ़े एक बार बढ़ने के बाद कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

प्रमोद आर्य जी की कला किसी बंधन से बंधी नहीं है। यह समय समय पर परिवर्तन चाहते हैं। इन्होंने अपने चित्रों में जीवन की सच्चाई को स्थान दिया है। प्रमोद आर्य जी का मन आजाद पक्षी की भांति है। जिस तरह एक पक्षी अपने पंखों की सहायता से आसमान छूता है, उसी तरह से प्रमोद आर्य जी ने अपने चित्र सृंचना से आसमान के शिखर को छुआ है। इसलिए इन्होनें जीवन के विविध पक्षों को अपनी कला में सराहनीय स्थान प्रदान किया है। यह कलाकार स्वतंत्र कला में विश्वास रखता है। प्रमोद आर्य जी बौद्धिक क्षमता से कलाकृतियों का निर्माण करते हैं। इनका कहना है कि कलाकार एक सृष्टा होता है, जो अपनी कलाकृतियों के माध्यम से समाज में उद्धत भावनाओं को स्थापित करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, लोकशचन्द्र. भारत की चित्रकला. इंडियाः कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 1970.
2. शर्मा, डॉ0. हरद्वारीलाल. 1970 कला दर्शन. इलाहाबादः साहित्य संगम, 2009.
3. प्रताप, डॉ0. रीता. भारतीय चित्रकला एंव मूर्तिकला का इतिहास. राजस्थान : हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2009.
4. र.वि. साखलकर. आधुनिक चित्रकला का इतिहास. राजस्थान. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2015.
5. डॉ0. कादरी. भारतीय चित्रकला का इतिहास. बरेली : स्टडेन्ट स्टोर रामपुर बाग, 1986.
6. र.वि. साखलकर, कला के अन्तदर्शन. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2008.
7. चतुर्वेदी, डॉ0. ममता. पाश्चात्य कला. जयपुरः राजसथान हिन्दी गंथ अकादमी, 2009.
8. द्विवेदी, डॉ0. प्रेमशंकर. भारतीय चित्रकला के विविध आयाम. बी.एच.यू वाराणसीः कला प्रकाशन, 2007.
9. वर्मा, डॉ0. अविनाश. बहादुर और अमित वर्मा. कला एंव तकनीक. बरेलीः बड़ा बाजार, 1998.
10. शर्मा, डॉ0. लोकेश चंद्र. भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास. मेरठः गोयल पब्लिशिंग हाउस, 2005.
11. शर्मा, डॉ0. हरद्वारीलाल. कला–दर्शन. इलाहाबाद : साहित्य संगम, 2009.
12. गोस्वामी, डॉ0. प्रेमचंद. आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ. जयपुर : हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2011.
13. गुप्त, डॉ0. जगदीश. प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला. दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1960.
14. गैरालो, वाचस्पति. भारतीय चित्रकला. इलाहाबाद : मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 1969.

Youtube

1. Pramod Arya Interview by Parul : Chandigarh Lalit Kala Akademi

Website

1. https://www.hmoob.in
2. https://leveraeedu.com

चित्र संग्रह सूची

क0.सं0.	चित्र विवरण		माध्यम
01	मैजेस्टिक गोल्ड	–	एक्रेलिक
02	राइजिंग ऑरेजं	–	एक्रेलिक
03	हरे रंग में शांति	–	एक्रेलिक
04	नीले रंग का स्पलैश	–	एक्रेलिक
05	पीली पंखुड़िया	–	एक्रेलिक
06	रिपलिंग सिल्वर	–	एक्रेलिक
07	नीले रंग में मानसून	–	एक्रेलिक
08	हरी घाटी	–	एक्रेलिक
09	चांदी के पत्थर	–	एक्रेलिक
10	मैजेंटा की महिमा	–	एक्रेलिक
11	अनटाईटल	–	एक्रेलिक
12	अनटाईटल	–	एक्रेलिक
13	अनटाईटल	–	एक्रेलिक
14	अनटाईटल	–	एक्रेलिक
15	अनटाईटल	–	एक्रेलिक
16	अनटाईटल	–	एक्रेलिक
17	अनटाईटल	–	एक्रेलिक
18	अनटाईटल	–	एक्रेलिक
19	अनटाईटल	–	एक्रेलिक
20	अनटाईटल	–	एक्रेलिक
21	अनटाईटल	–	एक्रेलिक
22	अनटाईटल	–	एक्रेलिक
23	अनटाईटल	–	एक्रेलिक
24	अनटाईटल	–	एक्रेलिक
25	अनटाईटल	–	एक्रेलिक

मैजेस्टिक गोल्ड – एक्रेलिक

राइजिंग ऑरेजं – एक्रेलिक

हरे रंग में शांति – एक्रेलिक

नीले रंग का स्पलैश – एक्रेलिक

पीली पंखुड़िया – एक्रेलिक

रिपलिंग सिल्वर – एक्रेलिक

नीले रंग में मानसून – एक्रेलिक

हरी घाटी – एक्रेलिक

चांदी के पत्थर – एक्रेलिक

मैजेंटा की महिमा – एक्रेलिक

अनटाईटल – एक्रेलिक

अनटाईटल – एक्रेलिक

अनटाईटल – एक्रेलिक

अनटाईटल – एक्रेलिक

अनटाईटल – एक्रेलिक

अनटाईटल – एक्रेलिक

अनटाईटल – एक्रेलिक

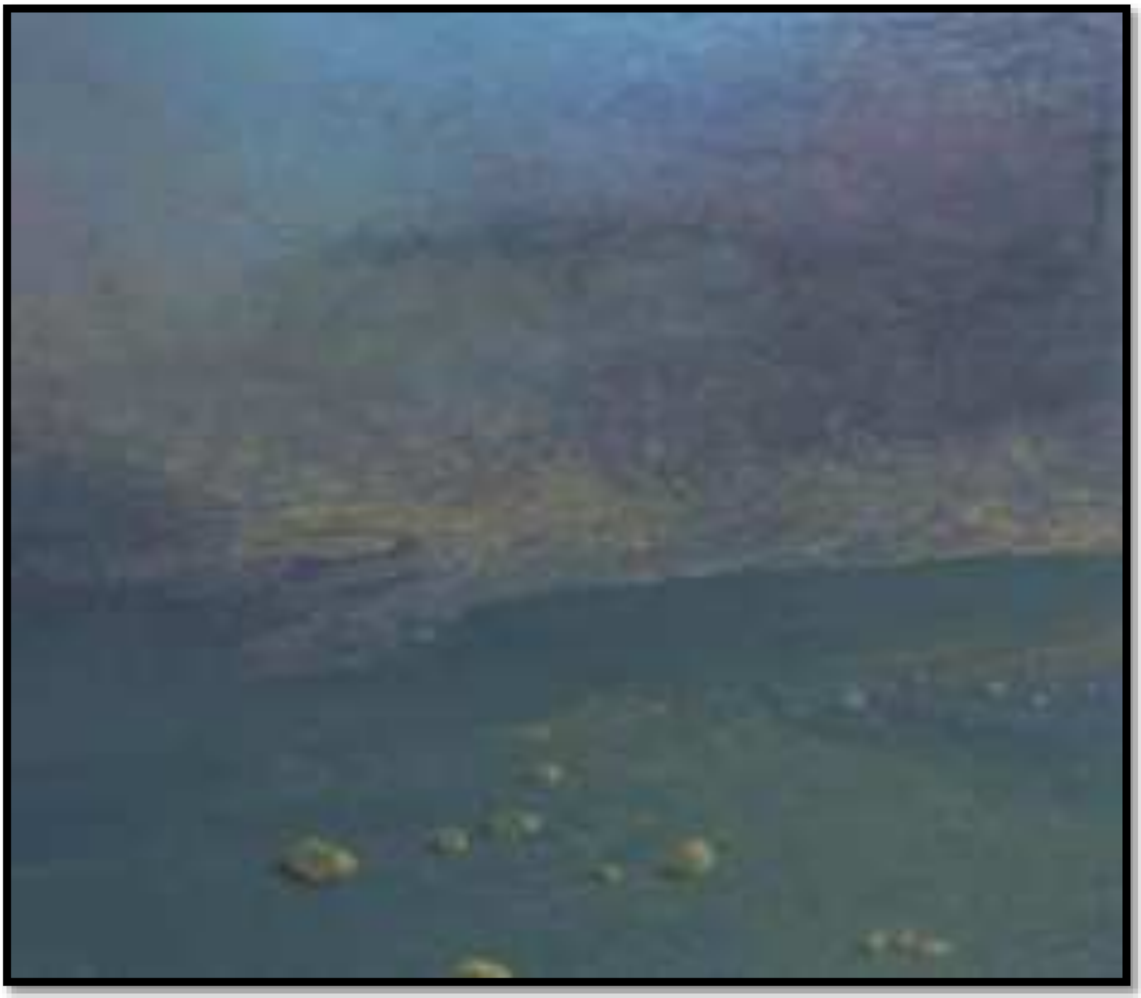

अनटाईटल – एक्रेलिक

अनटाईटल – एक्रेलिक

अनटाईटल – एक्रेलिक

अनटाईटल – एक्रेलिक

अनटाईटल – एक्रेलिक

अनटाईटल – एक्रेलिक

अनटाईटल – एक्रेलिक

अनटाईटल – एक्रेलिक

"प्राचीन भारत की लघु चित्रकला"
मुगल, राजस्थानी, पहाड़ी लघुचित्र कला"
के संदर्भ में।

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु – शोध प्रबन्ध

विभागाध्यक्षा

श्रीमति संतोष

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय

शाहाबाद (मा0)

निर्देशक

महेश धीमान

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय

शाहाबाद (मा0)

शोधार्थी

दिव्या

स्नातकोत्तर

(अन्तिम वर्ष)

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद मारकण्ड़ा

2021–2022

ललित कला विभाग,

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद (मा0.)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ललित कला स्नातकोत्तर, (ड्राइंग एंड पेंटिंग) द्वितीय वर्ष की छात्रा दिव्या, ने ''प्राचीन भारत की लघु चित्रकला – मुगल, राजस्थानी, पहाड़ी लघुचित्र कला'' शीर्षक पर मेरे निर्देशन में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूरा किया है।

इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतू प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूं।

दिनांकः **सहायक प्रोफेसर महेश धीमान**

प्रमाण पत्र

मैं दिव्या, यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध '' प्राचीन भारत की लघु चित्रकला – मुगल, राजस्थानी, पहाड़ी लघुचित्र कला '' के संदर्भ मे, मेरे स्वयं के प्रयास से किया गया है। मैनें इसे पूरी मेहनत और लग्न से सम्पन्न किया है। आर्य कन्या महाविद्यालय मे ं इस विषय पर लघु शोध कार्य नहीं किया गया है।

यह अप्रकाशित कृति है लेखन के कम में प्रयुक्त आवश्यक सामग्री तथा निदर्ष्टि कर दी गई है।

निर्देशक **शोधकर्त्री**

सहायक प्रोफेसर महेश धीमानः **दिव्या**

आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा0)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ललित कला स्नातकोत्तर, द्वितीय वर्ष की छात्रा, दिव्या ने '' प्राचीन भारत की लघु चित्रकला – मुगल, राजस्थानी, पहाड़ी लघुचित्र कला '' शीर्षक पर लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबंध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ। इसने पूरी मेहनत और लग्न से यह लघु–शोध कार्य सम्पन्न किया है।
हम इसके उज्जवल भविष्य एवं सफल जीवन की कामना करते है।

दिनांकः

प्राचार्या
डॉ0 श्रीमति सुनीता पाहवा

विषयानुक्रमणिका

	पृष्ठ संख्या
आभार	
प्राक्कथन	
प्रथम अध्यायः	
– कला एंव लघु चित्रकला का इतिहास	01 – 18
द्वितीय अध्याय :	
– लघु चित्रण के विषय वस्तु	19 – 29
तृतीय अध्यायः	
– लघु चित्रण की विधि	30 – 48
व प्रयोग होने वाली सामग्री	
चतुर्थ अध्यायः	
– विभिन्न क्षेत्रों की लघु चित्रकला	49 – 35
– मुगल लघु चित्र शैली	
– राजस्थानी लघुचित्र शैली	
– पहाड़ी लघुचित्र शैली	
– उपसंहार	**36 – 36**
– संदर्भ ग्रंथ सूची	**37 – 37**
– चित्र संग्रह सूची	**38 – 39**
– चित्र सूची	**40 – 69**

प्राक्कथन

कला एक ऐसा विषय है जिसके द्वारा हम अपने भावनाओं को प्रकट कर सकते हैं। मेरी बचपन से ही कला के प्रति विशेष रुचि रही है और मैं हमेशा से कला का अध्ययन करना चाहती थी। कुछ समय से कला पर कुछ लिखने के लिए इच्छा थी, जो इस वर्ष सौभाग्य से पूर्ण हुई। प्रस्तुत विषय को मैंने अपनी रुचि से, मेहनत से तथा मनोयोग से 'प्राचीन भारत की लघु चित्रकला' का अध्ययन करने का प्रयास किया है।

मुझे 'प्राचीन भारत की लघु चित्रकला' पर लिखने के लिए प्रेरित करने का पूरा श्रेया आदरणीय महेश धीमान जी को जाता है। उन्होंने मेरी अभिरुचि और क्षमता के अनुकूल ही मुझे यह विषय प्रदान किया है। इसलिए
मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूं।

प्रथम अध्याय में मैंने कला प्राचीन कला का इतिहास और लघु चित्रकला का इतिहास का वर्णन किया है।

द्वितीय अध्याय में लघु चित्रण के विषयवस्तु का वर्णन है।

तृतीय अध्याय में लघु चित्रण की विधि व प्रयोग होने वाली सामग्री का वर्णन किया है।

चतुर्थ अध्याय में विभिन्न क्षेत्रो की लघु चित्रकला का वर्णन किया है। इस अध्याय में मुगल लघुचित्र चित्र शैली, राजस्थानी लघुचित्र शैली और पहाड़ी लघुचित्र शैली का वर्णन किया है।

अतं में उपसंहार, संदर्भ ग्रंथ सूची तथा चित्र संग्रह सूची को प्रस्तुत किया है।

इस लघु शोध के माध्यम से मैंने 'प्राचीन भारत की चित्रकला' के बारे में बताने का प्रयास किया है, कि प्राचीन भारत में किस तरह की चित्रकला की जाती थी और किस तरह का चित्रकार अपने हाथों से, ब्रश व कागज बनाकर चित्रों का चित्रण करते थे। प्रस्तुत शोध प्रबंध को मैंने सावधानी पूर्वक करने की कोशिश की है। फिर भी कुछ अशुद्धियों का रह जाना स्वभाविक है। आशा है कि इस शोध प्रबंध में जो त्रुटियां रह गई हैं उनके लिए मैं दोषी हूं। इसलिए मैं विद्वानों से क्षमा प्रार्थी भी हूं।

दिव्या

आभार

मेरे इस लघु शोध प्रबंध का विषय 'प्राचीन भारत की लघु चित्रकला' है। इस लघु शोध प्रबंध को इस रूप में परीक्षणार्थ करते हुए जिन महानुभावों का सहयोग रहा है, उनके प्रति आभार व्यक्त किए बिना यह शोध कार्य संपूर्ण नहीं हो सकता। मैं सभी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना परम कर्तव्य समझती हूं । जिनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन व सहयोग से मैं इस कार्य को पूर्ण करने में समर्थ हो सकी।

सर्वप्रथम में परमपिता परमात्मा के प्रति दोनों हाथ जोड़कर नतमस्तक हूं जिन की अपार कृपा तथा दया दृष्टि से मुझे कला के क्षत्रे में इस विषय पर शोध करने का साहस मिला। मैं आर्य कन्या महाविद्यालय में ललित कला विभाग अध्यक्ष श्रीमती संतोष व निर्देशिका का आभार व्यक्त करती हूं , जिन्होंने इस लघु शोध प्रबंध को पूर्ण करने में मेरा उचित मार्गदर्शन किया है। मैं अपने अध्यापक महेश धीमान व सहायक प्रोफेसर किरण खेवड़िया का भी आभार व्यक्त करती हूं जिन्होनें इस लघु शोध प्रबंध को पूर्ण करने में मेरा उचित मार्गदर्शन और मुझे हर संभव सहयोग प्रदान किया।

मैं अपने माता–पिता का आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने मेरा उत्साहवर्धन किया, मेरा मनोबल बढ़ाया तथा इस लघु शोध को संपन्न कराने हेतु हर सुविधा उपलब्ध करवाई।

मैं अपने सहपाठियों का भी आभार व्यक्त करती हूं तथा मैं अटेंडेंट श्रीमती सुषमा जी की आभारी हूं जिन्होनें समय–समय पर हमें पुस्तकें प्रदान की और मैं टाइपकर्ता का भी ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने मेरा भरपूर साथ दिया। यदि इस शोध प्रबंध पाठक व अन्य शोधार्थी के लिए भविष्य में सहायक व लाभप्रद हुआ तो मैं स्वयं के इस प्रयास को सफल मानूंगी।

शोधकर्त्री

दिव्या

"आधुनिक भारतीय चित्रकारः श्री रणधीर सिंह पठानिया"
के संदर्भ में।

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु – शोध प्रबन्ध

विभागाध्यक्षा
श्रीमति संतोष
ललित कला विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा0)

निर्देशिका
श्रीमति किरण खेवरिया
ललित कला विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय
शाहाबाद (मा0)

शोधार्थी
कोमल
स्नातकोत्तर
(अन्तिम वर्ष)

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद मारकण्ड़ा

2021–2022

श्री रणधीर सिंह पठानिया के साथ

ललित कला विभाग,
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा0.)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ललित कला स्नातकोत्तर, (ड्राइंग एडं पेंटिंग) द्वितीय वर्ष की छात्रा कोमल, ने '' आधुनिक भारतीय चित्रकार श्री रणधीर सिंह पठानिया '' शीर्षक पर मेरे निर्देशन में प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतू प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूं। इसने पूरी मेहनत और लग्न से यह लघु शोध सम्पन्न किया है।

दिनांकः

प्राचार्य
डॉ. (श्रीमति सुनीता पाहवा)

प्रमाण पत्र

मैं कोमल, यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध ''आधुनिक भारतीय चित्रकार श्री रणधीर सिंह पठानिया'' के संदर्भ मे, मेरे स्वयं के प्रयास से किया गया है। मैनें इसे पूरी मेहनत और लग्न से सम्पन्न किया है। आर्य कन्या महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य नहीं किया गया है।
यह अप्रकाशित कृति है। लेखन के कम में प्रयुक्त आवश्यक सामग्री तथा निदर्ष्टि कर दी गई है।

श्रीमति किरण खेवरिया — **कोमल**
निर्देशिका — **शोधकर्त्री**

ललित कला विभाग,
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा0)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एडं पेंटिगं), द्वितीय वर्ष की छात्रा, कोमल ने '' आधुनिक भारतीय चित्रकार श्री रणधीर सिंह पठानिया'' शीर्षक पर लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबंध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ। इसने पूरी मेहनत और लग्न से यह लघु–शोध कार्य सम्पन्न किया है।
हम इसके उज्जवल भविष्य एवं सफल जीवन की कामना करते है।

दिनांकः

सहायक प्रोफेसर
श्रीमति संतोष

विषयानुक्रमणिका

आभार	**पृष्ठ संख्या**
प्राक्कथन	
प्रथम अध्यायः	
– कला का संक्षिप्त परिचय	01 – 07
द्वितीय अध्याय :	
– समाज में कला का महत्व	08 – 13
तृतीय अध्यायः	
– श्री रणधीर सिंह पठानिया का जीवन परिचय	14 – 19
– उपलब्धियां	
– कला – प्रदर्शनी	
चतुर्थ अध्यायः	
– श्री रणधीर सिंह पठानिया की कला शैली, विषय एंव रंग।	20 – 25
पंचम अध्याय :	
– श्री रणधीर सिंह पठानिया द्वारा कला–कार्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन	26 – 31
षष्टम अध्याय :	
– श्री रणधीर सिंह पठानिया से साक्षात्कार।	32 – 36
– उपसंहार	37 – 38
– संदर्भ ग्रंथ सूची	39 – 40
– चित्र संग्रह सूची	41 – 41
– चित्र सूची	42 – 61

प्राक्कथन

कला एक ऐसा विषय है जिसके द्वारा हम अपने भावनाओं को प्रकट कर सकते हैं। मेरी बचपन से ही कला के प्रति विशेष रुचि रही है और मैं हमेशा से कला का अध्ययन करना चाहती हूं। कुछ समय से मरी इच्छा थी कि मैं कला पर कुछ लिखूं, जो इस वर्ष सौभाग्य से पूर्ण हुई। प्रस्तुत विषय को मैंने अपनी रुचि से, मेहनत से तथा मनोयोग से 'आधुनिक भारतीय चित्रकारः श्री रणधीर सिंह पठानिया' का अध्ययन करने का प्रयास किया है।

मुझे 'आधुनिक भारतीय चित्रकारः श्री रणधीर सिंह पठानिया' पर लिखने के लिए प्रेरित करने का पूरा श्रेय आदरणीय किरण खेवरिया जी को जाता है। उन्होंने मेरी अभिरुचि और क्षमता के अनुकूल ही मुझे यह विषय प्रदान किया है। इसलिए मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूं।

- **प्रथम अध्याय** में मैंने कला के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया है। इस अध्याय में मैंने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि कला का अपना पुराना इतिहास है और वह कहां से शुरू हुई ? कला का संक्षिप्त प्ररिचय, कला का ज्ञान, उसकी समझ और शुरूआत है। कला हम मानव, प्राणीयों से जुड़ी हुई है, जो प्रागेतिहासिक काल से अब तक चली हुई है।
- **द्वितीय अध्याय** में समाज में कला का महत्व का वर्णन है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि समाज पर कला का किस तरह भिन्न–भिन्न रूपों में महत्व है। और समाज व समाज के लोग उसे किस नजर से देखते है। वैसे तो समाज में कला का एक अलग और खुबसूरत महत्व है, फिर भी इस अध्याय में मैंने यह स्पष्ट किया है कि किस प्रकार समाज में कला का महत्व है।
- **तृतीय अध्याय** में 'आधुनिक भारतीय चित्रकारः श्री रणधीर सिंह पठानिया' के जीवन–परिचय व उपलिब्ध्यां तथा कला–प्रदर्शनी का वर्णन किया है। इसमें उनके परिवारिक जीवन के बारे में तथा उनके सम्पूर्ण जीवन का वर्णन करने का प्रयास किसा है। उनके कला जीवन की उपलिब्धयां और उनकी कला प्रदर्शनीयों का भी वर्णन किया है।
- **चतुर्थ अध्याय** में श्री रणधीर सिंह पठानिया की कला शैली, विषय एंव रंगों का वर्णन किया गया है। जिसमें उनके कला जीवन के बारे में कुछ ज्ञात हो सके। उनकी कला शैली, उनके विषय, आम जिन्दगी पर की गई उनकी कलाकृतियां और गहरे रंगों का प्रयोग का वर्णन किया है।
- **पंचम अध्याय** में श्री रणधीर सिंह पठानिया द्वारा कला कार्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन का वर्णन किया है। जिसके माध्यम से हम उनकी कलाकृतियों के बारे में गहराई से जान पाये।
- **षष्टम अध्याय** में श्री रणधीर सिंह पठानिया से साक्षात्कार का वर्णन है जिसमें हमें उनसे मिलने के बाद बहुत कुछ सीखने और समझने को मिला है। उन्होंनें अपनें बारे में बड़े ही बच्छें ढ़ग से बताया है, तथा उपसंहार का वर्णन किया तथा अंत में इनके चित्र तथा संदर्भ ग्रंथ सूची का वर्णन किया हैं।

इस लघु शोध के माध्यम से मैंने 'आधुनिक भारतीय चित्रकारः श्री रणधीर सिंह पठानिया' के बारे में बताने का प्रयास किया है, कि उनका जीवन किस तरह कला से सम्बध रखता है और किस तरह से वे अपने कला जीवन का अध्ययन करते है। प्रस्तुत शोध प्रबंध को मैंने सावधानी पूर्वक करने की कोशिश की है। फिर भी कुछ अशुद्धियों का रह जाना स्वभाविक है। आशा है कि इस शोध प्रबंध में जो त्रुटियां रह गई हैं उनके लिए मैं दोषी हूं। इसलिए मैं विद्वानों से क्षमा प्रार्थी भी हूं।

आभार

कला एक ऐसा विषय है, जिसके द्वारा हम अपनी भावनाओं को प्रकट कर सकते हैं और हमारे अंदर दबी हजारों स्मृतियों को नया रूप दे सकते हैं। इसलिए मेरी बचपन से ही कला के प्रति विशेष रुचि रही है और भगवान की कृपा से मुझे यह विषय प्रदान किया गया। इसके लिए मैं अपने गुरुजनों के प्रति भी कृतज्ञ हूं।

इस लघु शोध का कार्य करने में जिन महानुभावों का सहयोग रहा है, उनके प्रति आभार व्यक्त किए बिना मेरा यह शोध कार्य संपूर्ण नहीं हो सकता। मैं सभी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना परम कर्तव्य समझती हूं जिनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन व सहयोग से मैंने इस कार्य को पूर्ण किया।

मेरे इस शोध कार्य का उद्देश्य श्री रणधीर सिंह पठानिया जैसे कलाकार और उनकी कला का कला क्षेत्र से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति, समाज आदि से परिचय कराना है। मेरे इस शोध कार्य की सफलता का मापदंड भी रणधीर सिंह को वह स्थान प्राप्त कराना मात्र है जिसके वे हकदार हैं।

सर्वप्रथम में परमपिता परमात्मा के प्रति नतमस्तक करती हूं जिनकी अपार कृपा से मुझे कला के क्षेत्र में इस विषय पर शोध कार्य करने का साहस मिला। मैं आर्य कन्या महाविद्यालय में ललित कला विभाग अध्यक्ष श्रीमती संतोष व निर्देशिका का आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने इस लघु शोध को पूर्ण करने में मेरा उचित मार्गदर्शन किया है। मैं अपनी प्रोफेसर किरण खेवरिया का भी आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने इस लघु शोध प्रबंध को पूरा करने में मेरा उचित मार्गदर्शन व हर संभव सहयोग प्रदान किया है। मैं अपने अध्यापक महेश धीमान की भी आभारी हूं जिन्होंने मेरी हर समय मदद ही नहीं की, बल्कि मेरे अंदर उत्साह जमाए रखा।

विभाग के सभी प्राध्यापकों ने मेरी लघु शोध कार्य से संबंधित समस्याओं का निदान किया है और समय–समय पर मार्गदर्शन भी किया। मैं श्री रणधीर सिंह पठानिया की भी आभारी हूं जिन्होंने अपने इतने कीमती समय में से कुछ अंश देकर मुझे अपने जीवन से अवगत कराया, जो कि इस शोध के लिए बहुत जरूरी था। ऐसे में मेरे लघु शोध प्रबंध के लिए उन्होंने जितना समय मुझे दिया वह मेरे लिए अमूल्य धरोहर है।

इसके साथ साथ में अपने माता पिता का भी ह्रदय की गहराइयों से आभार प्रकट करना चाहती हूं क्योंकि उनकी सहानुभूति एवं प्यार की बदौलत ही मैं इस काबिल हुई हूं कि यह लघु शोध प्रबंध लिख पा रही हूं।

मैं अटेंडेंट श्रीमती सुषमा जी की भी आभारी हूं जिन्होनें समय–समय पर हमें पुस्तकें प्रदान की और मैं टाइप कर्ता अजय सरोहा की भी आभारी हूं जिनके बिना यह शोध संभव नहीं था।

अतः मैं अपने प्राचार्य महोदया डॉक्टर श्रीमती सुनीता पहावा की भी आभारी हूं कि उन्होनें महाविद्यालय में ललित कला विषय में स्नातकोत्तर कक्षाएं प्रारंभ कर हमारे स्वप्न को साकार करने का मौका प्रदान किया।

मैं सभी गुरुजनों के प्रति अपना श्रद्धा भाव प्रस्तुत करती हूं। इन्हीं की प्रेरणा व निर्देशन से ही यह लघु शोध प्रबंध संपन्न हो सका। यदि इस लघु शोध प्रबंध से पाठक वर्ग को कुछ भी लाभ हुआ तो मैं इसे अपना सफल प्रयास समझूंगी।

शोधकर्त्री

कोमल

प्रथम अध्याय

कला का सक्षिप्त परिचय

कला मनुष्य के जीवन में किसी न किसी तरह जुड़ी हुई है। जब मनुष्य लाखों वर्षों पहले गुफाओं में रहता था, तभी से उसमें कला की रुचि रही। उस समय मनुष्य पत्थर के बने औजार प्रयोग करता था, जिससे हमें वहां की जानकारी प्राप्त हुई। उसी को पाषण काल कहते हैं। मनुष्य जब पृथ्वी पर आया तो उसमें और अन्य प्राणियों में कोई ज्यादा अंतर नहीं देखा जा सकता, क्योंकि मनुष्य के पास कुछ ऐसी विशेषताएं थी जैसे कि उनके बोलने की शक्ति, सोचने समझने विचार करने की शक्ति, ये तीन विशेषताएं थी। वह अन्य प्रणालियों से इन्हीं विशेषताओं की वजह से ऊपर था। वह विभिन्न प्रकार के उपकरणों का निर्माण स्वयं अपने हाथों से कर सकता था। मनुष्य द्वारा दीवारों पर की गई पेंटिंग से हम बहुत सी जानकारी प्राप्त कर पाए लेकिन लिखित रूप में कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ। अंग्रेजों द्वारा भारत में सबसे पहले प्रागैतिहासिक काल का आरम्भ माना गया है। अंग्रेज यहां शासन करने आए तभी से हमारी संस्कृति और कला को समझने के लिए उन्होंने खोज आरंभ की। इन्हीं से हमें कैमूर की पहाड़ियों की गुफा चित्रों का परिचय मिलता है। सोन नदी की घाटी भी चित्रित गुफाओं को सबसे प्राचीन मानव निवास स्थान बताया गया है।[1]

प्रागैतिहासिक काल में मनुष्य भोपाल के निक्ट स्थित थे। उनके रंग–बिरंगे चित्रों में लाखों वर्षों के मानव इतिहास को उजागर किया। उनमें भीमबेटका की गुफाओं का उदाहरण लिया जा सकता है, जहां मनुष्य वास्तव में रहा करते थे। वहीं रहकर उन्होंने अपनी कलाकृतियां भी की जो उनके मूल स्थानों पर ही दबे रह गए। उनके द्वारा प्रयोग किए गए औजार व हथियार वहीं पर पाए गए।

मनुष्य के मन में जब अपने भाव को व्यक्त करने की इच्छा जगी तो उसने प्रकृति खनिज पदार्थों को उपयोग में लिया, जैसे– गेरू, कोयला आदि के उपयोग से वे रेखाएं तथा चित्र चित्रित हुए। मनुष्य ने मानव आकृतियों को खड़ी, पड़ी, तिरछी तथा आयताकार रेखाओं से बनाने का प्रयास किया। रेखाओं द्वारा ज्यादा चित्र चित्रित है, लाल, पीला, काला व सफेद रंगों द्वारा कलाकृतियां बनी हुई हैं। पशुओं की चर्बी में रंगों को मिलाकर लगाया गया है। प्रागैतिहासिक काल चरम स्थिति पर भीमबैठका की गुफाओं में पहुंची प्रतीत होती है।[2]

कला के भेद प्रस्तुत करते हुए उसे दो वर्गों में निम्न प्रकार से विभाजित किया हैः–

1. मूर्त कला (बाह्रा कला)।
2. गोपनीय कला (अमूर्त कला)

---

1 लोकेश चन्द्र भारत की चित्रकला (इडिंया प्रकाशन मीडिया 1970), 7.

2 लोकेश चन्द्र भारत की चित्रकला (इडिंया प्रकाशन मीडिया 1970), 9.

बाह्य कला में उन्होंने चित्रकला, वस्तुकला, बढ़ाईगीरी, सुनारगीरी आदि को गिनाया है। गोपनीय कला में आलिंगन, चुंबन आदि सम्मिलित हैं। व्यवसाई कलाओं में रंगाई, छपाई, सुनारगीरी आदि का प्रमुख स्थान है और यह उपयोगी कला का ही दूसरा नाम है। उदार कला में ललित कलाओं को गिनाया गया है, जैसे– संगीत, व्याकरण, तर्क, भाषण आदि। आज 'कला' शब्द का व्यापक अर्थ में प्रयोग किया जाता है। प्राचीन काल में जो स्थान, शिल्प का था आज वही 'कला' का है। हस्तशिल्प दस्तकारी के कामों को आजकल 'शिल्प' कहकर पुकारा जाता है।

आजकल अनेक कार्यों को क्राफ्ट कहकर पुकारा जाता है। क्राफ्ट और शिल्प एक दूसरे से अत्याधिक समान है। शिल्प एवं क्राफ्ट के कामों को कला शब्द से भी संबोधित किया जाता है जैसे– चर्म कला, काष्ठ कला, पुस्तक कला इत्यादि। इसी तरह शिल्प और क्राफ्ट के कार्य को कौशल शब्द से संबोधित किया जाता है जैसे –कला कौशल। वास्तव में कौशल का अर्थ है कि किसी काम करने की प्रणाली या ढंग में हर प्रकार से पूर्णता प्राप्त करना, जो कार्य कुशलता से पूर्ण हो जाए वही कौशल है।[3]

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में प्रागैतिहासिक सभ्यता का इतिहास मिलता है। यह बहुत उच्च कोटि का कला कौशल था। उनमें पशु–पक्षी तथा मानव आकृतियां भी बनाते थे। कुछ ज्यामितिक नमूने भी बनाते थे। इन्हीं स्थानों में कुछ रंगी हुई मिट्टी की मूर्तियां भी प्राप्त हुई है, जिससे उस समय की कलाभिरूचि के दर्शन होते हैं। यहां बहुत सी सुंदर प्रतिमाएं भी मिली हैं, जिनमें सबसे सुंदर एक दाढ़ी वाले पुरुष की प्रतिमा है। उस समय सभ्यता उच्च शिखर पर पहुंची हुई थी और कला में प्रगति हुई थी।

ये सभी कलाकृतियां भारत की सभ्यता की कलाप्रियता की घोतक है। इन्हीं में आगे चलकर बौद्ध काल से पूर्व जोगीमारा की गुफा का वर्णन है। गुफा की छत में 7 चित्र हैं, इनमें मानवकृति, मछली, हाथी का चित्रण है। हर एक चित्र में विविधता है। ये चित्र मानव के विधिवत भित्ति चित्रण की और प्रथम प्रयास प्रतीत होते हैं। भारतवर्ष की सुंदर पौराणिक कथा नग्नजित के 'चित्रलक्षण' में चित्रकला के शुभारंभ का पता चलता है। रामायण तथा महाभारत में हुए चित्रकला में मय नामक शिल्पी ने ही सीता के स्वर्ण मूर्ति का निर्माण किया। महाभारत में उषा व अनिरूद्ध की कथा द्वारा चित्रकला का उल्लेख मिलता है। आचार्य भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में कलाओं का व्यापक रूप देखने को मिलता है। महाकवि कालिदास रचित मेघदूत में विरहिणी यक्षिणी अपने पति का चित्र बनाती है। देवी देवताओं के चित्रों की पूजा होती थी, मकान के बाहर मंगल कामना के लिए चित्र बनाए जाते थे।

रघुवंश में कालिदास ने लिखा है कि वहां महलों की भित्तियों पर हाथियों तथा हथनियों के चित्र भी थे, वे इतने संजीव चित्र थे कि उनकी[4] ध्वस्त अवस्था में भी शेरों ने असली हाथी समझकर नाखूनों से विदीर्ण कर दिया।

---

3 अविनाश वर्मा और अमित वर्मा कला एंव तकनीक (बरेलीः बड़ा बाजार 1998), 10.
4 अविनाश वर्मा और अमित वर्मा कला एंव तकनीक (बरेलीः बड़ा बाजार 1998), 98.

विष्णु धर्मेतरपुराण, कादंबरी, दशकुमार चरित, तिलक मंजरी तथा सरितासागर, नैषधचरित आदि ग्रंथों में चित्रकला का उल्लेख मिलता है। कुषाण राज्य में कनिष्क के आने पर बौद्ध धर्म का प्रादुर्भाव हुआ। कनिष्क ने भगवान बुद्ध की प्रतिमाएं बनवानी आरंभ की। कलाकारों ने इन मूर्तियों द्वारा भगवान बुद्ध के जीवन की घटनाओं का प्रदर्शन किया। भगवान बुद्ध के जन्म, धर्म चक्र प्रवर्तन तथा महापरिनिर्वाण संबंधी अनेक मूर्तियों का निर्माण हुआ।

मूर्तियों के बाद गंधार शैली के चित्र आते हैं। इन्होंने गेरु की विभिन्न रंगंतो का प्रयोग किया। बुद्ध को एक मटियाले रंग के कुर्ते जैसे वस्त्र को पहने हुए, कानों में छोटे कुंडल पहने हुए दिखाया हैं। अजंता का हल्का सा प्रभाव भी इनमें परिलक्षित होता है। गांधार में यूनान और रोम की कला शैलियों के संबंध से एक नवीन कला शैली का जन्म हुआ। भारतीय चित्रकला का उज्जवल इतिहास भित्ति चित्रों से प्रारंभ होता है। अजंता की चित्रकारी देव शैली पर आधारित मानी जाती है। अजंता के कला मंदिरों में प्रेम, धैर्य, चित्रकला, मूर्ति तथा वास्तु कला के रूप में विद्यमान है। अजंता की 30 गुफा में चित्र चित्रित है। कुछ दीवारों पर भगवान बुद्ध के जीवन संबंधी दृश्य बनाए, कुछ पत्थर की मूर्तियां भी हैं। अजंता की चित्रावली में जीवन के विभिन्न पहलुओं का दर्शन होता है। गांव, एकांत जीवन, नगरों का विलासमय जीवन, भिखारी, मछुए, शिकारी आदि सभी का चित्रण अजंता की गुफाओं में चित्रित है।[5]

क्षमा याचिका, नारी, हाथियों का मिलन, सर्वनाश चित्रण जितना सुंदर संजीव और विशाल इस गुफा में हुआ उतना अन्य कहीं नहीं। अजंता के बाद गुफा चित्रों की परंपरा बाघ की गुफाओं में दृष्टिगोचर होती है। इनमें बोधिसत्व के चित्र बने हैं। इस गुफा के द्वार के ऊपर दो चित्र अंकित हैं। पहला चित्र दो स्त्रियों का है, छज्जे की छत में दो कबूतरों का चित्रण है। इसके बाद सित्तनवासल गुफा का वर्णन है। इसके स्तंभों पर कमल तथा नर्तकियां चित्रित है। कमल सरोवर में हाथी तथा इंद्रसभा में चित्रित दिव्या आकृतियां, एलोरा की सुंदर कृतियां हैं। सिगिरिया को गुफा नारी का सुंदर चित्रण है। एलिफेंटा की त्रिमूर्ति इस गुफा की सर्वश्रेष्ठ कृति है। यह मूर्ति 24 फुट चौड़ी, 17 फुट ऊंची भगवान शंकर के तीन रूप इसमे ं दिखाए गए।

इसके बाद चोल कला का वर्णन है। जिसमें विजालय चोलेश्वर मंदिर में चित्र देखने को मिलते हैं। चोल चित्रकारों ने बड़ी कुशलता से चित्रकारी की है। स्त्री चित्रों में अंग प्रत्यंग में सौंदर्य कूट–कूट कर भरा है। दीवारों पर चित्र चित्रित किए गए हैं। ताड़पत्र पर बने चित्र पाल शैली के अंतर्गत आते हैं। यह चित्र अधिकतर बंगाल, बिहार और नेपाल में बने। जैन शैली के चित्रों में नेत्रों की बनावट विशेष है। ताड़पत्रों पर अंकित जैन चित्र पीले लाल रंगों में बने हैं। मुगलों के आने के बाद जैन कला कुछ मंद पड़ गई थी।[6] परंतु जैन कलाकारों द्वारा जहांगीर के दरबार में चित्र बनाने का उल्लेख आता है। इस शैली में महावीर स्वामी की दूसरी माता त्रिशला के 'चतुदर्श सपनों के अनेक चित्र मिलते हैं, जो प्रतीकात्मक हैं।

5 लोकेश चन्द्र भारत की चित्रकला (इडिंया : कृष्णा प्रकाशन मीडिया 1970), 16–21–29.
6 लोकेश चन्द्र भारत की चित्रकला (इडिंया : कृष्णा प्रकाशन मीडिया 1970), 152.

राजस्थानी शैली को राजपूत या हिंदू शैली के नाम से भी पुकारा जाता है। प्रारंभ में इस शैली के चित्र विभिन्न राजाओं के दरबार में ही बने जो केवल मनोरंजन का साधन थे। इसलिए चित्रकार मूल्यवान कृतियां तैयार करते थे, लेकिन धीरे–धीरे यह चित्र जनसामान्य तक पहुंच गए। यह चित्र आज भी काफी मात्रा में सुरक्षित हैं।

मेवाड़ शैली राजस्थान शैली में विशेष स्थान रखती है। इस शैली में धार्मिक पुस्तकों का चित्रण हुआ। इससे भागवत पुराण तथा रामायण की लोकप्रियता का ज्ञान होता है। राधा कृष्ण के चित्र भी बहुत प्रचुरता से इस शैली में बने। इस शैली का प्रकृति चित्रण बड़ा सुंदर है। किशनगढ़ शैली में एक चित्र में नगरी दास और बनी–ठनी को चित्रित किया गया है। यह राधा कृष्ण का चित्र स्वरूप हैं। यह शैली राजस्थान की एक उन्नत शैली थी, किशनगढ़ शैली में नारी चित्रण बहुत ही सुंदर ढंग से किया गया है। नेत्रों की बनावट तो विशिष्ट स्थान रखती है।

बूंदी शैली में धार्मिक चित्रों की मात्रा पाई गई। चेहरे में हल्की छाया, गुलाबी रंग दिखाया गया। भवन सज्जा भी बहुत सुंदर की गई। महलों की दीवारों पर सुंदर चित्रकारी है। जयपुर शैली चित्रकला के इतिहास में सामने आई। इस शैली पर मुगल प्रभाव बहुत अधिक मिलता है। इसी युग में अधिकतम लघु चित्रों का निर्माण हुआ।[7] इसके आगे जोधपुर शैली आती है। यहां मूर्तिकला के अतिरिक्त चित्रकला, भिति चित्र तथा पट चित्रों का निर्माण भी बहुत सुंदर हुआ है। इसी समय व्यक्ति चित्र बने और इसी समय यहां की चित्रकला चरम उत्कर्ष पर पहुंची। दरबारियों को राजाओं के साथ नीचे बैठे चित्र देखे गए। जुलूस और शिकार के चित्र भी बनने प्रारंभ हुए। आगे चलकर चित्रकला में मुगल शैली का अनोखा रूप देखा गया। अकबर के काल में मुगल चित्रकला देखी गई। अकबर को बचपन से ही चित्रकारी का शौक था। इस काल में हिंदू और मुसलमान दोनों ही प्रकार के चित्र चित्रित हुए हैं। व्यक्ति चित्र बनवाने का भी अकबर को बहुत शौक था।

मानव आकृतियों का जितना सुंदर चित्रण जहांगीर के काल में हुआ उतना पहले कभी नहीं हुआ था। यह चित्र बहुत ही सुंदर तरीके से बने हैं। इसमें शरीर की सुंदरता, आकृति, वृक्ष, सौंदर्य तथा नाभि की बनावट उच्च कोटि की कही जा सकती है। जहांगीर ने स्फूट चित्र, प्रकृति तथा पशु पक्षियों का शिकार के चित्र बनवाएं। जंहागीर मुगलों में चित्र कला के क्षेत्र में सबसे प्रसिद्ध हुआ।

शाहजहां का शौक भवन निर्माण कला में अधिक हुआ। आगरे का ताजमहल, लाल किला आदि उसने कई भव्य किले तथा महल बनवाए। उस समय के चित्रकारों ने चित्र तो बनवाए परंतु वह सब राज वैभव तथा नारी[8] सौंदर्य आदि तक ही सीमित रहें। इस समय के चित्रों में हाशियों में बादल वह देवदूतों का चित्रण है। औरंगजेब काल में मानो चित्रकला समाप्त ही हो गई। जो चित्रकार थे उन्होंने पहाड़ों में जाकर शरण ली थी और वहां पहुंचकर एक अपूर्ण शैली को जन्म दिया, जिसका नाम पहाड़ी शैली पड़ा। इस प्रकार औरंगजेब के साथ ही मुगल चित्रकला का अंत हुआ।

---

7 लोकेश चन्द्र भारत की चित्रकला (इडिंया कृष्णा प्रकाशन मीडिया 1970), 53–57–63–73.
8 लोकेश चन्द्र भारत की चित्रकला (इडिंया कृष्णा प्रकाशन मीडिया 1970), 143.

हिमाचल और पंजाब में कुछ ऐसे सुंदर चित्रों का पता चला जिन्होंने भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक सुंदर पृष्ठ और बढ़ा दिया। पहाड़ी चित्रकला के विकास में यहां की प्राकृतिक ध्वनि तथा सुंदर वातावरण में चार चांद लगा दिए। औरंगजेब के काल में जो चित्रकार पहाड़ों में जाकर चित्रकारी करने लगे, उनके चित्र अब सामने आए जो स्वतंत्र रूप से बनाए गए थे। रंग रेखाएं पहाड़ी शैली में अलग विशेषताएं रखे हुए हैं, जो बहुत प्रसिद्ध है। बसोहलो में मुख्य प्राथमिक रंगों का प्रयोग हुआ जबकि कांगड़ा में इन रंगों का विभिन्न मिश्रण तथा सौंदर्य मिलता है। आगे चलकर इन इलाकों में ब्रिटिश आधिपत्य आ गया। जिससे चित्र शैली पर बहुत प्रभाव पड़ा। कागज के स्थान पर कैन्वास का प्रयोग, खनिज रंगों की जगह तेज रंग या ब्रश सेविल हेयर के बनने लगे।

गढ़वाल शैली में चित्रों की झलक गुलेर शैली से प्रभावित है। नारी सौंदर्य प्रकृति से संबंधित प्रतीत होता है। प्रकृति का भी भव्य चित्रण है, जिसमें नदी, पहाड़ तथा वृक्षों में गतिमयता परिलक्षित होती है।[9] चित्रकला का प्रभाव आते–आते आधुनिक काल तक आ पहुंचा। इसी में तंजौर शैली के चित्र आते हैं। इस शैली के चित्र आमतौर पर लकड़ी पर बने हैं। मुगल साम्राज्य की समाप्ति के बाद चित्रकार भी इधर–उधर भारत के विभिन्न स्थानों में जाकर बस गए थे। मराठों के आक्रमण के कारण चित्रकार आगे भागे और पटना मे आकर बसे। पटना या कंपनी शैली अंग्रेजों की प्रेरणा पर प्रारंभ हुई थी।

उन्होंने जल रंगों की नवीन विधि इन चित्रकारों को सिखाई तथा उस शैली में चित्र बनवाए। ये जो चित्र बने ये बीच के मेल के बने, क्योंकि पटना शैली में मुगल तथा पाश्चात्य शैली का मिश्रण हो गया। ये चित्र मुगलिया पहाड़ी क्षेत्र में निम्न कोटि के हैं। यहां के कलाकारों ने जल रंगों की शैली को सीखना प्रारंभ किया और जो चित्रकार जितनी अच्छी नकल करता था, उसे उतना ही पुरस्कार दिया जाता था। इसलिए पटना शैली का जन्म हुआ।

इस समय में राजा रवि वर्मा नामक कलाकार भारत के चित्रकला रूपी रेगिस्तान में हरियाली के रूप में अवतरित हुए। इन्होंने दृश्य चित्र तथा व्यक्ति चित्र दोनों की रचना की जो जनता को बहुत पसंद आई। बंगाल शैली में बहुत से ऐतिहासिक चित्र बने। महाकाली, शिव पार्वती आदि धार्मिक चित्र इस शैली में काफी बने। भारत की चित्रकला में अवनींद्र नाथ ठाकुर का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने यूरोप, चीन व जापान की कला के सम्मिश्रण से एवं नवीन भारतीय कला शैली को जन्म दिया, जिसे 'बंगाल शैली– कहा गया।[10] रविंद्र नाथ ठाकुर ने सर्वप्रथम आधुनिक चित्रकला का प्रथम चित्र बनाया जो ये यूरोप से सीख कर आए थे। इसी समय में पाश्चात्य कला में हो रहे नवीन प्रयोगों का प्रभाव भी भारत में फैला।

---

9 लोकेश चन्द्र भारत की चित्रकला (इडिंया : कृष्णा प्रकाशन मीडिया 1970), 143.
10 लोकेश चन्द्र भारत की चित्रकला (इडिंया : कृष्णा प्रकाशन मीडिया 1970), 152.

वास्तव में यह आधुनिक कला कैमरे की देन है। 19वीं शताब्दी के मध्य में कैमरे का आविष्कार हुआ, तो वास्तविक कलाकारों को एक नवीन दिशा में सोचने का अवसर मिला। वास्तविक कला के द्वारा अपने आंतरिक मन से बाह्य जगत का दर्शन करते हैं, तथा भावात्मक कला में हम बाह्य जगत से आंतरिक मन को देखते हैं। कलाकार के अनुसार प्रत्येक रंग का धब्बा कुछ भाव के लिए होता है। ऐसी कला को 'ऐबस्ट्रेक्ट' आर्ट का नाम दिया गया। आधुनिक काल के बहुत से कलाकारों का सूत्रपात दिया गया है। यामिनी राय ने जिस आधुनिक प्रणाली से चित्र चित्रित किए वह अपूर्व है। ऐसे ही अमृता शेरगिल का नाम आता हैं। उन्होंने पश्चिमी आधुनिक कला तथा भारतीय चित्रकला का समन्वय करके एक नवीनतम शैली को जन्म दिया। ये कलाकार आधुनिक वादों पर आधारित चित्र रेखाओं में नए–नए प्रयोग कर रहे हैं।[11]

11 लोकेश चन्द्र भारत की चित्रकला (इडिंया : कृष्णा प्रकाशन मीडिया 1970), 152.

द्वितीय अध्याय

समाज में कला का महत्व

कला और समाज का घनिष्ठ संबंध है। कला का जन्म समाज के अंतर्गत रहने वाले कलाकारों के कलात्मक कृत्यों के द्वारा होता है। कला समाज में फलती फूलती और समाज को आनंदित करती है। कलाओं में सामाजिक आनंद, दुख, पीड़ा, उत्पीड़न, ऐश्वर्य, सामर्थ्य और समृद्धि का सविस्तार प्रदर्शन दिखाई पड़ता है। इसलिए कला को समाज का दर्पण माना गया है।

कलाकार भी समाज के अन्य मानव–प्राणियों के समान एक सामाजिक प्राणी होता है। कलाकार अपनी कला से प्रकृति से प्राप्त साधनों के द्वारा मानव के लिए जीवन उपयोगी और आनंददायक सामग्री और कृतियों का निर्माण करता है जो सामाजिक प्रगति को दर्शाती है। कलाकार अपने जीवन तथा समाज और प्रकृति के मध्य अपने गहन अध्ययन और अनुभव के आधार पर ही अपनी कलाकृतियों या कला के द्वारा सच्चाई, झूठ, सामाजिक ढंग से अभिव्यक्त करता है, जिसकी समाज में बहुत आवश्यकता है और इससे समाज की अर्थव्यवस्था का उचित ज्ञान होता है। इस प्रकार की कृतियों से समाज प्रेरणा भी ग्रहण करता है और उन्नति की ओर अग्रसर भी होता है। समाज के स्तरों, संगठनों तथा परिस्थितियों में सदैव ही राजनैतिक या प्राकृतिक कारणों से परिवर्तन होता है। कभी विदेशों के आक्रमणों से तो[12] कभी राजसत्ता के बदल जाने से, समाज में अनेक विदेशी तत्वों का स्वागत होने लगता है।

भारत की कला परंपरा में इन सामाजिक और राजनीतिक उतार–चढ़ाव तथा परिवर्तनों की झांकी दिखाई पड़ती है। प्राचीन काल में सुख और शांति के समय में वैष्णव, शैव या भगवत धर्म से अनुप्राणित समाज की कला भगवत धर्म से संबंधित कलाकृतियों से परिपूर्ण थी, पंरतु कालान्तर में गुप्त राजवंश काल में बौद्ध धर्म समाज में जड़ जमाने लगा और साथ–साथ भगवत धर्म भी बल प्राप्त कर समाज में पुनः पूर्ण सम्मान प्राप्त कर जागृत हुआ, जिसकी साक्षी अजंता, एलोरा, तिपतिपुरम तथा बदामी आदि की भित्तिचित्रकारी और मूर्तिकला है।

कला विचारों को बदलने, मूल्यों को स्थापित करने और अतंरिक्ष और समाज के अनुभवों का अनुवाद करके समाज को प्रभावित करती है। इस अर्थ में कला संचार है। यह विभिन्न संस्कृतियों और अलग–अलग समय के लोगों को छवियों, ध्वनियों और कहानियों के माध्यम से एक–दूसरे के साथ संवाद करने की अनुमति देता है।

कला अक्सर सामाजिक परिवर्तन का माध्यम होती है। यह राजनीतिक व सामाजिक रूप से वंचित लोगों में भावनाओं को जगा सकती है, जो इसका सामना करते हैं, उन्हें बदलाव के लिए रैली करने के लिए प्रेरित करते हैं। कला का समाज पर उपयोगितावादी प्रभाव भी पड़ता है।[13] साक्षरता में स्कूली बच्चों के ग्रेड और नाटक या संगीत गतिविधियों में उनकी भागीदारी के बीच एक स्पष्ट सकारात्मक संबंध है।

12 डॉ0. अविनाश ब0. वर्मा और अमित वर्मा, कला एंव तकनीक (बरेलीः बड़ा बाजार 1998), 61.
13 डॉ0. अविनाश ब0. वर्मा और अमित वर्मा, कला एंव तकनीक (बरेलीः बड़ा बाजार 1998), 65.

कला कलाकार के काम के लिए एक आउटलेट के रूप में फायदेमंद है। कला न केवल आत्म–अभिव्यक्ति और पूर्ति के लिए मानवीय आवश्यकता को बढ़ावा देती है। यह आर्थिक रूप से व्यवहार भी है। कला का निर्माण, प्रबंधन और वितरण कई लोगों को रोजगार देता है। ललित कला या उपयोगी कला दोनों का लक्ष्य सामान्य स्तर पर मानव जीवन के लिए आनंद एवं सुख प्रदान करना है। ललित कलाएं आत्मिक आनंद प्रदान करती हैं और मानव को सत्य, सुकर्म तथा प्रगति की ओर प्रेरित करती हैं। ललित कलाएं मानव को सत्य तथा सुंदर की अनुभूति के साथ–साथ कल्याणमयता एवं आत्मिकता का बोध भी कराती है। ऐसी कलाएं समाज के लिए हितकारी, मंगलमय और आनंददायक होती हैं और समाज को सत्य, सुंदर और आत्मा को नैतिकता का ज्ञान कराती हैं।

जिस प्रकार मानव शरीर आत्मा के बिना स्थूल होता है, उसी प्रकार ललित कलाओं में अच्छा, बुरा या आत्मबोध व उचित ज्ञान आवश्यक है। इसके बिना कलाएं निर्जीव हैं। यही आत्म बोध एक कल्याणकारी भावना का उदय कलाओं में कराता है। यह मानव या कलाकार अपनी आत्मा या अन्तःकरण से ही प्राप्त करता है। यही से वह सामाजिक नैतिकता को कला में प्रदान करता है।[14] इस प्रकार समाज के लिए वह अच्छे आदर्शों और कल्याणकारी रूपों को अपनी कला के द्वारा प्रस्तुत करता है।

समाज जिसको सत्य तथा सुंदर मानता है, समाज के लोग उसी कार्य को करते हैं। समाज में अनैतिक, अभद्र, असत्य एवं अशोभनीय कृत्य करना निंदनीय माना जाता है। इन अवगुणों से सामाजिक संगठन भंग होता है और अशांति फैलती है। कलाकार भी एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए उससे भी यही आशा की जाती है कि वह भी नैतिकता पूर्ण कृतियों की रचना करें।

कला को सांस्कृतिक प्रगति, सामाजिक प्रगति और मानवीय जीवन की समृद्धि तथा सामाजिक संगठन का एक शक्तिशाली आधार माना जाता है। कला व्यक्तित्व की तात्कालिक व स्पष्ट अभिव्यक्ति है। यह एक प्रकार से व्यक्तित्व व सामाजिक संयोजन की प्रक्रिया है। किसी भी संस्कृति में पाए जाने वाले सामाजिक मूल्यों, बाध्यताओ, निषेधों को कला के रूप में व्यक्त किया जाता है। साथ ही संस्कृति व्यक्ति के लिए जो चुनौती रखती है वह भी कला के रूप में प्रकट होती है।

मानव की विभिन्न दैनिक क्रियाओं जैसे व्यवसाय, मनोरंजन, धर्म, उत्सव, राज्य व शासन आदि के लिए समाज में कुछ मानदंड होते हैं। सामान्य जन इन मानदंडों के अंतर्गत ही अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त करते हैं। इसलिए एक युग की सभी कलाकृतियों पर एक मूल भाव्या 'नक्शा' रहता है। इसे केंद्र में रखकर कला की गतिविधियां चलती हैं।[15] कला का दूसरा कार्य व्यक्ति और वातावरण के परस्पर के संबंधों में संतुलन लाना है। यदि कभी यह संतुलन न रहे तो उस समाज का जीवन टूट जाता है। कला जीवन का अभिन्न अंग न रहकर अलग पड़ जाती है।

---

14 डॉ0. अविनाश ब0. वर्मा और अमित वर्मा, कला एंव तकनीक (बरेलीः बड़ा बाजार 1998), 65.
15 डॉ0. अविनाश ब0. वर्मा और अमित वर्मा, कला एंव तकनीक (बरेलीः बड़ा बाजार 1998), 66.

इसका एक अच्छा उदाहरण ओद्योगिक क्रांति के बाद का समाज है। इसमें तकनीकी प्रगति की बाढ़ आई और इस बाढ़ में ऐसी सामाजिक परिस्थितियां बनी कि व्यक्ति कला को भूल गया।

एक जीवंत समाज में कला उसकी लय, अचेतन शक्ति और संजीवनी ऊर्जा बनती है। कला एक प्रकार का सुरक्षा यंत्र भी है, जो साधारण व्यवस्था संतुलन बनाना और मानवीय संबंधों और अनुभवों में गहरी एकता लाती है। जब कभी समाज में अन्याय, अत्याचार और अवस्था फैलती है, कला एक सहारा प्रदान करती है। यह उस समय के सामाजिक वातावरण की परछाई है और इस रूप में सामाजिक नियंत्रण भी हो सकती है। कभी व्याख्या देती है, कभी न्याय युक्त ठहराती है, कभी समाज की चुनौतियां और व्यवस्था का पर्दाफाश भी करती है।

कला समाज के हाथ में एक ऐसा ब्रह्मास्त्र है जिसके द्वारा वह अपने सदस्यों, व्यक्तियों को चित्रित कर सकती है, उनके मूल्यों, मनोभाव, विश्वास, इच्छाओं को रोक देती है, जिससे वह समाज में सुव्यवस्थित होकर रहें और संसार में शांति व वास्तविकता ला सकें।

किसी समय की कला, व्यक्ति तथा समाज की मौलिक आवश्यकताओं का उचित रूप है, क्योंकि इसी में किसी विशेष स्थान व काल में किसी एक विशेष सामूहिक समूह की इच्छाएं, मूल्य और अनुभव सम्मिलित हैं। इसलिए जितने सामाजिक समूह होते हैं उतने ही कला के प्रकार भी होते हैं। कुछ संस्कृतियां समाप्त होने पर भी अपनी कला सामग्री के रूप में जीवित रहती हैं।

उदाहरण के लिए हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त सामग्री उस समय के सांस्कृतिक जीवन व जीवनशैली को प्रकट करती हैं। कला का कार्यक्षेत्र बड़ा व्यापक है। कला और धर्म दोनों मानव जीवन में भिन्न–भिन्न स्थान रखते हैं। कला मानव मन को दर्शाती है। मानव जिस वातावरण, समाज तथा देश में रहता है, उसकी छवि मानव मन पर अंकित हो जाती है। जिसको मानव कलाकार के रूप से अपनी कलाकृतियों में प्रकट रूप में दर्शाता है। इस प्रकार कलाकार के समय के समाज तथा देश का उसकी कृतियों में रूप दिखाई पड़ता है, जिसके द्वारा उस समय की सभ्यता तथा संस्कृति का परिचय मिल जाता है।

किसी भी देश की संस्कृति, उस देश की अध्यात्मिक, वैज्ञानिक तथा कलात्मक उपलब्धियों की प्रतीक होती है और उस देश के जन समुदायिक या सामाजिक जीवन के सर्वश्रेष्ठ जीवन मूल्यों को दर्शाती है। किसी देश की संस्कृति का ज्ञान हमें उस देश के जनजीवन के रीति–रिवाजों, व्यवहारों, संस्कारों तथा विभिन्न कृतियों में प्राप्त होता है। कलाएं सामाजिक रहस्य के प्रति सदैव उत्तरदाई रही हैं तथा इनमें समाज की इच्छाओं की अभिव्यक्ति होती है। समाज की संस्कृति का एक अंग कला है, जिसको समाज परंपरा के रूप में आगे बढ़ाता रहता है और कला सदैव जीवित रहती है।

कलाकार बाहरी जगत के स्वरूप, गतिविधियों एवं समाज की भावनाओं से संबंध बनाकर ही निर्माण करता है। वह अपने निर्माण कार्य में सामाजिक भावनाओं का मानव आकृतियों से सीधा संबंध रखता है। कलात्मक निर्माण में इन्हीं भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है। कला का रूप ही विश्वव्यापी होता है। कलाकार की प्रतिभा उसकी आत्मशक्ति एवं उसके कलात्मक तत्व कला के रूप में समाज के

स्वरूप और भावनाओं के साथ संबंध जोड़कर उसको व्यापक रूप प्रदान करते हैं। कला के अधिकांश विषय तत्कालीन समाज की समस्याएं ही होती हैं। कलाकार ऐसी स्थिति में उद्देश्य, अभिव्यक्ति के माध्यम से आत्मिक शांति प्राप्त करना चाहता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए स्वयं अपना मार्ग चुनता है, लेकिन समाज से कभी अलग नहीं रह सकता है।

इस प्रकार कला की उत्पत्ति और कलाकार के क्रियात्मक पक्ष दोनों को ही समाज प्रेरणा देता है।

कला का विकास सांस्कृतिक विकास के साथ जुड़ा होता है। सामाजिक विकास के इतिहास को देखें तो पता चलता है कि जैसे समाज ने विकास किया है, वैसे ही संस्कृति हुई, क्योंकि संस्कृति का एक अंग भी कला है। इसी तरह सामाजिक परिस्थितियां बदलती रहती हैं और कला में बदलाव होता रहता है। इस प्रकार कला एक सामाजिक उत्पत्ति है। कला और समाज एक दूसरे से जुड़े हैं।

सामाजिक पद्धति एवं संस्कृति अपने ढंग से कला रूपों को पनपने का अवसर प्रदान करती है। आधुनिकवाद और व्यक्तिवाद, संगठन और स्वतंत्रता सामाजिक सिद्धांतों के रूप में कला अपनी छाप छोड़ती हैं। सामाजिक परिस्थितियां कलाकार को विकसित कला–शैली, विचार, भाव, समस्याएं आदि विषय वस्तु एवं कला निर्माण के उपकरण आदि सामग्री प्रदान करती है।

मानव समाज में मनुष्य के मन में जो निराशाएं उत्पन्न हो जाती हैं उनकी अभिव्यक्ति कला में स्थान पाती हैं। इस प्रकार कला एवं समाज में गहरा संबंध होता है। सांस्कृतिक परंपराओं और संदर्भों में कला के सभी स्वरूपों में समकालीन सांस्कृतिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि का मूल्य स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। जैसे– भारतीय लघु चित्रों में इनके चित्रण काल की सांस्कृतिक परंपराएं, तीज–त्यौहार, उत्सव आदि सामाजिक परिवेश भी दिखाई देता है।

समाज के स्तरों, एकता तथा परिस्थितियों में सदैव ही राजनीति या प्राकृतिक कारणों से बदलाव होता है। कला परंपरा में इन सामाजिक और राजनीतिक उतार–चढ़ाव तथा बदलाव की झांकी दिखाई देती है। प्राचीन काल से सुख और शांति के समय में वैष्णव या शैव धर्म से प्रेरित समाज की कला भगवत धर्म से संबंधित कलाकृतियों से परिपूर्ण होती थी। जिसका साक्षी अजंता, एलोरा, त्रिपतिपुरम तथा बदामी आदि की भित्ति चित्रकारी और मूर्तिकला है।

मुगल दरबारों में दरबारी समाज की कला का विकास हुआ। मुगल बादशाह, शाहजहां, बेगम, सरदारों, मनसवदारों, फौजदारों, सुबेदारी तथा सिपाहियों आदि के चित्र अत्यधिक बनाए गए।

कलाकार के कार्य का एक पक्ष यह भी है कि वह अपना अनुभव समाज तक पहुंचाता है। कला को ऐसी अभिव्यक्ति माना जाता है जिसका संबंध कलाकार की अपनी अभिव्यक्ति से होता है। जिसकी कृति को श्रेष्ठ कलाकृति तभी कहते हैं जब वह समाज में अति आवश्यक प्रभाव उत्पन्न कर सकें। कला को सामाजिक स्वरूप भी कहा गया है। सभी भावनाएं व इच्छाएं अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। इन इच्छाओं से एक और स्वपन और दूसरी और कलाकृतियों का उद्भव होता है। कला की आकृतियां समाज के मार्ग पर निरंतर निश्चित होती हैं। अतः कला समाज के लिए अति आवश्यक है।

समाज के प्रत्येक व्यक्ति की आधारभूत आवश्यकता को पूर्ण करने का उचित मार्गदर्शन दर्शाती है। कला का अस्तित्व सामाजिक है। जिस प्रकार सामाजिक विकास की परिस्थितियां होती हैं, वैसा ही समाज की विचारधारा बनती है। सामाजिक विकास तथा सामाजिक आंदोलनों के प्रत्येक चरण के साथ कला के विकास तथा प्रत्येक चरण संबंधित रहा है। प्रागैतिहासिक मानव की भावनाएं उसकी आवश्यकताओं के अनुसार ही थी। अतः तत्कालीन गुफाचित्रों में तथा प्राचीन समाजों के गीत नृत्यों में उन्हीं की अभिव्यक्ति है।

इस प्रकार हर देश या समाज की आंतरिक व्यवस्था परिवर्तन तथा नवीन दिशा की ओर प्रगति का पूर्ण रूप से परिचय चित्रों तथा मूर्तियों या अन्य कलाकृतियों में प्राप्त हो जाता है।

अतः कला समाज की संगिनी है जो सामाजिक गतिविधियों का सही लेखा जोखा संजोए रहती है। कला ही समाज की सच्ची तस्वीर और दर्पण है। जिसके द्वारा कला और समाज में घनिष्ठ संबंध है और दोनों ही एक दूसरे के लिए पूरक का काम करते हुए दिखाई पड़ते हैं।

तृतीय अध्याय

श्री रणधीर सिंह पठानिया का जीवन परिचय

श्री रणधीर सिंह पठानिया का जन्म 31 मार्च 1960 में जिला गुरदासपुर, (पंजाब) तहसील पठानकोट के गांव बनीलोथी में हुआ। इनके पिताजी का नाम श्री खुशहाल सिंह था, जो एक किसान थे। पठानिया राजपूत परिवार से संबंध रखते हैं। इनकी माता जी का नाम सत्य देवी था, जो कि एक ग्रहणी थी और बहुत ही शांत, संवेदनशील, मधुरभाषी और धार्मिक विचारों वाली महिला थी। माता–पिता के विचारों का रणधीर सिंह पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। इनके पिता घर के मुखिया होने के कारण सख्त स्वभाव के थे, जिस कारण पठानिया अपने पिताजी के समक्ष बात करने में हिचकिचाहते थे।

रणधीर सिंह आठ भाई बहन में सबसे छोटे पुत्र होने के कारण लाडले और सबके प्रिय हैं। वे बचपन से ही शांत स्वभाव के हैं। उन्होंने कभी किसी चीज के लिए हठ नहीं किया। कला के गुण इन्हें परिवार से ही प्राप्त हुए। इनकी माताजी पारंपरिक कला, हाथ से बनी पंखीयां, चरखा काटना और मिट्टी से चुल्हे बनाने में निपुण थी। चादर पर सिलाई–कढ़ाई करना उन्हें अच्छा लगता था। पठानिया जी उन्हें दीवारों पर सांस्कृतिक और पारंपरिक चित्रकारी करते देखा करते थे। इसके बड़े भाई वरिंदर भी ड्राइंग में रुचि रखते थे। वह इन्हें ज्यामितिय आकार, तोते, बत्तख, फूल इत्यादि बनाना सिखाते थे। जिससे आपकी भी कला में रुचि अधिक होती गई।

उन्होंने बचपन से ही अपनी जिम्मेदारियों को खूब निभाया है। रणधीर सिंह को बचपन में अपनी नानी के घर जाना अच्छा लगता था। इनकी नानी का घर रावी के उस पार था। वह वहां रावी के किनारे बैठकर प्रकृति को निहारते थे। प्रकृति के साथ गहरा संबंध होने के कारण उनके चित्रों में भी प्राकृतिक प्रेम देखा जा सकता है।

ग्रामीण क्षेत्र में रहते हुए आपके चित्रों में वहां की खुशबू समाई हुई है। गांव के खुले मैदान, बड़े–बड़े घर, पशु–पक्षी और वहां की संस्कृति आज भी आप का मन मोह लेती है।

आप को वसंत ऋतु सबसे प्रिय लगती है, आपका मानना है कि यह ऋतु रंगों से भरी होती है और हर तरफ खुशी का माहौल होता है। ऐसे में कला के प्रति कल्पना शक्ति जागृत होती है। पठानिया का कहना है कि उन्हें अपनी संस्कृति और परंपरा से जुड़े रहना अच्छा लगता है। प्राचीन रस्में और रिवाज उनके मन को छू लेते हैं। सादगी और अनुशासित ढंग से जीवन व्यतीत करना उन्हें अच्छा लगता है। जन्मभूमि पंजाब में होने के कारण पंजाबी गाना व स्वभाव में पंजाबी गुण विद्यमान है।

आप धार्मिक और देशभक्त भी है। देश के प्रति आपका पूर्ण स्नेह हैं। आपका मानना है कि यदि गांधीजी और भगत सिंह जैसे वीर पुरुष भारत देश में न होते तो आज हम आजाद ना होते। आपका घर भी पंजाब और जम्मू के बॉर्डर पर था। जहां पर हर समय सेना के जवान तैनात रहते और उन्हें देखकर आपके मन में भी देश भक्ति तथा सेना में भर्ती होने की उमंग थी। वे आज भी कुछ नया सीखने को तत्पर रहते हैं।

सन् 2000 में आपने विवाह किया। आपकी पत्नी ने आपके हर कार्य में सहयोग दिया। कहते हैं कि हर सफल इंसान के पीछे औरत का हाथ होता है, यहां यह कहना बिल्कुल उचित है। उनकी पत्नी एक स्नेहमयी स्त्री है। आपकी कला साधना में उनकी आंतरिक आध्यात्मिकता रूप है, आपका मानना है कि आत्मा और परमात्मा एक है। आप जब परमात्मा का ध्यान कर तुलिका चलाते हैं तो सचमुच चित्र अध्यात्मिक हो जाते हैं।

पठानिया की बचपन से ही शिक्षा में रुचि रही है, क्योंकि उसके परिवार में पहले से ही शिक्षा का आधार बना हुआ था। इनकी प्राथमिक प्रारंभिक शिक्षा राजकीय प्राथमिक स्कूल में हुई जो इनके आवास से 1 किलोमीटर की दूरी पर था। इसके उपरांत उच्च शिक्षा राजकीय उच्च विद्यालय भोआ से हुई यह घर से 3 किलोमीटर दूर था। पठानिया जी अपने दोस्तों के साथ पैदल ही स्कूल जाते थे। इनका स्वभाव बचपन से ही शांत रहा है। स्कूली मित्रों के साथ शरारते करना, उन्हें कष्ट देना पसंद नहीं था। स्कूल में विज्ञान, सामाजिक, इतिहास जैसे विषयों के साथ–साथ ड्राइंग का भी ज्ञान दिया जाता था। श्री जगदीश राज जी इनके ड्राइंग के अध्यापक थे, जिन से प्रेरित होकर आप ने कला के क्षेत्र में अपनी रुचि दिखाई।

पठानिया के भाई वारिंदर भी कला का ज्ञान रखते थे और उनसे भी प्रेरित होकर चित्रकारी करने लगे। आपने शुरुआत में ज्यामितिय और कोण्नीय चित्रकारों को बढ़ावा दिया। फूल–पत्तियां, पशु–पक्षी और तुलनात्मक चित्रों से आपने अपनी कला को निखारने का प्रयत्न किया।

इनकी जब दसवीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण हुई इसके उपरांत पिताजी ने इनको जे.बी.टी की शिक्षा ग्रहण करवानी चाही, परंतु इनकी रुचि चित्रकारी में थी। इन्होंने पिताजी को इस शिक्षा के लिए मना कर दिया। इनके भाई संग्राम सिंह जालंधर से ही बी.एड़ की शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। वहीं मेहर चंद टेक्निकल इन्स्टीटयूट में संग्राम सिंह के कोई जान पहचान के थे। उन्होंने अपने भाई को वहां से शिक्षा प्राप्त करने की सलाह दी। सन 1977 में इन्होने मेहर चंद टेक्निकल इंस्टिट्यूट में 'आर्ट एण्ड क्राफट' में दाखिला ले लिया। वहां पर इनकी मुलाकात एच.एस. राठौर जी से हुई। राठौर जी ने इन्हें हर तरफ से कला के लिए प्रेरित किया।

वहां राठौर जी ने क्ले मॉडलिंग, पेपर कटिंग और डिजाइन इत्यादि बनाने सिखाए। उन्होंने वहां ज्यामितिय और कीणीय आकारों को महत्व दिया। जालंधर में उस समय फिल्म जगत के पोस्टर तैयार किए जाते थे। जो कि सिनेमाघरों के बाहर लगाए जाते थे व अशोक स्टूडियो में जाकर उन कलाकारों को कई समय तक निहारते रहते और उनके मन में भी कला के प्रति जिज्ञासा पैदा होती गई।

राठौर जी ने इनकी कला में रुचि रखते हुए इन्हें चंडीगढ़ आर्ट कॉलेज और बड़ौदा स्कूल के बारे में बताया। इसी उपरांत इन्होनें बड़ौदा जाने का फैसला किया। सन् 1979 ईसवी उन्होंने एम.एस. यूनीवर्सिटी बडौदा में चित्रकारी डिप्लोमा में दाखिला ले लिया। यह डिप्लोमा 6 वर्ष के लिए था। वहां इन्हें सुब्रमण्यम, ज्योतिभट् व गुलाम मोहम्मद शेख जैसे महान कलाकारों से परिचय हुआ। उन्होंने आपको कलाक्षेत्र में उन्नति की राह दिखा दी, परंतु शुरुआत में इन्हें कला की गहराई समझ ना आ

पाई। लेकिन 1983 में भूपेन खक्कर जी के सहयोग से इन्होंने अपनी कला को चरम सीमा तक पहुंचाया। रंग, टेक्शचर, रेखाएं आदि भी कंपोज करना इन्होंने वहीं से सीखा। आपको लगता था कि जो मैं सीखने आया हूं, वह काम मुझे आना चाहिए और उसमें मैं कमजोर ना हूं।

सन 1983 ईस्वी में इन्होंने फाइन आर्ट में डिप्लोमा हासिल किया। इसी विश्वविद्यालय में इन्होनें चित्रकला में सन 1985 में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया। समय के साथ–साथ उनके अंदर कला का रुझान और अधिक बढ़ता गया। कला क्षेत्र में रुचि अब इनकी आदत बन चुकी थी। उन्होंने शुरुआत में जल रंगों, पोस्टल, चारकोल, ऐक्रेलिक रंग और तैलिया रंग सब माध्यम की शिक्षा ग्रहण की। हर माध्यम से उन्होंने अनेकों चित्र बनाएं। जल रंगों से भी बहुत काम किया। इसके उपरांत आप नौकरी की तलाश में चंडीगढ़ और मोहाली आ गए। चंडीगढ़ रहकर इन्होंने धीरे–धीरे पोस्टर बनाना आरंभ कर दिया। सन 1986 ईस्वी में आप इंण्डियन पाब्लिक स्कूल में ड्राइंग के अध्यापक बन गए। वहां इन्हें 500 रू आमदनी मिलती थी, जिसमें से वह अपने कमरे का खर्चा, खाने पीने का खर्चा और रंग, ब्रश और कैन्नवस खरीदते थे।

3 वर्ष तक पठानिया अध्यापक के कार्य पद पर स्थिर रहे। इस दौरान वह अपना चित्रकारी का कार्य भी कर रहे थे। 1988 में पठानिया ने ''वन मैन शो'' में भाग लिया। वह शो पंजाब विश्वविद्यालय के ललित कला म्यूजियम में 5 दिन तक चलता रहा। इनके शो को लोगों ने बहुत ही सराहा। इस दौरान 15 तैलीय कैन्नवस तैयार किए।

सन् 1990 ईस्वी में आप कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक व युवा कल्याण विभाग के साथ जुड़ गए, जो आज भी इस विभाग में अपने पूर्ण मन से शिक्षक पद को संभाले हुए हैं।

रणधीर सिंह पठानिया आधुनिक चित्रकार के रूप में नजर आते हैं। उनके सरल स्वभाव और मधुर भाषा के कारण उनसे बातें करते समय का पता ही नहीं चलता उनकी बातें सुनकर गहराई में उतरने का मन करता है। वे अपने आप को बहुत ही खुशकिस्मत मानते हैं कि उन्होंने कला को अपने जीवन का आधार बनाया। उनके चित्रों को देखकर आभास होता है कि कला के उपासक अपनी कला शैली में निरंतर बदलाव व नयापन लाने के लिए तत्पर है।

उपलब्धियाँ

कला एक चित्रकार के अपने विचार हैं, जिन्हें वह चित्रों की सजीवता के द्वारा पेश करता है। संसार में रहने वाले हर व्यक्ति का उद्वेश्य आनंद प्रात्ति होता है। आनंद प्राप्त करने के सभी के अलग–अलग मार्ग होते है। कोई संगीत के माध्यम से, कोई लेखन के माध्यम से तथा कोई कला के माध्यम से आंनद प्राप्त करता है। और अनेकों उपलब्धियां ग्रहण करता है। कला के चितेरे श्री रणधीर सिंह पठानिया ने अपने कला जीवन में अनेक उपलब्धियां प्राप्त की हैं।

- सन् 1986 में जम्मू और कश्मीर राज्य कला प्रदर्शनी के द्वारा बरोडवे अवार्ड में सम्मानित किया गया।
- सन् 2007 ईस्वी में 73 में राष्ट्रीय स्तरीय राष्ट्र भारतीय कला प्रदर्शनी अमृतसर में भारतीय ललित कला अकादमी द्वारा चित्रकारी प्रतियोगिता में 10000 रू से सम्मानित किया गया।
- 14 जनवरी, 2010 को प्रथम हरियाणा समकालीन कला प्रदर्शनी द्वारा अवार्ड से सम्मानित किया गया।

कला प्रदर्शनी

- सन् 1982 में ललित कला विभाग गुजरात में वार्षिक कला प्रदर्शनी लगाई।
- सन् 1983–85 में एफ.एफ.ए. बड़ौंदा।
- सन् 1985 में विशिष्ट जम्मू द्वारा भारतीय समकालीन कला प्रदर्शनी लगाई।
- सन 1986 में भारतीय एकैडमी आफ फाइन आर्ट्स, अमृतसर द्वारा समस्त भारत कला प्रदर्शनी।
- सन 1987 में आर्ट एकल (श्रीनगर)।
- सन 1988–89 में ललित कला एकेडमी चंडीगढ़ में वार्षिक कला प्रदर्शनी, (पंजाब) लगाई।
- सन् 1988 में अभिनव आर्ट गैलरी (जम्मू) में प्रिंटर्स 88 एकल।
- सन 1989 में ललित कला एकेडमी रोज गार्डन (चंडीगढ़) में आर्ट 88, सोलिडस चंडीगढ़।
- सन 1989 में आर्ट इंडिया आर्ट प्रदर्शनी (शिमला)।
- सन 1990 में आर्ट 89, सोलिडस (अमृतसर)।
- सन 1991 में सोलिडस (चंडीगढ़) के साथ ललित कला एकेडमी (नई दिल्ली)।
- 7 से 9 मार्च 1998 को डी.पी.आर.ओ. जींद, (हरियाणा) द्वारा ग्रुप शो जींद में किया।
- सन 2004 में डी.पी.आर.ओ करनाल, द्वारा आयोजित ग्रुप शो बाल भवन में किया।

- सन 2004 में आई.एफ.एस.ओ.एस सीजीनल सैन्टर पंचकूला।
- सन 2005 में ललित कला एकेड़मी (पंजाब) कला भवन, रोज गार्डन (चंडीगढ़)
- सन 2005 में ललित कला विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित जिला स्तरीय प्रदर्शनी पर खास निमंत्रण मिला।
- सन 2007 को इलाहाबाद कला कुंभ, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद में ग्रुप शो किया।
- सन 2009 में (क्रिएटर्स) 2007, 2008, 2009 से बना हुआ ग्रुप पेंटर्स स्कल्पचर्स और प्रिंट मेकर्स अंबाला कैंट (हरियाणा)।
- 14 जनवरी 2010 को प्रथम हरियाणा समकालीन कला प्रदर्शनी, कला भवन रोज गार्डन (चंडीगढ)।
- सन 2011 में ग्रुप शो प्रदर्शनी कला परिषद मल्टी आर्ट कल्चरल सेंटर, कुरुक्षेत्र हरियाणा और ग्रुप प्रदर्शनी रविंद्र भवन, ललित कला एकेडमी (नई दिल्ली)।
- 21 से 27 मार्च को ग्रुप शो प्रदर्शनी जहांगीर आर्ट गैलरी (मुंबई)।
- 26 जुलाई से 28 अगस्त 2012 को ए.के.एस. आर्ट गैलरी (मुंबई)।

चतुर्थ अध्याय

रणधीर सिंह पठानिया की कला शैली, विषय एवं रंग

कलाकार की विशेष प्रकार की रचना विधि को तकनीक कहते हैं। तकनीक का अर्थ है कलाकार की विशेष पद्वति। यह व्यक्तिगत होती है और सफल अभ्यास और परिश्रम से प्राप्त होती है। कई कलाकारों को यह परमात्मा की देन होती है, और कहीं किसी को प्रेरणा से प्रभावित होती है। उनकी आकृतियों में जो आकार परक विविधता दृष्टिगोचर होती है, इससे स्पष्ट होता है कि वह किसी विशेष शैली से बंधे हुए नहीं हैं। रणधीर सिंह पठानिया हमेशा स्वतंत्र होकर कार्य करना पसदं करते हैं। ये अपने भावों को बिना किसी रोक–टोक के कार्य करने में सक्ष्म हैं। उनके चित्रों में संयोजन के मूल तत्वों के साथ आंकारों का सूक्ष्म रूप प्रस्तुत किया है।

रणधीर सिंह पठानिया की कला को जानने के लिए उनकी कला के तत्वों का अध्ययन करना आवश्यक है। पठानिया ने अपने चित्रों में ज्यादातर अमूर्त चित्र बनाए हैं। उन्होंने ज्यादातर तैलीय रंगों का नई नई तकनीक से प्रयोग किया। ब्रश के साथ पैच देना और कहीं फ्लैट पृष्ठभूमि देना, इसके अलावा उन्होंने जल रंगों तथा पेस्टल रंगों से भी चित्र चित्रित किए हैं। प्रकृति से प्रेम होने के कारण उन्होनें भू–दृश्य भी बनाए हैं। उन्होंने जम्मू के आसपास के भू–दृश्य भी चित्रित किए हैं। इनके रंग हमेशा गहरे और तीव्र आभा वाले होते हैं। लाल रंग इनका प्रिय रंग है। इससे वे अपने चित्रों में तेजी लाते हैं। इसके अतिरिक्त जामुनी, नीला, हरा, पीला, संतरी आदि रंगों को भी प्रमुखता दी। उनका मानना है कि यह सातों रंग जीवन की आस को दर्शाते हैं।

जब सभी रंगों को इकट्ठा किया जाता है और सूर्य की रोशनी जब इन पर पड़ती है, तब सफेद रंग की किरण दिखाई देती है। आपको पक्षियों और प्राकृतिक चिह्नों को चित्रित करना बहुत पसंद है। खुला आसमान उनके स्वतंत्र होने का प्रतीक है वे अपने अद्‌भुत व्यक्तित्व से सबको अपना बना लेते हैं। अपने चित्रों में भी वह एक नई लय डाल देते हैं।

इन्होंने अपने चित्रों को बहुत ही आकर्षक और लयात्मक रंगों से पेश किया है। क्योंकि मानव जीवन के साथ–साथ चित्रकला में वर्ण का भी महत्वपूर्ण स्थान है। संसार की प्रत्येक वस्तु कोई ना कोई रंग लिए होती है, रंग ही मानव जीवन का सार है। जिस प्रकार कविता के लिए शब्द, संगीत के लिए लय और काव्य के लिए छंद की आवश्यकता होती है, उसी तरह चित्र भी बिना रंगों के नीरस सा प्रतीत होता है।

आधुनिक चित्रकला में रंग का प्रभाव अवलोकनीय होता है। मानव जीवन में रंगों का नैसर्गिक संबंध है। चित्रकला में रंग महत्वपूर्ण तत्व होते हैं। और रंगों में दो बातें स्पष्ट रूप से आवश्यक हैं, चित्रकला की अपनी मानसिक स्थिति रंगों के प्रति तकनीक पक्ष से है।

श्री रणधीर सिंह पठानिया एक आधुनिक चित्रकार है। वे आधुनिकता के खुलेपन में विश्वास नहीं रखते। उनका मानना है कि आधुनिकता का अभिप्राय विचारों के दीर्घ क्षेत्र से है। जीवन का संतुलन चित्रकला से भी झलकता है। अगर जीवन में संतुलन होगा, तो चित्र में भी संतुलन होना स्वभाविक है। संतुलन शब्द का प्रयोग मात्र चित्रकला में नहीं अपितु जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जितना चित्रकार सादा होगा, उतना ही उसका कला के प्रति नजरिया विस्तृत होगा। जब व्यक्ति अच्छा सोचेगा तभी अच्छी कलाकृति का निर्माण कर सकता है। उच्च विचार वाला कलाकार ही मानव कलाकृति को उजागर कर सकता है।

आपने कला जगत में अपनी एक निजी पहचान बनाकर चित्र कला के क्षेत्र में अपना एक सुदृढ़ स्थान बना लिया है। दर्द, कुंठा, खौफ और गर्म जोशी को कैन्वस पर उतारना उनकी खूबी है। 'तीन अंधे' नामक कृति में अंधों को पथरीली और ठहरी हुई आंखें, आत्मविश्वास से बहुत दूर छिटके हुए उनके कदम, हवा में कुछ ढूंढने के प्रयास के हाव–भाव, सहज रूप में एक धार्मिक दृश्य पेश करते हैं। अन्य कृति 'विनाश–1' में लाल रंग न केवल लपटों के विनाश और हाहाकार को दर्शाया है, बल्कि आपसी कलह और दुर्भावना को भी प्रदर्शित करता है। इनकी दो आयामी कृतियां बहुत सरलता से वह संदेश देने में सक्षम है। जिसे दर्द को अभिव्यक्त करने वाला तथा अभिव्यक्ति की समझ रखने वाला व्यक्ति बड़ी आसानी से पहचान सकता है।

इन्होनें जब अपनी स्नातकोत्तर की शिक्षा पूर्ण की तो वे चंडीगढ़ आ गए। यहां उन्होंने चंडीगढ़ की शैली और विषय उठाएं। यहां रहकर उन्होंने 15–20 कैन्वस तैयार किए, जो बाद में उन्होंने 'वन मैन शे' में प्रदर्शित किए। चंडीगढ़ की अर्ध गोलाई इमारतें, खुली और चौड़ी सड़कें, घास के मैदान और पार्क, छायादार पेड़–पौधे आदि उन्हें अपनी और आकर्षित करने लगे। इनका कहना है कि प्रतिदिन वे वहां ग्रहणी अपने बाग को पानी देते हुई, घर के बाहर बैठ अखबार पढ़ना, पंजाबी लड़कियों का विदेशी पहनावा पहनकर घूमना, सब्जी बेचने वाला, आइसक्रीम खाती लड़कियां आदि जैसे दृश्य देखते थे, जो कि उन्हें चित्रकारी करने को मजबूर करते थे।

इन्होनें चंडीगढ़ में रहकर वहां की आजादी और रंग भरी दुनिया को अपने कैन्वस पर चित्रित किया। जिसमें से सब्जी बेचने वाली छत पर खड़ी लड़की केला खाती हुई, पूनम विला के बाहर ग्रहणी फूलों को पानी देते हुए, उस समय की सर्वश्रेष्ठ चित्रकारी मानी गई है।

प्रत्येक कलाकार अपनी कार्यक्षमता के अनुसार कार्य सामग्री का प्रयोग करता है। इन्होनें अपनी कार्यशाला में सृजन के लिए विभिन्न वस्तुओं का निर्माण किया और उन्हें अच्छे से प्रयोग भी किया। जो भी वस्तु उन्हें अच्छी लगती है, उसे वे कागज पर उकेर देते। इनके चित्रों में भावुकता झलकती है। वे एक बहुत ही सादा और सुलझे हुए कलाकार हैं। वे कैन्वस पर रंगों के साथ खेलते हैं। कहीं तो तैलीय रंगों में तेल डालकर तथा कहीं ऐक्रेलिक रंगों को पानी की सहायता से कैन्वस पर ऐसे लगाते हैं कि वह कैनवस की सतह पर मोती बनकर उभर जाते है। वो बहुत ही अच्छे ढंग से टेक्सचर की रचना करते हैं।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आने के पश्चात उन्होंने यहां की संस्कृति को अपनाया लिया। धर्मनगरी कुरुक्षेत्र से भी वे बहुत प्रभावित हुए। एक सच्चा कलाकार जहां भी जाता है वहां की संस्कृति, सामाजिक और धार्मिक वातावरण को अपना लेता है। मई 1990 में वे यहां आए तब से अब तक यहीं पर हैं।

इन्होनें अपने संयोजन को दो फेस में संयोजित किया है। पहले फेस में वस्तु विषय का चयन करने के बाद उसे बनाना, उसके सब्जेक्ट को लेते हुए ड्रॉ करना। जिसमें संतुलन, लय, टेक्सचर जो एक अच्छे संयोजन के लिए जरूरी हो। दूसरे फेस में ड्राइंग की हुई कंपोजीशन को कलर में बदलना, संभाविक है, कलर भी विषय वस्तु के हिसाब से होना चाहिए।

आप अपने कला कार्य में अपने मन के भावों को व्यक्त करते हैं। एक बार ज्योति भट् ने आपकी पेंटिंग देखी और वे उसका अवलोकन कर रहे थे। उस पेंटिंग में आपने अपनी मेमोरी से अपने गांव का एक दृश्य बना रखा था। उन्होंने मेरी पूरी पेंटिंग मे भी उस छोटे से हिस्से को अच्छा बताया। तब शायद यह समझ ना आ सका। मगर बाद में पता चला कि उस पूरी पेंटिंग में से उसी गांव के दृश्य को ही क्यों अच्छा कहा। क्योंकि आपके कार्य हमेशा खुद से सोच विचार कर बनाए होते हैं, किसी की नकल नहीं ।

आपने कुरुक्षेत्र में रहते हुए वहां की संस्कृति को भी कैन्वस पर उतारा। ब्राह्मा सरोवर के साधुओं और मंदिरों को बहुत ही सुंदर ढंग से उकेरा है। इसमें गहरे लाल रंगों का अत्याधिक प्रयोग किया है। भू–दृश्यों को भी आपने कहीं ना कहीं अपनी चित्रकारी में शामिल किया है। आपने अपने चित्रों में पक्षियों को भी महत्व दिया है। यह चित्र को गति प्रदान करता है।

इससे आपके चित्र जिंदा और तरोताजा लगते हैं। पृष्ठभूमि, फूल, पत्तियां, बेलो, अमूर्त, ज्यामितिय व कोणीय आकार बनना आपकी विशेषता है। आप ने नारी पर हो रहे अत्याचार, भ्रष्टाचार, हीनता के विषयों पर भी कैन्वस कार्य किए हैं।

आपका मानना है कि कला सबके लिए आसान नहीं होती, यह आनंद की अनुभूति होती है। कला में तभी आनंद आता है जब कुछ मन में कल्पना हो, तभी उस पर अनेक प्रकार की अमूर्त तैयार हो सकती है। यह एक असीम खजाना है, जो कभी खत्म नहीं होता। कलाकार अपनी भावनाओं को चित्र के माध्यम से पेश करता है। चित्रकार हमेशा ही कुछ नया सीखने में तत्पर रहता है। उन्होंने ऐसे रंगों और विषयों को उठाया जिसे आसानी से जनता समझ सके। कला सुंदरता का ही रूप है, जो हमारी आंखों को अच्छा लगे और मन को छुए वह सुंदर है।

आप बचपन से ही कला दर्शन शास्त्र में दृढ़ रहे हैं। आप जब भी कैनवस को देखकर चित्र चित्रित करने लगते हैं, तो उसी के विषय में डूब जाते हैं और फिर कल्पना की उड़ान मन में इधर–उधर घूमने लगती है, जिसे आप कैनवस पर उतार देते हैं। बचपन में जब आप गांव में रहते थे तो वहां की स्मृतियों को आप ने चित्रित किया। आपने अपने स्वयं के चित्र भी चित्रित किए। कलाकार प्रत्येक वर्ग से संबंधित उनकी अच्छाइयां और बुराइयां दोनों को चित्रित करता है। इन्होंने अपनी कला

यात्रा में अनेक माध्यमों को अपनाया है। इन्होंने पोट्रेट भी बनाए और अलग–अलग पद्धतियों में कार्य किया।

आपके चित्रों में रोजमर्रा की घटनाओं और सामान्य जनजीवन की भी महक आती है। आपने अपने चित्रों में अमूर्तता को बड़ी गहराई से चित्रित किया है। चित्रों के विषय में पक्षी, वृक्ष, कबूतर, पत्थर तथा अन्य कई रूपांतर आपने अपनी विशेष शैली में चित्र फलक पर चित्रित किए।

मनुष्य का प्रकृति के साथ अटूट रिश्ता है। कोई भी भू–दृश्य बिना मनुष्य के पूरा नहीं है। भू–दृश्य वही सफल है, जिसमे ं पशु–पक्षी या मानव कृतियां मौजूद हों। आपने कला के क्षेत्र में अपना रास्ता बहुत ही मेहनत और लगन से बनाया है। पूरी दृढ़ता के साथ आप नई–नई मंजिले तय कर रहे है।

कलाकार का मन आजाद होता है, वह किसी बंधन में बंधा नहीं रह सकता। एक चित्रकार का काम अपने अंदर के भाव को रंग, रेखा और आकार के माध्यम से लोगों के सामने प्रकट करना होता है। इन्होनें चारकोल और पेंसिल से भी बहुत अधिक काम किया है। उनकी मेहनत और लगन आज भी उनके चित्रों में झलकती है। इसके अतिरिक्त उनकी रचनाओं में कलात्मक, लय व संतुलन का भाव भी लक्षित होता है। उनका परिणाम उनके चित्र में स्वतः ही स्पष्ट होता है।

किसी भी चित्र का मुख्य आधार रेखा द्वारा होता है, जो धरातल पर किसी रंग छोड़ने वाले पदार्थ से किया जाता है। यही अंकन रेखांकन कहलाता है। इसकी किसी भी चित्र में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनके चित्रों में कहीं सरलता है तो कहीं ज्यामितीय रूप में अंकित रेखाओं द्वारा चित्र को पेश किया है।

पेस्टल चित्रों में इन्होने महारथ हासिल की है। वे अपने चित्रों में व्यक्ति चित्र, नारी चित्र, लडका, पशु पक्षियों के चित्र को अच्छे ढंग से दर्शना अधिक पसंद करते हैं।

इन्होंने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए तैलीय रंगों का प्रयोग किया है। इनके चित्रों में चमक, संवेदना, आशा, निराशा, खुशी, उल्लास आदि सभी गुण विद्यमान है। इन्होंने बच्चों के पोर्ट्रेट में मासूमियत, भोलेपन, और नौजवानों की उम्र की उड़ान तथा बुढ़ापे में आने वाले सुख–दुख के भाव को व्यक्त किया है।

ऐक्रेलिक चित्रों में भी इन्होंने भूमिका निभाई है। इन रंगों से वे अपने चित्रों में जान डाल देते हैं। निर्जीव होते हुए भी चित्रों में सजीवता का अहसास होता है। आप चित्र तैयार करने से पहले खाली कैन्वस को आगे रखकर सोचते रहते है। जो की आपके कल्पना शक्ति के सदाय होने का प्रतीक है।

इनके भाव उनके कार्य के प्रति इतने सहज होते हैं, जिसे अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। जीवन की अस्त–व्यवस्था को भी दिखाया गया है। ऐसा भी नहीं कि इन्होनें केवल दर्द और कलह को ही चित्रित किए, उनके द्वारा बनाई गई नयनगोचर कृतियां अपने–आप में उसे माटी और माहौल की गंध भी समेटे हुए हैं, जहां उनका मन पला–बढ़ा है।

रणधीर सिंह एक ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने समय के साथ–साथ अपनी चित्रकला में अनेक बदलाव किए। उन्होंने अपने चित्रों में अनेक विषय रखे और अनेक कला शैलियों को भी अपने चित्रों में प्रस्तुत किया है, जो आज भी अनेक म्यूजियम में देखने को मिलते हैं। जिन्होंने आज पठानिया को आसमान के शिखर तक पहुंचाया है। श्री रणधीर सिंह आज दिन रात मेहनत कर अपनी कला को निखार रहे हैं।

पंचम अध्याय

श्री रणधीर सिंह पठानिया द्वारा कला कार्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन

चित्र संख्या 1 :–

इस चित्र में जीवन के संघर्ष को मुख्य रूप से चित्रित किया है। लाल रंग से चित्रित यह चित्र प्रलय व संघर्ष को दर्शाता है। आदमी एक तरफ नीचे गिरा पड़ा है उसके ऊपर से घर गिरते हुए दिखाए गए हैं। कुछ महिलाएं व बच्चे उसकी तरफ देख रहे हैं और बड़े ही दुखी प्रतीत हो रहे हैं। पक्षियों को भी बड़े सुंदर तरीके से दर्शाया गया है। लाल और नीले रंग से जीवन के संघर्ष को दर्शाया है। कुछ पक्षी इधर–उधर चहचहाते हुए दिखाएं हैं, मानों वो भी प्रलय मे ं फंसे गए हैं।

चित्र संख्या 2 :–

इस चित्र में तीन अंधे लोगों को दिखाया गया है, जो रास्ते में चले जा रहे हैं। पीछे से एक आदमी उन्हें देख रहा है। तीनों आदमी एक दूसरे का सहारा लेकर चले जा रहे हैं। मानो वो अंधे होकर भी अपनी जिंदगी में बहुत प्रसन्न प्रतीत हो रहे हैं। इस कृति में अंधी को पथरीली और उनकी ठहरी आंखें आत्मविश्वास से बहुत दूर छिटके हुए उनके कदम हवस में कुछ ढूढंने के हाव–भाव, सहज रूप से मार्मिक दृश्य पेश करते है।

चित्र संख्या 3 :–

इस चित्र में दो रिक्शावाले आदमी आपस में बातचीत करते दिखाए गए हैं, जो अपनी झोपड़ी में आनंद से बैठे प्रतीत हो रहे हैं। चित्र को बड़े अच्छे तरीके से चित्रित किया गया है। जिसे देखकर अपनी घरेलू जिंदगी का वर्णन सा प्रतीत होता है।

चित्र संख्या 4 :–

इस चित्र में एक आदमी को सुबह का अखबार पढ़ते हुए दिखाया है, जो बड़े ही आराम से अपने घर के बाहर कुर्सी पर चप्पल निकाल कर बैठा अखबार पढ़ रहा है। पीछे एक पेड़ दिखाया गया है। वातावरण बड़ा ही सुंदर प्रतीत हो रहा है। चित्र में लाल व हरे रंग का प्रयोग अधिक किया गया है।

चित्र संख्या 5 :–

यह चित्र गांव से लिया प्रतीत हो रहा है। इस चित्र में एक कुत्ता लड़के की तरफ देखकर भौंक रहा है और लड़का भी कुत्ते की तरफ देखकर गुस्से में मुंह खोल कर बैठा हुआ है। पीछे एक पक्षी उन दोनों को बड़े ध्यान से देखे जा रहा है। दूसरा कुत्ता जमीन पर लेट रहा है। चित्र को बड़े ही अच्छे ढंग से चित्रित किया गया है।

चित्र संख्या 6 :–

यह चित्र हिसात्मकंता को दर्शाता है। इसमें एक स्त्री को जमीन पर पड़े हुआ दिखाया गया है, उसे देख कर लग रहा है मानो वह मरी हुई हो। उसके पास दो बच्चे बैठे हैं, जिसके मुख पर उदासीनता का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। ऊपर आकाश में लाल व नीला रंग किया गया है। आकाश में एक पुरुष आकृति नजर आ रही है जो स्त्री की तरफ देख रहा है। पृष्ठभूमि में हरे व गहरे नीले रंग का प्रयोग हुआ है।

चित्र संख्या 7 :–

इस चित्र को कलाकार ने चार हिस्सों में बनाया है। ऊपरी हिस्से में आकृति को सीधे खड़ा दिखाया है, मानो एक स्त्री है एक पुरुष। स्त्री के हाथ में एक फूल है और दूसरे हाथ में पक्षी बैठा हुआ है। दूसरी तरफ रोमांस करते हुए आकृतियां बनाई हैं। नीचे की तरफ एक स्त्री मृत पुरुष की पूजा करते हाथ में फूल लिए बैठी है। नीचे एक पक्षी उसे देख रहा है। चित्र में रंगों का बड़े अच्छे ढंग से प्रयोग किया है।

चित्र संख्या 8 :–

इस चित्र में एक लड़की का चित्र चित्रित किया है, जो गहरी सोच में डूबी प्रतीत हो रही है। उसके एक हाथ में फूल है, दूसरे हाथ पर पक्षी बैठा है, जो लड़की की तरफ देख रहा है। दोनों को आपस में वार्ता करते दिखाया गया है। चारों तरफ जीवन को दर्शाया गया है, जो लाल रंग से व गहरे पीले रंग से चित्रित किए गए हैं।

चित्र संख्या 9 :–

इस चित्र में कुरुक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर को दर्शाया गया है। चित्र के मध्य भाग में गहरे नीले रंग का पानी बनाया गया है मानो प्रलय आ रही है और इस तूफान में यह पुरुष अकेला डटकर तूफान का सामना कर रहा है। बिना किसी डर के वह एक हाथ में लाठी लिए प्रलय के बीच में खड़ा है। ब्रह्मसरोवर की सीढ़ियों को एक तरफ दिखाया गया है। रंगों का बड़े अच्छे ढंग से प्रयोग किया है।

चित्र संख्या 10 :–

इस चित्र में कलाकार ने जीवन के बहुत से पहलुओं का वर्णन किया है। चित्र को पांच भागों में विभाजित कर इसे पूर्ण सफलता के साथ आधुनिक रूप में चित्रित किया है। ऊपरी हिस्से में केले के पेड़ को दिखाया है जिसे हल्के पीले रंग से चित्रित किया है। पीछे की तरफ आसमान से आती हुई एक कृति दिखाई है जिसकी छवि बहुत ही धुंधली है। उड़ते हुए पक्षियों का चित्रण पूरे चित्र में किया गया है। उसके नीचे ही एक नग्न मानवकृति को तकिए का सहारा लेकर अपने एक घुटनें को दूसरे पर

रखकर फूल को सूघंतें हुए मदमस्त अवस्था में बैठे हुए दिखाया है। कृति को गहरे नीले, संतरी तथा पीले रंग से बनाया है।

चित्र संख्या 11 :–

इस चित्र में कुरुक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर को दर्शाया गया है। चित्र के मध्य भाग में गहरे नीले रंग का पानी बनाया गया है। संतरी नीले पीले रंग की इमारतों को बनाया गया है। सीढ़ियों को संतरी तथा पीले रंग की बनाया गया है। एक तरफ हरे रंग तथा पीले रंग के पेड़ों को बड़े रूप में बनाया गया है। चित्र में एक तरफ आकृति को बनाया जो कुछ देखते हुए प्रतीत हो रही है।

चित्र संख्या 12 :–

इस चित्र को कलाकार ने चार भागों में चित्रित किया है। इस चित्र में मृदुता–सी प्रतीत होती है। सपाट पृष्ठभूमि को खत्म करने के लिए बनावट का प्रयोग किया गया है। चित्र में एक तरफ बैठी लड़की मोबाइल से मनोरंजन करती प्रतीत होती है और ऊपर की तरफ बैठी लड़की अपने आप को शीशे में निहार रही है। एक सुंदर पेड़ का भी चित्र बनाया है जो गहरे नीले रंग का है। ऊपर एक और लड़की तकिए का सहारा लिए बैठी कुछ सोच रही है और सामने एक बैल का चित्र चिचित्र है। नीचे की तरफ एक पुरुष अपनी जिंदगी को संतुलन कर रहा है। कलाकार ने सभी गहरे और मृदुता वाले रंगों का प्रयोग किया है।

चित्र संख्या 13 :–

इस चित्र में एक लड़की को पक्षियों से वार्ता करते दिखाया गया है। चित्र मानव सजीव प्रतीत होते हैं। गहरे नीले रंगों व पीले रंगों का प्रयोग किया गया है। पक्षी इधर–उधर उड़ रहे हैं, चित्र में मृदुता–सी प्रतीत होती है। सपाठ पृष्ठभूमि को खत्म करने के लिए बनावट का प्रयोग किया गया है।

चित्र संख्या 14 :–

इस चित्र में कलाकार ने चित्र को तीन भागों में चित्रित किया है। ऊपर दिखाया है जिसमें एक लड़की उदासी पूर्ण बैठी हुई है और दूसरी लड़की की तरफ देख रही, जो पक्षी से संवाद कर रही है। दूसरी तरफ लड़की एक मेज पर बैठी पक्षी की तरफ देखते हुए हाथ में फूल लिए बैठी है और उसके दूसरे हाथ पर एक पक्षी बैठा हुआ है। उसी के नीचे एक और लड़की दिखाई गई है जो मेज के नीचे बैठी है और नीचे की तरफ एक लड़की और पुरुष आपस में संवाद करते प्रतीत हो रहे हैं। कुछ पक्षी नीचे बैठे हुए हैं। चित्र में गहरे लाल नीले व संतरी रंगों का सुंदर प्रयोग किया है।

चित्र संख्या 15 :—

यह चित्र कलाकार की अपनी कल्पना से चित्रित किया गया है। चित्र को अलग—अलग भागों में बांट कर भी जोड़े रखने का प्रयास किया गया है। नीचे की तरफ एक स्त्री और पुरुष को आपस में संवाद करते दिखाया गये है। आसपास पक्षियों को इधर उधर मुंह किए बैठे दिखाया गया है। उसी के साथ में एक स्त्री खड़ी दिखाई देती है, जो दूसरी स्त्री के साथ वार्ता कर रही है। ऊपर की तरफ नग्न अवस्था में एक पुरुष को दिखाया है, जो अपनी कल्पना में डूबा हुआ है और एक लड़की पेड़ के पास आराम से बैठे मोबाइल का प्रयोग कर रही है। ऊपर की तरफ कलाकार ने गांव का एक चित्र बनाया, जिसमें पुरुष बैठे अखबार पढ़ रहे हैं और स्त्री उनकी तरफ खड़ी देख रही है। दो बच्चे बैठे सोच में डूब रहे हैं। गहरे नीले व लाल रंगों का प्रयोग किया गया है।

चित्र संख्या 16 :—

इस चित्र में दो स्त्रियों को तथा पुरुषों की कुछ आकृतियां चित्रित की हैं। एक स्त्री गहन सोच में बैठी हुई है। उसके मुख की तरफ हाथ पर पक्षी बैठा हुआ है। दूसरी तरफ भी एक स्त्री कल्पना में डूबी बैठी है। ऊपर की तरफ कुछ आकृतियां बनाई गई हैं। चित्र में गहरे नीले लाल व पीले रंगों का प्रयोग किया है।

चित्र संख्या 17 :—

इस चित्र में घर के बाहर बैठी नीले और लाल रंग की कृतियों को बैठे हुए दर्शाया गया है। पीछे वाली कृति आगे वाली नगर कृति के कंधे को दबाती हुई प्रतीत हो रही है। लाल कृति का मुंह खुला है तथा उंगली पर काले रंग की चिड़िया को बिठाया गया है। पृष्ठभूमि में दीवार दिखाई गई है। चित्र में गहरे लाल रंग का अधिक प्रयोग किया गया है। दूसरी तरफ रोमांस की कृतियां भी बनाई गई हैं। एक नीले रंग की चिड़िया को नीचे की तरफ देखते हुए चित्रित किया गया है।

चित्र संख्या 18 :—

इस चित्र के चार हिस्सों में से ऊपरी हिस्से में दो कृतियों को जो की नीले व संतरी रंग से बनी है, उन्हें एक दूसरे के पीछे बैठे हुए दिखाया गया है। हाथ में गुब्बारे जैसा कुछ पकड़ा हुआ है। जिससे दाएं तरफ बनी आकृति जो कि किसी गोलाकार गुब्बारे को पकड़ने की चेष्टा कर रही है। जो भूरे रंग से बनाई गई है। आसमान को हल्के नीले रंगों से बनाया गया है। कृति की टांगों को नीचे बनी दूसरी आकृति के चेहरे तक आते हुए दर्शाया गया है। कृति में अपना एक हाथ दूसरे कंधे पर रखा हुआ है, जिससे गहरे भूरे रंग से दर्शाया गया है।

चित्र संख्या 19 :–

इस चित्र में षाठ का दृश्य चित्रित किया है, इसमें कुछ इमारतें और पेड़ों को इधर–उधर गिरा हुआ दिखाया गया है। इमारतों को टुटा हुआ चित्रण किया गया है। कई लोग पानी के तेज बहाव में डूबते हुए दिखाए गए हैं। चित्र में लाल, पीले, हरे व नीले रंगों का प्रयोग किया गया है।

चित्र संख्या 20 :–

इस आकृति को कलाकार ने चार हिस्सों में बनाया है। ऊपरी हिस्सों में दो आकृतियों को सीधे खड़े दिखाया गया है। देखने में प्रतीत होता है मानो एक स्त्री आकृति है और एक पुरुष। दूसरी तरफ एक नीले रंग की आकृति बनाई गई है, जिसने हाथ में फूल पकड़ा हुआ है। नीचे की जो आकृति है उसमें हाथ में फ्रेम पकड़ा हुआ है। इसमें एक आकृति बनी हुई है। फ्रेम के ऊपर एक पक्षी बैठा है जो सजीवता का प्रतीक हैं। नीचे एक कुत्ते को उल्टा लेटा दिखाया गया है। सभी मानो गहन सोच में डूबे हो। लाल, पीले और नीले रंगों के प्रयोग से सुंदर चित्र बनाया गया है।

षष्टम अध्याय

श्री रणधीर सिंह पठानिया से साक्षात्कार

प्रश्न 1 :– क्या आपकी बचपन से ही कला में रुचि रही है ?

उत्तर :– बचपन में मैंने अपने दादा जी द्वारा बनाया एक पोर्टरेट देखा जो पेंसिल से बड़ा अच्छा बनाया हुआ था, उसे देखकर मेरे अंदर कला के प्रति रुचि जागने लगी कि हमें भी ऐसा काम करना आना चाहिए।

प्रश्न 2 :– आपके जीवन में कला का आरंभ कहां से हुआ ?

उत्तर :– जब स्कूल पूरा होने के बाद मेहर चंद टेक्निकल इंस्टिट्यूट ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट में दाखिला लिया। तब वहां मेरी मुलाकात एच. एस. राठौर जी से हुई। राठौर जी ने मुझे हर तरफ से कला के लिए प्रेरित किया। उन्होंने मुझे क्ले मॉडलिंग, पेपर कटिंग और डिजाइन इत्यादि बनाने सिखाए। वही से मेरे अंदर कला के प्रति दिलचस्पी पैदा हुई।

प्रश्न 3 :– क्या आपके परिवार मे ं कोई कला से जुड़ा हुआ था ?

उत्तर :– हां ! मेरे पिताजी को संगीत कला का शौक था। कला के गुण मुझे अपने परिवार से ही हासिल हुए। मेरी माता जी पारंपरिक कला हाथ से बुनी पंखीयां, चरखा कातना और मिट्टी के चूल्हे बनाने में निपुण थी। चादर इत्यादि पर सिलाई–कढ़ाई करना भी उन्हें अच्छा लगता था। मैंने उन्हें दीवारों पर भी पारंपरिक चित्रकारी करते देखा। मेरे बड़े भाई वारिंदर ने भी मुझे ज्यामितिय आकार, तोते, मोर,बत्तख, फूल इत्यादि बनाना सिखाया। जहां से मेरे अंदर भी रुचि बढ़ी।

प्रश्न 4 :– किससे प्रेरित होकर आपने कला में रुचि दिखाई ?

उत्तर :– जालंधर में मेहर चंद टेक्निकल इंस्टिट्यूट में जब एच. एस. राठौर से मिला तो उन्होंने मुझे बहुत प्रेरित किया। उन्होंने ही मुझे बड़ौदा कॉलेज जाने की सलाह दी। फिर मुझे लगा कि मुझे वही जाना चाहिए और वहां जाकर भी के.जी. सुब्रामनीयम, ज्योति भट्ट और गुलाम मोहम्मद शेख जैसे महान कलाकारों ने भी बहुत प्रेरित किया।

प्रश्न 5 :– ऐसा कोई व्यक्ति जिसकी सहायता या सलाह से आप कला क्षेत्र में आगे जा पाए ?

उत्तर :– हां ! मेरे भाई संग्राम सिंह जालंधर से बी.एड़. की शिक्षा ग्रहण कर रहे थे, तो उन्होंने ही मुझे सलाह दी और मेरा एम.टी.आई. कॉलेज में दाखिला हुआ और वहां मुझे एस.एस. राठौर मिले। उन्होंने

मुझे बड़ौदा कॉलेज जाने की सलाह दी। उन्हीं की सहायता व सलाह से मैं कला क्षेत्र में आगे तक जा पाया।

प्रश्न 6 :– आपका शुरुआती कार्य क्या था ?

उत्तर :– वैसे तो मुझे मनुष्य की विभिन्न मनोदशा को दर्शाना उन्हें अपने कार्य में अत्यधिक प्रयोग में लिया है, लेकिन अगर बिल्कुल शुरुआती कार्य देखा जाए तो वो स्केचिंग है, क्योंकि मुझे स्केचिंग का शौक था। एक वाटर कलर का काम और पोस्टर कलर से डिजाइन करना भी मेरा शुरुआती कार्य रहा है।

प्रश्न 7 :– आप की कला का माध्यम कौन सा रहा ?

उत्तर :– ऑयल कलर, मैंने अपने काम में प्रयोग किए और एक्रेलिक, जल रंगों का भी प्रयोग किया है। ज्यादातर ऑयल कलर से पेंटिंग की है। यही मेरे काम का माध्यम रहा है।

प्रश्न 8 :– ऐसी कोई जगह जिस से प्रभावित होकर आपने उसे अपने कार्य से जोड़ा हो ?

उत्तर :– ग्रामीण क्षेत्र में रहते हुए मेरे मन में वहां की खुशबू समाई हुई है। गांव के खुले मैदान, बड़े घर, पशु–पक्षी और वहां की संस्कृति से प्रभावित होकर मैंने उसे अपने कार्य मे ं दर्शाया है।

प्रश्न 9 :– आपके जीवन की कोई ऐसी दुर्घटना जो आपके कला कार्य में झलकती है ?

उत्तर :– हां, हमारा घर पंजाब और जम्मू के बॉर्डर पर था, तो खेतों में से आर्मी गुजरती रहती थी और उन्हें देखना भी मुझे अच्छा लगता था। 1971 में हुई लड़ाई के दौरान स्कूल के ऊपर से एक हवाई जहाज गया, जिसने वहां बम गिरा दिया। परंतु दलदली मिट्टी के कारण बम क्षतिग्रस्त हो गया। यह दुर्घटना आज भी दिल दहला देती है। इसे मैंने अपने कार्य में भी दर्शाया है।

प्रश्न 10 :– ऐसा कोई पसंदीदा रंग जिसे आप अपने कार्य में अधिक प्रयोग में लाते हैं ?

उत्तर :– वैसे तो मैं सभी गहरे रंगों का प्रयोग अपने कार्य में करता हूं, लेकिन लाल रंग मेरा पसंदीदा रंग है, जिसे मैं अपने हर कार्य में प्रयोग करता हूं। वैसे तो विषय के अनुसार ही सफेद, लाल, नीले रंगों का प्रयोग करता हूं, लेकिन मुझे गहरे रंगों का प्रयोग करना अच्छा लगता है, जिसे मेरे कार्य में सॉफटनेस आती है।

प्रश्न 11 :– आपका कार्य ज्यादातर अलंकारिक होता है? ऐसा क्यों ?

उत्तर :– क्योंकि मुझे फिगरेटीव काम करना पसंद है। इसलिए मैंने शुरू से ही अपने सारे काम Figurative तरीके से ही किए हैं, क्योंकि मुझे शुरु से ही फिगरेटीव आर्टीस्ट बनना था। इसलिए मेरे सभी काम फिगरेटीव होते हैं।

प्रश्न 12 :– नौकरी की तलाश में आपके क्या संघर्ष रहे ?

उत्तर :– नौकरी की तलाश में मैं चंडीगढ़ और मोहाली आया। वहां रहते हुए मैंने धीरे–धीरे पोस्टर बनाने शुरू किए। 1986 में मैं इंडियन पब्लिक स्कूल में ड्राइंग का अध्यापक बन गया। 3 साल तक मैं अध्यापक के कार्य पद पर रहा। फिर 1990 में मैं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृतिक व युवा कल्याण विभाग के साथ जुड़ गया और आज भी अपने पूर्ण मन से शिक्षक पद को संभाले हुए हूं।

प्रश्न 13 :– आपके अनुसार कला क्या है ?

उत्तर :– कला बहुत ही खूबसूरत सा अनुभव है। जब तक आपके काम में कला के प्रति एक संतुलन उसको बनाने का तरीका समझ में नहीं आएगा, तब तक थोड़ा मुश्किल लगता है, अगर आने लग जाए तो ऐसा लगता है कि हम पेंटिंग ही करते रहें, बहुत आनंद आने लगता है। कलाकार बहुत ही संवेदनशील होता है। कहीं भी कोई घटना हो, वह उसके दिमाग में एक तस्वीर की तरह छप जाती है, जिससे वह आकृतियों के माध्यम से अपने कार्य में दिखाता है। कला में निपुण होना या कलाकार बनना इतना आसान नहीं होता। अनुभव जितना होगा, उतना ही आपका कार्य अच्छा निकल कर आएगा।

प्रश्न 14 :– आप के अनुसार रंगों का ज्यादा महत्व है या विषय–वस्तु का?

उत्तर :– संयोजन में तो जब तक विषय–वस्तु ही सही नहीं होगी तो उसमें रंगों का उभर कर आना मुश्किल रहता है। एक कलाकार को विषय–वस्तु के हिसाब से रंगों का प्रयोग करना चाहिए। जहां भयंकर आतंकवाद का
दृश्य है वहां गहरे लाल, संतरी, नीले रंगों का प्रयोग होता है और जहां रोमांटिक दृश्य चित्रित हैं, वहां हल्के शांत रंगों का प्रयोग होता है। विषय–वस्तु के हिसाब से ही रंगों का उपयोग माना जाता है।

प्रश्न 15 :– आजकल के युवा कलाकारों के बारे में आपके क्या विचार हैं?

उत्तर :– आजकल के बच्चे मैंने देखा कि वो मोबाइल के बिना आगे चल ही नहीं पाते। तभी उनका काम कॉपी किया हुआ लगता है। न तो वे ज्यादा अभ्यास करते हैं और न ही स्केचिंग। यही वजह है कि उनके काम में सॉफ्टनेस नहीं आती। जितना ज्यादा अभ्यास करोगे उतना ही आपकी पेंटिंग में सॉफ्टनेस आती है, फिर आपको कहीं से भी कॉपी करने की आवश्यकता नहीं रहती।

प्रश्न 16 :— क्या समय के साथ आपके काम में भी कोई बदलाव आया ?

उत्तर :— हां, बिल्कुल बदलाव आया। पहले मुझ कॉम्पोजिसन में थोड़ी कठिनाई आती थी। लेकिन धीरे—धीरे जब मैंने अपने काम को जारी रखा तो आज जो काम है उसमें बहुत ही सॉफटनेस और तरोताजा लगती है। जब तक आप की पहली पेंटींग और आखरी पेंटींग में अंतर नहीं होगा, तब तक अभ्यास करते रहना चाहिए। जितना अभ्यास होगा उतना ही आपका काम अच्छा होगा और न ही आपको कोई काम करने में परेशानी आएगी। मेरी पेंटीगंस को अगर ध्यान से देखा जाए तो उसमें सब कुछ साफ और सरल तरीके से समझ आ जाता है। वह एक कहानी की तरह लगती है। मेरे सभी काम जीवंत प्रतीत होते हैं।

प्रश्न 17 :— आपके शिक्षक जीवन और कला जीवन में क्या अंतर रहा ?

उत्तर :— रहा तो मैं शुरू से ही शिक्षक जीवन में हूं , लेकिन अपना काम भी करता हूं । दोनों का अनुभव बहुत ही अच्छा रहा है। शिक्षक जीवन में बच्चों को वह रास्ता दिखाना, उनमें रुचि जगाना बहुत ही अच्छा अनुभव है और अपना काम भी मैंने कभी बंद नहीं किया। दोनों को साथ साथ लेकर चलता हूं तो बहुत अच्छा अनुभव रहा है।

उपसंहार

कला मानव जीवन की अभिव्यक्ति भी है तथा सम्प्रेषण का माध्यम भी। कला उतनी ही पुरानी है जितना मानव जीवन। किसी भी देश की संस्कृति का मूल्य उसके प्राचीन शिल्प, स्थापत्य, चित्र कला और साहित्य के द्वारा आंका जा जाता है। विद्या और कला के क्षेत्र में भारत का सर्वोच्च स्थान है। कला जीवन के रूप सौंदर्य की वृद्धि करने व मानवीय भावनाओं की पूर्ति करने का महत्वपूर्ण साधन है।

इस संसार के मानव भिन्न भिन्न प्रकार की सोच रखते हैं। सभी अपने–अपने ढंग से कार्य करते हैं। संसार ईश्वर का एक अद्‌भुत निर्माण है, जिससे प्राकृतिक ने अलग–अलग व नए–नए ढंग से अपनी मोहक कृति द्वारा इस संसार को हमेशा से ही सजा कर रखा है। ईश्वर ने इस संसार की सबसे सुंदर कृति मानव को बनाया है। कुछ लोगों को भगवान ने अत्यंत असीम कृपा से बनाया है। स्वंतत्र आत्मा वाले कला प्रेमी श्री रणधीर सिंह पठानिया उनमें से एक हैं।

वह शीर्ष ख्याति के कलाकार होने पर भी बिल्कुल सादे हैं। कला जगत में उनकी भूमिका एक मील के पत्थर की तरह बनी रहेगी।

इस शोध के अंतर्गत मैंने श्री रणधीर सिंह पठानिया के महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला है। एक कलाकार के रूप में उनके अद्‌भुत व्यक्तित्व उनकी कलाकृतियों व उनकी स्थिति भावनाओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

इनका जीवन मार्गदर्शन है, जिनमें कुछ ना कुछ सीखने की प्रवृत्ति रहती है। इनके अनुसार एक कलाकार के लिए संवेदनशील होना बहुत आवश्यक है, जो दूसरों को देख कर दुखी हो और सुख में मुस्कुराए वही एक संपूर्ण कलाकार है।

उन्होंने कैनवस पर अपने मनोभावों को अभिव्यक्त किया है और न ही कभी बंधनों में बंद कर कार्य किया, बल्कि स्वतंत्र रूप से कार्य किया है।

इन्होंने लगभग सभी माध्यमों में कार्य किया है। जो इनकी अपनी शैलियां हैं। इनकी अधिकतर कलाकृतियों में गतिशील मानव आकृतियां होती हैं, जो किसी ना किसी खोज में रहती हैं।

रणधीर सिंह पठानिया एक मेहनती और लगनशील कलाकार हैं, जिन्होंने अपने कला जीवन में डट कर कार्य किया है और आज भी अपने कला पथ पर चलते जा रहे हैं। निस्वार्थ भाव से पेंटिंग करना इनका स्वभाव है।

श्री रणधीर सिंह पठानिया के कलाकार्य पर शोध कार्य कर के अंत में मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची हूं कि पठानिया ऐसे कलाकार हैं, जिन्होंने कला जगत में अपनी अलग पहचान बनाई। उनके कार्य करने का तरीका बहुत अनोखा है। इनके कार्य को देखकर पता चलता है कि यह स्वतंत्र होकर कार्य करना पसंद करते हैं। प्राकृतिक की गोद में रहकर कार्य करना उन्हें बेहद पसंद है।

कला के क्षेत्र में तथा अध्यापन के क्षेत्र में उनके अनुभव के कारण कला तथा प्रदर्शन के प्रति उनके विचार अत्यंत स्पष्ट हैं। उनके पास मार्गदर्शन के लिए आए छात्र सदैव ही उनसे लाभान्वित होते हैं। उन्होंने कई श्रृंखलाओं को आधार बनाकर काफी कार्य किया है तथा निरंतर इस प्रयास में है कि इसमें आगे और भी नवीनता लाई जा सके। उनकी अनेकों कला प्रदर्शनी या कला में सहभागिता रही हैं।

कला जगत में रहते हुए श्री रणधीर सिंह पठानिया ने इतना कार्य किया है और अभी भी कर रहे हैं कि भावी कलाकारों के लिए वह निश्चय ही मार्गदर्शन बनेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चतुर्वेदी, डॉ0. ममता। पाश्चात्य कला, जयपुर – राजस्थान : हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2009

2. शर्मा, लोकेश चन्द्र, भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास। कृष्णा ऐजुकेशन, पब्लिशर 1942

3. वर्मा डॉ0. अविनाश और वर्मा अमित, कला एंव तकनीक, 1998, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थं अकादमी, जयपुर।

4. वीरेश्वर प्रकाश, शर्मानुपूर, कला दर्शन, कृष्णा, ऐजुकेशन, पठिलशर – 2005.

5. साखलकर र.वि., आधुनिक चित्रकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, – 2009.

6. गोस्वामी डॉ. प्रमेचन्द, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तंभ, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर – 1995

7. सिंह डॉ0. राकेश कुमार, आधुनिक भारतीय चित्रकला का इतिहास, अनु बुक्स मेरठ, नवीन संस्कण – 2012.

8. कुमारी देवेन्द्री, भारतीय कला का इतिहास।

9. द्विवेदी डॉ0. प्रेमशंकर, भारतीय चित्रकला को बनाने की पद्वति, – 2007

10. वालावलकार मणिक, भारतीय चित्रकला की कहानी प्रथम सस्कण – 2007.

11. प्रदीप किरण, भारतीय कला, प्रथम संस्करण : 2007

12. प्रताप डॉ0. रीता, भारतीय चित्रकला का इतिहास छठा सस्करण – 2009.

13. साखलकर, र0 वि0 : कला कोश, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2016.

14. चतुर्वेदी, डॉ0. ममता, भारत की समकालीन भारतीय कला, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2016.

15. मागो, प्राण नाथ, भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्षय, इण्ड़ियाः नेशनल बुक ट्रस्ट, नेहरू भवन, 2006.

16. अग्रवाल, डॉ0. गिर्राज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, आगराः संजय पब्लिकेशन्स, 2006.

17. भारद्वाज, विनोद, बृद्व आधुनिक कला कोश, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन 2006.

18. विरजन, डॉ0. राम, समकालीन भारतीय कला, निर्मल बुक, 2003.

19. सिंह, डॉ0. राकेश कुमार, चित्रण के सिद्वांत, इलाहाबादः साहित्य संगम, 2015.

20. डॉ0. कादरी. भारतीय चित्रकला का इतिहास. बरेली : स्टडेन्ट स्टोर रामपुर बाग, 1986.

21. द्विवेदी, डॉ0. प्रेमशंकर. भारतीय चित्रकला के विविध आयाम. बी.एच.यू वाराणसीः कला प्रकाशन, 2007.

22. शर्मा, डॉ0. हरद्वारीलाल. कला–दर्शन. इलाहाबाद : साहित्य संगम, 2009.

23. गुप्त, डॉ0. जगदीश. प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला. दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1960.

24. गैरालो, वाचस्पति. भारतीय चित्रकला. इलाहाबाद : मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 1969.

25. https:// www.masterpiecemixers.com

26. https://www.granthaalayah.com/zenodo.org

चित्र सूची

क0 न0.	चित्र
1. चित्र संख्या	1
2. चित्र संख्या	2
3. चित्र संख्या	3
4. चित्र संख्या	4
5. चित्र संख्या	5
6. चित्र संख्या	6
7. चित्र संख्या	7
8. चित्र संख्या	8
9. चित्र संख्या	9
10. चित्र संख्या	10
11. चित्र संख्या	11
12. चित्र संख्या	12
13. चित्र संख्या	13

14. चित्र संख्या 14

15. चित्र संख्या 15

16. चित्र संख्या 16

17. चित्र संख्या 17

18. चित्र संख्या 18

19. चित्र संख्या 19

20. चित्र संख्या 20

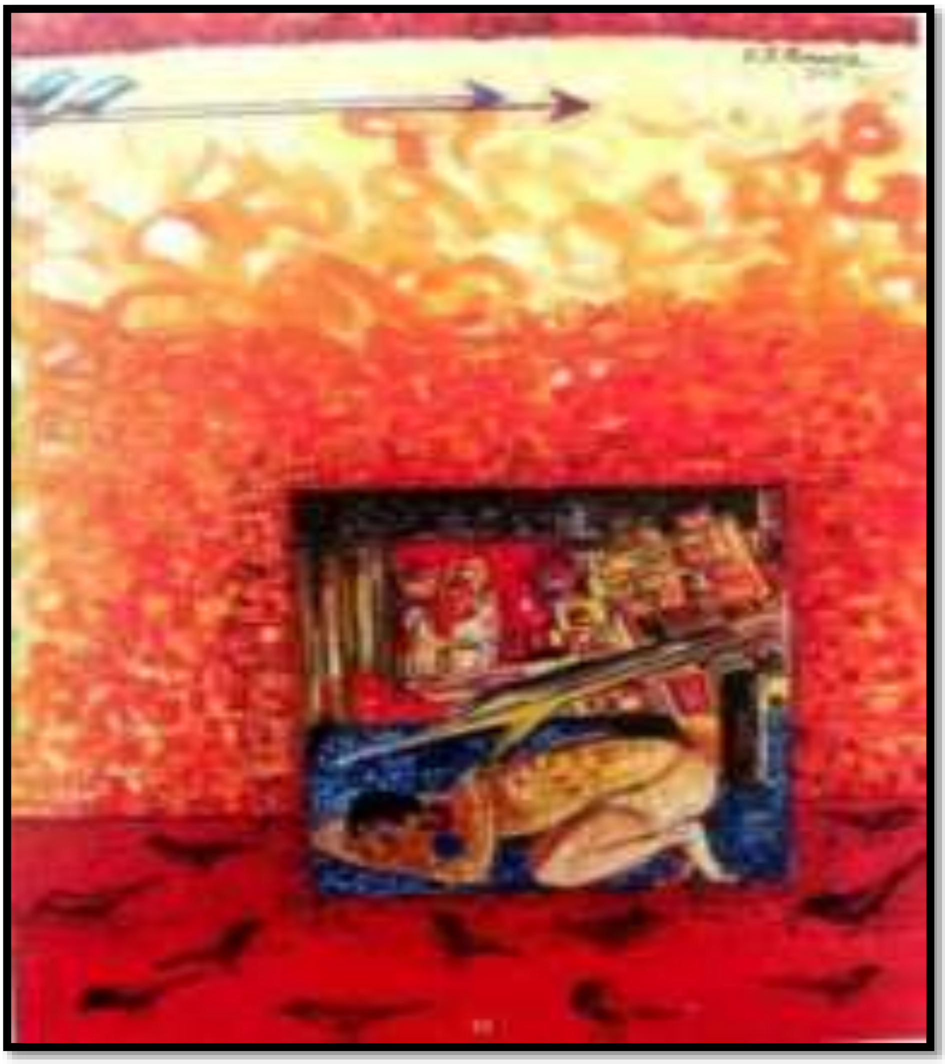

चित्र संख्या 01

चित्र संख्या 02

चित्र संख्या 03

चित्र संख्या 04

चित्र संख्या 05

चित्र संख्या 06

चित्र संख्या 07

चित्र संख्या 08

चित्र संख्या 09

चित्र संख्या 10

चित्र संख्या 11

चित्र संख्या 12

चित्र संख्या 13

चित्र संख्या 14

चित्र संख्या 15

चित्र संख्या 16

चित्र संख्या 17

चित्र संख्या 18

चित्र संख्या 19

चित्र संख्या 20

" भारतीय चित्रकार : प्रो. शारदा प्रसाद कुमार सिंह "

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु – शोध प्रबन्ध

विभागाध्यक्षा एवं निर्देशिका	शोधकर्त्री
श्रीमती संतोष	रीनू
ललित कला विभाग	स्नातकोत्तर
आर्य कन्या महाविद्यालय,	(अन्तिम वर्ष)
शाहाबाद (मा॰)	

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद मारकण्डा

2021–2022

प्रो. श्री शारदा प्रसाद कुमार सिंह

ललित कला विभाग,
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा.)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ललित कला स्नातकोत्तर, (ड्राईंग एण्ड पेंटिंग) द्वितीय वर्ष की छात्रा, रीतु ने " **भारतीय चित्रकार : एस. प्रणाम के. सिंह** " शीर्षक पर मेरे निर्देशन में प्रस्तुत लघु – शोध प्रबंध को पूरा किया है। इसने पूरी मेहनत और लगन से एकत्र शोध कार्य सम्पन्न किया है। इस महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य पहले नहीं किया गया है। इस प्रबंध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ।

मैं इसके उज्ज्वल भविष्य एवं सफल जीवन की कामना करती हूँ।

दिनांक:

एसो. प्रोफेसर
(श्रीमती संतोष)

प्रमाण पत्र

मैं रीनू , यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध " **भारतीय सिनेमा : एस. प्रसाद, बी. सिंह** " विषय मेरे स्वयं के प्रयास से किया गया है। अभी तक महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य नहीं किया गया है। मैंने इसे पूरी मेहनत और लगन से सम्पन्न किया है। यह अप्रकाशित कृति है। जो सामग्री प्रयोग की गई है उनको दिखाने का प्रयास किया गया है।

निर्देशिका — **शोधकर्त्री**

श्री मति संतोष — **रीनू**

आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा.)
कुरुक्षेत्र।

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि अनिता कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एण्ड पेंटिंग) द्वितीय वर्ष की छात्रा, ने " **भारतीय चित्रकार : एस. प्रणम बी. सिंह** " पर लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबंध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ। इसने पूरी मेहनत और लगन से यह लघु-शोध कार्य सम्पन्न किया है।

मैं इसके उज्ज्वल भविष्य एवं सफल जीवन की कामना करती हूँ।

दिनांक________

प्राचार्या

डॉ. श्रीमती सुनीता पाठक

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन

आभार

प्रथम अध्याय

– आधुनिक भारतीय चित्रकला 00 – 00

– कला और संस्कृति का संबंध

द्वितीय अध्याय :

– एस. प्रणाम के. सिंह का जीवन परिचय 00 – 00

तृतीय अध्याय

– एस. प्रणाम के. सिंह की कला यात्रा 00 – 00

चतुर्थ अध्याय

– एस. प्रणाम के. सिंह का आधुनिक भारतीय कला में योगदान 00 – 00

पंचम अध्याय :

– एस. प्रणाम के. सिंह से साक्षात्कार 00 – 00

– उपसंहार

– संदर्भ ग्रंथ सूची

– चित्र संग्रह सूची

– चित्र सूची

" प्राक्कथन"

सौंदर्य की अभिव्यक्ति द्वारा सुख प्रदान करने वाली वस्तु का नाम कला है। कला को सरल शब्दों में "सत्यम् शिवम् सुंदरम्" कहा गया है। सच्ची कला वह है जो आत्मा को परमात्मा में लीन करती है। कला कलाकार के भावों को व्यक्त करने का माध्यम है।

एस. प्रणाम के. सिंह ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनका जीवन पूर्णतया कला के लिए समर्पित है। वे जीवन के अस्तित्व का वर्णन तथा जीवन के प्रेम पूर्ण व्यवहार को अपनी कला में दिखाते हैं, जो हम सभी के जीवन के एक खास हिस्से को दर्शाती है।

प्रणाम सिंह कल्पनाशील एवं गंभीर स्वभाव के कलाकार हैं। मेरी प्रणाम सिंह जी से प्रथम मुलाकात फेसबुक पर कुछ महीने पहले ही हुई, तब से मैं निरंतर उनके संपर्क में हूँ तथा उनकी कला के हर पहलू से वाकिफ हूँ। उनकी कला ने मुझ पर बहुत प्रभाव डाला। मेरी इच्छा थी उनके व्यक्तित्व पर कुछ लिखने की, जो सौभाग्य से इस वर्ष पूरी हुई। उनकी कला को शब्दों में अंकित करना कोई आसान कार्य नहीं है फिर भी मेरा यह प्रयास है।

इस लघु शोध प्रबंध के लिए सामग्री एकत्रित करना, उसको नियोजित करना, मेरे लिए उत्साह का कार्य रहा है। मेरी प्रारंभिक कल्पना इन अध्यायों से सुदृढ़ हुई है, लेकिन साथ-साथ नए प्रश्न भी सामने आए हैं।

- **प्रथम अध्याय** में आधुनिक भारतीय चित्रकला एवं कला और संस्कृति का संबंध, का संक्षिप्त रूप से वर्णन करने का प्रयास किया गया है।
- **द्वितीय अध्याय** में एस. प्रणाम के. सिंह के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला है।
- **तृतीय अध्याय** में एस. प्रणाम के. सिंह की कला यात्रा का वर्णन किया गया है।
- **चतुर्थ अध्याय** में एस. प्रणाम के. सिंह का आधुनिक भारतीय कला में योगदान।
- **पंचम अध्याय** में एस. प्रणाम के. सिंह से साक्षात्कार को लिया गया है।

अंत में उपसंहार सूची और चित्र संग्रह सूची को प्रस्तुत किया गया है। इसमें लघु शोध प्रबंध के माध्यम से स्थापित की गई मौलिक मान्यताओं को प्रतिपादित किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र को सावधानीपूर्वक प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है, तो भी कुछ अशुद्धियाँ रह जाना स्वाभाविक है। आशा है कि विद्वान समीक्षक उन्हें अवगत कराने की कृपा करें। इस शोध पत्र में जो त्रुटियाँ रह गई हैं, उनके लिए दोषी मैं ही हूँ। अतः इसके लिए मैं विद्वान जनों से क्षमा प्रार्थी भी हूँ।

रेनू
शोधार्थी

आभार

मेरे इस लघु शोध कार्य को करने में जिन महानुभावों का सहयोग रहा है, उनके प्रति आभार व्यक्त किए बिना मेरे इस शोध कार्य का औचित्य संपूर्ण नहीं होगा। मैं उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझती हूं , जिनकी प्रेरणा, सहयोग और प्रोत्साहन से मैं इस कार्य को साकार कर पाई।

सर्वप्रथम मैं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अंतर्गत किसान आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहबाद मारकंडा के ललित कला विभाग की अध्यक्ष आदरणीय श्रीमती संतोष मैडम के प्रति आभार व्यक्त करती हूं , जिन्होंने पूरे शोध कार्य के दौरान मेरा मार्गदर्शन किया। श्री पवन कुमार, विभागाध्यक्ष, ललित कला विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र की धन्यवादी हूं कि इस विषय को सफलतापूर्वक चलाने में आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहबाद मारकंडा की सहायता की।

मैं आदरणीय कलाकार एवं उपक्रम डॉ. सिंह जी का भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय निकालकर अपने विचार साँझा किए तथा शोध की जिज्ञासा को, उत्साह बढ़ाया। इसके साथ साथ मैं अपने परिवार जनों का भी हृदय की गहराइयों से आभार प्रकट करती हूं क्योंकि उनकी सहयोग के कारण ही मैं इस शोध कार्य को संपूर्ण करने में सक्षम हो पाई।

मैं आदरणीय श्री महेश चौहान सर व आदरणीय सहायक प्रोफेसर श्रीमती किरण कौशिक मैडम के प्रति भी कृतज्ञ हूं जिन्होंने इस कार्य के दौरान मेरी शंकाओं और समस्याओं का निदान किया। तथा निरंतर प्रोत्साहित करते रहे।

मैं अपने मित्रों तथा सहपाठियों की भी हृदय से भी आभारी हूं।

अंत में, मैं प्राचार्य महोदया आदरणीय डॉ सुनीता पाहुजा मैडम जी का भी आभार प्रकट करती हूं जो ललित कला विषय को सुचारू रूप से चलाने में ललित कला विभाग का सहयोग कर रही हैं। मैं अपने सभी गुरुजनों के प्रति श्रद्धा भाव प्रस्तुत करती हूं। इन्हीं की प्रेरणा व निर्देशन से यह शोध कार्य संपन्न हो सका। यदि इस लघु शोध प्रबंध से पाठक वर्ग का कुछ भी लाभ हुआ तो मैं इसे अपना सफल प्रयास मानूंगी।

रेनू
शोधकर्त्री

प्रथम अध्याय

आधुनिक भारतीय चित्रकला

कला और संस्कृति का संबंध

आधुनिक भारतीय चित्रकला

(19वीं सदी से 20 वीं सदी तक)

आज की वर्तमान प्रचलित कला को आधुनिक कला कहा जाता है, जो आजकल समाज में चल रही है। प्राचीन कलाओं का अनुकरण आधुनिक कला नहीं कहा जाएगा। आधुनिक कला उसे कहा जाएगा जो पुरानी परिपाटी से भिन्न नए स्वरूप, नई मान्यताओं और भाव पर आधारित है। इस कला का अध्ययन करते समय 'आधुनिक शब्द' को केवल काल निर्देशक मानना अनुचित होगा। इसमें कलाकार नए अविष्कार तभी करता है जब उसे पुरानी परंपरागत कला में किसी तरह की कोई कमी महसूस होती है। वस्तुनिरपेक्ष, सौंदर्य, आत्मिक अनुभूति, और यथार्थवाद, कल्पना आदि कलागत सृजनशीलता तत्वों का स्पष्ट व विशुद्ध रूप आधुनिक काल की जिन कला शैलियों में दृष्टिगोचर हो गया है, उन सभी कला शैलियों को आधुनिक कला में सम्मिलित करते हैं।[1] इसलिए कहा जाता है कि "आवश्यकता अविष्कार की जननी है"। जहां संतोष होगा, वहां अविष्कार संभव नहीं है। आधुनिक कला का अध्ययन करते समय हम देखेंगे कि उपर्युक्त कलाओं से आधुनिक कलाकारों को अपरिमित प्रेरणा मिलती है। कलाकार की व्यक्तिगत भावनाओं की अभिव्यक्ति आधुनिक कला का प्रमुख उद्देश्य नहीं होता, जबकि वे कलाएं प्रमुख उद्देश्य से प्रेरित होती है। आधुनिक कला का संबोधन 20वीं शताब्दी में हुए कला आंदोलनों के लिए प्रस्तुत किया गया था, जिसमें उत्तर प्रभाववाद, फाववाद, घनवाद, अभिव्यंजनावाद, अतियथार्थवाद तथा अमूर्त कला के अधिक विकास प्रमुख है।[2]

19वीं सदी का प्रारंभ :-

भारतीय चित्रकारों में स्वतंत्र होने की छटपटाहट शुरू हो गई। आधुनिक कला न तो अपने किसी संरक्षक या प्रभु को प्रसन्न करने के लिए और न ही उसे किसी के दबाव से बनवाया जाता था। उसमें कलाकार की स्वतंत्रता प्रमुख थी। आधुनिक कलाकार अब एक ऐसी मंजिल की ओर कदम बढ़ा रहे थे, जहां आकर कला वस्तु सृष्टि के दृष्टि रूप से मुक्त हो जाती है तथा वस्तु सादृश्य का उद्देश्य समाप्त हो जाता है। अतः भारत चित्रकला जो सदियों से राजा–महाराजाओं, जमींदारों एवं धनी–मानी लोगों की इच्छा के अनुरूप बन रहा था, आधुनिक कला में अपने स्वतंत्र अस्तित्व की राह खुला देख कर उस ओर आकर्षित हुआ।

भारतीय चित्रकार भी यहां के जन–जन की जीवन पद्धति, सामाजिक, संदर्भों, हर्ष विषाद और पीड़ा को अपने कैनवास पर स्वतंत्र अभिव्यक्त करने लगा।

भारत पर यूरोपीय कला का प्रभाव :-

ब्रिटिश राज्य की स्थापना से पूर्व से ही पतन आरंभ हो गया था। भारत आकर भी अंग्रेजों ने यह प्रयास किया कि पाश्चात्य सभ्यता को भारतीय लोग अपनाएं तथा उसका रंग भी प्रभाव काफी हद तक सफल हुआ।[3] भारतीय कला तथा संस्कृति ने जिस कला क्षेत्र पर अपनी अलग पहचान बनाई।

---

1 र.वि. साखलकर, आधुनिक चित्रकला का इतिहास, भारत (राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी संस्करण 2006), 2.
2 डॉ. राकेश कुमार सिंह, आधुनिक भारतीय चित्रकला का इतिहास, भारत : (अनु बुक्स मेरठ संस्करण 2012), 1
3 डॉ. राकेश कुमार सिंह, आधुनिक भारतीय चित्रकला का इतिहास, भारत : (अनु बुक्स मेरठ संस्करण 2012), 1

भारतीय चित्रकला के इतिहास में आधुनिक शब्द का प्रयोग लगभग 1880 ई. की कला तथा राजा रवि वर्मा की निराली चित्र शैली के लिए आविष्कार किया जाने लगा था। राजा रवि वर्मा भारतीय धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक कथाओं पर चित्र बनाए। उन्होंने अपने अपने चित्रों से भारतीयों को बहुत प्रभावित किया। प्राचीन भारत में यूरोपीय कला का इस समय आत्यंतिक प्रभाव था। उस समय कई चित्रकार उसी पद्धति का सम्मिश्रण करके भारतीय चित्रकला के क्षेत्र में नवीन जागरण का सूत्रपात किया। रवि वर्मा पाश्चात्य पद्धति में भारतीय विषय चित्रित करने वाले प्रथम चित्रकार थे।

रामचन्द्र राव के अनुसार "रवि वर्मा" सर्वश्रेष्ठ कलाकार थे। तत्कालीन राजा महाराजाओं तथा उच्च पदस्थ ब्रिटिश शासकों के रवि वर्मा द्वारा बनाए गये। साड़ियों, दरबारी दृश्य, नारी सौंदर्य दर्शाने वाले चित्रों को खूब सराहा गया तथा रवि वर्मा ने भी उनके द्वारा दिए गए निमंत्रण को स्वीकारते हुए एक से बढ़कर एक सुंदर व्यक्ति तथा उनकी आकृतियों को बनाया।[8]

इन्होंने अलगरी नायडू तथा थियोडोर जेन्सन के सानिध्य में रहकर यूरोपीय शैली के तैल चित्रों का विशेष अध्ययन व अभ्यास किया। तैल रंगों के माध्यम से रवि वर्मा ने प्रमुख अंग्रेज अधिकारियों तथा उदयपुर के महाराजाओं के व्यक्ति चित्र बनाए। भारतवर्ष के वे पहले चित्रकार थे, जिन्होंने तैल चित्रों के माध्यम से अंकन प्रस्तुत किया। रवि वर्मा ने अपनी आकृतियों में नवीन शक्तियाँ, नाटकीय मुद्राओं एवं भावभंगिमाओं का विशेष ध्यान रखा। उस समालोचकों ने उनकी शैलीगत की विशेषताओं को देखते हुए उन्हें 'विक्टोरियन इंडियन' कहा है।[9]

रवि वर्मा के चित्र मुख्यतः उन कृतियों के अनुकरण ही बनाये गए हैं। भारतीय पौराणिक कथाओं एवं उनके रोचक प्रसंगों को उन्होंने तैल पद्धति में कुशलता से प्रायः प्रकाश दर्शाते हुए चित्रित किया, जिसको आत्यंतिक पसंद किया गया। किंतु दूसरी तरफ जनता पाश्चात्य रंग में रंगती जा रही थी, जिससे भारतीय कला को भारी आघात पहुँच रहा था। ऐसे वातावरण में टैगोर परिवार ने कला और साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति की आत्मा को पुनर्जागृति प्रदान की।

इस परिवार के लगभग प्रत्येक सदस्य ने कला के क्षेत्र में अपना विशेष योगदान दिया। इस परिवार के एक प्रमुख सदस्य अवनीन्द्र नाथ टैगोर ने अपनी साधना साधना के बल पर जिस शैली का विकास किया, वही शैली आगे चलकर 'बंगाल शैली' की नींव बनी।

इस समय जापानी एवं चीनी प्रभाव युक्त भारतीय विषयों को लेकर चित्रांकन किया गया। इस समय के कुछ चित्रकारों ने पौराणिक विषयों या राजा महाराजाओं के चित्र बनाए, तो कुछ कल्पना, काव्य आदि की प्रतिकृतियाँ बनाते थे। ई.बी. हैवल ने 'इंडियन स्कल्पचर एवं पेंटिंग' में तत्कालीन उपलब्धियों के बारे में लिखा है। यद्यपि नई शैली के चित्रकारों को प्राचीन भारतीय चित्रकारों की अद्भुत शैली प्राप्त करने में अभी तक सफलता नहीं मिली है, लेकिन फिर भी भारतीय कला भावना का विकास ही पुनर्जन्म हुआ है और इसने अपने कलाकृति को सादे कार्य की श्रेष्ठता से भर दिया है, जो इसकी अपनी विशिष्टता है।

8 डॉ. राकेश कुमार सिंह, आधुनिक भारतीय चित्रकला का इतिहास, भारत : (अनु बुक्स मेरठ संस्करण 2012), पृ.
9 डॉ. राकेश कुमार सिंह, आधुनिक भारतीय चित्रकला का इतिहास, भारत : (अनु बुक्स मेरठ संस्करण 2012), पृ. 3

बंगाल शैली का चित्र जल रंगों द्वारा पारदर्शी वाश एवं अपारदर्शी इन दोनों तकनीकों में बनाए गए हैं। वाश तकनीक में जापानी, चीनी तथा भारतीय एवं पाश्चात्य इन को आधार बनाया गया है। इसमें चित्र को रेखांकित करने के उपरांत चित्र को पानी में भिगोकर निकाला जाता है और फिर अलग–अलग भागों में रंग भर कर उन्हें पानी में धोया जाता है, जिससे आवश्यक रंग कागज पर लगा रहता है और उसमें एक आकर्षक पारदर्शिता नजर आती है। आवश्यकतानुसार कलाकार उसमें रेखांकन भी करता है। इसके अतिरिक्त बंगाल स्कूल के प्रसिद्ध चित्रकार नंदलाल बसु ने टेम्परा तकनीक को विकसित किया।

अवनीन्द्र नाथ एवं ई.बी. हैवेल ने मिलकर भारतीय कला के उत्थान के लिए देश की प्राचीन चित्रकला को आधार मानकर आगे बढ़ने का प्रयास किया। अवनीन्द्र नाथ ने भारतीय कला को एक नवीन मार्ग प्रशस्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने भारतीय कला आदर्शों को जीवित रखते हुए, यूरोपीय तकनीक व सिद्धांतों का समावेश कर चित्राभिव्यक्ति की। अवनीन्द्र नाथ के शिष्यों ने भी इसी प्रकार से नवीन प्रयोग किए। आनंद कुमार स्वामी ने अवनीन्द्र नाथ तथा उनके शिष्यों के कार्यों की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि इन कलाकारों ने भारतीय कलात्मकता को पुनर्जीवित किया है, साथ ही सभी चित्रकारों ने स्वयं की मौलिक शैली में कला सृजन करने का प्रयास किया है।

आनंद कुमार स्वामी ने भारतीय कला की खोज और विकास का महान कार्य अपने हाथ में लिया। सन १९१३ में प्रकाशित अपनी पुस्तक "कला और स्वदेशी" में कला विद्यालय से संबंधित आशय में उन्होंने लिखा, जो तत्कालीन कला आंदोलन के घोषणापत्र के रूप में स्वीकार किया गया। उन्होंने लिखा भारत में कला विद्यालयों का सच्चा कार्य यूरोपियन तकनीकों एवं आदर्शों का समावेश और प्रचार करना नहीं है, अपितु भारतीय परंपरा के टूटे हुए संपर्क सूत्रों को पुनःजोड़ना तथा उन्हें शक्तिशाली बनाना है। राष्ट्रीय संस्कृति के अभिन्न अंग के रूप में भारतीय कला के विकास को पूर्ण करना है तथा भारतीय शिल्पियों को जनता के जीवन तथा शिल्प के अनुरूप ढालना है। सन १९०७ में कलकत्ता में 'इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट' की स्थापना हुई। इसमें भी भारतीयता के पक्षधरों ने भारतीय कला परंपरा को पुष्ट करने तथा कला के विकास का बीड़ा उठाया।[६]

आधुनिक भारतीय चित्रकला के प्रणेताओं में फ्रांसिस न्यूटन सूज़ा, के. एच. आरा, मकबूल फिदा हुसैन, बाकरे और एस. एच. रज़ा के नाम विशेष रूप से लिए जा सकते हैं जिन्होंने १९४७ में 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप' नामक संस्था का गठन किया गया और भारतीय कला के आत्म तत्वों को उजागर करके कला में आधुनिकता की महत्वपूर्ण शुरुआत की।[७] ई.बी. हैवेल कोलकाता कला विद्यालय में जब निर्देशक बनकर आए तो उस समय स्कूल में पाश्चात्य पद्धति से शिक्षा कार्य होता था, जिसके अंतर्गत छात्रों को विदेशी कलाकारों की कलाकृतियों की नकल कराई जाती थी। इसी पद्धति को बदलकर हैवेल ने छात्रों से भारतीय परंपरागत शैली का अनुकरण कराया।

---

६ डॉ. हेमचन्द्र गोस्वामी, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, भारत (राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर) संस्करण 2007), ४

७ डॉ. हेमचन्द्र गोस्वामी, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, भारत (राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर) संस्करण 2007), ४

इस संबंध में आर्चर तथा कुमारस्वामी आनंद का मानना है कि हैवेल ने ब्रिटिश कला पद्धति को हटाकर जो भारतीय पारंपरिक कला उनकी पूर्व शैली के आधार पर कला शिक्षण आरंभ करवाया, जो भारतीयों को कला माध्यम से प्रभावित करने हेतु प्रारंभ किया। अवनीन्द्र नाथ के अतिरिक्त उस परिवार के अन्य सदस्य गगनेन्द्र नाथ का कला के क्षेत्र में योगदान सराहनीय है। उनकी प्रतिभा सर्वोत्तम मौलिक थी, जिसने भारतीय कला को एक नई दिशा तथा एक नई पहचान दी।

गगनेन्द्रनाथ ने स्वयं को बंगाल शैली से अलग रखकर घनवादी आकारों को ग्रहण किया। उनका प्रयोग घनवादी को भारतीय स्वरूप में ढालना था। गगनेन्द्रनाथ ने अनेकों प्रयोगवादी चित्रों का निर्माण किया कि वे अभिव्यक्ति के नए-नए माध्यमों की तलाश करते थे। इस तरह ही वे पहले ऐसे चित्रकार थे जिन्होंने अपने चित्रों में अमूर्त तत्वों को उभार दिया तथा अमूर्त कला की इस नवाभ्युदयी इतिहास में नींव का पहला पत्थर रखा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जहाँ एक और कलाकार 'पश्चिम तकनीक' में कार्य कर रहे थे वहीं दूसरी और समाज में एक वर्ग ऐसा भी था जो यामिनी राय तथा अमृता शेरगिल से भी प्रभावित था। यामिनी राय ने बंगाल की लोक कला को आधार बनाकर धार्मिक, पौराणिक विषयों को लेकर चित्र बनाए।

इसके अतिरिक्त यामिनी ने सामान्य जन जीवन से संबंधित चित्रों में गांव के किसान, मछुआरा, पुजारिन स्त्री, बहू, भिखारी, नर्तक, तुलसी पूजन आदि विषयों को चित्रांकन किया। यामिनी की कला पर किसी भी विदेशी शैली का प्रभाव नहीं है। जब उन्होंने पहली बार अपने इस विकसित शैली का चित्र 'मदर एंड चाइल्ड' कलकत्ता की 'इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट' द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में रखा तो उसने गगनेन्द्रनाथ ठाकुर जो स्वयं आधुनिक (घनवादी) चित्रकार थे और चित्रकला में खुल करने के पक्षधर थे, का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने इस चित्र को वहीं पर खरीद कर यामिनी राय की इस नई शैली को सम्मान प्रदान किया।[7]

भारत में अन्य महानगर जैसे दिल्ली, मुंबई, कोलकाता आदि कला के संरक्षण करने लगे। जैसे मुंबई में 'जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट' के बनने से विभिन्न स्थानों से कलाकार यहां आकर शिक्षा लेने लगे। इस स्कूल से कलाकारों को एक लाभ यह भी हुआ कि अन्य कलाकारों का समूह 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप' सामने आया। तब 1949 में 'दिल्ली ग्रुप' नामक एक अन्य ग्रुप की स्थापना हुई।[8]

---

7 डॉ. राकेश कुमार सिंह, आधुनिक भारतीय चित्रकला का इतिहास, पटना : (सन् कुमार पैरा संस्करण 2012), पृ. 5.
8 डॉ. राकेश कुमार सिंह, आधुनिक भारतीय चित्रकला का इतिहास, पटना : (सन् कुमार पैरा संस्करण 2012), 12.

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात – आधुनिक चित्रकला का विकास

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में पाश्चात्य कला तथा वहां की तकनीकों का प्रचार प्रसार तेजी से हो रहा था। आधुनिक चित्रकला में रवीन्द्र नाथ टैगोर का नाम प्रमुख है, जिन्होंने विदेशी तकनीकों को अपनाकर अपनी कृतियों में नये प्रयोग किये तथा कला जगत में हलचल पैदा की। इसलिए उन्हें आधुनिक भारतीय चित्रकला का प्रथम चित्रकार कहा जाता है।

इसी शृंखला को आगे बढ़ाते हुए गगनेन्द्रनाथ ने भी अन्य देशों की कला से प्रेरणा लेकर क्यूबिज्म शैली में चित्र रचना की। रवीन्द्र नाथ टैगोर, गगनेन्द्रनाथ टैगोर, अमृता शेरगिल तथा यामिनी राय इन चार कलाकारों ने भारतीय कला की परंपरा का आधुनिक परिवर्तन किया। इन कलाकारों के कार्यों से अन्य चित्रकार भी प्रभावित हुए। फिर प्राय: तीस वर्षों में बड़े आकारों में बने। पाश्चात्य देशों में प्रयोगों में आ रही नई नई शैलियों, नई नई तकनीक का प्रयोग भारतीय कलाकार भी करने लगे।

चित्रकारों ने 'ब्यूटम रियलिटी' की भावना को त्याग कर स्वतंत्र सुझाव की भावना पर ज्यादा ध्यान दिया।

प्रसिद्ध कला समीक्षक विनोद मेहता के अनुसार "चित्र इलस्ट्रेशन" नहीं है। कलाकारों की अपनी एक निश्चित कला को यथार्थ के साथ जोड़ना एक समस्या है। इसलिए कलाकार अपने भावों को व्यक्त करने के लिए यथार्थ से प्रेरणा लेकर अपने भावों" को स्पष्ट रूप या प्रतीकात्मक रूप में अंकित करने लगा।

प्रसिद्ध चित्रकार रामकुमार के अनुसार "दर्शक के सामने सब कुछ यथार्थवादी ढंग से रख देना कला का उद्देश्य नहीं जान पड़ता"। दर्शक की दृष्टि जिन आकृतियों से परिचित है, उन्हीं पर उसे ले जाना आवश्यक है। जहां वह देखी हुई आकृतियों से कुछ उभार पढ़ सके।

भारत के विभिन्न शहरों के अतिरिक्त दिल्ली में भी सन 1954 में ललित कला अकादमी तथा 'नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट' की स्थापना हुई। भारत में जगह–जगह प्रदर्शनी का आयोजन किया जाने लगा।

ललित कला की स्थापना के बाद कलाकारों को प्रोत्साहित किया जाने लगा तथा समय-समय पर विभिन्न प्रदर्शनी का आयोजन किया जाने लगा। नए–नए प्रयोगों के आधार पर आधुनिक भारतीय कला, कला जगत में एक ऐसा मौलिक स्वरूप बनाए हुये है, जो कलाकारों एवं कला प्रेमियों को अपने नाना रूपों में लाभान्वित करने, राष्ट्र को एक नई दिशा देने तथा विश्व शांति स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

कला और संस्कृति का संबंध

कला शब्द की उत्पत्ति :

'कला' शब्द को व्यावहारिक रूप से उन कलाओं से संबंधित माना जाता है जिनको 'दार्शनिक' या 'व्यवहारिक' कलाओं के नाम से संबोधित किया जाता है। परंतु साहित्य या काव्य तथा संगीत कलाओं को भी कला के अंतर्गत ही रखना उचित होगा, क्योंकि कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो प्रत्येक कला में सामान्य रूप से विद्यमान रहती हैं। अतः प्रत्येक कला की साधारण एवं सामान्य विशेषताओं के आधार पर कला की परिभाषा करना उचित होगा।

'कला' शब्द की परिभाषा :

'कला' शब्द का अर्थ जानना भी अति आवश्यक है। 'कला' शब्द का भारतीय भाषाओं में प्राचीन काल से प्रयोग प्रचलित है, परंतु इसी अर्थ में प्रयुक्त होने वाला एक अन्य शब्द जो अंग्रेजी भाषा में 'कला' शब्द का पर्यायवाची 'आर्ट' शब्द है जो पर्याप्तप्राचीन है। अंग्रेजी भाषा में 'आर्ट' शब्द का प्रयोग तेरहवीं शताब्दी से प्रचलित हुआ है।

संस्कृत भाषा में 'कला' का अर्थ :

'कल' धातु से 'कला' शब्द की उत्पत्ति मानी जाती है। संस्कृत भाषा में 'कला' शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया गया है, किंतु इसमें सबसे अधिक व्यावहारिक अर्थ है– किसी भी कार्य को पूर्ण कुशलता या निपुणता से संपन्न करना।

भारतीय कला की प्राचीनता :

भारतीय कला का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। प्रागैतिहासिक काल में मानव ने जंगली जानवरों जैसे– वनमानुष, भालू, हाथी, आदि के चित्र बनाना सीख लिया था।

महाराष्ट्र में स्थित गुफाएं :

कुछ गुफाओं में प्रागैतिहासिक काल के चित्र बनाता था, जिसका वह शिकार करता था। अनेक स्थानों पर मानव की कला के प्रमाण पत्र प्राप्त हुए हैं, इससे पता चलता है कि भारतीय कला आदिकालीन है। कला और संस्कृति हमें एकजुट करती है। हमारा देश भारत एक अनूठी सांस्कृतिक कला और परंपराओं का देश है। यह कला और संस्कृति प्राचीन काल से हमारी परंपरा रही है, जो आजतक प्रचलन में है। दुनिया के अन्य देशों से आने वाले पर्यटक हमारी कला और संस्कृति को

देखकर बहुत ही मोहित होते हैं। हम भारतीय सभी अनेकों त्योहारों और कलाओं को एकजुट होकर मनाते हैं। भारत की कला और संस्कृति ही हमें विभिन्न धर्मों के लोगों को आपस में जोड़ रखती है। जैसे कि हम सब ने बगीचे में तरह–तरह के फूलों को अवश्य ही देखा होगा, हर किसी की अपनी एक अलग सुंदरता, पहचान और एक अलग प्रकार की खुशबू होती है, पर वे सभी फूल एक साथ, एक बगीचे में अपनी सुंदरता और महक को भरते और बिखेरते हैं। उसी प्रकार हमारा देश भारत भी अनेक विभिन्नताओं वाला देश है, जहां विभिन्न संस्कृति और कलाएं एक साथ रहती हैं। लोग अपने–अपने कला और संस्कृति के साथ आपस में एकजुटता से मिलजुल कर रहते हैं। सभी मिलकर अपनी संस्कृति और परंपरा की सुंदरता को पूरी दुनिया भर में फैला रहे हैं।

कला का अर्थ :–

किसी भी प्राचीन तस्वीर, पेंटिंग इत्यादि हमें उसके अतीत के बारे में जानकारी देती है। ऐसी चीजें हमें अनेक विचारों और जीवन जीने के तरीकों को एक कला के रूप में परिभाषित करती हैं। पृथ्वी पर कई जीव रहते हैं। लेकिन उनमें से मनुष्य ही केवल अपने विचारों और अभिव्यक्तियों को व्यक्त करने की क्षमता रखता है। मनुष्य के जीवन में हर किसी चीज में कला जुड़ी हुई है। कला एक ऐसी चीज है, जो प्राचीन काल के लोगों की कल्पना शक्ति और उनकी रचनात्मकता को दर्शाती है। यह सब केवल उस कला से संबंधित है, जो हमें अपने अतीत के लोगों से जोड़ती है।

संस्कृति और परंपराएं :–

हमारे देश की संस्कृति मुख्य रूप से हमारे जीवन जीने के तरीकों को दर्शाती है। यह हमारी रीति–रिवाजों, विचारों, धर्म, मान्यताओं, नीतियों इत्यादि के बारे में बताता है, जिसका अनुसरण लोग अपने जीवन जीने के तरीकों में उपयोग करते हैं। बिना कला के संस्कृति को प्रकट नहीं किया जा सकता है। कला एक जादू की तरह है जो विभिन्न धर्मों और उनकी संस्कृतियों के बीच अंतर करने में हमारी मदद करता है। संस्कृति लोगों के भोजन, कपड़े, भाषा, त्योहार और उनके धर्मों को अलग–अलग रूप से प्रदर्शित करता है। इस तरह से प्रत्येक धर्म एक विशिष्ट संस्कृति और परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है।

निष्कर्ष :–

भारत एक आध्यात्मिक भूमि है। जहां भगवान राम और कृष्ण जैसे विभिन्न देवताओं ने जन्म लिया है। इस देश ने कुछ विशिष्ट संत और नेताओं को भी जन्म दिया है। हमारे द्वारा आज तक सभी संस्कृति और परंपराओं का पालन किया जा रहा है। हम सभी बहुत धन्य हैं जो हमने ऐसी महान भूमि पर जन्म लिया है, जो उस पुरानी कला और संस्कृति का पालन करवाता आ रहा है, जो कभी प्राचीन भारत का हिस्सा था।

द्वितीय अध्याय

एस. प्रसाद. के. सिंह का जीवन परिचय

जीवन परिचय

वर्तमान भारतीय चित्रकला में एस. प्रणाम. आर. सिंह एक ऐसे चित्रकार हैं, जिनका जीवन पूर्णतः कला के लिए समर्पित है। इनकी कृतियों में अभिनव तथा स्नेह पूर्ण व्यवहार झलकता है, जो हम सभी के जीवन के एकदम पहलुओं को दर्शाती है। एस. प्रणाम सिंह काफी गंभीर स्वभाव के कलाकार हैं। वे अपने कार्य में पूर्णतया करने का प्रयास कर रहे हैं। वे एक उत्कृष्ट चित्रकार हैं जो अपनी प्रतिभा और सृजनात्मकता के आधार पर प्रसिद्ध होते जा रहे हैं।

यद्यपि कम ही वे समाज में आदर्श कलाकार के रूप में सम्मान पाते जा रहे हैं। एस. प्रणाम सिंह एक ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने कला जगत में अपनी पहचान बनाने के लिए दिन–रात बहुत परिश्रम किया है। वे बिस्तर से उठते ही चित्रण करते रहते हैं। इतना सम्मान किसी मामूली इंसान को तो मिल नहीं सकता। वह अभी भी अपने आपको एक छोटा कलाकार ही मानते हैं। इनमें किसी भी प्रकार का कोई भी घमंड नहीं है।

वे सभी उभरते नए कलाकारों को एक समान समझकर उनके साथ बात किया करते रहते हैं। अतः उनके बारे में जितना लिखा जाए उतना कम ही होगा। वर्तमान के चित्रकार जिनमें नाम तथा पैसे की होड़ लगी हुई है, वे इन सब से दूर हैं। वर्तमान समय में चित्रण केवल आनंद के लिए

नहीं बल्कि पैसों के लिए हो रहा है। लेकिन एस. प्रणाम सिंह एक ऐसे चित्रकार हैं जो आनंद एवं संतुष्टि के लिए चित्रण करते हैं। इनकी कठोर कला साधना के परिणाम स्वरूप वे एक सक्षम कलाकार के रूप में उभर कर सामने आए हैं। एस. प्रणाम सिंह की कला इस संसार में मील का पत्थर बनी रहेगी।

एस. प्रणाम के सिंह का जन्म 1944 को नरसिंहपुर, इलाहाबाद में एक कायस्थ वर्ग के परिवार में हुआ। इनके पिता स्कूल में अध्यापक थे व माता एक गृहणी थी। इनकी पैतृक जन्मभूमि नरसिंहपुर है। वे तीन भाई बहन थे तथा दोनों भाई बहनों में से सबसे छोटे हैं।

एस. प्रणाम सिंह की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई क्योंकि इनके पिताजी अध्यापक थे। इन्हें स्कूल समय से ही कला में रुचि थी। इंटर की शिक्षा पूरी होते ही इन्होंने इलाहाबाद में आर्ट कॉलेज था, जहाँ से इन्होंने तीन चार महीने की शिक्षा प्राप्त की। जिस की फीस 20रु. थी। इनका एक मित्र था जो सिटेल में काम करता था, तब इनके मन में भी आया कि मैं भी सिटेल में जाऊं। क्योंकि सिटेल में कला को अधिक महत्व दिया जाता है। इनके मित्र का सोचना था कि यह डॉक्टर बने या फिर इंजीनियर, जिस कारण से इसने स्कूल की शिक्षा ग्रहण की। परंतु इनका तो सोचा पेंटिंग में ही था, जिस कारण से इन्होंने कला की शिक्षा जारी रखी।

इनके एक और मित्र थे। उनसे इन्होंने कलकत्ता की भी आर्ट कॉलेज की फीस जाननी चाही। तब उन्होंने बताया कि एक 1 महीने की कुल 20रु. फीस होगी। तब इन्होंने अपने घर में बताया मेरी फीस 20रु. होगी। मैं 20रु. में काम चला लूंगा। इनके बड़े भाई थे, उनके पास भी उस समय कोई नौकरी नहीं थी और इनके घर में केवल इनके पिताजी ही अकेले कमाने वाले।

वे कायस्थ वर्ग से संबंध रखते थे, जिसमें 5 सदस्य थे। डिप्लोमा कोर्स जो तीन चार महीने का था, उसके खत्म होते ही वे कॉलेज में दाखिला लेना चाहते थे, जो कि 5 साल का अंतराल था।

नरसिंहपुर इलाहाबाद में तीन चार महीने की शिक्षा के बाद 1962 में वे कोलकाता आ गए, आगे की शिक्षा को जारी रखने के लिए। इनकी आयु 20 वर्ष से चार-पांच महीने ज्यादा हो गई थी, जिस कारण से इनको गवर्नमेंट कॉलेज आर्ट एंड क्राफ्ट में पेंटिंग कोलकाता के कॉलेज में दाखिला नहीं मिल पा रहा था, परंतु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और कोशिश करते रहे। कहते हैं ना कि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती, वे कोशिश करते रहे और दाखिला हो गया कोलकाता के आर्ट कॉलेज में।

5 साल का कोर्स था जिसमें 2 साल का फाउंडेशन कोर्स हुआ करता था (ड्राइंग एंड पेंटिंग डिप्लोमा)। इस डिप्लोमा में प्रवेश लेने के पश्चात कला में उनकी रुचि दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी। इसके साथ-साथ उन्होंने व्यक्तिचित्र बनाना आरंभ कर दिया। पहले तो वे स्कूल समय में कॉपियों की कॉपी किया करते थे, परंतु समय के साथ-साथ वे प्राकृतिक दृश्यों और पोर्ट्रेट पर जोर देने लगे।

प्रकृति की गोद में रहकर काम करना इनको अच्छा लगता था क्योंकि वे पहाड़ी क्षेत्र के रहने वाले थे। वे देर रात तक काम करते रहते थे। वहां पर वह मानव आकृतियों का प्राकृतिक दृश्यों का रेखांकन करते थे। उन्होंने सार्वजनिक स्थानों पर जाकर वहां के दृश्यों का रेखांकन किया।

जब वे सेकंड ईयर में हुए, तब इनके पिताजी का देहांत हो गया। तब घर की स्थिति ऐसी थी कि वे अपनी कला की शिक्षा को आगे जारी नहीं रख सकते थे, क्योंकि इनके घर में इनके पिता ही अकेले कमाने वाले व्यक्ति थे। पूरे परिवार का खर्चा वही उठाते थे। तब इनको लगा कि मेरी कला की शिक्षा बस यहीं तक ही थी, परंतु इनके बड़े भाई ने बोला कि नहीं तुम अपनी पढ़ाई जारी रखो। अपना 5 साल का कोर्स पूरा करो।

उस समय अगर इनके बड़े भाई इन्हें सहारा या प्रोत्साहन न करते तो आज वे इस मुकाम पर नहीं पहुंच पाते। परंतु इनके भाई इनकी हिम्मत बने और इन्हें सहायता दी, सहारा बने, इनका मार्गदर्शन किया। इनकी पत्नी भी उस समय पढ़ रही थी और उन्होंने भी इनकी बहुत सहायता की।

उसी समय इनकी कला गुरु के माध्यम से नामी कलाकार बिकाश भट्टाचार्य से मुलाकात हुई। जो यथार्थवादी चित्रकार थे। बिकाश भट्टाचार्य ने इनके कार्य की बहुत प्रशंसा की तथा उनका मार्गदर्शन भी किया। उन्होंने एस. प्रणाम सिंह को कला की शिक्षा ग्रहण करने की सलाह दी। भट्टाचार्य जी की कला ने इनके ऊपर गहरा प्रभाव डाला। तब से वे भी यथार्थवादी कला पर जोर देने लगे।

यहाँ से इन्होंने कला के क्षेत्र में कदम रखा। बिकाश भट्टाचार्य के. जी. सुब्रमण्यन की कार्यशैली इन्हें बहुत पसंद थी। वे बहुत ही जागरूक कलाकार होने के साथ कुछ न कुछ नया और बेहतर करने की कोशिश करते रहते थे और उनकी यही विशेषता एस. प्रणाम सिंह को सबसे ज्यादा प्रभावित करती है।

बंगाल स्कूल, कोलकाता, मद्रास, बॉम्बे, लाहौर, ललित अकादमी और आर्ट एंड क्राफ्ट कोलकाता में बड़े-बड़े नामी कलाकारों को कार्य करते देखने के बाद, उनसे मिलने के बाद, इनकी कला में रुचि और अधिक बढ़ गई। कोलकाता को एक ऐसा स्थान माना जाता है कि वहां पर कला और कलाकार को बहुत सराहा जाता है, सम्मान दिया जाता है। उभरते कलाकारों का मार्गदर्शन किया जाता है। जिनकी कार्यशैली बहुत अच्छी होती है, उनकी प्रशंसा भी की जाती है।

उस समय इनकी भी कार्यशैली की प्रशंसा की। इनका सम्मान किया गया। प्रणाम सिंह का कोलकाता 'द सिटी ऑफ जॉय' से एक विशेष संबंध है। जहां उन्होंने 'गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट' से पेंटिंग का अध्ययन किया और कला भवन शांतिनिकेतन से 2 साल की एम. एफ. ए. भी की। शांतिनिकेतन में काम करने का वातावरण बहुत अच्छा है। उस समय बहुत कलाकार शांतिनिकेतन में आ गए थे। एस. प्रणाम सिंह को प्रकृति की गोद में रहकर कार्य करना बेहद पसंद था। प्रकृति के साथ जोड़कर, इन्होंने प्रकृति को नजदीक से महसूस किया और उन भावों को अपने कैनवास पर उतारना शुरू कर दिया।

जब वे एम.एफ.ए. कर रहे थे, शांतिनिकेतन में तब सभी को अपना अलग-अलग स्टूडियो दिया जाता था और उस स्टूडियो की चाबी भी उनको दी जाती थी। जिस कलाकार का जब भी मन हो वह स्टूडियो में जाए और पूरी आजादी के साथ कार्य करे कोई रोकने वाला नहीं हुआ करता था।

इन्होंने ३ साल खैरागढ़ में भी रीडर, प्रोफेसर के पद पर कार्य किया है। यह ऐसी जगह है जहाँ पर कोई सुविधा नहीं थी। एक छोटा सा बाजार था, पर कोई मनोरंजन न था माहौल नहीं था। चारों तरफ खेत थे। खेत दिखाई देते थे। बस प्रकृति का वातावरण था। इन्होंने एक नया माहौल बनाया। वहाँ पर बाहर से लड़के आया करते थे कला की शिक्षा ग्रहण करने। वे उनके साथ परिवार के सदस्य जैसे व्यवहार किया करते थे। एक मित्र की तरह बातचीत किया करते थे, उनके साथ खाना खिलाना आदि।

उसके बाद सन् १९८६ में बनारस हिंदु विश्वविद्यालय में रीडर, प्रोफेसर के पद पर कार्य किया। परंतु वर्तमान समय में यह ललित कला विभाग के एच.ओ.डी. के पद पर है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियां

- मुंबई में जहांगीर आर्ट गैलरी।

• प्रदर्शनियां :–

➢ चीन में चीनी कला अकादमी।
➢ नई दिल्ली।
➢ कोलकाता।
➢ वाराणसी।
➢ सामूहिक प्रदर्शनियां :–
➢ जर्मनी
➢ काठमांडू
➢ मुंबई

इनकी महानगरीय शहरों में अब तक लगभग ५० शो हो चुके हैं। इनको संस्कृति विभाग तथा बिहार अकादमी कला एवं संस्कृति द्वारा चित्रकला में एक अतिथि फैलोशिप से सम्मानित किया गया है।

तृतीय अध्याय

एस. प्रणाम. के. सिंह की कला यात्रा

एस. प्रणाम के. सिंह की कला यात्रा

प्रणाम सिंह की कला यात्रा का सफर उनके स्कूल समय से ही शुरू हो गया था। इंटर ([illegible]) करने के बाद तीन चार महीने की कला शिक्षा प्राप्त की। फिर लखनऊ आर्ट कॉलेज में दाखिला लिया। बस यहीं से इनके सपनों को उड़ान मिल गई। उन्होंने 5 वर्षों तक गहरा अध्ययन किया। शुरुआती वर्षों में उन्हें कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, परंतु समय के साथ–साथ उन्होंने कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की। कठिन हालातों में भी इन्होंने धैर्य का साथ नहीं छोड़ा।

कला के विषय में पूर्ण अध्ययन के साथ–साथ वे अभ्यास पर भी जोर देते थे। एक विद्यार्थी के रूप में भी उन्होंने सफलता प्राप्त की और उसके पश्चात भी उनके कार्य को पहचान व प्रसिद्धि मिली। उनके मन जो भाव होते हैं, भारतीय संस्कृति को लेकर, तो वे उसी तरह सामने उन्हें कैनवास पर उतार देते हैं।

वह अपने काम को ही अपना भगवान मानते हैं। जब भी किसी कार्य कार्यशाला में चित्र बनाते देखा जाए, तो उन्हें देखकर यह एहसास होता है कि वे पूरे हृदय से अपनी कलाकृति को पूरा करते हैं, साथ ही अन्य कलाकारों की भाँति स्फूर्त प्रयोगों से बचते हैं। उन्हें आपके कार्य सच्चाई से करना पसंद है।

भारत के बड़े–बड़े शहरों में उन्होंने अपनी कलाकृतियों की प्रदर्शनियां लगाईं। प्रणाम सिंह चित्रांकन के एक प्रतिष्ठित कलाकार हैं और एक विशिष्ट परिदृश्य (लैंडस्केप) में पुरुषों और महिलाओं के वैश्विक अलंकारिक चित्रकार हैं। विविध विचार के परिदृश्य में उन्होंने अपनी संवेदनशीलता और निपुणता के सभी कौशल को रेखाओं और रंगों की चित्रकारी में रंग डाला है।

उनके चित्र और आकृतियों को अपने आंतरिक भावनाओं के साथ एकाकार होता देख बेहद खुशी की बात है। उनकी चित्रकारी हमें आंतरिक और बाहरी वास्तविकता के एक अलग धरातल में ले जाती है। शायद उनकी रचनाएं उनके सभी प्रशंसकों और समझदार दर्शकों के लिए एक आदर्श के रूप में आती हैं।

एस. प्रणाम सिंह अनेकों सृजनात्मक कलाकृतियों का निर्माण कर चुके हैं और निरंतर सृजन कर रहे हैं। उन्होंने लगभग सभी माध्यमों में कार्य किया है। उनकी अनेकों कला, कार्यशालाओं, प्रदर्शनियों, कला शिविरों में सहभागिता रही है। उन्होंने अनेकों चित्रकला, प्रतियोगिताओं में वह निर्णायक की भूमिका निभा चुके हैं तथा वर्तमान में भी वह इस क्षेत्र में सक्रिय हैं।

कला जगत में रहते हुए एस. प्रणाम के. सिंह ने इतने कार्य किए हैं और अभी भी कर रहे हैं। भावी कलाकारों के लिए यह निश्चय ही मार्गदर्शक बनेगी। उन्होंने लगभग सभी माध्यमों में काम किया है जैसे– पहले के समय में तैल रंग ज्यादा प्रयोग किया जाता था। परन्तु वर्तमान समय में एक्रेलिक रंगों को ज्यादा महत्व दिया जाता है।

उन्होंने सभी माध्यमों में कार्य किया है जैसे– तैल रंग, ऑयल पेस्टल, पेन इंक, चारकोल आदि। लेकिन एक्रेलिक रंग इनका मनपसंद माध्यम है। इनके पहले के काम में और अब के काम में काफी अंतर है। जब हम लगातार कार्य करते हैं तो समय के साथ–साथ काम में सहजता और सरलता आने लगती है।

जैसे–जैसे अनुभव कला के क्षेत्र में बढ़ता है, वैसे–वैसे कार्य में सहजता आने लगती है।

कार्य :–

उनके कुछ प्रमुख रंग, उनके पैच और टेक्सचर पर एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। जैसे कि लाल रंग। फिर भी कठ रंग और बुझे हुए रंग समान रूप से इनका ध्यान आकर्षित करते हैं। इन कोलाजनीय कार्यों की सामग्री सीधे तौर पर खुद को संबोधित करती है और हम केवल रंगों, रंगों इकाइयों और रेखाओं के आंदोलनकारी उत्सव का भाग होते हैं।

कलाकारों द्वारा यह जीवंत और प्रचुर प्रस्तुतीकरण हमारे आंतरिक मन आंखों और दिमाग के लिए एक इलाज है।

चतुर्थ अध्याय

एस. प्रणाम. के. सिंह का आधुनिक भारतीय कला में योगदान

एस. प्रणाम. के. सिंह का आधुनिक भारतीय कला में योगदान

एस. के. प्रणाम सिंह एक आधुनिक वरिष्ठ भारतीय चित्रकार के रूप में अपना प्रमुख स्थान रखते है। आधुनिक भारतीय कला और उसके विकास में इनकी अहम भूमिका रही है।

इन्होंने इन वर्षों में उनकी एकल प्रदर्शनीयां मुंबई में, जहांगीर आर्ट गैलरी चीन में, चीनी कला अकादमी इत्यादि। और अनेक समूह की की जर्मनी, काठमांडू तथा मुंबई में आर्ट शॉप में प्रदर्शित किए गए हैं। देशभर के महत्वपूर्ण शहरों में उनके अब तक लगभग 80 शो हो चुके हैं। अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनीयां लगा कर आधुनिक भारतीय कला के इतिहास में अपना योगदान दिया।

कला के इतिहास में अपना योगदान दिया। कला की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात उन्होंने कला के क्षेत्र में अहम भूमिका निभाई। वाराणसी 'बनारस हिंदू विश्वविद्यालय' में अध्यापन का कार्य करते हुए एस. प्रणाम सिंह अपने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते रहते हैं। जिन विद्यार्थियों में प्रतिभा छुपी होती है, जिन का चित्रण कार्य अच्छा होता है वे उन्हें कला के क्षेत्र में जाने के लिए प्रोत्साहित करते रहते हैं। वह विभिन्न कला महाविद्यालयों में जाकर कला का प्रदर्शन करते हैं। इस प्रकार विद्यार्थियों को प्रेरित कर कला के क्षेत्र को सशक्त बनाने में भी अपना अहम योगदान दे रहे हैं।

प्रणाम सिंह की अनेकों कला कार्यशालाओं प्रदर्शनीयों, कला शिविरों में सहभागिता रही। अनेकों चित्रकला, प्रतियोगिताओं में वह निर्णायक की भूमिका निभा चुके हैं।

एक कलाकार का महत्वपूर्ण मूल्य उसके कला अनुभव से है, जो अपनी चुनौतियों के बाद उन्होंने अर्जित किया है। उन्हें लोकप्रियता, सफलता तथा उपलब्धियों की एवज में कितनी कीमत चुकानी पड़ती है, चित्र की लागत को साधारण सी आदमी नहीं समझ सकता एक कलाकार ही जानता है किस तरह से मनुष्य ने अपनी कला को अर्जित किया है।

प्रणाम सिंह का नाम आधुनिक चित्रकार के रूप में महत्वपूर्ण है। इन्होंने देश विदेश में अनेक प्रदर्शनियां लगाई और इन्होंने कला के क्षेत्र में जितने भी व्यक्ति जुड़े हैं, उन सब को प्रेरित कर कला के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

प्रणाम सिंह की अनेकों कला कार्यशालाओं, प्रदर्शनीयों, कला शिविरों में सहभागिता रही। अनेकों चित्रकला, प्रतियोगिताओं में वह निर्णायक की भूमिका निभा चुके हैं।

प्रणाम सिंह का नाम आधुनिक चित्रकार के रूप में महत्वपूर्ण है। इन्होंने देश विदेश में अनेक प्रदर्शनीयां लगाई और कई कलाकारों पर इनके काम का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इन्होंने कला के क्षेत्र में जितने भी व्यक्ति जुड़े हैं, उन सब को प्रेरित कर कला के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अतः हम यह कह सकते हैं कि एस. प्रणाम सिंह आधुनिक भारतीय चित्रकारों में से एक हैं। कला के विकास में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। कला जगत में इनका भी अहम से नाम लिया जाने लगा है और कला को बढ़ाने में इनका योगदान अहम स्थान पर है।

एस. प्रणाम. के. सिंह का यथार्थवाद

कला में योगदान :

प्रणाम सिंह से जानने की कोशिश करते हैं कि यथार्थवाद क्या है? यह कब शुरू हुआ? कहां शुरू हुआ? इसका प्रभाव भारतीय कलाकारों पर कैसे पड़ा और इसमें उनका क्या योगदान है?

यथार्थवाद :–

यथार्थवाद व न नैचुरलिज्मवाद का पर्यायवाची शब्दों की तरह प्रयोग किया जाता है। इसलिए दोनों में जो सूक्ष्म भेद है, उसे जानना जरूरी है। 'यथार्थवाद' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है।

पहला– राजा–महाराजाओं व सामंतवादी वर्ग से संबंधित विषयों को छोड़कर सामान्य जनता के जीवन के अनेक सुख–दुख का चित्रण किया जाता है।

दूसरा– मानव व वस्तुओं को आदर्श या काल्पनिक रूप में चित्रित करने के नैसर्गिक रूप में चित्रित किया जाता है।

पहला अर्थ अभिव्यक्ति से संबंध रखता है, तो दूसरा रूप से जिसमें सामान्य जनजीवन के चित्रण को महत्व दिया गया है। वो चित्र यथार्थवादी है।

यथार्थवाद आंदोलन कब और कहां शुरू हुआ :–

१९वीं शताब्दी के अंत में फ्रांसीसी साहित्य और कला पर हावी थी, जिस दशक में १८५० के दशक में फ्रांस में शुरू हुआ।

- यथार्थवादियों ने अपने चित्रों में सत्य या अवास्तविक रंगों का उपयोग किया।
- रियलिस्ट चित्रकारों ने अक्सर आम मजदूरों और सामान्य लोगों को चित्रित किया।

भारतीय कलाकारों पर यथार्थवाद का प्रभाव :–

भारतीय संदर्भ में, कला में यथार्थवाद का उपयोग केवल चित्रकला में प्रयुक्त यथार्थवादी तकनीकों को संदर्भित करने के लिए किया जा सकता है। इन तकनीकों पर भी काफी हद तक पश्चिमी का प्रभाव पड़ा है। यथार्थवादी चित्रकला तकनीकों को भारत में पेश किया गया, जो यूरोपियों के साथ था। इसकी छवि दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में मौर्य, गंधार और मथुरा की कला पर भी दिखती है, जो बताती देती है कि १९वीं शताब्दी की शुरुआत में यथार्थवादी चित्रों ने भारत में अपनी प्रमुखता फिर से शुरू कर दी थी।

कंपनी के कलाकारों का उद्देश्य भारतीय जीवन को फोटोग्राफिक विवरणों में कैद करना था। औपनिवेशिक सरकार के संरक्षण से यह शैली तब उभर कर गई। भारत के चित्रकार कला की द्वारा

शैली से बहुत प्रभावित हुए। भारतीय प्रसिद्ध चित्रकार जो यथार्थवादी तकनीकों का इस्तेमाल करने लगे हैं जो निम्नलिखित हैं–

1. बाबूराव पेंटर
2. राजा रवि वर्मा
3. हेमेन मजूमदार

उन्होंने प्रकाश और छाया की यथार्थवादी तकनीक का काफी प्रभावी ढंग से प्रयोग किया। लेकिन अपने विषयों में वे यूरोप के रोमांटिक चित्रकारों की तुलना में सावधान थे। अमृता शेरगिल ने अपने कुछ कामों में यथार्थवादी तकनीकों का इस्तेमाल किया, लेकिन बाद में उस शैली से दूर हो गए।

स्वतंत्रता के बाद के युग में कोई भी भारतीय कलाकार कभी भी वास्तविक रूप से यथार्थवादी नहीं रहा हालांकि, यथार्थवाद की तकनीकों का उपयोग–

- अंजलि इला मेनन, सुधीर पटवर्धन, बिकाश भट्टाचार्य, सुनील दास इत्यादि कलाकारों द्वारा किया गया।
- इनमें से यथार्थवादी तकनीक के उपयोग में सबसे प्रसिद्ध बिकाश भट्टाचार्य और उनके शिष्य संजय भट्टाचार्य हैं।

यथार्थवादी कलाकार

बिकाश भट्टाचार्य 21 जून 1940, 18 दिसंबर 2006 पश्चिम बंगाल में कोलकाता के एक भारतीय चित्रकार थे। अपने चित्रों के माध्यम से उन्होंने औसत मध्यमवर्गीय बंगाली के जीवन को चित्रित किया। उनकी आकांक्षाएं, अंधविश्वासों, पाखंड और भ्रष्टाचार और यहां तक कि चित्र जो कोलकाता के लिए स्थानिक है। उन्होंने तेल, एक्रेलिक, पानी कलर और चारकोल में काम किया। 2003 में, उन्हें ललित कला अकादमी, भारत की राष्ट्रीय कला अकादमी, ललित कला अकादमी फैलोशिप के साथ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

बिकाश भट्टाचार्य को उस समय भारतीय कला में यथार्थवाद वापस लाने का श्रेय दिया जाता है। जब भारत में कलाकार आकृतियों और वस्तुओं के चित्रण की ओर अधिक झुक रहे थे।

शहर और उसके लोगों को चित्रित करने के अलावा, भट्टाचार्य एक कुशल चित्रकार थे। यथार्थवाद भट्टाचार्य की विशेषता थी। उनके पेंटिंग्स में पर्दे की सही गुणवत्ता थी, एक महिला की त्वचा की चमक को दर्शाया जा सकता है। उन्होंने प्रकाश की गुणवत्ता को पकड़ने में महारत हासिल की। भट्टाचार्य ने अपने चित्रों में एक गूढ़ प्रभाव किया जो दृश्य से लेकर अवचेतन तक कई स्तरों पर काम करता है। विषय वस्तु में महिला रूप का चित्रण, और सभी उम्र और स्थितियों के लोग–बूढ़े, पुरुष और महिलाएं, बच्चे, घरेलू नौकर शामिल थे। उनके पास नाटक को प्रकट करने के लिए पात्रों की पृष्ठभूमि के रूप में एक प्रासंगिक वातावरण बनाने की क्षमता थी।

विकास अतियथार्थवादियों से बहुत प्रभावित थे और उन्होंने कहा कि साल्वाडोर डाली उनके पसंदीदा चित्रकार हैं।

पेंटिंग :

उनकी पहली एकल प्रदर्शनी 1965 में कोलकाता में थी। उनके चित्रों को भारत के बाहर प्रदर्शित किया गया था। उन्होंने 1969 में पेरिस में शो किए थे। उन्होंने 1960 के दशक में अपने गुड़िया 'श्रृंखला' के साथ जीवन की शुरुआत में व्यावसायिक सफलता हासिल की, जिसके बाद दुर्गा 'श्रृंखला' आयी।

भट्टाचार्य ने अक्सर यथार्थवादी शैली में चित्रित किया है। विकास ने भारत में कई चित्रकारों को प्रेरित किया। जिनमें बंगाल के यथार्थवादी चित्रकार संजय भट्टाचार्य भी शामिल थे।

उल्लेखनीय कार्य : कास्टिंग दी, गुड़िया श्रृंखला, उल्लसी, आगंतुक, द ट्रैप।

पुरस्कार : पद्म श्री (1988), राष्ट्रीय पुरस्कार (1971)

संजय भट्टाचार्य :

1958 में कलकत्ता में जन्म हुआ। संजय भट्टाचार्य ने 1982 में गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट से कोलकाता में ललित कला में विशेषज्ञ के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की। संजय भट्टाचार्य की पेंटिंग अपने आप में एक कहानी कहती है। वह निश्चित रूप से यथार्थवादी हैं। उनके चित्रण की विशेषता में लगभग फोटोग्राफिक है और इसलिए प्रभाव में भव्य है। वह रेम्ब्रांट और डाली के कार्यों से प्रभावित थे और उनके शुरुआती दिनों ने विकास भट्टाचार्य की शैली पर बहुत अधिक प्रभाव डाला। लेकिन बाद के दिनों में संजय ने गणेश पाइन जैसे बंगाल के अन्य महान कलाकारों की शैली में काम करने की कोशिश की। कालांतर में संजय ने विभिन्न शैलियों को समाहित किया और अपने दम पर विकसित किया। उनकी पेंटिंग व्यावसायिक घरों और कोलकाता के लोगों पर उत्कृष्ट चित्रण और प्रकाश और छाया के साथ केंद्रित है।

उल्लेखनीय कार्य –

- राजीव गांधी पोर्ट्रेट 1989
- कृष्णा 2011
- तीर्थ कहानी 2016
- आशीर्वाद हमेशा 2009

प्रताप सिंह के कथनानुसार–

मैं शिवराम भट्टाचार्य जी, को अपने गुरु के रूप में देखता हूँ, जिस तरह से मेरे कार्यों में समर्पित झलकता है। मैं शिवराम भट्टाचार्य जी से पहली बार कोलकाता में प्रदर्शन के दौरान मिला, जहाँ मुझे शिवराम भट्टाचार्य जी को अपना काम दिखाने का मौका मिला। उन्होंने मेरे अंदर छुपी प्रतिभा को पहचाना और मुझे आगे बढ़ने के लिए व्यावसायिक कला के क्षेत्र में निरन्तर कार्य को प्रोत्साहित किया। मैंने उनके कार्य देखे" जो कि व्यावसायिक थे "मुझे कुछ भी जिस तरह से उनके कार्यों ने मुझ पर बड़ा प्रभाव डाला। आज मैं जो कुछ भी हूँ उन्हीं की वजह से हूँ। कहीं न कहीं उनके काम का प्रभाव मुझपर इतना पड़ा कि आज मैं खुद एक चित्रकार बन गया हूँ। अगर वो मुझे मेरे काम को देख कर प्रोत्साहित नहीं करते तो आज मैं कुछ भी नहीं कर पाता।

पंचम अध्याय

एस. प्रधान के सिंह से साक्षात्कार

प्रोफेसर श्री शारदा प्रसाद कुमार सिंह
फैकल्टी ऑफ विजुअल आर्ट्स,
(बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी)

एस. प्रसाद. के. सिंह से साक्षात्कार :—

प्रश्न 1 :– आपका जन्म कब और कहाँ हुआ ?

उत्तर :– मेरा जन्म [illegible] में मणिपुर, इंफाल में हुआ।

प्रश्न 2 :– आपके जीवन में कला की शुरुआत कहाँ से हुई ?

उत्तर :– मैं अपने स्कूल समय से ही कला में रुचि रखता था– जैसे कॉपियों के कवर बनाना, ध्यान पूर्वक तरीके से कार्य करना, बस तब से ही कला की शुरुआत हुई।

प्रश्न 3 :– आपके अनुसार में कला क्या है ?

उत्तर:– मुझे ऐसा लगता है कि जब इतनी सारी दुनिया का या किसी और जीव का इस्तेमाल होगा तो कला का जो भी अपना रास्ता है, वह नहीं रहेगा। वह कहीं खो जाएगा। कला में भाव का होना आवश्यक है, क्योंकि कला में अगर भाव नहीं है तो, भाव के बिना कला भी संभव नहीं है।

प्रश्न 4 :– कला में छोटा रास्ता अपनाना क्या सही है ?

उत्तर :– बिल्कुल नहीं। कला एक ऐसा माध्यम है जो कि हम छोटे रास्ते से कभी भी नहीं अपना सकते। शुरू में हो सकता है कि हमें यह माध्यम सही लगे, परंतु एक सफल कलाकार बनने के लिए यह सोचने से शुरू होगा। शुरुआती दौर में हमें मेहनत करना पड़ता है, परंतु धीरे-धीरे हम इसमें [illegible] शुरू हो जाते हैं। फिर हम खुद समझने लगेंगे कि कला को छोटे रास्ते से नहीं अपनाया जा सकता। जरूरी नहीं है कि सिर्फ पेंटिंग ही कला है, कोई भी हो सकती है, संगीत, नृत्य, प्रदर्शन इत्यादि किसी भी क्षेत्र के साथ कोई जुड़ा है, किसी भी विधा के साथ कोई जुड़ा है, उसके पाने के लिए छोटा रास्ता अपनाना सही नहीं होगा।

प्रश्न 5 :– आपके अनुसार भारतीय कला और संस्कृति क्या है?

उत्तर:– मैं मानता हूँ कि भारत की कला और संस्कृति ही हमें विभिन्न धर्मों के लोगों को आपस में जोड़े रखती है। किसी भी प्राचीन तस्वीर, पेंटिंग, इत्यादि हमें उसके अतीत के बारे में जानकारी देती है। ऐसी चीजें हमें उनके विचारों और जीवन जीने के तरीकों को एक कला के रूप में परिभाषित करती हैं।

प्रश्न 6 :– आपके ज्यादातर कार्य स्त्रियों पर ही हैं, ऐसा क्यों ?

उत्तर :– हाँ, यह सही है। मेरे कार्यों में स्त्रियों की छवि नज़र आती है। स्त्रियों की सुंदरता के बारे में बात करें तो बाहरी सुंदरता तो सब देख लेते हैं परन्तु मन की सुन्दरता को दिखाने के लिए मेरी यह कोशिश रहती है कि उनकी भीतर की सुंदरता को अपने पेंटिंग के माध्यम से बता सकूं। भारतीय संस्कृति में स्त्रियों को लक्ष्मी का स्वरूप माना गया है। स्त्रियों की परिभाषा देश और समाज के लिए एक

स्थान है। जिस महिला का मन सुंदर होता है, जो कभी किसी का बुरा नहीं चाहती, अतिरिक्त प्रेम भाव रखने वाली, क्षमाशील, दानशील, बुद्धिमान, दयावान और कर्तव्यों का पालन पूर्ण निष्ठा से करने वाली लक्ष्मी का रूप होती है। माँ अन्नपूर्णा ने नारी को यह वरदान दिया था, जिसके अनुसार इसकी को घर का पोषण करने का अधिकार प्राप्त है। भारतीय नारी की जितनी भी तारीफ करें उतनी ही कम होगी, जो शब्दों में नहीं व्यक्त हो पाएगी। इसलिए मैं अपनी पेंटिंग के माध्यम से यह भाव प्रकट करता हूँ।

प्रश्न 7 :– आपका पसंदीदा रंग कौन सा है और क्यों ? आपने अपनी कलाकृतियों में महिलाओं के सिंदूर पर ज्यादा ध्यान दिया, ऐसा क्यों ?

उत्तर :– मेरा पसंदीदा रंग लाल है। यह रंग नारी की सुंदरता पर चार चांद लगा देता है। विवाह एक पवित्र बंधन है। इस पवित्र बंधन में बंधने से पहले कई रस्में संपन्न होती हैं। इनमें सबसे अहम सिंदूरदान है। जो हिंदू समाज में जब एक लड़की की शादी होती है, तो उसकी मांग में सिंदूर भरा जाता है। यह सिंदूर उसका पति भरता है। इस प्रकार जो पहचान बनती है, उसका अटूट संबंध पति से होता है। सिंदूर भरे जाने के बाद एक स्त्री का नया जन्म होता है। इस नए जीवन के साथ उसको कई नई जिम्मेदारियां और धार्मिक विरासत में मिलते हैं।

लाल रंग एक स्त्री की खुशियां, ताकत, स्वास्थ्य, सुंदरता आदि से सीधा जुड़ा है। यह भी माना जाता है कि अगर विवाहित स्त्री लाल या नारंगी रंग का सिंदूर मांग में भरती है, तो उसके पति की लंबी उम्र होती है। विवाहित स्त्री जितनी लंबी मांग भरती है, पति की आयु भी उतनी लंबी होती है। सिंदूर का संबंध जीवनसाथी की दीर्घायु की कामना और अच्छे स्वास्थ्य के साथ ही पत्नी के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य से, साथ ही हमारे देश में कई पर्व है, जिनमें सिंदूरदान की परंपरा रही है। छठ पूजा, नवरात्रि, तीज, करवा चौथ आदि त्योहारों पर स्त्रियों की मांग में सिंदूर भरा जाता है।
छठ पूजा में तो स्त्रियां नाक से लेकर मांग तक लंबा सिंदूर लगाती हैं। पति की आयु लंबी होती है और सुख समृद्धि बढ़ती है। छठ पर्व पर स्त्रियां नारंगी रंग का सिंदूर लगाती हैं। सिंदूर भी दो रंग के होते हैं। एक लाल और दूसरा नारंगी। सिंदूरदान एक परंपरा है, एक विश्वास है, एक पहचान है और पत्नी की भावनाओं की अभिव्यक्ति भी है।

प्रश्न 8 :– आपकी ज्यादातर कलाकृतियां भारतीय संस्कृति से जुड़ी हुई है, ऐसा क्यों ? क्या आपको भारतीय संस्कृति से ज्यादा गहरा लगाव है?

उत्तर :– हाँ ! मेरी कलाकृतियां भारतीय संस्कृति से जुड़ी हुई है। मैं अपनी संस्कृति से बहुत ज्यादा प्यार करता हूं। मेरा गहरा लगाव है। ऐसा कहना गलत नहीं होगा। जैसे आप जानते ही होंगे, मनुष्य की अमूल्य निधि उसकी संपत्ति उसकी संस्कृति है। संस्कृति एक ऐसा पर्यावरण है, जिसमें रहकर व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी बनता है। प्राकृतिक पर्यावरण को अपने अनुकूल बनाने की क्षमता अर्जित करता

है। अन्य देशों की संस्कृति या तो समय की धारा के साथ साथ नष्ट होती रही है, किंतु भारत की संस्कृति व सभ्यता आदि काल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ आज अमर बनी हुई है।

प्रश्न 9 :– आपकी सारी कलाकृतियां रियलिस्टिक हैं और भारतीय स्त्रियों पर हैं, ऐसा क्या कारण है?
उत्तर :– बिल्कुल जैसा मैंने पहले भी बताया है, मैं विकास भट्टाचार्य जी, बेंद्रे, सुब्रमण्यम जी को अपना गुरु मानता हूं जिससे उनके कार्यकलापों में उनका प्रभाव मानता हूं। बस इसलिए मेरी सारी की सारी कलाकृतियां रियलिस्टिक हैं। मैं अक्सर अपने काम में आम मजदूरों और साधारण लोगों को चित्रित किया करता हूं। समकालीन स्त्रियों और स्थितियों की सच्चाई और वास्तविकता के साथ चित्रित करता हूं। रही बात स्त्रियों की तो मैं भारत की सभ्यता आदि काल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ आज अमर बनी हुई है। अन्य देशों की संस्कृतियां तो समय के साथ नष्ट होती गई हैं, किंतु भारत की संस्कृति अभी तक वैसी की वैसी है। भारत की संस्कृति में स्त्रियों का बड़ा योग है। वह ही अपनी जिम्मेदारियां और दायित्व बहुत अच्छे से निभाती आ रही है। स्त्रियों के भावों को व्यक्त करने की कोशिश करता रहता हूं। उनकी सुंदरता को प्रकट करने की कोशिश करता हूं। कैनवास पर रंग के साथ साथ मैं रियलिस्टिक दिखाने की कोशिश करता हूं। जो हमारी हिन्दू संस्कृति को आगे बढ़ाने में स्त्रियां हमेशा आगे खड़ी रहती है। जिससे समाज का प्रतिनिधित्व अच्छा बनता है।

प्रश्न 10 :– आप पेंटिंग भी करते हैं, साथ ही साथ आप कविताएं भी लिखते हैं, तो क्या यह दोनों एक दूसरे के पूरक हैं ?
उत्तर:– बिल्कुल जैसे मैंने पहले भी बताया है कि भाव चाहे वह रंगों के माध्यम से हों, चाहे वह शब्दों के माध्यम से, भाव, भाव होते हैं और उनकी अभिव्यक्ति होना भी आवश्यक है।

प्रश्न 11 :– आप अपनी कलाकृतियों में रंगों को किस प्रकार से उपयोग करते हैं?
उत्तर :– मेरी जो कलाकृतियां हैं, उनमें रंग अपने आप ही आते हैं। जब मैं चित्रकला शुरू करता हूं और पहला बिंदु या पहली रेखा लगाता हूं तो मेरे उस समय मेरे दिमाग में कुछ भी नहीं होता। मेरे सामने कैनवास अपना होता है, उसके बाद मेरे मन में जो भी भाव आते हैं, मैं वह बनाना शुरू कर देता हूं। जैसे जैसे मेरे दिमाग में छवि आकृतियां आती रहती हैं, वैसे वैसे मैं उनको कैनवास पर उतारता रहता हूं। उस वक्त मुझे जो भी लगता है कि इस तरह के रंग अच्छे लगेंगे और जो–जो रंग मेरे दिमाग के आगे रहते हैं, वह मैं लगा देता हूं। जब हम चित्रकला शुरू करते हैं और उस समय हमारे मन में जो भाव होते हैं, उन्हीं भावों के अनुसार ही रंग अपने आप ही निकल आते हैं।
आप को एक उदाहरण देता हूं :–

जैसे आपके पास बहुत सारे कैनवास हैं और आप किसी व्यक्ति से कहते हैं कि आप एक कैनवास के ऊपर रंग डाल दो, और उस व्यक्ति की उस समय जो भावनाएं रहेंगी, उसी हिसाब से वो

रंग लगाऊंगा। अगर मैं खुश हूँ तो ऐसा रंग लेना जो उसे ज्यादा पसंद है, तो कोई अच्छा-सा रंग चुनकर लगाऊंगा अच्छे ढंग से कैनवास पर, लेकिन अगर वह दुखी है तो वह अपनी भावनाओं के अनुसार कोई ऐसा रंग उठाएगा जो उसकी भावनाओं से जोड़ता हो उस समय वह रंग को गंदे से तरीके से कैनवास पर उड़ेल देगा। इससे मेरे कहने का भाव यह है कि जब मैं पेंटिंग करता हूँ तो उस समय जो मेरे भाव रहते हैं, उसके हिसाब से रंग अपने आप ही निकल आते हैं।

प्रश्न 12 :– आप अपनी कला पर किसका प्रभाव मानते हैं या आप किस कलाकार से सर्वाधिक प्रभावित हैं?

उत्तर :– दो कलाकार हैं, जिनसे मैं काफी प्रभावित हूँ। पहले विकास भट्टाचार्य जो भारतीय कलाकार थे। जो कोलकाता पश्चिम बंगाल के रहने वाले थे, जो यथार्थवाद और जादुईवाद से जुड़े थे। उनकी पेंटिंग्स में चेहरे की सही पुनरावृत्ति या एक [illegible] की तरह ही रंगत को दर्शाया जा सकता है। उन्होंने प्रकाश की पुनरावृत्ति को पकड़ने में महारत हासिल की। उनके पास एक प्रभावित कारनामा करने की क्षमता थी। इनके काम से भी काफी प्रभावित हुआ।

दूसरे के. जी. सुब्रमण्यन जो एक भारतीय मूर्तिकार और मैटिस चित्रकार थे। सुब्रमण्यन लोक की लोक कला, कालीघाट पेंटिंग और बंगाल और ओडिशा के पट चित्र के साथ साथ भारतीय दरबारी चित्रों से बहुत प्रभावित थे। इनके कार्य ने भी मुझ पर बड़ा प्रभाव डाला। मेरी कलाकृतियों में भी इनकी छवि दिखाई देती है।

प्रश्न 13 :–आप किसे अपना गुरु मानते हैं ?

उत्तर :– मैं विकास भट्टाचार्य जी, के.जी. सुब्रमण्यन जी को अपना गुरु मानता हूँ। मैं पहली बार कोलकाता में प्रदर्शनी के दौरान मिला, जहां मुझे इनको अपना काम दिखाने का मौका मिला, उन्होंने मेरे अंदर छुपी प्रतिभा को पहचाना। जिनकी कला कृतियों ने मुझ पर बड़ा प्रभाव डाला। वे दोनों भारतीय कलाकारों में से हैं।

प्रश्न 14 :– आपका पसंदीदा माध्यम क्या है?

उत्तर :– मेरा जो पसंदीदा माध्यम है, वह है एक्रेलिक रंग और चारकोल। अगर रंगों की बात करते हैं तो मैंने लगभग सभी रंगों में कार्य किया जैसे– जल रंग, तैल रंग, [illegible], [illegible], मतलब सभी तरह के रंग प्रयोग किए हैं। लेकिन अगर पसंदीदा की बात आती है तो एक्रेलिक रंग मेरा पसंदीदा रंग है, जो जल्दी सूख जाते हैं। उस वक्त जो हमारे मन के भाव होते हैं, उन्हें हम जल्दी से जल्दी कैनवास पर उतारना चाहते हैं। लेकिन तैल रंग सूखने में काफी समय लेते हैं और दोबारा जब हम काम शुरू करते हैं तो हमारे मन के भाव परिवर्तित हो जाते हैं। लेकिन जो एक्रेलिक रंग होते हैं वह साथ ही साथ सूख जाते हैं और हम अपना कार्य लगातार कर सकते हैं। इसलिए मुझे एक्रेलिक रंग ज्यादा पसंद है। मेरे

मन में जो भाव उस समय रहते हैं उनको मैं जल्दी से जल्दी कैनवास पर उतारने की कोशिश करता हूं। एक कलाकार के लिए यह बहुत मुश्किल होता है कि उसके मन में जो भाव आता है, वह भी नहीं भूले। इसलिए उनको जल्दी से जल्दी कैनवास पर उतारना बहुत जरूरी होता है।

प्रश्न 15 :– आपको चित्रकला के अलावा और कौन–कौन से शौक है?

उत्तर :– चित्रकला के अलावा मुझे संगीत सुनना बहुत पसंद है। काम करते वक्त मैं संगीत सुनता हूं। जैसे– भोर के वक्त मुझे भजन सुनना अच्छा लगता है। पुरानी फिल्मों के गीत बहुत पसंद है। तबला, बांसुरी, संतूर और मैं सूफी संगीत भी सुनता हूं। अपने मूड के अनुसार संगीत सुनना पसंद करता हूं। अगर गजल की बात करें तो गजल में गहराई और सादगी बहुत ज्यादा है। मैं कभी–कभी कविताएं भी लिख लेता हूं।

प्रश्न 16 :– एक सफल कलाकार बनने में आपको किन किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ?

उत्तर :– सफलता पाने के लिए जैसे हर एक इंसान को संघर्ष से गुजरना पड़ता है, वैसे ही शुरुआती दौर में मैंने भी काफी संघर्ष किया है। स्कूल समय से ही मैंने कॉमिक्स से कॉपी करना शुरू कर दिया। पहले तो बस शौक से करता था। परन्तु धीरे–धीरे कला मुझ पर कब हावी हो गई, पता ही नहीं चला। स्कूल से निकलने के बाद मैंने आर्ट कॉलेज में तीन–चार महीने की शिक्षा ली उसके बाद 1977 में गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट कोलकाता में आ गया। जिंदगी में बहुत उतार–चढ़ाव आए, पर मैं उनको पार करता रहा, कोशिश करता रहा, बिना डर आगे बढ़ता रहा। 1986 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में एक अध्यापक की नौकरी मिली। वर्तमान में मैं अब अप्लाइड कला विभाग का एच.ओ.डी. (हेड ऑफ डिपार्टमेंट) के पद पर कार्य कर रहा हूं।

प्रश्न 17 :– जब आप कोई पेंटिंग बनाते है तो पहले विषय के बारे में सोचते है या अकस्मात ही जैसे लकीरें बन जाएं उनसे कुछ निकल आता है?

उत्तर :– नहीं, मेरे मन में उस समय कुछ नहीं होता। मैं जब पेंटिंग करने बैठता हूं कैनवास मेरे ठीक सामने लगा होता है। पहला बिंदु, पहली लाइन जो मैंने दी वह बिंदु, वह लाइन मुझे बताती है कि आगे क्या करना है। वैसे ही उसी प्रवाह में हो जाता हूं, जो भाव मेरे अंदर उठते हैं उनको मैं वैसे के वैसे कैनवास पर उतारने की कोशिश करता हूं। यह माध्यम है, रंग है, रेखाएं है, जैसे भाव मन में आते रहते हैं, मैं उन्हीं भावों को हू–बहू उतारता हूं और अपने भावों को कैनवास पर उतारते ही देखते ही देखते कैनवास कब पूरा हो जाता है पता ही नहीं चलता।

प्रश्न 18 :– आप किस वर्ष बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में आए? तब से यहां पर कार्यभार संभाले हुए हैं?

उत्तर :– मैं 1986 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में एक अध्यापक के रूप में आया था और समय के साथ आज मैं ललित कला विभाग का एच.ओ.डी. के पद पर कार्य कर रहा हूं।

प्रश्न 19 :– क्या आपको अपने पहले के शिक्षण कार्य और वर्तमान के काम में कुछ अंतर नजर आया ?

उत्तर :– हां, बहुत बड़ा अंतर है। जब हमारा शुरुआती दौर होता है तब हम बहुत गहराई से काम करते हैं। लेकिन धीरे-धीरे जैसे ही एक लंबे समय तक हम काम करते हैं, हमारे अंदर एक परिपक्वता आने लगती है, विचारों में भी, काम में भी। हमारे हाथ सुधरने लगते हैं। हम धीरे-धीरे सहजता में आ जाते हैं, काम में सहजता आ जाती है, काम धीरे-धीरे बहुत सरल होता जाता है। जैसे हम बच्चे होते हैं, तब कुछ तात्कालिक काम करते हैं। उस समय हमें लगता है कि हम लोगों को दिखा दें कि हमें क्या आता है। लेकिन धीरे-धीरे जब हम व्यस्क होते हैं तो समझने लग जाते हैं कि हमें कार्य किसी को दिखाने के लिए नहीं करना है। हमें अपने भावों को व्यक्त करने के लिए करना है। कला माध्यम से अपने अंदर की भावनाओं को कैसे व्यक्त करें। लेकिन जैसे हमारे अंदर परिपक्वता आ जाती है। हम सहजता की तरफ बढ़ते जाते हैं और हमारे जो रंग हैं उन्हें अपने भावों के अनुसार प्रयोग करना सीख जाते हैं और जो काम है, वह भी सहजता की ओर बढ़ता जाता है। तो मुझे लगता है कि धीरे-धीरे समय के साथ-साथ मेरा काम काफी सरल हुआ है और उसमें सहजता आई है।

प्रश्न 20 :– आपने अब तक कला के क्षेत्र में जितना भी कार्य किया है, आपको उसमें सबसे पसंदीदा कार्य कौन सा लगा ?

उत्तर :– यह कहना तो थोड़ा मुश्किल ही होगा। पसंदीदा कार्य तो सारे ही होते हैं। हां, यह जरूर होता है जब हम कोई काम करते हैं उसके करने के बाद कई बार हमें ऐसा लगता है कि अरे नहीं काम कुछ अच्छा नहीं है, लेकिन कुछ दिनों के बाद वही काम अच्छा लगने लग जाता है। फिर उसके बाद हम जब कुछ नया काम करते हैं, तो हमारा जो पहले वाला काम होता है, वह हमें इतना अच्छा नहीं लगता। एक कलाकार के लिए यह बताना काफी कठिन कार्य है कि उसका कौन सा काम अच्छा है और कौन सा नहीं। क्योंकि उसके सारे काम भावों पर निर्भर हैं। जैसे- एक कैनवास पर ऐसी आकृति बनाई, जिसमें दुख झलक रहा है, रंग भी ऐसे प्रयोग किए हैं जो उसकी भावनाओं को व्यक्त कर रहे हैं और दूसरी ओर एक ऐसी पेंटिंग बनाई है जिसमें आकृति को देखते ही पता चलता है कि वह खुश है, रंग भी बड़े चमक दार प्रयोग किए हैं। उस समय में, उसकी जैसे भाव हैं, वह उसको वैसे ही दिखाने की कोशिश करेगा। इसलिए उसको तो अपने सारे ही काम अच्छे लगते हैं। हां, यह हो सकता

है कि कोई काम कम अच्छा है, तो कोई काम बहुत अच्छा है, क्योंकि वह एक क्षण में एक भाव से बनाए गए काम है तो सारे ही काम अच्छे होते हैं।

प्रश्न 21 :– वर्तमान में जो कला का दौर चल रहा है, नए उभरते कलाकार जो कार्य कर रहे हैं, आप उनसे कितने सहमत हैं?

उत्तर :– कला, कला ही होती है। वह किसी भी माध्यम से हो, पर जो भाव ब्रश के साथ आता है, वह किसी और तरीके से नहीं। आजकल कुछ नए माध्यम आ गए हैं। समय के साथ कला के माध्यम में एक अलग रूप देखने को मिल रहा है जैसे– ग्राफ्टिंग कला और डिजिटल माध्यम। आज का समय डिजिटल हो गया है। हर काम डिजिटल माध्यम से किया जाता है। वह कला हो या कोई और कार्य अब डिजिटल तरीके से करना चाहते हैं। इससे समय कम लगता है, परंतु हम वह भावनाएं नहीं दे सकते जो हम ब्रश के साथ अपने हाथ से करते हैं और पेंटिंग करते करते कुछ नया निकल आता है। कंप्यूटर में तो कुछ प्रोग्राम होते हैं, वह उतना ही करेगा जितना प्रोग्राम में दिया होगा, परंतु जब हम हाथ में ब्रश लेकर करते हैं तो हम कुछ भी नया निकाल सकते हैं या कभी कभार अचानक ही कुछ नया निकल आता है।

चित्रकला का जो एक वास्तविक स्वरूप था, वह अब धीरे–धीरे कहीं गुम होता जा रहा है, क्योंकि जो नई पीढ़ी अब आ रही है वह डिजिटल कला और ग्राफ्टिंग कला से ज्यादा प्रभावित हो रही है और धीरे–धीरे चित्रकला का वास्तविक स्वरूप लुप्त हो जाएगा।

प्रश्न 22– युवा पीढ़ी को कला से जुड़े रखने के लिए और कला को गहराई से जानने के लिए क्या क्या कदम उठाने चाहिए ?

उत्तर– हमें आज की युवा पीढ़ी को कला से जुड़े रहने रखने के लिए उनको बताना चाहिए कि कला के बिना यह संसार अधूरा सा है। हर एक पक्षी, जानवर, जीव–जंतु आदि प्रकृति के हर एक चीज़ में कला छुपी हुई है। बस हमें हर एक चीज़ को महसूस करना चाहिए। कला को गहराई से जानने के लिए कितने भाव छुपे हुए हैं। कला एक ऐसा माध्यम है जो कि एक स्थान पर रहकर हम ज्यादा कुछ नहीं सीख पाएंगे। इसलिए हमें अपने आसपास का वातावरण देखना होगा। इसके लिए हमें दूर–दूर तक एक मुसाफिर की तरह अपनी मंजिल को पाने के लिए भटकना होगा। नए नए जगहों पर जाना पड़ेगा। नए नए लोगों को जानना पड़ेगा। जिससे आप का अनेक आत्मसम्मान बढ़ेगा, जिससे आपकी कला में उस स्थान, उस जगह, वहां का माहौल, वातावरण, प्रकृति आदि से घुलना–मिलना पड़ेगा, जब आप ऐसा करेंगे तब आप खुद महसूस करेंगे कि आप की कलाकृतियों में वहां से जुड़े भाव निकल आएंगे। आप की कलाकृतियों में झलक दिखाई देने लग जाएगी। जैसा जीवन शैली या परंपरा आदि।

प्रश्न 23 :– वर्तमान की युवा पीढ़ी को प्रकृति से जुड़े रहने के लिए आप क्या कहेंगी?

उत्तर :– आज की युवा पीढ़ी प्रकृति से कम जुड़ पाती है। आजकल बहुत नए माध्यम आ गये हैं। आज के समय में डिजिटल पर ज़्यादा ज़ोर दिया जा रहा है। मेरा यह मानना है कि यह सही नहीं है। आज के समय में बच्चे प्रकृति से नहीं जुड़ पाते, उनका ध्यान बस इंटरनेट पर ही लगा रहता है। इंटरनेट से आइडिया लेना, इंटरनेट से कॉपी करना आदि शुरू में तो यह ठीक है। परन्तु हमेशा के लिए नहीं। मेरा यह कहना है कि नई पीढ़ी से डिजिटल दुनिया के बाहर भी एक दुनिया है, उससे जुड़ने की कोशिश करें।

जो हम डिजिटल माध्यम से नहीं सीख सकते, वह हम प्रकृति से जुड़कर सीख जाते हैं। जब आप प्रकृति को महसूस करेंगे तो आपकी कलाकृतियों में प्राकृतिक की झलक दिखना शुरू हो जाएगी।

प्राकृतिक से जुड़कर हम बहुत सीख जाते हैं, जो इंटरनेट के माध्यम से कभी नहीं सीख सकते। प्रकृति से जुड़कर आपकी काम में सुन्दरता आएगी।

प्रश्न 24 :– विद्यार्थी जीवन खत्म होते ही हम नौकरी के लिए भागते हैं। नौकरी करते समय क्या कई बार हम कला से दूर हो जाते हैं?

उत्तर :– विद्यार्थी जीवन में हम एक विद्यार्थी के तौर पर काम करते हैं। वही विद्यार्थी जीवन खत्म होते ही हम नौकरी के पीछे भागते हैं और नौकरी मिलते ही हम इतने व्यस्त हो जाते हैं कि हमें समय ही नहीं मिलता कला के क्षेत्र में आगे बढ़ने का, कहीं गुम हो जाते हैं। हम कला को समय देना ही बंद कर देते हैं।

कई कलाकार नौकरी के लिए काम करते हैं, तो कई कलाकारों के पास इतना समय नहीं होता कि नौकरी के बाद वह खुद के लिए कार्य करें। जैसे– नौकरी से पहले स्टूडेंट लाइफ में किया करते थे, हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि कला के क्षेत्र में जुड़े रहने के लिए कलाकारों के ग्रुप बनाने चाहिए, जिससे हमें कार्य करने की हिम्मत मिलेगी। बेशक हम जब तक कितने भी थकावट महसूस कर रहे हों, हम अपने कार्यों को उनके सामने अपने सीनियर्स पर उतारने की कोशिश करें तो हम अच्छा महसूस करेंगे। नौकरी की चिंता कम होगी। कला से जुड़े रहने के लिए एक कलाकार का ग्रुप बनाएं। समय–समय पर प्रदर्शनियों और आर्ट कैंप लगाएं। राष्ट्रीय लेवल, स्टेट लेवल, या नेशनल लेवल। इससे हमें पता चलेगा कि हम अभी भी कला से जुड़े हैं या नहीं या बस कला नौकरी के लिए ही कर रहे हैं, हमें इन बातों का पता चलेगा। नौकरी में हम उतना ही करेंगे जितना हमें बच्चों को सिखाना है, परंतु जब हम नौकरी के अलावा काम करेंगे तो वो खुद के लिए होगा। हमें मौका मिलेगा नई चीजें सीखने का, नये उभरते कलाकारों से मिलने का, महान कलाकारों का अनुभव जानने का।

प्रश्न 25:– विदेश यात्रा के दौरान आपका कला के प्रति अनुभव कैसा रहा? देशी कला और विदेशी कला में आपको क्या अंतर या समानता नज़र आई?

उत्तर :– मेरी यात्राएं तो ज्यादातर प्रदर्शनियों और 'आर्ट' कैंप के दौरान ही हुई हैं। विदेशी यात्रा का मेरा अनुभव काफी अच्छा रहा। काफी खुशी मिलती है वहां की कलाकृतियों को देखकर। वहां के महान कलाकारों के कामों को देखकर काफी अच्छा महसूस हुआ। उनका काम करने का तरीका भारतीय कलाकारों से काफी अलग है। अगर हम देशी कला और विदेशी कला की बात करें तो बहुत बड़ा अंतर है दोनों में। वहां सब वास्तविक काम करते हैं। कल्पनापूर्ण कुछ नहीं है। वहां सिर्फ एक मकान है, सामने मॉडल को बैठाया और हू-बहू उसका चेहरा या उसका शरीर बना दिया। हमारे भारत के अंदर राग रागिनियों को चित्रित किया जा रहा था, जो भाव की अभिव्यक्ति है, उसको चित्रित किया जा रहा था। इसमें जो लघु चित्र है, उनको भी चित्रित करने की एक अलग शैली थी। हमारे जो कलाकार हैं, अगर वहां राजा महाराजाओं के चित्र बनाते थे तो वह उन्हें अपने ही एक अलग अंदाज में चित्रित करते थे। राग-रागिनियों को चित्रित करना और जो मौसम है उसको अपने हिसाब से चित्रित करना, यह अपने आप में एक कल्पनापूर्ण कार्य है। विदेश में यथार्थ पर जोर दिया जाता है, जो जैसा दिख रहा है वैसा ही चित्रण कर दिया जाता है। हमारे यहां कला क्षेत्र में छुपे भावों को भी चित्रित करते हैं जो दिखाई न दे रहे हों। मुझे ऐसा लगता है कि जो कला के कार्य की विशेषता है, वह भारतीय कला में ज्यादा झलकती है।

प्रश्न 26 :– आपकी किन किन जगहों पर प्रदर्शनियां हो चुकी हैं ?

उत्तर :– मेरे इन वर्षों में उनकी एकल प्रदर्शनियां मुंबई में जहांगीर आर्ट गैलरी, चीन में ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, कोलकाता, वाराणसी में लगाई गईं और मेरे समूह की प्रदर्शनी, काठमांडू तथा मुंबई के आर्ट कैंप में प्रदर्शित किए गए। मेरी देशभर के महत्वपूर्ण शहरों में अब तक लगभग [illegible] हो चुकी हैं।

प्रश्न 27 :– आप एक अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार होते हुए भी बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में पहले अध्यापक के पद पर थे और वर्तमान समय में ललित कला विभाग के एच.ओ.डी. हैं, तो पहले अध्यापक के पद का और एच.ओ.डी. बनने के बाद तक का सफर कैसा रहा ?

उत्तर :– शुरू में तो मैंने सिर्फ रोजी रोटी के लिए हिंदू विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया था, यह सोच कर कि यहां अध्यापक का कार्य करके जो पैसे मिलेंगे उस का खर्चा निकल आएगा और चित्रकला के लिए कुछ सामान खरीद लिया जाएगा। जब मैं विश्वविद्यालय में बच्चों के साथ काम करने लगा तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि शायद बच्चों को सिखाने के लिए मेरे पास इतना कुछ नहीं है, जितना कि उनसे सीखने का है। क्योंकि उनके काम करने के तरीके ने मुझे बहुत ही प्रभावित किया। बच्चे बेपरवाह, निडर तरीके से काम करते हैं। वह यह नहीं सोचते कि इस रंग के साथ कौन सा रंग अच्छा लगेगा या अच्छा नहीं लगेगा। उनके मन में जो भी आता है, वह उसी हिसाब से रंग भरते रहते हैं। तो बच्चों का यह अंदाज मुझे बहुत पसंद आया और बच्चों से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। उनको ऐसे काम

कार्य देख कर अपने दिन याद आ जाते हैं। जब हम किसी एक ही जगह पर लगातार काम करते हैं तो हमारा वहां के लोगों से, वहां के माहौल से साथ एक लगाव, एक सहानुभूति हो जाती है। विश्वविद्यालय का माहौल इतना अच्छा है। ललित कला विभाग के काफी अध्यापक इतने अच्छे हैं, यह जगह इतनी अच्छी है, मुझे इतना सम्मान मिला कि आज मैं ललित कला विभाग का एच.ओ.डी. के पद पर आकर कार्य कर रहा हूं। यहां के वातावरण ने इतना गहरा प्रभाव मुझ पर डाला है कि मैं चाह कर भी इसे नहीं छोड़ सकता।

पहले मैं एक अध्यापक के रूप में कार्य करता था, परन्तु अब ललित कला विभाग का एच.ओ.डी. बन कर कार्य कर रहा हूं। सम्मान है कि मुझे इस काबिल समझा गया। अब जिम्मेदारियां पद के अनुसार बढ़ गई हैं, पर अच्छा लगता है। जिंदगी में एक नियमितता आई, जैसे– हर रोज सुबह उठना, तैयार होना, खाना खाना, विश्वविद्यालय के लिए जाना, फिर वापस घर आना, उसके बाद अपने स्टूडियो जाना। मेरी जो सुबह से लेकर शाम तक की दिनचर्या है, उसमें एक नियमितता आई जो हमारे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी बहुत ही लाभदायक है।

प्रश्न 28 :– आपसे बात करने के बाद पता चलता है कि आपका स्टूडियो भी है, क्या आप नए उभरते कलाकारों को बताएंगे कि स्टूडियो का सैटअप कैसे करें ? स्टूडियो में क्या–क्या होता है? काम कैसे करते हैं ?

उत्तर :– जी हां, मेरा स्टूडियो भी है। जैसे मैंने बताया है कि विश्वविद्यालय से वापस आने के बाद थोड़ा आराम करता हूं और जब मन करता है तब अपने स्टूडियो में चला जाता हूं। चाहे रात हो या दिन, फिर बनाना शुरू कर देता हूं। चित्रकार बड़ा हो या छोटा उसका एक खुद का स्टूडियो जरूर होता है, जहां वह आराम से अपना काम कर सकता है। जैसे अगर हम स्कूल में पढ़ रहे हैं, या कॉलेज में तो हमारे सामने जो सामान है, पानी हो, रंग हो या कोई सामान जो फैला हुआ है। स्कूल कॉलेज के समय के अनुसार काम करना पड़ता है। डर लगता है कि कैनवास पर या पेपर जिस पर भी आप काम कर रहे हो, वह खराब ना हो जाए, कुछ गिर ना जाए आदि उनको समेटना पड़ता है। लेकिन अगर आप अपने स्टूडियो में है तो आपको यह डर नहीं होता कि सामान फैला हुआ है, या कुछ गिर जाएगा, खराब हो जाएगा या आप बिना किसी बंधन में रहकर कार्य कर सकते हैं। जो आपके मन में छवि है, वह छवि उतार सकते हैं कैनवास पर।

समय की पाबंद नहीं होती, जैसा काम करना है करो उस विषय पर। स्कूल, कॉलेज में विषय दिया जाता है, जिसको लेकर काम करना पड़ता है, लेकिन स्टूडियो में अपने मन में जो आकृति है, वह बनाओ, यह भी डर नहीं होता कि रंग कैसे हुए हैं, उनको समेटना है, वैसे ही छोड़ दें तभी भी कुछ नहीं होगा।

जरूरी नहीं है कि उभरते कलाकारों को कहीं बाहर कमरा लेना ही जरूरी है। स्टूडियो बनाने के लिए स्टूडियो हम अपने घर में भी बना सकते हैं। आज के समय में सबका अलग अलग कमरा होता

है। आप अपने ही कमरे में एक मेज एक टेबल कुर्सी रख सकते हैं, जिस पर किताबें, पेन, पेंसिल, ब्रश, रंग, कागज ऐसी ही जरूरत की सामग्री जो आप प्रयोग करते हैं, तब आप देखेंगे कि आपका कमरा जो पहले एक साधारण कमरा था, वह स्टूडियो जैसा लग रहा है। ऐसा माहौल बन जाएगा ऐसा वातावरण खुद-ब-खुद बन जाएगा। जब आप परेशान हों, मन बेचैन हो, उदास हों, तो ये सब चीजें आपको अपने ओर खींचेंगी, जो उस टेबल पर रखे हुए हैं। आप दुखी हैं, तब भी लिखना चाहेंगे, खुश हैं तब भी धीरे-धीरे अपने भावों को इन रंगों के माध्यम से व्यक्त करना सीख जाओगे। तब आप बिना किसी समय के बकावट के काम करना शुरू कर देंगे, चाहे रात हो, या दिन सवेरा हो, या भोर जब मन करे कर सकते हैं।

प्रश्न 28— अभी आप बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में ललित कला विभाग के एच.ओ.डी. हैं, कुछ सालों बाद आपकी रिटायरमेंट हो जाएगी, उसके बाद क्या आपका कला के प्रति जो प्रेम है, वह कहीं खो जाएगा या आप ऐसे ही कार्य करते रहेंगे?

उत्तर — हाँ, यह तो है कि कुछ सालों बाद मेरी रिटायरमेंट हो जाएगी लेकिन, मेरी कला कहीं नहीं जाएगी। यह नहीं हो सकता, कला जैसे मेरी जान है, आत्मा है, जो मुझे मेरे परमात्मा से जुड़े रखती है। यह हो सकता है कि मैं कलाकृति कैनवास पर एक या दो दिन में पूरा करता हूँ। अब आने वाले समय में मेरे शरीर की ताकत कम पड़ जाए पड़ सकती है। जैसे एक पेंटिंग को पूरा करने में पहले से ज्यादा समय लगे, परन्तु मनोबल बिल्कुल भी कम नहीं पड़ेगा। कला मुझ में छुपी या मैं कला में छुपा हूँ, यह कहना बहुत मुश्किल होगा जो कला के प्रति मेरा प्रेम है वह हमेशा मुझ में समाया रहेगा। मैं समय के साथ आगे बढ़ने की कोशिश करता रहूंगा। ऐसी ही कलाकृतियां बनाता रहूंगा।

उपसंहार

एस. प्रणाम के. सिंह जैसे प्रसिद्ध कलाकार कभी–कभी इस दुनिया में जन्म लेते हैं या यूं कहें कि अवतार लेते हैं तो गलत न होगा। यह सिर्फ व्यक्ति के कलाकार होने पर भी बिल्कुल सही है। कला जगत में उनकी भूमिका हमेशा बनी रहेगी। 20वीं शताब्दी का आरंभ जहां कला जगत में आधुनिक युग की सुबह का प्रकाश लेकर आया।

किसी भी देश की संस्कृति का मूल्य उसके प्राचीन चित्र कला और साहित्य के द्वारा आंका जाता है। प्रकृति और समाज में निरंतर बदलते स्वभाव के साथ देश व अनुभवों व संवेदनाओं के बीच में कला सदैव गुंजन रही है। चित्रकला में चित्रकार रंगों के माध्यम से आकृतियों की सहायता से अपने विचारों को व्यक्त करता है। प्रत्येक कलाकार अपने जीवन के प्राप्त सभी अनुभवों को एक स्थान पर एकत्रित कर अपने चित्रों में समय समय पर उसे स्थापित करता है।

बेशक एस. प्रणाम सिंह के चित्र व कविताओं को समझने के लिए हमें एस. प्रणाम सिंह के व्यक्तित्व के अलग–अलग रूप मान सकते हैं अन्यथा मूलतः तो वह एक चित्रकार ही हैं।

यह बात उनके उन शब्दों से भी सिद्ध कर देती है। एस. प्रणाम सिंह का कहना है कि एक कलाकार के लिए संवेदनशील होना बहुत आवश्यक है। जो दूसरों के दुख को देखकर दुखी भी हो जाए और सुख में मुस्कुराए वही एक संपूर्ण कलाकार है।

एस. प्रणाम सिंह का मानना है कि कैनवास पर जो कुछ भी हम करते हैं वह हमारे भावों की अभिव्यक्ति होती है। इन्होंने कभी भी जल्दी में या कम कार्य नहीं किया। वह हमेशा धीरज भाव से कार्य करते हैं। वह हमेशा आनंद एवं संतुष्टि के लिए चित्रकारी करते हैं, जिन्होंने लगभग सभी माध्यमों में कार्य किया है।

एस. प्रणाम सिंह के कला कार्य पर शोध कर के, अंत में मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची हूं कि प्रणाम सिंह ऐसे" कलाकार हैं जिन्होंने कला जगत में अपनी अलग पहचान बनाई। उनके कार्य करने का तरीका बहुत अनोखा है।

इनकी रचनाओं को देखने से पता चलता है कि वह भारतीय संस्कृति से अभी तक जुड़े हैं। वह स्वतंत्र होकर कार्य करना पसंद करते हैं। भारत की संस्कृति से इनका संबंध बहुत गहरा है। वह अपनी रचनाओं को बड़े सरल ढंग से दिखाते हैं जिसको देखकर कोई भी उसकी तरफ आकर्षित हो जाए।

प्रकृति की गोद में रहकर कार्य करना उन्हें बेहद पसंद है। कला के क्षेत्र तथा अध्यापन के क्षेत्र में अनेक अनुभव के कारण कला तथा दर्शन के प्रति उनके विचार अत्यंत स्पष्ट हैं। उनके पास मार्गदर्शन के लिए आए छात्र सदैव ही उनसे लाभान्वित होते हैं। चित्रकार होने के साथ–साथ एक अच्छे व्यक्ति भी हैं जो दूसरों की भावनाओं को समझते हैं और अपने तरीके से उसको कैनवास के माध्यम से व्यक्त करते हैं, बड़े ही सरल तरीके से।

संदर्भ ग्रंथ सूची

☞ साखलकर, र.वि., आधुनिक चित्रकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, संस्करण : 2008.

☞ कुमार सिंह, डॉ. राकेश, आधुनिक भारतीय चित्रकला का इतिहास (सन् 1947 से 20वीं सदी तक) वसु बुक्स, मेरठ, संस्करण 2012.

☞ गोस्वामी प्रेमचन्द, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, संस्करण : 2007.

☞ वर्मा डॉ. अविनाश और अमित वर्मा, कला एवं तकनीक, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर संस्करण 1998.

☞ चतुर्वेदी डॉ. ममता, पाश्चात्य कला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, संस्करण : 2009.

☞ प्रताप डॉ. रीता, भारतीय चित्रकला का इतिहास प्रथम संस्करण 2008.

☞ द्विवेदी, डॉ. प्रेमशंकर, भारतीय चित्रकला को जानने की पद्धति संस्करण 2007.

☞ शर्मा, लोकेश चन्द्र, भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, कृष्णा ऐजुकेशन, पब्लिकेशन 1942.

☞ प्रदीप किशन, भारतीय कला, प्रथम संस्करण : 2007.

☞ गिरेन्द्र राय, समकालीन भारतीय कला प्रकाशक निर्मल बुक एजेन्सी विश्वविद्यालय परिसर, कुरुक्षेत्र संस्करण : 2003.

☞ विनोद भारद्वाज बृहद आधुनिक कला कोश

☞ मागो, प्राण नाथ, भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्ष्य, इण्डिया, नेशनल बुक ट्रस्ट, नेहरू भवन, 2006.

☞ अग्रवाल डॉ. गिर्राज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, आगरा : संजय पब्लिकेशन्स, 2006.

☞ भारद्वाज, विनोद, बृहद आधुनिक कला कोश, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2006.

☞ द्विवेदी, डॉ. प्रेमशंकर, भारतीय चित्रकला को जानने की पद्धति,बी.एच.यू, वाराणसी : कला प्रकाशन, 2011.

☞ सिंह, डॉ. राकेश कुमार, शिल्प के सिद्धांत, इलाहाबाद : साहित्य संगम, 2016.

☞ गोस्वामी, डॉ. प्रेम चंद, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 1996.

☞ (m.jagran.com) भारतीय कला का इतिहास https://m.jagran.com/

☞ https://www.hindikiduniya.com/ कला और संस्कृति हमें कैसे एकजुट करती है।

चित्रों के बारे में

चित्र संख्या 1 :–

यह चित्र वर्ष 2019 में उत्तम सिंह ने पेपर पर पानी रंग का प्रयोग करते हुए " Selfie Love Yourself" शीर्षक चित्र बनाया। इस चित्र में स्त्री आकृति को सेल्फी लेते हुए दिखाया गया है। जिसका शीर्षक " Selfie Love Yourself" है। इसका अर्थ है 'सेल्फी खुद से प्यार'। इस स्त्री आकृति को खड़ा हुआ दिखाया गया है, जो खुद की सेल्फी ले रही है, अकेले। इस चित्र में ' बहुत प्यारे और गहरे रंगों ' का प्रयोग किया गया है जैसे– पीला, संतरी, काला, भूरा, बैंगनी, लाल और काली–सफेद पर पीला इत्यादि।

चित्र संख्या 2 :–

इस चित्र को वर्ष 2020 में बनाया गया। उन्होंने "Chhattigarhi Beauti" शीर्षक नाम दिया व इस कलाकृति का साइज 122 x 145 सेंटीमीटर है। इस चित्र को उन्होंने कैनवास पर बनाया है। इस कलाकृति में तीन स्त्रियों ' को दिखाया गया है। तीनों स्त्रियों को खड़ा हुआ दिखाया गया। पहले स्त्री ने गुलाबी, संतरी रंग की साड़ी पहनी हुई है। दाएं हाथ को होंठ पर रखा हुआ है। माथे पर बिंदी, सिर पर पल्लू लिए हुए, बाएं और देखते हुए दिखाया गया है। दूसरी स्त्री को भी बाएं और देखते हुए दिखाया गया है। बाएं हाथ को नीचे और दाएं को ऊपर उठाए हुए दिखाया गया है। ब्लाउज को गुलाबी रंग का दिखाया गया है, जिसमें हैंग नीले रंग की (पट्टी) दिखाई गई है। पिंक रंग की साड़ी डाली हुई है, वह भी बाईं और देख रही है। तीसरी आकृति जिसमें स्त्री को नीचे देखते हुए और पल्लू पर दाएं हाथ रखे हुए दिखाया गया है। बाएं हाथ को नीचे की ओर दिखाया है। ब्लाउज काले रंग का व साड़ी को बैंगनी रंग व साड़ी के आंचल को संतरी रंग का दिखाया गया है। इस कलाकृति में चेहरे, आंखें, नाक, होंठ, सभी को सुंदर तरीके से बनाया गया है। रंगों के द्वारा गहराई को दर्शाया गया है।

चित्र संख्या 3:–

यह कलाकृति कैनवास पर बनाई गई है तैल रंग से सन् 1988 में। इसका शीर्षक है "Unveiling the Beauty"। इस आकृति में एक स्त्री दिखाई दे रही है, जिसमें स्त्री सामने की ओर देख रही है। दाएं हाथ से पल्लू को थामे हुए दिख रही है। माथे पर पीले रंग की बिंदी लगी हुई है। हाथों में चूड़ियां जिसका रंग भी पीला है स्त्री ने भी पीले रंग की साड़ी पहनी हुई है। आंखें मोटी, होंठों को भी मोटा दिखाया गया है जिस पर प्रकाश पड़ता हुआ दिखाई दे रहा है। आंखों में प्रेम दिखाई दे रहा है। नाक पर प्रकाश व होंठों में मंद मुस्कान को दिखाया गया है। चित्र में रेखाओं का पूर्ण रूप से उपयोग किया गया है जैसे तिरछी, सीधी व घुमावदार आदि।

चित्र संख्या 4:–

इस कलाकृति का शीर्षक "Looking Back" है। इसको कैनवास पर बनाया गया है। इसका साइज 28 x 28 इंच है। इस चित्र में स्त्री आकृति को पीछे मुड़ते दिखाया गया है। इस आकृति में नारी की साड़ी काले रंग की दिखाई गई है, माथे पर बिंदी लगी हुई है, बाल खुले हुए हैं। बाएं हाथ को कमर पर रखे हुए दिखाया गया है। छाया और प्रकाश का सुंदर तरीके से प्रयोग किया गया है। इस चित्र में पीछे लाल, सोनरी, भूरे, काले, सफेद रंग से रंगा गया है। चेहरे का रंग हल्का ये बैंगनी रंग से बनाया गया है।

चित्र संख्या 5:–

इस कलाकृति का शीर्षक "Romancing in Rainy Season" है और यह 2011 में 3 x 4 फुट की बनाई गई है। इस कलाकृति में कैनवास पर एक्रेलिक रंग का प्रयोग किया गया है। स्त्री दरवाजे पर खड़ी हुई पीछे की ओर देख रही है और खुबसूरत लग रही है, ऐसा उसके चेहरे के भाव से नजर आ रहा है। मांग में सिंदूर लगाया हुआ है। माथे पर बिंदी, गले में मंगलसूत्र, हाथों में चूड़ियां आदि दिखाई दे रही है। साड़ी पीले रंग की है। पीछे वातावरण बड़ा मस्त दिखाया गया है। बादल सफेद और काले रंग के बनाए गए हैं। नवीन सोटी, गोरा बदन, मजबूत शरीर, हाथ में छाता। आंखों में प्रेम दिखाई दे रहा है। चेहरे पर सभी प्रकार की स्त्री का गहना है। नाक पर प्रकाश, होंठों में मंद मुस्कान को दिखाया गया है।

चित्र संख्या 6:–

इस कलाकृति का शीर्षक "Indian Beauty" है, जो कि एक्रेलिक रंग से कैनवास पर बनाई गई है। इसका साईज 2.5 x 3 फीट का है जो कि 2011 में बनाई गई है। इस आकृति को सुंदर तरीके से बनाया गया है। इस चित्र में एक स्त्री नजर आ रही है जो कि साईड और देख रही है। उसका चेहरा गोल बनाया गया है, लाल बिंदी माथे पर लगाई है, मांग में सिंदूर जिसका रंग लाल है। कलाकृति में छाया और प्रकाश का अच्छा प्रयोग किया गया है। चेहरे को पेंट रंग से बनाया गया है। सिर पर पल्लू रखा हुआ है। पृष्ठभूमि को पीले, काले, बैंगनी रंग से रंगा हुआ है।

चित्र संख्या 7:–

इस कलाकृति का शीर्षक "In front of Naga Sadhu Tent in Kumbh Mela" जो 2014 में बनाई गई है। इस कलाकृति में चार आकृतियां दिखाई गई हैं, जिसमें दो साधु बैठे हुए हैं और एक लड़का जिसकी आयु लगभग 5 या 6 साल होगी। उसने अपनी गोद में 1 या 2 साल के बच्चे को लिया हुआ है। दोनों साधु उस बच्चे की ओर देख रहे हैं। इस चित्र को देखने से लग रहा है कि जैसे यह मंदिर का दृश्य है। एक साधु के पीछे दीवार पर सोनेरी रंग दिखाई दे रहा है। उस बच्चे को देख

कर लग रहा है कि कमरा चेहरे में घुस रहा है। छोटे बच्चे ने अपने मुंह में अंगूठा डाला हुआ है जैसे उसे भूख लग रही है। चेहरे पर छाया प्रकाश का अच्छे तरीके से प्रयोग किया गया है। यह कलाकृति पूजा पाठ से जुड़ी हुई है। एक साधु के पास त्रिशूल भी दिखाई दे रहा है।

चित्र संख्या 8:–

इस कलाकृति का शीर्षक "Captivating Mood" जिसका साइज 26 X 26 इंच है। यह कैनवास पर बनाई गई है। दरवाजे पर एक स्त्री खड़ी हुई है चित्र को देख कर लग रहा है कि वह घर से बाहर जा रही है। उसके चेहरे के भाव देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे वह मानसिक विचार में है। चेहरे को दो रंग से बनाया गया है। पृष्ठभूमि को भी काले और दो रंग से बनाया गया है। स्त्री की मांग में सिंदूर है, माथे पर बिंदी व उसकी उंगली पर भी लाल रंग नजर आ रहा है।

चित्र संख्या 9:–

इस कलाकृति का शीर्षक "Cool Mood" है जो एक्रेलिक रंगों से सन् 2010 में बनाई गई है और इसका साइज 15.5 X 18 इंच है। इस कलाकृति में स्त्री के चेहरे को गोल्डन रंग से बनाया गया है, जिसमें छाया और प्रकाश को बड़ी अच्छे ढंग से दिखाया गया है। नाक मोटी, आंखें भी मोटी जिनको बहुत सुंदर ढंग से बनाया गया है। मांग में सिंदूर, जो मांग से माथे पर भी नजर आ रहा है। सिंदूर लाल रंग का है। बाएं हाथ पल्लू से ढका हुआ है। ब्लाउज का लाल रंग है। पृष्ठभूमि को सफेद रंग का दिखाया गया है जिसमें कहीं–कहीं पर काला रंग व आसमानी रंग नजर आ रहा है।

चित्र संख्या 10:–

इस कलाकृति का शीर्षक "A devotees" है जो एक्रेलिक रंग से कैनवास पर बनाई गई है। इसका साइज 26.5 X 66 सेंटीमीटर है, जो सन 2000 में बनाई गई है। इस कलाकृति में स्त्री के चेहरे का रंग हल्का हरा दिखाया गया है। हाथ में लोटा, जो गर्दन के पास नजर आ रहा है। स्त्री ने हल्दी रंग की साड़ी डाली हुई है। उसकी नजर सामने की ओर व बांए हाथ पीछे की ओर है। माथे पर लाल बिंदी लगी हुई है। हाथों में चूड़ियां पहनी हुई हैं। पीछे की ओर कुछ सीढ़ियां नजर आ रही हैं, वातावरण धार्मिक नजर आ रहा है। पीला, संतरी, नीला, लाल, हरा, भूरा, काला, सफेद आदि गहरे रंगों का प्रयोग बड़ी कुशलता ढंग से किया गया है।

चित्र संख्या 11:–

इस कलाकृति का शीर्षक "A Devotees" है जो एक्रेलिक रंगों से बनाई गई है सन 2000 में। इस कलाकृति में स्त्री दाएं हाथ से पल्लू को पकड़े हुए और बाएं हाथ में पूजा की थाली लिए हुए

है। बालों का जूड़ा बना हुआ है। गर्दन में कुछ डाले हुए है। स्त्री ने लाल रंग की साड़ी पहनी हुई है। उसमें कहीं–कहीं पर मैजन्टा रंग का टेक्सचर दिया गया है। चेहरे पर हल्के सफेद व हल्के पीले रंग से बनाया गया है जिसको देखकर सौम्य भाव का प्रतीत हो रहा है। इस कलाकृति में एक नारी की कामकाज की प्रतीत आत्मा दिखाई दे रही है। उसकी आंखें चेहरे पर झलक रही है। पृष्ठभूमि पर बहुत सारे रंगों का प्रयोग किया गया है जिनमें काला, पीला, भूरा, लाल, सफेद रंगों का प्रयोग बड़े ही अच्छे तरीके से किया गया है। चेहरे पर छाया प्रकाश का प्रभाव भी बहुत अच्छे ढंग से दिखाया गया है।

चित्र संख्या 12:–

इस कलाकृति का शीर्षक "Women Behind the Door" है जो एक्रेलिक रंग से सन् 2003 में बनाई गई है। इस कलाकृति में स्त्री अपने घर में दरवाजे को पकड़े हुए खड़ी है। दाएं हाथ से दरवाजे के आधे हिस्से को पकड़े हुए और बाएं हाथ को साड़ी के पल्लू पर रखे हुए है और उसकी नजर सामने की ओर देख रही है। हाथों में चूड़ियां दिखाई पड़ रही है। पीछे के खिड़की को भूरे रंग से बनाया गया है, खिड़की भी दिखाई दे रही है। पृष्ठभूमि पर लाल, भूरा, काला, गहरे रंगों का प्रयोग किया गया है। आंखें लंबी और मोटी बनाई गई हैं जो अपनी ओर खींच रही हैं। इसमें सुंदर तरीके से भेद का दिखाया गया है। रंगों को द्वारा गहराई को दिखाया गया है, जो हमें ध्यान लगाने को प्रोत्साहित करती है। हाव–भाव साफ दिखाई दे रहे हैं।

चित्र संख्या 13:–

इस कलाकृति का शीर्षक "Village Women" है जो तैलीय रंगों से सन् [illegible] में बनाई गई है। इस कलाकृति में एक स्त्री खड़ी हुई है जिसका दांया हाथ कमर पर और बांया हाथ घुटने पर दिखाई दे रहा है। इस कलाकृति में कलाकार ने यथार्थवाद के साथ अमूर्त कला का भी प्रयोग किया गया है। वह स्त्री बाईं ओर देखकर कुछ सोच रही है। चेहरे के हाव भाव देखकर लग रहा है कि वह गंभीर अवस्था में खड़ी हुई है। पृष्ठभूमि पर कुछ झोपड़ी नजर आ रही है, जिसका रंग कहीं–कहीं पीले, भूरे, काले रंग से बनाया गया है।

चित्र संख्या 14:–

इस कलाकृति का शीर्षक "Village Women" है जो एक्रेलिक रंग से कैनवास पर बनाई गई है सन [illegible] में। इस कलाकृति में कलाकार ने स्त्री को सिर पर लकड़ी का बोझ उठाए हुए दिखाया गया है। बाएं हाथ में एक लाठी लिए हुए और दूसरे हाथ से बोझ को पकड़े हुए सामने चल रही है अपनी मंजिल की ओर। आसपास का माहौल देखकर लग रहा है जैसे वह जंगल से लकड़ी ला रही है। स्त्री की साड़ी को ऊंचा बनाया गया है। इसमें आकार मेहनत नजर आ रहा है, साड़ी पर एक [illegible]

भी बनाया गया है। ब्लाउज का रंग पीला व साड़ी का रंग हरा, जिसमें गहरे रंगों का प्रयोग किया गया है। कहीं–कहीं पर जैसे काजल, गहना, नीला, हल्का पीला चेहरे को भूरे रंग से बनाया गया है। इस आकृति को देखते ही इसकी ओर खींचे चले जा रहे हैं। सरल शब्दों में बोले तो यह आकृति अपनी ओर आकर्षित कर रही है।

चित्र संख्या 15 :–

इस कलाकृति का शीर्षक "The Women & the Cow" है जो कि एक्रेलिक रंग से बनाई गई है सन 1999 में। यह आकृति एक स्त्री की है जो अपने बाएं हाथ से गाय को थामे हुए खड़ी है व अपने चेहरे के आधे हिस्से को ढके हुए। दाएं हाथ को कमर पर मोड़ कर रखा हुआ है। माथे पर बड़ी बिंदी लगाई गई है जिसका रंग लाल है व हाथों में चूड़ियां और नज़र सामने की ओर है। चेहरे को रंग से बनाया गया है। ब्लाउज गहरे हरे रंग से बनाया गया है। कहीं कहीं पर काले रंग का भी प्रयोग किया गया है। साड़ी लाल व पीले दो रंगों से बनाई गई है। पृष्ठभूमि पर मंदिर बनाया गया है, स्त्री के साथ एक गाय भी है जिसका रंग भूरा है। मंदिर को संतरी रंग से बनाया गया है। पृष्ठभूमि पर बहुत रंगों का प्रयोग किया गया है जैसे लाल रंग, सफेद, काला, हरा व भूरा।

चित्र संख्या 16:–

इस कलाकृति का शीर्षक "Solitude" है जो कि एक्रेलिक रंग से बनाया गया सन् 2002 में। इस कलाकृति का साइज 76 x 91 सेंटीमीटर है। इस कलाकृति को देख कर लग रहा है जैसे कि स्त्री किसी सोच में डूबी हुई है, दाएं हाथ ठोडी पर है और स्त्री बैठी हुई है। मांग में सिंदूर, कान में झोंका, बालों का जूड़ा दिख रहा है। हाथों में चूड़ियां व खोई खोई आंखें जैसे बहुत गहरी सोच में डूबी हुई है। चोली का रंग लाल और साड़ी का रंग आसमानी और हरा। साड़ी का रंग बहुत ही सुंदर लग रहा है जो अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। ब्लाउज का रंग संतरी है जिसमें लाल रंग की धारि नज़र आ रही है। चेहरे को इतने प्यारे तरीके से बनाया है मानो कि एकटक देखती ही रहो।

चित्र संख्या 17:–

इस कलाकृति का शीर्षक "Aastha-II" है जो कि एक्रेलिक रंगों से सन 2001 में बनाई गई है। इस कलाकृति में स्त्री की आंखें बंद है। वह पेड़ पर झुकी हुई व हाथ से पेड़ को पकड़े हुए है। पेड़ पर संतरी, लाल, पीले रंग के धागे बांधे हुए हैं, जिसे देख कर लग रहा है कि मानो वह पीपल के पेड़ की पूजा कर रही है। पौराणिक धार्मिक पूजा व महत्व को दर्शा रही है। भारतीय संस्कृति, भारत की स्त्रियों की भावनाओं को उनकी आस्था को दिखा रही है जो कि वर्तमान समय में भी अपनी संस्कृति से जुड़ी

हुई है। साड़ी का रंग बैंगनी और ब्लाउज का रंग हरा बनाया गया है। पृष्ठभूमि पर हरे रंग के कुछ पेड़ दिखाई दे रहे हैं। आसमान सफेद रंग का बनाया गया है।

चित्र संख्या 18:–

यह कलाकृति कैनवास पर एक्रेलिक रंग से बनाई गई है सन् 2018 में। व इसका शीर्षक "Artist at Work" है। इसमें कलाकार प्रभात सिंह ने गंगा आरती का दृश्य को प्रदर्शित है बनारस के घाट को। भारतीय संस्कृति में गंगा आरती का अलग ही महत्व है। हिंदू धर्म में गंगा आरती को विशेष महत्व दिया जाता है। पृष्ठभूमि में गंगा दिखाई गई है जिसमें नाव भी बनाई गई है। स्त्री के हाथ में एक दीप दिया गया है, उसकी श्रद्धा भाव को दिखाया गया है जिसको देखकर ही उसकी खुशी का पता चल रहा है कि वह बहुत खुश है। ब्लाउज बैंगनी, व साड़ी हल्दी रंग की बनाई गई है, जिसमें प्रकाश को दिखाने के लिए पीले व सफेद रंग का प्रयोग किया गया है। स्त्री के पीछे एक और आकृति नजर आ रही है जो गंगा में बैठी हुई अंकित हो रही है।

चित्र संख्या 19:–

इस चित्र में इसका शीर्षक "Darking at ISKU", Khairagarh, Chhattisgarh है व यह सन् 2016 में बनाई गई है। इस कलाकृति में एक स्त्री अपने बालों को संवारते हुए दिखाई दे रही है। उसके दोनों हाथ सिर के पीछे की ओर बनाए गए हैं जैसे कि हाथों में हार, कमर में हार नजर आ रहा है। ब्लाउज का रंग पीला, साड़ी का बैंगनी व उस पर लाल व पीले रंग का मिश्रण नजर आ रहा है। पृष्ठभूमि को बड़े ही सुंदर तरीके से बनाया गया है जिसमें प्यारे–प्यारे रंगों का प्रयोग किया है।

चित्र संख्या 20:–

यह कलाकृति कैनवास पर बनाई गई है जिसका शीर्षक "Flower Seller" है व यह एक्रेलिक रंगों से सन् 2017 में बनाई गई है। इस कलाकृति में स्त्री के शरीर में लय नजर आ रही है। कमर पर फूलों की टोकरी लिए हुए है, जो दोनों हाथों से पकड़ी हुई है। होंठों पर मुस्कान, नाक पर प्रकाश, चेहरे की आंखें जिनमें पर प्रकाश नजर आ रहा है। मंगलसूत्र पहने हुए, साड़ी लाल रंग की है। टोकरी में फूल है। इस कलाकृति में गहरे रंगों का प्रयोग किया गया है। आंखों से झुकी वह पीछे, व गर्दन थोड़ी झुकी हुई है बनाई गई है। पृष्ठभूमि में गहरे रंगों का प्रयोग किया गया है। काले व कहीं–कहीं पर भूरे रंग, हरे रंग, लाल आदि का प्रयोग किया गया है।

DEMO DETAILS & PICTURES

Demo at faculty of Visual Arts, Bhu, Varanasi in 2016.

Demo in Australia in 2017.

Partrait Demo at JJ School of Art, Mumbai, in 2015.

Partrait Demo in Soft Pastel, Shimla Univeristy in 2013.

Demo at Patna Art Collage in 2013

चित्र संग्रह सूची

क्र.सं.	शीर्षक	माध्यम
01	Selfie Love Yourself	Water Colour
02	Chhattisgarhi Beauty	एक्रेलिक रंग
03	Unveiling the Beauty	तैल रंग
04	Looking Back	एक्रेलिक रंग
05	Romancing in Rainy Season	एक्रेलिक रंग
06	Indian Beauty	एक्रेलिक रंग
07	In Front of Naga Sadhu Tent in Kumbh Mela	एक्रेलिक रंग
08	Captivating Moo	एक्रेलिक रंग
09	Cool Mood	एक्रेलिक रंग
10	A Devatee	एक्रेलिक रंग
11	A Devatee in Red Saree	एक्रेलिक रंग
12	Women Behind the Door	एक्रेलिक रंग
13	Village Women	तैल रंग
14	Village Women	एक्रेलिक रंग
15	The Women & the Cow	एक्रेलिक रंग
16	Solitude	एक्रेलिक रंग
17	Aashta-II	एक्रेलिक रंग
18	Artist at Work	एक्रेलिक रंग
19	Working at ISKU, Khairagarh, Chhatisgarh	एक्रेलिक रंग
20	Folower Seller	एक्रेलिक रंग

Selfie Love Yourself - Water Colour

Chhattisgarhi Beauty - [illegible]

Unveiling the Beauty - [illegible]

Looking Back

Romancing in Rainy Season - [illegible]

Indian Beauty - [illegible]

In Front of Naga Sadhu Tent in Kumbh Mela - [illegible]

Captivating Moo - [illegible]

Cool Mood - [illegible]

A Devotee - [illegible]

A Devotee in Red Saree - [illegible]

Women Behind the Door -

Village Women - [illegible]

Village Women - [illegible]

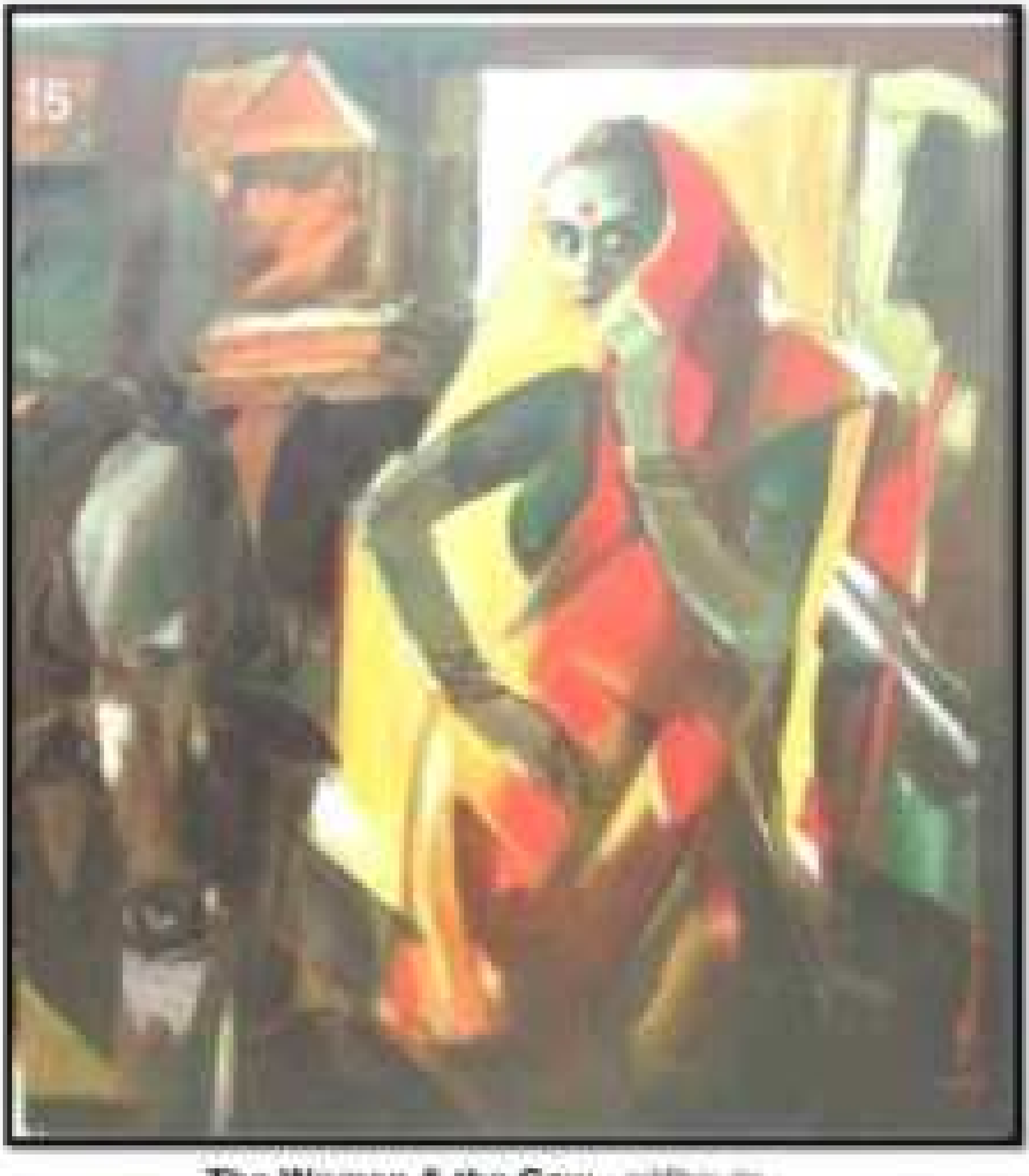

The Women & the Cow - [illegible]

Solitude -

Aashta-II - [illegible]

Artist at Work -

Working at ISKU, Khairagarh, Chhatisgarh - [illegible]

Follower Seller , [illegible]

“चित्रकार : मदन लाल जी की कलात्मक अभिव्यक्ति”

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु – शोध प्रबन्ध

विभागाध्यक्षा
श्रीमति संतोष
ललित कला विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा0)

निर्देशिका
श्रीमति किरण खेवरिया
ललित कला विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा0)

शोधार्थी
यशस्विनी
स्नातकोत्तर
(अन्तिम वर्ष)

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद मारकण्ड़ा

2021—2022

चित्रकार ''मदन लाल'' के साथ साक्षतकार

ललित कला विभाग,

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद (मा0.)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ललित कला स्नातकोत्तर, (ड्राईंग एण्ड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा, यशस्विनी ने ''चित्रकार मदन लाल जी की कलात्मक अभिव्यक्ति'' शीर्षक पर मेरे निर्दशन में प्रस्तुत लघु – शोध प्रबंध को पूरा किया है। इसने पूरी मेहनत और लग्न से उक्त शोध कार्य सम्पन्न किया है। इस महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य पहले नहीं किया गया है।
हम इसके उज्जवल भविष्य एवं सफल जीवन की कामना करते है।

दिनांकः **प्राचार्य**

(डॉ0. श्रीमती सुनीता पाहवा)

" प्रमाण पत्र "

मैं यशस्विनी, यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध ''चित्रकार मदन लाल जी कलात्मक अभिव्यक्ति'' विषय मेरे स्वयं के प्रयास से किया गया है। मैनें इसे पूरी मेहनत और लग्न से सम्पन्न किया है। यह अप्रकाशित लघु शोध है। लेखाकन के कम में प्रयुक्त आवश्यक सामग्री तथा निर्दिष्ट कर दी गई है।

निर्देशका **शोधकर्त्री**

श्रीमति किरण खेवरिया **यशस्विनी**

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद (मा0)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ललित कला स्नातकोत्तर, (ड्राईग एण्ड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा, यशस्विनी ने ''चित्रकार मदन लाल जी की कलात्मक अभिव्यक्ति'' शीर्षक पर लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबंध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ। इसने पूरी मेहनत और लग्न से यह लघु–शोध कार्य सम्पन्न किया है।
हम इसके उज्जवल भविष्य एवं सफल जीवन की कामना करते है।

दिनांकः...............

श्रीमति संतोष

एसो. प्रोफेसर

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन

प्रथम अध्यायः	**पृष्ठ संख्या**
– कला का संक्षिप्त परिचय	01 – 10
द्वितीय अध्याय :	
– मदन लाल जीवन परिचय	11 – 23
– शिक्षा	
– कला यात्रा	
– उपलब्धियां	
तृतीय अध्यायः	
– मदन लाल के चित्रों की विषय वस्तु	24 – 28
– मदन लाल की चित्रण पद्वति	
– चित्रों में प्रयुक्त सामग्री	
चतुर्थ अध्यायः	
– मदन लाल के साथ साक्षात्कार	29 – 35
पंचम अध्याय :	
– कलाकृतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	36 – 42
– उपसंहार	43 – 43
– संदभ ग्रंथ सूची	44 – 44
– चित्र संग्रह सूची	45 – 46
– चित्र सूची	47 – 76

प्राक्कथन

सौंदर्य की अभिव्यक्ति द्वारा सुख प्रदान करने वाली वस्तु का नाम कला है। कला को सरल शब्दों में ''सत्यम शिवम् सुंदरम'' कहा गया है। यद्यपि कला वह है जो आत्मा को परमात्मा में लीन करती है। कला का विकास उदात्त शिखरों को स्पर्श करता हुआ समकालीन कला तक पहुंचा है। कला कलाकार के लिए भावों को व्यक्त करने का माध्यम होता है।

कला समाज का दर्पण है तथा समाज के सभी पक्षों के प्रभाव से कला अछूती नहीं रह सकी। समकालीन कला के अविष्कार से नवीनता की ओर आते आते इससे कई कलाकार जुड़े हैं, जिसमें समकालीन चित्रकार मदनलाल भी शामिल है। उन्होनें विभिन्न माध्यमों से भावों को व्यक्त करने के लिए चित्रकला को अपना माध्यम बनाया और इनकी चित्रकला को भी मैंने अपने शोध कार्य के रूप में अपनाया है।

उनकी कला को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करना बहुत कठिन है। फिर भी फिर भी मेरा यह एक प्रयास है। इस लघु शोध प्रबंध के लिए सामग्री एकत्रित करना, उसको नियमित करना मेरे लिए उत्साह का कार्य रहा है। इस लघु शोध को मैंने पांच अध्यायों में प्रस्तुत किया हैः–

☛ **प्रथम अध्याय** में कला का संक्षिप्त परिचय, कला का इतिहास, आधुनिक कला का प्रांरभ, समकालीन आधुनिक कला का वर्णन करने का प्रयास किया है।

☛ **द्वितीय अध्याय** में मदन लाल के जीवन परिचय, शिक्षा, कला यात्रा और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें उनके जीवन की अनेकों उपलब्धियों का दर्शाया गया है। इसमें पुरस्कार और प्रदर्शनियां भी शामिल है।

☛ **तृतीय अध्याय** में मदनलाल के चित्रों की विषय वस्तु और उनकी चित्रण पद्वति, चित्रों में प्रयुक्त सामग्री की ब्याख्या की गई है। उनके चित्रों में रंगो का एक दंगा रहता है।

☛ **चतुर्थ अध्याय** में मदनलाल के स्टूडीयों में जाकर उनसे वार्तालाप करके प्रश्नों के उत्तरों की व्याख्या की गई है। उन्होंने अपनी चित्रण पद्धति और सामग्री के विश्य में जो भी बताया है उसका वर्णन किया गया है।

☛ **पंचम अध्याय** में उनकी कलाकृतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें उनके चित्रों जैसे जीवन का योग, देवी, बुद्वा, अर्बन फुलकारी, दा बुल आदि का वर्णन किया गया है।

अंत में उपसंहार, संदर्भ ग्रंथ सूची तथा चित्र संग्रह सूची को प्रस्तुत किया है।

शोधकर्त्री

यशस्विनी

आभार

मेरे इस लघु शोध कार्य को करने में जिन महानुभावों का सहयोग रहा है, उनके प्रति आभार व्यक्त किए बिना मेरे इस शोध कार्य का आलेख संपूर्ण नहीं होगा। मैं उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझती हूं, जिनकी प्रेरणा, सहयोग और प्रोत्साहन से मैं इस कार्य को साकार रूप दे पाई।

मैं प्राचार्य महोदय आदरणीय डॉ0. सुनीता पहावा जी का भी आभार प्रकट करती हूं जो ललित कला विभाग का सहयोग कर रही हैं।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अंतर्गत स्थित 'आर्य कन्या महाविद्यालय' शाहाबाद मारकंडा के ललित कला विभाग के अध्यक्ष आदरणीय श्रीमती संतोष जी के प्रति आभार व्यक्त करती हूं, जिन्होंने पूरे शोध कार्य के दौरान मेरा मार्गदर्शन किया।

मैं आदरणीय चित्रकार मदनलाल जी का भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने अपना मूल्यवान समय निकालकर अपने विचार साझा किए तथा शोध के निष्कर्ष में राह दिखाई।

मैं अपने आदरणीय गुरु श्री महेश धीमान व आदरणीय सहायक प्रोफेसर श्रीमती किरण खेवरिया के प्रति भी कृतज्ञ हूं, जिन्होंने इस कार्य के दौरान मेरी शंकाओं और समस्याओं का निदान किया तथा निरंतर प्रोत्साहित करते रहे। मैं अपने मित्रों और सहपाठियों की भी हृदय से भी आभारी हूं।

डॉक्टर पवन कुमार विभागा अध्यक्ष ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र की धन्यवादी हूं कि उन्होनें इस विषय को सफलतापूर्वक चलाने में आर्य कन्या महाविद्यालय शाहबाद मारकंडा की सहायता की।

इसके साथ साथ में अपने परिवारजनों का भी हृदय की गहराइयों से आभार प्रकट करती हूं, क्योंकि उनके सहयोग के कारण ही में इस शोध कार्य को संपूर्ण करने में समर्थ हो पाई हूं। मैं अपने सभी गुरुजनों के प्रति श्रद्धा भाव प्रस्तुत करती हूं। इन्हें की प्रेरणा व निर्देशन से यह शोध कार्य संपन्न हो सका। यदि इस लघु शोध से पाठक वर्ग का कुछ भी लाभ हुआ तो मैं इसे अपना सफल प्रयास मांनूगी।

शोधकर्त्री

यशस्विनी

प्रथम अध्याय

(कला का संक्षिप्त परिचय)

कला का संक्षिप्त परिचय

कला शब्द एक असीम शब्द है जिसकी कोई सीमा नहीं है। इसलिए कला की व्याख्या करना इतना सरल नहीं है। मनुष्य के जन्म से पहले भी कला संसार में विद्यमान थी। प्रकृति से हमें अनेक प्रकार के रंग, प्राकृतिक दृश्य एवं विभिन्न रचनाएं देखने को मिलती हैं।

प्रागैतिहासिक काल से ही मानव ने अपने आसपास के वातावरण से प्रभावित होकर अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए कला को गुफाओं और चट्टानों पर अंकित किया जो कि कला का प्रारंभिक रूप था। संसार में कला संचार का सबसे सरल रूप है जिससे किसी भी कठिन विचार को कला के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया जाता है।[1]

कला आंतरिक भावनाओं विचारों की अभिव्यक्ति है जिसे रचनात्मक रूप से विभिन्न तरीकों से व्यक्त किया जाता है जिसमें एक दृष्टिकोण और कौशल की आवश्यकता होती है। मनुष्य के दिमाग में चल रहे विचारों को जब वह किसी भी माध्यम द्वारा एक स्तर पर चित्रित करता है, उसमें कला की प्रस्तुति होती है। मनुष्य भाव को दो तरह से व्यक्त कर सकते हैं – हमारे मन में कौन सा भाव है– दुखः या खुशी। दूसरा हम किसी भी दृश्य को देखकर हमारे मन में जो भाव उत्पन्न होता है कि वह किस से संबंध रखता है जैसे – बादल, झरना, हंसों का जोड़ा, मछली जैसी आंख, कमल जैसे नयन इत्यादि।

कला मन में दबी हुई भावनाओं का व्यक्त रूप है। शुरू से ही कला के प्रति मानव के हृदय में स्वाभाविक आकर्षण रहा है, कला को सबसे पहले आकार दिया जाता है, उसके बाद उसे रंगीन बनाया जाता है। हम जिन भावों को किसी भी कारण से व्यक्त नहीं कर पाते कला में रंगो द्वारा हम उन्हें व्यक्त करने में सफल हो जाते हैं।

कला शब्द की परिभाषा से पूर्व 'कला' शब्द का अर्थ जानना भी अति आवश्यक है। अंग्रेजी भाषा में 'कला' शब्द का पर्यायवाची 'आर्ट' शब्द है जो पर्याप्त नवीन है। 'आर्ट' शब्द 'अर' धातु से बना है जिसका अर्थ है– बनाना, पैदा करना या ठीक करना। लैटिन भाषा में 'आट' शब्द अर्थ 'आर्स' या 'आर्टम' से उत्पन्न माना जाता है।[2]

संस्कृत भाषा में 'कल' धातु से 'कला' शब्द की उत्पत्ति मानी जाती है, जिसका अर्थ होता है– प्रेरित करना, शब्द, रचना, बजाना, ध्वनि उत्पन्न करना इत्यादि माना जाता है।

कला की उत्पत्ति संस्कृत के विद्वानों ने 'कत्' धातु से मानी है जिसका अर्थ 'सुंदर', 'मधुर , कोमल या सुख लाने वाला है।

1 लोकेश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला, इण्डियाः (कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 1970), 7.
2 लोकेश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला, इण्डियाः (कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 1970), 7.

कुछ विद्वानों ने इसे अर्थात् आनंद लाने वाला माना जाता है। शिल्प हुनर या कार्य कौशल आदि के अर्थ में कला शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम भरतमुनि के नाट्क शास्त्र में पहली शताब्दी के लगभग पहले 'कला' शब्द का प्रयोग किसी को बनाने या प्रदर्शन देते समय किसी कौशल्य निपुणता को संदर्भित करने के लिए किया जाता था। लेकिन भारतीय परंपरा में 64 प्रकार की कलाओं का उल्लेख मिलता है। नृत्य, पेंटिंग और मूर्तिकला जैसी कलाओं के अलावा खाना बनाना, माला पहनाना, आभूषण बनाने की कला, इत्र तैयार करना, विभिन्न प्रकार के पेय बनाना, सिलाई करना, पहेलियों को सुलझाना, बढ़ईगिरी, कविता पढ़ना और ऐसे सभी गतिविधियों को जिनके तहत लाया गया था। बाद में, उनमें से 5 कलाओं को ललित कला कहा गया– ललित कला, संगीत, नृत्य, रंगमंच, चित्र कला और वास्तुकला से संबंधित जिसमें मूर्तिकला भी शामिल है। कला के अन्य रूपों को कुशल कला या हस्तकला के रूप में जाना जाता था जिसे शिल्प के रूप में माना जाता था जिसे बाद में सजावटी कला के रूप में मान्यता मिली।

कला कभी–कभी विशिष्ट उद्देश्य के साथ बनाई जाती है लेकिन कई बार एक गतिविधि के रूप में जो इंद्रियों को आकर्षित करती है। जैसे– कार्यात्मक, गैर कार्यात्मक आदि।

प्रारंभिक समय में धार्मिक विचारों और प्रथाओं को चित्र या मूर्ति कला के माध्यम से या संगीत, नृत्य और नाटक में वर्णन द्वारा व्यक्त किया जाता था। कला विभिन्न प्रकार के विचारों को प्रकाशित करती है। प्रत्येक कलात्मक अभिव्यक्ति एक संदेश देती है। मिस्र के पिरामिड मृत्यु के बाद के जीवन के विश्वास का संचार करते हैं, इसलिए यहां मृत्यु का महिमामंडन किया जाता है।

विशेष हाथ के इशारों के साथ खड़े और बैठे मुद्रा में बुद्व की मूर्ति विभिन्न दार्शनिक अर्थों का संचार करती है। इसलिए बृहदेश्वर मंदिर तंजौर का शिखर भी कलात्मक समर्पण और महिमा को दर्शाता है।[3]

गैर कार्यात्मक कला हमेशा कार्यात्मक नहीं होनी चाहिए। निश्चित समय पर यह मूल्य वर्धित कारक के रूप में कार्य करता है। यदि कला का निर्माण या प्रदर्शन दार्शनिक दृष्टिकोण से किया जाता है तो यह ज्ञानोदय के लिए हैं। कला जीवन में ताजगी लाती है और हमारे जीवन के बारे में बहुत कुछ ज्ञान भी जोड़ती है। कला लोगों को जोड़ने का काम करती है।

कला एक रचनात्मक गतिविधि है। किसी को या विभिन्न कलाओं को सीखने से व्यक्ति की रचनात्मकता में वृद्धि होती है क्योंकि कला एक अभिव्यक्ति है जिसें अलग–अलग समय में अलग–अलग तरीकों से महसूस और व्यक्त करने की आवश्यकता होती है। इसलिए व्यक्ति हमेशा रचनात्मक रहने की क्षमता विकसित करता है। वर्तमान समय में दुनिया रचनात्मकता के कार्य को देखती है। कलात्मक तरीके से व्यक्त की गई कोई भी चीज ताजा होती है और अलग और नई प्रतीत होती है।

---

3 डॉ0. अविनाश ब0. वर्मा अमित वर्मा, कला एंव तकनीक, बरेली (बड़ा बाजार, 1998), 67.

अपनी समृद्ध विरासत के कारण भारत को अतीत में ''सोने की चिड़िया'' यानी कि ''गोल्डन स्पैरो'' के रूप में जाना जाता है। देश की विविध संस्कृति का सौंदर्य की उत्कृष्ट कृतियां पर अपनी प्रभावशाली छाप हैं, चाहे वह पेंटिंग, मूर्ति, लेखन या संगीत कार्य हो।

कला का इतिहास

भारत में कला का इतिहास बहुत महत्वपूर्ण है। आदिकाल में आदिमानव ने गुफाओं में पत्थरों के रूप में चित्र करने शुरू कर दिए जिसमें उन्होंने जंगल के खूंखार प्रवासियों के खिलाफ किए गए संघर्ष की अभिव्यक्ति को दर्शाया। कला का उज्जवल इतिहास भित्ति चित्रों से ही प्रारंभ हुआ।

अजंता की गुफाओं के मंदिरों में प्रेम, धैर्य, उपासना, भक्ति, सहानुभूति, त्याग तथा शांति के उदाहरण देखने को मिलते हैं। भारत से प्रागैतिहासिक रॉक कला के प्रमाण मिलते हैं। एक प्रारंभिक कला का जिसमें गुफा, चट्टानों पर नक्काशी या चित्र शामिल है। सबसे पुराने उदाहरण मध्य भारत में पाए गए भीमबेटिका पेट्रोलियम के हैं और यह माना जाता है कि यह कम से कम 290,000 साल पुराना है। गुफा चित्रों के रूप में लोक कला का निर्माण नारी रहा, जो जानवरों और मनुष्यों का प्रतिनिधित्व करता है।

सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान भारतीय कला का इतिहास विज्ञान और संस्कृति में हुई प्रगति से प्रभावित माना जाता है। भारत में मूर्तिकला का आरंभ से ही यथार्थ रूप रहा है जिसमें मानव आकृतियों में प्रायः पतली कमर, लचीले अंग, और एक तरुण और संवेदना पूर्ण रूप में चित्रित किया जाता है। उदाहरण के लिए धातु से बनी तीन ऊँची नर्तकी की वस्त्रहीन किंतु अलंकृत मूर्ति जो अत्यंत सजीव गतित्व लिये है। पुरुष के धड़ की मूर्ति जो मांसलतादर्शक है। दाढ़ी–युक्त शाल ओढ़े पुरुष की मूर्ति जिसके बाल रिबन से बंधे हैं।

अजंता की गुफा में प्राचीनतम चित्रकलाएं हैं जिनकी समानता अमरावती की मूर्ति कला और सातवाहन काल की मानव आकृतियों की वशेभूषा, आभूषणों तथा जातीय विशेषताओं से है। सबसे श्रेष्ठ चित्र मरणासन्न राजकुमारी तथा महात्मा बुद्ध के उपदेश का है। अजंता को चित्रकला में रेखाओं के जरिए गहरे चमकदार गुलाबी, पूरे संदूरी, हरे आदि रंगों से ऐसा चित्र बनाया गया है जिसकी चमक हजारों साल बाद भी बरकरार है।[4]

एलोरा की गुफाओं में भारत के तीनों धर्म हिंदू , जैन, बुद्ध का चित्र देखने को मिलता है। इन गुफाओं में कैलाश, लंकेश्वर, इंद्रसभा और गणेश के चित्र दीवारों पर मिलते हैं। एलोरा की चित्रकलाओं की सर्वाधिक महत्वपूर्ण लाक्षणिक विशेषताएं हैं – सिर को असाधारण रूप से मोड़ना, भुजाओं के कोणिय मोड़, गुप्त अंगो का अवतल मोड़, तीखी प्रक्षिप्त नाक और बड़े–बड़े नेत्र।[5]

---

4 लोकेश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला, इण्डियाः (कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 1970), 31.
5 लोकेश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला, इण्डियाः (कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 1970), 48.

एलिफेंटा गुफा मुंबई के दक्षिणी पश्चिमी में एक टापू पर स्थित है। काली चट्टान से बना यह बहुत बड़ा विशाल शिव मंदिर है। इसमें प्रसिद्ध त्रिमूर्ति है, जिसमें भगवान शंकर के तीन रूप दिखाए गए हैं। दूसरी मूर्ति पंचमुख परमेश्वर की है जो अद्भुत सभ्यता तथा शांति की प्रतीक है। तीसरी भगवान शंकर की अर्धनारीश्वर की मूर्ति है जो अद्भुत शांति का प्रतीक है। एक मूर्ति में भगवान शंकर की जटाओं में गंगा, जमुना और सरस्वती दिखाई गई है।[6]

बदामी की गुफा मुंबई के अइहोल नामक स्थान के पास गुफाओं में स्थित है। ये गुफाएं शैव धर्म से संबंधित हैं।[7]

खुजराहो मंदिर मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित है। खुजराहो को प्राचीन काल में 'खजूरपुरा' और 'खजूर वाहिका' के नाम से भी जाना जाता है। मंदिरों का शहर खुजराहो पूरे विश्व में मुड़े हुए पत्थरों से निर्मित मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। गंधार शैली में दूसरी शताब्दी में कुषाण राज्य में विम एवं कनिष्ठ आदि राजाओं ने महात्मा बुद्व के चित्र या मूर्तियां बनाने आरंभ की। कलाकारों ने इन मूर्तियों द्वारा भगवान बुद्ध के जीवन की घटनाओं का प्रदर्शन किया तथा बोधिसत्व परंपरा की भी मूर्तियां बनाई। इनमें छंद जातक, बेसन्तर जातक, दीपक जातक, श्याम तथा सिवि जातक आदि का चित्रण मिलता है।

नौवीं शताब्दी में जो नई शैली सामने आई उसका संबंध पाल राजाओं से था जिस कारण इस शैली का नाम पाल शैली पड़ा। ये सभी ताड़पत्र जातक कथाओं पर आधारित है। ये चित्र अधिकतर बंगाल, बिहार में बने। इन चित्रों में सिर चपटे व सजीवता का अभाव है। नाक कुछ लंबी है जो परले गाल के परे तक गई है। कदली या नारियल के पेड़ों को ही बनाया गया है।

10वीं शताब्दी से 15वीं शताब्दी तक के काल में अधिकतम जैन चित्रों का निर्माण हुआ। ये चित्र भी अधिकतर ताड़ पर बने हैं। जैन शैली के चित्रों की बनावट विशेष है। सोने के रंगों का भी प्रयोग हुआ है। जैन चित्रों में स्त्री चित्रण बहुत कम है, यदि है तो तीर्थकारों की अधिष्ठात्री देवियों के हैं, जो चित्रकल्पद्रुम में चित्रित हैं।

अपभ्रंश शैली के इन चित्रों का मुख्य केंद्र जैनपुर था। बंगाल, लाहौर तथा उड़ीसा में भी यह चित्र मिले हैं। ताड़पत्री श्वेताम्बरीया जैन पुस्तकें जिनमें इस शैली के चित्र मिलते हैं। इस शैली में पट चित्र भी मिले हैं, जिनमें 'बसंत विलास' मुख्य है। चित्र वस्तु खाली जगह से निकली आंख, नुकीली नाक, मुड़े हाथ आदि।

राजस्थानी शैली कला 6वीं सदी की आरंभिक राजस्थानी कला शैली में विकसित अपभ्रंश शैली में काफी समानता नजर आती है। 16वीं सदी में वैष्णव संप्रदाय के भक्ति आंदोलन ने जोर पकड़ा।

6 लोकेश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला, इण्डियाः (कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 1970), 50.
7 लोकेश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला, इण्डियाः (कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 1970), 47.

चैतन्य, वल्लाभाचार्य, सूरदास, तुलसीदास व मीरा ने विष्णु के अवतार राम व कृष्ण के सगुण रूप की आराधना पर बल दिया, जिसका साहित्य व कला पर प्रभाव पड़ा।[8] राजस्थान में मेवाड़, जयपुर, कोटा, बूंदी, किशनगढ़ आदि केंद्रों एवं मध्यम में मांडू आदि स्थानों पर राजाश्रय में स्थानागत विशेषताओं को लेकर चित्र कला विकसित हुई जो राजस्थानी कला कहलाई। राजस्थानी कला रागमाला व ऋतुचित्रण की प्रधानता रही। लोकजीवन ऐतिहासिक घटनाओं के दरबारी जीवन का चित्रण एवं राजा रागनियों व सामंतों का व्यक्ति चित्रण हुआ। राजस्थानी कला में साहित्य, संगीत व चित्रकला का काव्यपूर्ण समन्वय देखने को मिलता है। रागमाला चित्रवाली में राग–रागिनीयों का प्रभाव दर्शाने के लिए नायक को राग व नायिका को रागिनी के रूप में चित्रित किया है। नायिका भेद चित्रों में अष्टनायिकाओं का चित्रण हुआ। 'अमरूशतक' नायिका भेद पर आधारित है। भानुदत्त की 'रसमंजरी' केशव की 'रसिकप्रिया' का बिहारी की 'सतसई' और मतिराम का 'रसराज' राजस्थानी चित्रकारों के लिए प्रिय साहित्यिक विषय रहे। ऋतुचित्रण में चित्रकारों के बारहमासा, षड़ऋतु व अष्टयाम को प्रकृति के बदलते रूप भावपूर्ण अभिव्यक्ति के साथ चित्रित किया है।

लोक जीवन के चित्रों में ग्रामीण दृश्य, पनघट, विश्रामस्थल, आमोद–प्रमोद, तीज–त्यौहार के प्रसंग हैं। पौराणिक कथा चित्रण के लिए रामायण, महाभारत, कृष्ण रचित, व भागवत के प्रसंगों को काफी तादात में लिया है। राजस्थानी कला में धारातल के लिए वसली का प्रयोग हुआ है। इसमें एकचशम चेहरे की प्रधानता है। आरंभिक मेवाड़ शैली में अलग से दूसरी आंख अंकित कर सवाचशम चेहरे का प्रभाव दर्शाने की चेष्टा की है, जिस तरह इसमें पूर्व जैन पोती चित्रों में की गई थी। राजस्थानी कला रेखात्मक है व उसमें नैसर्गिक छाया प्रकाश का प्रभाव दर्शाने का प्रयत्न नहीं है। रेखाएं भावपूर्ण व्यक्तित्व दिए हैं व बाह्रय सादृश्य की अपेक्षा आत्मिक अभिव्यक्ति को महत्व है। चटकीले रंगों का प्रयोग अधिक हुआ है। मानव, पशु–पक्षी व वृक्ष–लता आदि प्रकृति के अंगों को लयबद्ध, सरलकृत आकारों में अंकित किया गया है। भावाभिव्यक्ति में मुद्राओं का विशेष महत्व है। कृष्ण के साथ गायों का भी भावपूर्ण चित्रण हुआ है। रंभाती व पूंछ को ऊंचा उठाकर बछड़े से मिलने के लिए व्याकुल दौड़ती गायों का चित्रण कुशलतापूर्वक किया गया है।9

मुगल शैली कोई नवीन शैली नहीं थी बल्कि वही राजस्थान से ली थी, जिसका परिमार्जन ईरानी प्रभाव से हुआ। ये लोग कला प्रेमी थे। सबसे पहले हुंमायूं अपने साथ हुए कुछ इरानी चित्रकारों को यहां लेकर आया, जिन्होंने ईरानी कला शैली में ही चित्र रचना की। राजस्थानी शैली से मुगल इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने राजस्थानी व इरानी शैली के सम्मिश्रण से एक नवीन परिष्कृत शैली का निर्माण किया, जिसे मुगल शैली कहा जाता है। बाबर तैमूरिया वंश का ही था, जिसने भारत में मुगल राज्य की नींव डाली। इस से ही बाबर को स्वयं चित्रकला का बहुत शौक था।

---

8 र.वि. साखलकर, कला कोश, जयपुर (राजस्थान ग्रंथ अकादमी, 1998), 243.
9 र.वि. साखलकर, कला कोश, जयपुर (राजस्थान ग्रंथ अकादमी, 1998), 244.

बाबर का पुत्र हुमायूं भी कला का शौकीन था। अकबर जिस समय राजगद्दी पर बैठा उसकी आयु केवल 13 वर्ष की थी। अकबर एक बहुत सूझबूझ वाला शासक था। अकबर को बचपन से ही चित्रकारी का शौक था। 'आईने अकबरी' में भी यही लिखा है कि चित्रकारों को अकबर ने बहुत सम्मान दिया।[10]

मुगल शैली : जहांगीर एक स्वर्ण मुक्त संपन्न ऊंचे पाये का कला परखी था। अकबर ने जो एक भव्य मुगल शैली की नींव डाली थी, जहांगीर ने उस में चार चांद लगा दिए। मानव आकृतियों का जितना सुंदर चित्रण जहांगीर के काल में हुआ, उतना पहले कभी नहीं हुआ था।

जहांगीर की मृत्यु के बाद शाहजहां भवन निर्माण कला में रूची रखते थे। परंतु जहांगीर की तरह उसे चित्रकला से प्रेम नहीं था। आगरे का ताजमहल, लाल किला आदि उसने कई भव्य किले तथा महल बनवाए। जहांगीर के समय से चले आ रहे चित्रकारों ने चित्र तो बनाए परंतु वे सब राज–वैभव तथा नारी सौंदर्य आदि तक ही सीमित रहें। इन बचे हुए चित्रकारों में जिन्होंने शाहजहां के काल में भी चित्र रचनाएं की, मनोहर, मोहम्मद नादिर, विचितर, गोवर्धन, होनहार, चित्रमन, व बालचंद आदि कलाकारों के नाम उल्लेखनीय है।

शाहजहां कालीन चित्रकला में व्यक्ति चित्र, सोने चांदी के रंग, अदब कायदे के चित्र, ईसाई धर्म संबंधी चित्र, स्याही कलम के चित्र, रंग योजना आदि के चित्र चित्र हुए। औरंगजेब एक कट्टर मुसलमान चित्रकला का मुख्य रूप से शत्रु था। जो चित्रकार थे, उन्होंने पहाडों में जाकर शरण ली थी और वहां पहुंचकर एक अपूर्व शैली का जन्म दिया, जिसका नाम पहाड़ी शैली पड़ा।

पहाड़ी शैली: 17वीं शताब्दी में पहाड़ी शैली का विकास चंबा, गुलेर, कांगड़ा, बसोहली, कुल्लू, नूरपुर, जम्मू आदि पहाड़ी रिसायतों में राजाओं के आश्रय में हुआ। यहां तीन प्रमुख शैलियां विकसित हुई। 1. बसोहली 2. कांगड़ा 3. सिक्ख। 18वीं सदी में औरंगजेब से निष्कासित चित्रकारों को पहाड़ी रियासतों में आश्रय मिलने से वहां मुगल कला का बारीकी, मिस्त्री रंग–विधान, भावपूर्णता, नारी आकृतियों की कमनीयता, प्राकृतिक सौंदर्य व स्वच्छंदता के साथ काव्यात्मक रूप अपनाकर लघुचित्रण शैली पराकाष्ठा पर पहुंची। इसमें पुराणिक वैष्णव धर्म पर आधारित राम व कृष्ण के जीवन के लालित्यपूर्ण श्रृंगार, हास्य, वियोग आदि विषयों की भावपूर्ण अभिव्यक्ति है।[11] रीतिकालीन कवियों सूरदास, तुलसीदास, केशव, मतिराम व बिहारी के काव्यों का सुंदर प्रभावपूर्ण चित्रण हुआ। नायिका भेद व प्राकृतिक दृश्य कलाकारों के प्रिय विषय थे। बसोहली शैली का विकास राजा कृपाल व परवती राजाओं के आश्चर्य में हुआ व यह बसोहली के अतिरिक्त कुल्लू, चंबा, नूरपुर आदि स्थानों पर पल्लवित हुई।

---

10 लोकेश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला, इण्डियाः (कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 1970), 85.
11 र.वि. साखलकर, कला कोश, जयपुर (राजस्थान ग्रंथ अकादमी, 1998), 247.

इस शैली की आकृतियों में भावपूर्ण बड़ी आंखें, उभरा गोल ललाट, उठी नाक अंकित है एवं नारी आकृतियां बलिष्ठ बनाई है जो लोकशैली का प्रभाव है। इस शैली के प्रमुख चित्रकारों में से देवीलाल, माणकू, हरिसिंह, गुलाम मोहम्मद व नैनसुख विशेष प्रसिद्ध है।

कांगड़ा शैली का विकास गुलेर शैली में हुआ। गढ़वाल में भी उन्नत कांगड़ा शैली के चित्र बने व वहां के प्रमुख कलाकार मोलाराम ने विशेष ख्याति अर्जित की। मुगल दरबार से भागे चित्रकारों को कांगड़ा के राजा संसारचंद्र ने आश्रय प्रदान कर गुलेर कला को ही कांगड़ा शैली के उन्नत रूप में विकसित किया। कांगड़ा शैली के प्रमुख चित्रकारों में फतु, पुरखु, व मानकू उल्लेखनीय है। 1905 में धर्मशाला के भूकंप में कांगड़ा शैली के बहुत से चित्र नष्ट हो गए। कांगड़ा शैली की मुख्याकृतियां दो प्रकार की होती थी– 1. ढलवां ललाट, लंबी नासिका, गले व चिबक की लंबाई में वृद्धि, पतली लंबी वक्र आंखें तथा चौड़ी मुखाकृति। 2. गठनयुक्त आकृति, छोटी आंख, लंबे बाल, कोमल चेहरा व छोटी नाक। इंद्रधनुषी वर्णयोजना शीतल व चमकीली है। पृष्ठभूमि सुरम्य प्राकृतिक व पहाड़ी दृश्य है। पशु–पक्षी भी मानव सदृश्य भावनाओं में सजीव है। चांदनी व रात्रिकालीन दृश्य–चित्रण के साथ लोकजीवन की अभिव्यक्ति है। रागमाला व नायिका भेद के साथ साहित्यिक कृतियों पर आधारित श्रृंगारिक व पौराणिक कथाओं का चित्रण हुआ है।[12]

आधुनिक कला का प्रारंभ :

इस कला में चित्रकारों के साथ कला शिल्प का तालमेल रहा है। जिसमें चित्रों को सोने तथा बहुमूल्य पत्थरों से सजाया गया है। ज्यादातर चित्र घरों में पूजा के स्थानों में बने जिसमें कांस्य मूर्तियों का स्थान इन रतन से जुड़ी हुई सुंदर देवी देवताओं के चित्रों ने ले लिया था। इस प्रकार के ही चित्र दरबारों तथा मंदिरों में भी हैं।

प्रारंभ में सोना थोड़ी मात्रा में प्रयोग किया गया और चित्र के अधिकांश भाग को सोने के रंग से भरा गया है। आधुनिक काल राजाओं के विकास की सामग्रियों के लिए प्रसिद्ध थी, जिसमें हाथी दांत का काम, रेशमी वस्त्र, पीतल के विभिन्न प्रकार के सजावट वाले नमूने, संगीत वाघ आदि हैं।

बंगाल शैली की विषय वस्तु ऐतिहासिक, धार्मिक, साहित्यिक, सामाजिक चित्रों पर आधारित है। बंगाल शैली के प्रमुख चित्रकार श्री अवनीद्रनाथ ठाकुर ने एक प्रचार तथा शिक्षक के रूप में भी कला की पुनः जागृति में सेवा की। इन्होनें श्री हैवेल के साथ मिलकर एक विद्यार्थियों का दल बनाया जिसमें श्री नंदलाल बसु, के0. वैंकटप्पा, शैलेंद्र नाथ, डे, सुरेन गांगुली, असित कुमार हलदर, समरेंद्र नाथ गुप्त, हकीम मोहम्मद खान, वीररेश्वर सेन व देवी प्रसाद राय चौधरी आदि थे।[13] समकालीन कला आज की कला है, जो 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध या 21वीं शताब्दी में निर्मित होती है।

पश्चिमी चित्रकला के शिक्षक यहां आए और उन्होंने यहां के लोगों का परिचय वहां के कलाकारों से करवाया। इन्हीं सब को ध्यान में रखते हुए तीन स्कूलों का उद्‌घाटन हुआ– मुंबई, कोलकाता तथा मद्रास, जिसमें पूर्णतया पाश्चात्य कला की शिक्षा दी जाने लगी।

12 र.वि. साखलकर, कला कोश, जयपुर (राजस्थान ग्रंथ अकादमी, 1998), 248.
13 लोकेश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला, इण्डियाः (कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 1970), 143.

पटना शैली के चित्रकार राजा रवि वर्मा भारत में सबसे पहले कलाकार रहे। वह चित्रकला रूपी रेतिस्तान में हरियाली की तरह उभरे। राजा रवि वर्मा ने तैल रंगों में चित्र चित्रित किए। तैल रंगों से ही उन्होंने भारतीय जीवन की झलक चित्रित की। राजा रवि वर्मा ने राजाओं के दरबारों में जाकर भी चित्रकारी की थी। राजा रवि वर्मा ने पुराणिक तथा धार्मिक कथाओं के आधार पर चित्र रचना की।[14]

समकालीन आधुनिक कला

इसी समय में पाश्चात्य कला में ही हो रहे नवीन प्रयोगों का प्रमुख प्रभाव भारत में भी फैल गया। किसी वस्तु के सजीव रूप को अपनी समझ से कोई भी विशेष रूप प्रदान किया। जिसे इंप्रैशनिज्म कहा। कला का नया रूप समकालीन कला के रूप में हमारे समक्ष है जिसमें मूर्त और अमूर्त कला के मिश्रित भागों को देखा और महसूस किया जाता है। समसामयिक शब्द का तात्पर्य रचना अथवा निर्माण करना है जो मानव की सहज वृत्ति है। प्रगतिशील ग्रुप 1947 में बना था। प्रगतिशील कलाकार ग्रुप का जन्म हुआ जिस के कलाकार के. एच. आरा, सैयद हैदर रजा, एफ. एन. सूजा, बाकरे, गाड़े, एम. एफ. हुसैन थे। इस सहजवृत्ति के कारण ही मानव ने रूप सौंदर्य को कला के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास निरंतर किया है। सृजन में उसे अद्‌भुत संतोष, रस तथा रंग की अनुभूति होती है। कला मानव की अनेक गतिविधियों में दृष्टिगत होती है तथा चित्रकला, मूर्तिकला, साहित्य कला, संगीत, साहित्य, नाटक, नृत्य, केश विन्यास, क्रीड़ाएं, हस्तशिल्प आदि।[15] समसामयिक कला जीवन की नवीनताओं सृजनात्मक संभावनाओं, गहन संवेदनाओं तथा वैचारिक शक्ति के साथ जीवन को समझने का एक प्रयास है। इस प्रकार समकालीन कला का महत्वपूर्ण गुण सदैव प्रयोगवादी होना है। समकालीन कला की दो महत्वपूर्ण अवधारणाएं हैं।

वैचारिकता तथा विरूपण। दोनों एक दूसरे की पूरक हैं। वैचारिकता द्वारा जीवन के अनुरूप समकालीन कला प्रवृतियों को विकसित किया जाता है। प्रत्येक युग की समकालीन कला में नवीनतम कला सृजन होता है, जो अतीत से भिन्न होता है। विरूपण का तात्पर्य रूपांतरण से है। दृश्य जगत के पदार्थों को कलाकार निजी वैचारिक व अनुभूत दृष्टि के अनुसार आरोपण द्वारा रूपांतरित करता है। यह रूपांतरण रंगों, रूपकारों, संयोजन के सिद्धांतों, तकनीक व माध्यम सभी दृष्टियों से किया जा सकता है। समकालीन कलाकार विश्व स्तर पर प्रभावित, सांस्कृतिक रूप में विविध और तकनीकी रूप से दुनिया को आगे बढ़ाने का काम करते हैं। उनकी कला सामग्री, विधियों, अवधारणाओं और विषयों का एक गतिशील संयोजन है जो उन सीमाओं की चुनौती को जारी रखता हैं जो 20वीं शताब्दी से पहले चल रहे थे। विविध और उदार, समकालीन कला एक दूसरे के रूप में एक समान, आयोजन सिद्धांत, विचारधारा या ''विस्म'' की बहुत कमी से प्रतिष्ठित हैं।

---

14 लोकेश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला, इण्डियाः (कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 1970), 148.

15 डा0 ममता चतुर्वेदी, समकालीन भारतीय कला, जयपुर (राजस्थान ग्रंथ अकादमी, 2016), 1.

कलात्मक अभ्यास के अलावा, समकालीन कला में कला आलोचना और सिद्धांत, कला शिक्षा अपने शिक्षण संस्थानों और कला स्कूलों, स्यूरेटरशिप, समकालीन कला प्रकाशनों, मीडिया और सार्वजनिक और निजी संग्रह, दीर्घाओं और मेलों जैसे क्षेत्र शामिल हैं। समकालीन कला बाजार, समकालीन कला उत्पादन उद्योग और कला के समकालीन कार्यों को प्रदर्शित, संरक्षित और प्रलेखित किया जाता है।[16] प्रगतिशील कलाकार ग्रुप के जन्म के समय कुछ अच्छे कलाकार थे– आरा, रजा, सूजा, बाकरे, गाड़े और हुसैन। इस प्रकार समकालीन कला एक नया आयाम प्राप्त करने लगी।

16 डा0 ममता चतुर्वेदी, समकालीन भारतीय कला, जयपुर (राजस्थान ग्रंथ अकादमी, 2016), 172.

द्वितीय अध्याय

(मदन का लाल जीवन परिचय)

मदन लाल जीवन परिचय

जीवन परिचय

20वीं शताब्दी के वर्तमान भारत के चित्रकारों में कला और सौंदर्य के धनी मदनलाल का नाम प्रसिद्ध है। यह चंडीगढ़ के सम्माननीय कलाकारों मे से एक हैं, जो कैनवस पर एक्रेलिक रंगों से कार्य करते हैं। लेकिन इनके बारे में जानने से पहले कला के बारे में जानना आवश्यक है। कला के जीवन में कदम रखना आसान है, पर उस पर चलना कठिन है। इनके लिए लगन, परिश्रम और सृजनात्मकता की आवश्यकता हैं। लेकिन एक मेहनती कलाकार के लिए कुछ भी कठिन नहीं है। चित्र कला की श्रेणी का महत्वपूर्ण अंग होता है। मदनलाल एक समकालीन चित्रकार हैं और अपनी प्रतिभा, गुणवत्ता के आधार पर यह कला जगत में अत्यंत प्रसिद्ध हैं।

जो प्रमुख गुण एक कलाकार में होने चाहिए, वह मदनलाल में मिलते हैं। यह मिलनसार होने के साथ–साथ एक सच्चे कलाप्रेमी भी हैं। यह निस्वार्थ भाव से चित्रण करते हैं। वह पिछले 30 वर्षों से पेंटिंग और प्रदर्शनीयां कर रहे हैं। यह सभी कलाकारों को एक समान मानकर उनके साथ कला शिक्षा की बातें करते हैं। इनकी जितनी प्रशंसा की जाए उतना ही कम है।
इनका कहना है कि कला एक अभिव्यक्ति है और रंगों के द्वारा उसे एक सही दिशा दी जा सकती है। वह अपने आप को खुशकिस्मत मानते हैं कि इन्होंने स्वतंत्र रूप से कला को अपना आधार बनाया है। वह अपने मन के भावों को अद्‌भुत तरीके से दर्शाते हैं।

सौंदर्य और लय के ज्ञाता मदनलाल का जन्म 1964 में तलवंडी भाई, जिला फिरोजपुर (पंजाब) भारत, में हुआ। इनका जन्म मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। यह एक शांत स्वभाव के कलाकार के रूप में उभर कर सामने आए। इनको बचपन से ही कला में शौक रहा है। यह अपने बचपन के गांव में पानी लेने आती–जाती महिलाओं के स्केच बनाते थे। ये अपना कार्य कुशलता व निपुणता से करते हैं। जितने ये वाणी से मृदुभाषी हैं, उतने ही शीतल हृदय वाले हैं। उनमें कला प्रेम ने उन्हें चित्रांकन हेतु प्रेरित किया।

उनके बड़े भाई साहब रोशनलाल का बहुत योगदान रहा है, उन्हें प्रेरित करने में। जब भी वह कैनवस पर कार्य करते हैं तो जो भी वातावरण, जो अपने आसपास देखते हैं, उससे संबंधित ही चित्रण करते हैं। जब भी कोई शुभ अवसर हो या कुछ भी मनमोहक लगता है तो कलात्मक रूप उनकी दृष्टि और दिमाग में उभरता है। वह जो भी अनुभव करते हैं, उन्हीं वस्तुओं को वह सीट, कैनवस आदि पर रंग, रेखा के द्वारा लय अनुसार वितरित करते हैं। इनके परिवार ने इनकी कला को प्रफुल्लित करने में बहुत सहयोग दिया है। मदनलाल कहीं पर भी घूमने जाते हैं या विदेश यात्रा पर जाते हैं तो वहां के अनुभव से भी वहां पर पेंटिंग करते हैं। वह वहां के वातावरण को अपने चित्रों में प्रयुक्त करते हैं।

मदनलाल के शब्दों में :

सूफीवाद मेरे कार्यों में अच्छी तरह से और जीवित है। मैं पंजाब से हूं और सूफीवाद हमारे साहित्य, हमारी संस्कृति में समा जाता है, तो सूफीवाद किसी धर्म तक सीमित नहीं है, यह जीवन का एक तरीका है। बचपन से ही यह हमारे रचनात्मकता में शामिल परिणाम है।

इन्होंने आज जिस मंजिल को छुआ है, उसके पीछे इनकी कड़ी मेहनत एवं उत्साह और परिवार का सहयोग है। इनकी यह विशेषता है कि चित्रण के विषय वस्तु में बाह्रय सौंदर्य भी अनुभूति और ह्रदय के रंगों की तरह इनका प्रयोग पसंद करते हैं। इनकी हर कलाकृति अपनी जगह पर गर्व और दृढ़ता से खड़ी है, अर्थात कहने का भाव है कि उन्होंने समाज में एक उच्च स्थान प्राप्त कर लिया है।

शिक्षा :

मदनलाल ने अपना प्रारंभिक जीवन तलवडी भाई, गांव में ही बिताया। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव के ही स्कूल में हुई। इनकी रूचि पढ़ाई के साथ–साथ कला में बचपन से ही रही है। फिर इनका रुझान शहर की तरफ बढ़ा। ग्रामीण पंजाब में जन्मे और पले–बड़े और चंडीगढ़ के पूर्व छात्र हैं। यह एक प्रतिभाशाली कलाकार हैं, जिन्होनें वर्षों से परिपक्व होकर एक अद्वितीय मुहावरा एक विशिष्ट हस्ताक्षर शैली गढ़ी है, जो अपरिवर्तनीय जीवन शक्ति की बात करती है।

कला यात्रा :–

संसार में रहने वाले हर व्यक्ति का उद्देश्य आनंद प्राप्ति होता है। आनंद प्राप्त करने के सभी के अलग–अलग मार्ग होते हैं, कोई संगीत के माध्यम से, कोई लेखन के माध्यम से तथा कोई कला के माध्यम से आनंद प्राप्त करता है। इनकी कला में रुचि तो बचपन से ही हो गई थी जब यह कक्षा 8 या 9 में थे। जब भी यह आर्ट कॉलेज जाते थे, रंगों की ओर आकर्षित होते थे।

इनके पास कला की डिग्री भी है। उन्हें 2017 में ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय अकादमी पुरस्कार, 2016 में प्रफुल्ल दहनुकर आर्ट फाउंडेशन द्वारा रजत पदक, 2015 में प्रफुल्ल दहनुकर आर्ट फाउंडेशन द्वारा इन इमर्जिंग आर्टिस्ट अवॉर्ड, पंजाब ललित कला अकादमी सम्मान 2019 और कई अन्य से सम्मानित किया गया है। उनकी कलाकृति भारत, ब्रिटेन, जर्मनी और संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रमुख गैलरी के संग्रह का एक हिस्सा है और निजी संग्रह का भी एक हिस्सा है। वह भारत और विदेशों में असंख्य राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में तथा शिविरों समूह और एकल शो का हिस्सा रहे हैं।

श्री मदनलाल ने हस्तशिल्प पंजाब के डिजाइन संस्थान उद्योग और वाणिज्य विभाग पंजाब और मोहाली में उत्तरी भरत फैशन प्रौद्योगिकी, संस्थान के साथ विभिन्न क्षमताओं में काम किया। उन्होंने चंडीगढ़ ललित कला अकादमी के उपाध्यक्ष और पंजाब ललित कला अकादमी के उपाध्यक्ष और पंजाब

ललित कला अकादमी के सचिव के रूप में रचनात्मक प्रयासों का समर्थन करने के लिए भी काम किया। वह वर्तमान में उत्तरी भारत फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, मोहाली (भारत) में अतिथि संकाय हैं।

'पुरस्कार और सम्मान'

- 2019 पंजाब कला सम्मान पंजाब ललित कला अकादमी चंडीगढ़ द्वारा
- 2017 ललित कला अकादमी द्वारा 58वां राष्ट्रीय अकादमी पुरस्कार नई दिल्ली
- 2016 प्रफुल्ल दहनुकर आर्ट फाउंडेशन स्लिवर मेडल
- 2015 प्रफुल्ल दहनुकर आर्ट फाउंडेशन इमर्जिंग आर्टिस्ट अवार्ड
- अवंतिका, नई दिल्ली द्वारा 2001 स्वर्ण पदक अखिल भारतीय प्रदर्शनी
- 2000 पीएलकेए और ललित कला अकादमी, दिल्ली द्वारा अखिल भारतीय मिलेनियम ड्रॉइंग
- 2000 चंडीगढ़ में AIFACS द्वारा अखिल भारतीय प्रदर्शनी।

'सम्मान'

- मानद सचिव दृ पंजाब ललित कला अकादमी जून 2021 से
- मानद उपाध्यक्ष–चंडीगढ़ ललित कला अकादमी–2012–2018 से
- पूरे वर्षों की कला गतिविधियों की योजना, वित्तीय मामले, अनुदान–विज्ञापन, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों की देखभाल, वार्षिक प्रदर्शनी के कैटलॉग की छपाई।
- मानद सचिव – चंडीगढ़ ललित कला अकादमी 2003–2006
- मानद सचिव –पंजाब ललित कला अकादमी 2000–2003 आयोजित, कला प्रदर्शनी, कला कार्यशाला, (पेंटिंग, मूर्तिकला ग्राफिक्स, फोटोग्राफी मबज) राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय, युवा कलाकारों को छात्रवृत्ति ऑडियो विजुअल व्याख्यान और स्लाइड शो भारत में।
- 2016 अंतर्राष्ट्रीय ''गीता'' पर्व कुरुक्षेत्र में राष्ट्रीय चित्रकला शिविर 6–दिसंबर–10 दिसंबर
- 2016–पीएलकेए और एलकेए द्वारा राष्ट्रीय पेंटर शिविर नई दिल्ली–15 मई–21 मई
- 2016 पटनीटॉप में राष्ट्रीय चित्रकार शिविर–जम्मू–कश्मीर–नवंबर–22 से 26
- 2016 एसीएडी इंडिया द्वारा चिकलदहरा (एमपी) में 17 से 23 जनवरी–2016 तक राष्ट्रीय कलाकार शिविर
- 2015 सीआरपीएफ जम्मू और सीसीआरटी दिल्ली द्वारा पटनीटॉप जम्मू–कश्मीर–21 से 25 सितंबर 2015 तक राष्ट्रीय कलाकार शिविर

- 2014– ललित कला अकादमी नई दिल्ली द्वारा गुवाहाटी–मार्च में राष्ट्रीय कलाकार शिविर
- 2013 जम्मू और कश्मीर अकादमी द्वारा कारगिल में राष्ट्रीय कलाकार शिविर–मार्च–
- 2012 इंडियन एकेडमी ऑफ फाइन आर्ट द्वारा राष्ट्रीय कलाकार कार्यशाला अमृतसर–27 टी0–29 अक्टूबर
- 2011 मिस्टिक आर्ट फाउंडेशन द्वारा गोवा में कलाकार शिविर पुणे–दिसंबर 24 से 27 दिसंबर
- 2010 राय फाउंडेशन नई दिल्ली द्वारा भीम ताल में कलाकार शिविर–
- 2009 राजोरी में राष्ट्रीय कलाकार शिविर, जम्मू–दिसंबर–9 ज0 15
- 2009 ललित कला अकादमी नई दिल्ली द्वारा गंगटोक में राष्ट्रीय कलाकार शिविर फरवरी–
- 2008 एडवांस स्टडी द्वारा आर्टिस्ट कैंप, वाइस रॉय लॉज शिमला–जुलाई–6–12
- 2007 आर्ट इंडस और आईटीडीसी द्वारा मैसूर में कलाकार शिविर 06–09–2007–11–09–2007
- 2007 बरोग (हिमाचल प्रदेश) में कलात्मक निर्माण द्वारा राष्ट्रीय कलाकार शिविर
- 2007 आर्ट मॉल द्वारा देहरादून में आर्टिस्ट कैंप
- 2006 बरोग (हि.प्र.) में आर्ट मॉल द्वारा राष्ट्रीय कलाकार शिविर
- 2005 AIFACS नई दिल्ली द्वारा कलाकार शिविर
- 2005 कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र द्वारा राष्ट्रीय शिविर
- 2004 अमृतसर में अमृत कला कुंभ द्वारा कलाकार शिविर
- 2003 एपीजे कॉलेज, जालंधर में पीएलकेए द्वारा पेंटिंग वर्कशॉप
- 2003 सरकार द्वारा पेंटिंग कार्यशाला। कॉलेज, मोहाली
- 2002 चंडीगढ़ प्रेस क्लब में कलाकार कार्यशाला
- 2002 सीएलकेए और जिला प्रशासन पंचकुला द्वारा कलाकार कार्यशाला
- 2002 चंडीगढ़ कार्निवल में पेंटिंग कार्यशाला
- 2002 चंडीगढ़ ललित कला अकादमी द्वारा ड्राइंग वर्कशॉप
- 2001 बीसीएस, शिमला में पेंटिंग कार्यशाला
- 2001 पीएलकेए द्वारा जालंधर में कलाकार शिविर
- 2001 AIFACS नई दिल्ली द्वारा युवा कलाकार शिविर
- 1999 चंडीगढ़ ललित कला अकादमी द्वारा कलाकार शिविर
- 1999 कला और फिल्म सोसायटी, चंडीगढ़ द्वारा पेंटिंग कार्यशाला
- 1999 पंजाब ललित कला अकादमी द्वारा कारगिल हीरोज कलाकार कार्यशाला को श्रद्धांजलि

'एकल प्रदर्शनी'

- 2021–ऑनलाइन सोलो शो आर्ट फैमिली द्वारा 25 जून –2021 तक एक अंतर्राष्ट्रीय कलाकार समूह
- 2021– कला अंतक्य कला संघ तुर्की द्वारा वर्चुअल सोलो शो 1 से 10 जून 2021
- 2019 जहांगीर आर्ट गैलरी मुंबई में पेंटिंग्स की कलर्स प्रदर्शनी 5 मार्च से 11 मार्च –2019 तक
- 2017 हयात रीजेंसी चंडीगढ़ में प्रदर्शनी कलाकार पैलेट –15 सितंबर से 24 सितंबर–2017
- 2016 पंजाब कला भवन में चित्रों और चित्रों की प्रदर्शनी–28 फरवरी–से–2 मार्च– 2016
- 2013 श्रीधरणी, त्रिवेणी कला संगम नई दिल्ली में चित्रों की प्रदर्शनी, 1 नवंबर से 10 नवंबर तक
- 2013 आर्ट इंडस गैलरी नई दिल्ली में चित्रों और चित्रों की प्रदर्शनी 22फरवरी– 2 मार्च
- 2013 जहांगीर आर्ट गैलरी मुंबई–14 से 20 अप्रैल–2013 तक चित्रों की प्रदर्शनी
- 2012 कला फोलियो चंडीगढ़ में चित्रों और चित्रों की प्रदर्शनी –8 जनवरी से 13 जनवरी–2013
- 2011 श्रीधरणी त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली में चित्रों की प्रदर्शनी–16 से 26 अप्रैल–2011
- 2008 पेंटिंग्स की प्रदर्शनी जहांगीर आर्ट गैलरी, मुंबई–14 से 20 अप्रैल
- 2007 आर्ट इंडस, नई दिल्ली में ड्राइंग और पेंटिंग की प्रदर्शनी– 22 फरवरी से 2 मार्च –2007
- 2006 कला फोलियो, चंडीगढ़ में पेंटिंग की प्रदर्शनी
- 2005 कला फोलियो, चंडीगढ़ में पेंटिंग की प्रदर्शनी –1 दिसंबर से 5 दिसंबर
- 2005 त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली में चित्रों की प्रदर्शनी –12 से 21 दिसंबर।
- 2004 ललित कला अकादमी, नई दिल्ली में चित्रों की प्रदर्शनी 7 अक्टूबर–13 अक्टूबर 2004
- 2004 त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली में चित्रों की प्रदर्शनी –
- 2001 पंजाब ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ में चित्रों की प्रदर्शनी
- 1999 ललित कला अकादमी, रवींद्र भवन नई दिल्ली में पेंटिंग की प्रदर्शनी–
- 1998 ललित कला संग्रहालय, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में चित्रों और चित्रों की प्रदर्शनी–फरवरी
- 1996 पंजाब ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ में पेंटिंग्स की प्रदर्शनी
- 1995 पंजाब ललित कला अकादमी, चंडीगढ़–मार्च में चित्रों की प्रदर्शनी–

'राष्ट्रीय प्रदर्शनी'

- 2017 ललित कला विभाग पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ और ललित कला अकादमी रवींद्र भवन नई दिल्ली के संग्रहालय में स्थापना कला परियोजना प्लेट और पैलेट
- 2017 58वीं राष्ट्रीय प्रदर्शनी बेंगलुरु
- 2016 ग्लोबल आर्ट फेयर वर्ल्ड ट्रेड सेंटर मुंबई
- 2016 भारतीय कला मेला वर्ली मुंबई
- 2015 ललित कला अकादमी द्वारा 57वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी नई दिल्ली
- 2015 ललित कला अकादमी द्वारा अखिल भारतीय राष्ट्रीय प्रदर्शनी नई दिल्ली
- 2015 भारतीय कला मेला वर्ली मुंबई
- 2014 ललित कला अकादमी द्वारा कला की 56वीं राष्ट्र प्रदर्शनी नई दिल्ली
- 2013 ललित कला अकादमी द्वारा 55वीं राष्ट्रीय प्रदर्शनी नई दिल्ली
- 2010 52वीं राष्ट्रीय प्रदर्शनी, ललित कला अकादमी नई दिल्ली द्वारा
- 2005 कैमलिन आर्ट फाउंडेशन, नई दिल्ली
- 2005 हार्मनी शो मुंबई
- 2004 वार्षिक कला प्रदर्शनी, पीएलकेए, चंडीगढ़
- 2002 ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा 45वीं राष्ट्रीय प्रदर्शनी
- 2001 44वीं राष्ट्रीय प्रदर्शनी, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा
- 1995 से राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर भागीदारी
- 2014 बिड़ला अकादमी कोलकाता में चित्रों की समूह प्रदर्शनी
- 2013 गैलरी आर्ट प्लेस गुड़गांव में तीन कलाकारों द्वारा चित्रों की त्रिवेणी प्रदर्शनी
- 2012 पंजाब कला भवन चंडीगढ़ में शीर्षकहीन समूह द्वारा चित्रों की प्रदर्शनी
- 2011 ग्रुप शो सरकार में कला फाइल कला प्रमोटर और सेवाओं द्वारा क्यूरेट किया गया। संग्रहालय आर्ट गैलरी चंडीगढ़।
- 2011 पंजाब ललित कला अकादमी आर्टगैलरी, चंडीगढ़ में समूह ''अनटाइटल्ड'' शो।
- 2011 ग्रुप ''अनटाइटल्ड'' शो रवीन्द्र भवन, ललित कला अकादमी आर्ट गैलरी, नई दिल्ली में।
- 2010 चंडीगढ़ और लुधियाना में चंडीगढ़ द्वारा पेंटिंग और ड्रॉइंग की प्रदर्शनी
- 2010 बिना शीर्षक वाली पेंटिंग की प्रदर्शनी पंजाब ललित कला, चंडीगढ़
- 2009 स्टोकहोम, स्वीडन में चित्रों की प्रदर्शनी

- 2008 पेंटिंग हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली की प्रदर्शनी
- 2007 ललित कला अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली में चित्रों की प्रदर्शनी
- नव्या आर्ट गैलरी, नई दिल्ली द्वारा 2007 प्रदर्शनी
- 2006 हैबिटेट सेंटर नई दिल्ली में आर्ट इंडस द्वारा पेंटिंग की प्रदर्शनी
- 2006 हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में भारतीय कला रूप द्वारा प्रदर्शनी
- पोल्का आर्ट गैलरी, नई दिल्ली द्वारा 2005 पोल्का विजन
- 2000 नेहरू सेंटर, वर्ली मुंबई में पेंटिंग्स की प्रदर्शनी
- 1997 AIFACS नई दिल्ली में चित्रों की प्रदर्शनी
- 1997 पंजाब ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ में चित्रों की प्रदर्शनी
- 1997 पंजाब लाजपत राय भवन, चंडीगढ़ में चित्रों की प्रदर्शनी
- 1995 ललित कला विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में चित्रों की प्रदर्शनी

'अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी / प्रदर्शनी और कला रेजीडेंसी'

- 2021. 2021– कला अंतक्य कला संघ तुर्की द्वारा वर्चुअल सोलो शो
- 1 से 10 जून 2021 www.artantakya com
- 2019 12 वीं अंतर्राष्ट्रीय चित्रकला संगोष्ठी लक्सर मिस्र सांस्कृतिक मंत्रालय द्वारा
- 2019, बिहार सरकार राष्ट्रीय कला कार्यशाला पटना बिहार में
- 2019 तीसरा अंतर्राष्ट्रीय सीएच कल्पक कला उत्सव सरकोय तुर्की
- 2019 दूसरा अंतर्राष्ट्रीय कला उत्सव नोमिया बुटीक होटल यालिकवाक बोडरम तुर्की
- 2019 अंतर्राष्ट्रीय कला संगोष्ठी अमृतसर और जालंधर
- लक्षद्वीप द्वीप में 2018 अंतर्राष्ट्रीय कला कार्यशाला
- 2018–जेयतिनली कोस्क उलुसलारासी सनत अंतर्राष्ट्रीय त्यौहार इजमिर तुर्की
- 2018–अंतर्राष्ट्रीय कला बैठक हवासु पार्क कुमलुका अंताल्या तुर्की
- 2018 अंतर्राष्ट्रीय कला शिविर नीरजा मोदी स्कूल जयपुर
- 2017 विश्व दुबई कला मेला 12 से 15 अप्रैल दुबई यूएई
- 2017 इंटरनेशनल इंस्टालेशन आर्ट प्रोजेक्ट प्लेट एंड पैलेट विद इजराइल आर्टिस्ट शर्ली सीगल, म्यूजियम ऑफ फाइन आर्ट डिपार्टमेंट, पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ एंड नेशनल लैल्ट कला अकादमी, नई दिल्ली

- 2016 होटल पुलमैन, क्रीक सिटी सेंटर दुबई में गौरव समूह प्रदर्शनी के रंग
- 2016 कला कॉलोनी किवेवो मैसेडोनिया द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कलाकार शिविर
- 2016 fabrianoin Acquarello इटली 2016 में भागीदारी
- 2014 अंतर्राष्ट्रीय कला दिवस बैस्कटास इस्तांबुल तुर्की
- 2014 POSK गैलरी में आधुनिकता में भारतीय कला परंपरा की प्रदर्शनी
- लंदन में अटरिया गैलरी द्वारा। यूके
- 2013 चित्रों की जातीय सहमति प्रदर्शनी एशियाई आर्ट गैलरी यूएसए
- 2009 हेगा पार्क, स्टॉकहोम स्वीडन में टेलस कला द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कलाकार शिविर
- टेलस आर्ट स्वीडन द्वारा भारतीय और स्वीडिश कलाकार द्वारा 2009 प्रदर्शनी
- 2008 नेहरू सेंटर लंदन में 4 कलाकारों द्वारा समूह प्रदर्शनी
- जकार्ता इंडोनेशिया में भारतीय कलाकार नेटवर्क द्वारा 2003 प्रदर्शनी ''हमारी जड़ें हमारे पंख हैं''।
- 2001 समकालीन भारतीय पेंटिंग ''क्लेनेसन आर्ट गैलरी फुलडा में आधुनिकता की परंपरा'' जर्मनी।

'ऑन लाइन टॉक / वेबिनार 2020'

- 2021– कलाकारो की मन की कोहप्पल कलाकार वार्ता भारतीय मीडिया द्वारा 5 जून को शाम 4 बजे
- 2020–कला खोज, इंटरैक्टिव सत्र टीएडी, 15 जून 2020 को शाम 5 बजे
- 2020–कोड्स ऑफ कलर्स लेक्चर और इंटरएक्टिव सेशन 12 जून–2020 को शाम 5.00 बजे जूम पर
- 2020–आर्ट टॉक 2020 www.bindaasart.com द्वारा फेस बुक पर 1 अगस्त, 2020 को शाम 5 बजे लाइव
- 2020–हम अपने कल के इंस्टाग्राम लाइव और कलाकार की कहानी शुक्रवार 18 सितंबर को @Loud कला समाज कैलगरी कनाडा द्वारा देख रहे हैं
- 2020–कोड ऑफ क्रिएटिविटी वर्कशॉप और लेक्चर सीरीज ऑफ गूगल मीट 17 जुलाई को दोपहर 3.30–4.30 बजे पीएलसी सुपवा रोहतक, हरियाणा द्वारा ऑन लाइन प्रदर्शनी –2020
- 2020– आंदोलन डे आर्टे उद्भव द्वारा सीमाओं के बिना अंतर्राष्ट्रीय आभासी प्रदर्शनी MEXICO SEPT-1ST2020

- 2020–शताब्दी लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा एक ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय दृश्य कला प्रदर्शनी 20–30 नवंबर–2020 से 1920–2020 का जश्न मना रहा है
- 2020–अज्ञात2020 अंतर्राष्ट्रीय ऑन लाइन कला प्रदर्शनी और कला शिविर का आयोजन ASYMMETRYGROUP जबलपुर–भारत द्वारा 22 सितंबर–30 सितंबर
- 2020– राजेश्वरी कला महोत्सव, 20 कला महोत्सव एपीजे कॉलेज जालंधर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय आभासी कला प्रदर्शनी –30 जुलाई 2020
- 2020–शांति के बीज बोना 2 अक्टूबर 2020 को सशक्तिकरण समूह द्वारा एक आभासी प्रदर्शनी
- 2020–नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट्स ऑन लाइन आर्ट वर्कशॉप सह प्रदर्शनी गांधी जयंती पर महात्मा गांधी की 151वीं जयंती –2 अक्टूबर–2020
- 20 जून से 10 जुलाई 2020 तक Iam ARTIST द्वारा डेकोगन ऑनलाइन प्रदर्शनी में 2020–प्रतिबिंब
- 2020– इंटरनेशनल ऑन लाइन विजुअल आर्ट इवेंट 11वां रंग मल्हार जयपुर 5 जुलाई –2020
- 2020– हिमाचल प्रदेश के केंद्रीय विश्वविद्यालय अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन प्रदर्शनी 11 अक्टूबर–1 नवंबर
- विश्व कलाकार दिवस (शिल्पी दिवस 8 दिसंबर) 8–12 दिसंबर–2020 में उड़ीसा आधुनिक आर्ट गैलरी द्वारा इस महामारी आंदोलन में 2020–समय पर एक राष्ट्रीय प्रदर्शनी की बात करें
- 2020– 25वां ऑनलाइन कलावर्त अंतर्राष्ट्रीय कला उत्सव (कार्यशाला) 2020
- 2020–बरगद कला दीर्घा द्वारा 8 जून–12 जून, 2020 तक मनोरम कैनवास
- 2020–अंतर्राष्ट्रीय ऑन लाइन एआरटी प्रदर्शनी 2020संस्कार भारती कोपगन द्वारा 25 जून–शाम 5.15 बजे
- 2020–ऑनलाइन कला प्रदर्शनी ब्व्टप्क–19 आत्मा और आत्मा कला सोसायटी द्वारा आयोजित जून–4जी 2020
- 2020–मैटी सृजन यूट्यूब पर 32 कलाकारों द्वारा एक वीडियो प्रस्तुति, राष्ट्रीय टीवी चौनल 8 मई 2020
- 2020–इंडियन आर्ट फेस्टिवल नेहरू सेंटर वर्ली मुंबई 9 से 12 जनवरी 2020 गैलरी ART द्वारा ZOLO.COM मुंबई
- अर्चना वाधवा गैलरी बैंगलोर द्वारा 2020 ऑनलाइन प्रदर्शनी–

ऑनलाइन प्रदर्शनी 2021

- बिंदास एआरटी ग्रुप द्वारा 2021–100 प्रख्यात अंतर्राष्ट्रीय कलाकार एआरटी प्रदर्शनी –1 से 31 जनवरी 2021 तक
- 2021– परिप्रेक्ष्य'': 21 अंकारा संगीत और ललित कला विश्वविद्यालय अंकारा तुर्की द्वारा 21 अंतर्राष्ट्रीय ऑन लाइन मिश्रित प्रदर्शनी– 21–1–2021 से 31–1–2021
- 2021– हिना भट्ट कला उद्यम परिवार द्वारा अक्षय कलायात्रा उत्तर ऑनलाइन कला शिविर 7 फरवरी से 12 फरवरी–2021
- 2021– सीटी यूनिवर्सिटी लुधियाना द्वारा कला कार्यशाला 4–5 मार्च 2021
- 23 मार्च 2021 को चंडीगढ़ ललित कला अकादमी चंडीगढ़ द्वारा 2021–आर्ट वर्क शॉप कलर ऑफ फ्रीडम
- 2021– TRAKYA विश्वविद्यालय तुर्की द्वारा महामारी प्रेरणा अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन प्रदर्शनी– 15 अप्रैल से 30 अप्रैल –2021
- 2021–अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन वार्षिक कला प्रदर्शनी अंतर्राष्ट्रीय विश्व कला दिवस पर प्ंतंतजपेज गैलरी द्वारा 15 मई से 9 मई 2021
- 2021–इनर्सेक्शन असेंबल आर्ट गैलरी लंदन–वर्चुअल प्रदर्शनी 14–5–2021
- 2021–अक्सरे विश्वविद्यालय तुर्की द्वारा आयोजित मातृ दिवस पर अंतर्राष्ट्रीय सुलभ मिश्रित ऑनलाइन प्रदर्शनी 10–5 –2021 को सुबह 11 बजे ललित कला और शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित www.artsteps.com
- 2021–चौराहा, असेंबल आर्ट गैलरी लंदन द्वारा आभासी प्रदर्शनी 14–5–2021 को शाम 6 बजे
- 2021–जे एस आर्ट गैलरी मुंबई द्वारा आयोजित अदृश्य ऑनलाइन समूह शो 07–07–2021

'दीर्घाओं'

- आर्ट इंडस आर्ट गैलरी, नई दिल्ली
- नव्या आर्ट गैलरी, नई दिल्ली
- ऑरा आर्ट फाउंडेशन, मुंबई
- श्री यश आर्ट गैलरी, नई दिल्ली
- गैलरी द आर्ट प्लेस, गुरगानो (एचआर)
- अटरिया गैलरी, लंदन
- एशियन आर्ट गैलरी, बोस्टन यूएसए

- आर्ट लैंड गैलरी, मुंबई
- कला बांसुरी, बैंगलोर
- कला स्माइली वर्ल्ड, दुबई
- www.gallerypioneer.in
- www.indianartideas.in
- www.asianartgallery.org
- www.Singular.com
- www.LinicomnRichardson.com
- www.artcollective.com
- www.bestcollegeart.com
- www.artzolo.com
- www.saatchiart.com
- www.mojartocom/artist/madan&lal&10190.amp
- www.Linkedin.com
- www.pinterest.com
- www.amazon.in

'संग्रह'

- भारतीय रिजर्व बैंक
- डॉ ग्रेवाल आई इंस्टीट्यूट। इफको, श्री अतुल खन्ना, सुश्री वंध्या बरगोडिया, सुश्री पिंकी कुमार, सुश्री नीपा शर्मा, सुश्री नोनिका सिंह, सुश्री अनुपम। स्वर्गीय श्री हरीश ढिल्लों
- सरकार संग्रहालय और आर्ट गैलरी, चंडीगढ़
- ललित कला संग्रहालय, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
- ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र
- आईटीडीसी, राय फाउंडेशन
- ऑरा आर्ट फाउंडेशन
- एआईएफएसीएस, नई दिल्ली
- इंडियन एकेडमी ऑफ फाइन आर्ट, अमृतसर

- चंडीगढ़, ललित कला अकादमी
- पंजाब, ललित कला अकादमी
- बैंक ऑफ पंजाब, गैलरी 54 पेरिस, आर्ट फोलियो चंडीगढ़, द आर्ट मॉल नई दिल्ली
- कलात्मक निर्माण नई दिल्ली। एडवांस स्टडी, शिमला। मेट्रो दिल्ली, लंदन, जर्मनी, यूएसए। दुबई, मैसेडोनिया, तुर्की। .
- हिमाचल कला और संस्कृति और भाषा अकादमी शिमला भारत के सदस्य
- बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के सदस्य एपीजी कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स जालंधर
- 'स्टूज फैशन टेक्नोलॉजी बोर्ड के सदस्य आई के गुजराल पंजाब टेक्निकल यूनिवर्सिटी जालंधर
- संस्कृति मामलों के विभाग पंजाब के तहत पंजाब ललित कला अकादमी चंडीगढ़ के मानद सचिव
- फेसबुक–www.facebook-com/madan.artist
- इंस्टाग्राम –www.instagram-com/madan.artist
- लिंक्डइन–www.linkeddin-com/in/madan&lal&783b9813
- ट्विटर – www.hptt%//twitter.com/a226bbbcafc417
- वेबसाइट– www.madanartist.com
- www.deerghaon.com
- www.singular.com

तृतीय अध्याय

(मदनलाल के चित्रों की विषय वस्तु)

मदनलाल के चित्रों की विषय वस्तु

व्यक्ति के मन में अनेक विचार एवं भाव होते हैं और वह भाषा के माध्यम से व्यक्त करता है। लेकिन एक चित्रकार उन विचारों को भाषा और लेखन के माध्यम से नहीं अपितु रेखाओं और रंगों और भावों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। चित्रकार मन में उठते उन भावों को अपने अंदर नहीं रोक सकता और वह रेखाओं और रंगों के माध्यम से व्यक्त होते हैं। एक कलाकार सदा नवीनता की खोज में रहता है और वह उसे खोजकर अपने माध्यम से व्यक्त करता है।

एक चित्रकार जब चित्रकला करता है तो उसके मन में अनेक विचार होते हैं और वह विचार स्केचिंग या पेंटिंग के माध्यम से बाहर आते हैं। मदनलाल जो बात उनके सामने वर्तमान में चल रही है या जो भी अपने आसपास देख रहे हैं, वही चित्र चित्रित करते हैं। उनके माध्यम से उनमें जो भाव उत्पन्न होते हैं, उन्हें वह अपनी कल्पना के द्वारा जोड़कर कैनवस पर व्यक्त करते हैं। वह समाज को संदेश देने के लिए भी कलाकृति करते हैं।
यह अपनी कलाकृतियों को प्रदर्शनों में भी लगाते हैं। यह विदेशों में भी अपनी कलाकृति भेजते हैं और वहां जाकर काम भी करते हैं।

प्राकृतिक चित्र

प्रकृति से मदनलाल का गहरा संबंध रहा है। भले ही आज यह चंडीगढ़ में रहते हैं, लेकिन अगर यह प्राकृतिक चित्र बनाते हैं तो व्यक्ति को स्वयं ही उस जगह पर उपस्थित होने का आभास होता है। इनके प्राकृतिक चित्रों में हृदय की गहराइयों तक उतर जाने की सहजता है। उनका कहना है कि मानव का प्रकृति के साथ अटूट रिश्ता होता है और वह स्वयं भी प्रकृति से काफी जुड़े हुए हैं। यह जब भी कोई चित्र बनाते हैं तो उसमें प्रकृति का समावेश जरूर होता है।

सामाजिक चित्र

कोई भी कलाकार हो, वह किसी न किसी प्रकार समाज से जुड़ा होता है। समाज में उसका संबंध एक अनुभूति का रूप लेकर अभिव्यक्त होता है। कलाकार समाज के भावों को अपने ढंग से लेता है और अपने मन से उसे प्रस्तुत करता है। कलाकार और समाज एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। एक कलाकार का विकास समाज द्वारा होता है। अपने चित्रों में इन्होंने किसी ना किसी वस्तु को अपना माध्यम बनाकर पूर्ण घटना को स्पष्ट किया है। उनके कई चित्रों में उन्होंने तोते को दर्शाया है, जो सिर्फ 'मैं' (अहंकार) को पुकारता है। उनके कई चित्र ऐसे हैं जो समाज से जुड़े हैं और मार्मिक ढंग से बनाए गए हैं, जिन्हें देखकर व्यक्ति कई बार गहरी सोच में चला जाता है।

पशु पक्षियों के चित्र

कलाकार अपनी कला में पशु पक्षियों का चित्रांकन करते हैं। चित्रकला में वैसे भी पशु–पक्षियों के लिए एक विशेष स्थान आरक्षित है। पशु–पक्षियों के अंदर भी महसूस करने की क्षमता होती हैं। वह भी उदास और प्रसन्नता महसूस करते हैं और कलाकार भी अपनी चित्रकला में आवश्यकतानुसार इनको अपने चित्रों में स्थान देते हैं। मदनलाल अपने चित्रों में बगुला, पशु–पक्षी आदि चित्रित करते हैं। वह स्टूडियो में ज्यादातर समय व्यतीत करते हैं।

नारी आकृति के सदंर्भ में :

नारी और कला का संबंध हर युग में रहा है। जब मानव को भाषा का ज्ञान नहीं था, तब भी चित्र बनाए जाते थे और तब भी नारी का इसमें पूर्ण योगदान रहा था, और आज भी नारी किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। मदन लाल नारी आकृति को भी अपनी कलाकृति में रखते हैं। यह मानवीय आकृतियों को पशु रूप में विलीन करते हैं और ज्यामितीय रेखाओं से अपनी कलाकृति परिपूर्ण करते हैं। इन्होनें नारी के हर भाव को दर्शाया है। कहीं नारी दयनीय स्थिति में है, कहीं वह कुछ सोच रही है। इन्होंने नारी के द्वारा मन के भावों को प्रेम, श्रद्धा, वात्सल्य, सहानुभूति, सरल, संवेदनशील, हर भाव में दर्शाया है। जीवंत तरंग पैलेट उनके जीवन के तरीके को दर्शाता है। ये रंग पंजाब के पारंपरिक कढ़ाई के काम में पाए जा सकते हैं, जिसे फुलकारी कहा जाता है। यह रंग वास्तव में उनकी संस्कृति और लोकाचार को दर्शाते हैं। मोर नीला उनके राज्य पंजाब की पांच नदियों का प्रतीक हैं। यानी 'पंज' का अर्थ है– पांच और 'आब' का अर्थ है– नदी। इसी तरह तोता हरा रंग कृषि के सार का प्रतीक है। क्रिसमस और मेंजेंटा उत्सव के रंगों को दर्शाता है, और गेरू, सोना, गेहूं और चावल के पके हुए सोने के खेतों का संकेत है। वो इन्हीं रंगों के बीच पले–बढ़े है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि उनके काम में ऐसे रंग दिखाई देते हैं जिन्हें उन्होंने अनजाने में एक 'बच्चे' के रूप में आत्मसात कर लिया है।

मदन लाल के चित्रों में पक्षी और जानवर अनायास ही विकसित हो जाते हैं। उदाहरण के लिए समय के साथ तोता और बैल मुख्य व्यक्ति के साथी बन गए। उनके लिए तोता मानव प्रेम का प्रतीक है। इसलिए इन्होंने इसे अपनी 'शहरी भावना' श्रृंखला में उस भावना के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया है, लेकिन तोता कैफोफनी भी बनाता है और इसलिए उनकी 'शहरी शोर' श्रृंखला में शहरी शोर का प्रतीक बन गया। इसी तरह उनके कुछ कामों में बैल एक साधक का प्रतीक बन जाता है, क्योंकि वह अतीत से वर्तमान की यात्रा करता है। दूसरों में यह ऊर्जा, शक्ति, मानवीय करुणा और ज्ञान का प्रतिबिंब हैं। मानव रूपी आंकड़ों पर आधारित उनकी पेंटिंग प्रकाश की ओर यात्रा को दर्शाती है। जैसा कि आत्मज्ञान में इन्होंने ठीक ही कहा है कि पशु और मानव आकृतियों का मिलन मनुष्य में मानव और पशु प्रवृति के मिश्रण का द्योतक है। मूल पशु से मनुष्य के विकास में कई शताब्दियां लगी, लेकिन मनुष्य में अभी भी पशु प्रवृत्ति है।

मदनलाल की चित्रण पद्धति

किसी भी कार्य को करने का तरीका अथवा विधि तकनीक कहलाती है। कला के क्षेत्र में तकनीक कलाकार के द्वारा प्रयोग की गई विशेष पद्धति को माना जाता है। तकनीक एक जटिल विधि है और सामान्य व्यक्ति के लिए इसे समझना तब तक कठिन है जब तक वह किसी चित्रकार को कार्य करते हुए देख न ले और किसी भी कलाकार की विशेषता अनुभव की विशालता पर आधारित होती है और यह प्रत्येक व्यक्ति को परमात्मा की देन होती है।

मदनलाल भारत के इंद्रधनुषी रंगों के चयन के साथ अपने कैनवस को वनों के साग से लेकर राजस्थानी पिंक और आकाश और मनोदशा के सदाबहार रंगों के साथ प्रस्तुत करते है। मदनलाल की सावधानीपूर्वक तैयार की गई कल्पना के बीच हम आधुनिकता की सामग्री देखते हैं। मदनलाल हमारी आंखों को ब्रह्मा के बैल और पतले संवादी सारस की छवियों पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जैसे ही हम विश्व में में देखते हैं, हमें आश्चर्य होता है। इनकी जीवंत रचनाओं में राग, रस और नाद एक साथ आते हैं। जैसे–जैसे रूप और रंग परिपूर्ण सिम्फनी बनाते हैं, कलाकार अपनी कला के लिए जीवन के लिए एक जश्न का जश्न मनाता है। उसके रूप अक्सर जानवरों के हिस्से का हिस्सा होता है। मानव सबसे अधिक गूंजता हुआ, शानदार और खुशी से संवाद करता है। उत्सव और सुंदरता दोनों ही उनके कार्यों के केंद्र में है। तो क्या ज्ञान प्रबुद्ध बुद्धि से प्रेरणा लेना चाहता है। केवल उनके बुद्व ही सौंदर्य, और शांति के प्रतीक हैं। जैसा कि वह कहते हैं– ''इस कठिन दबाव वाली अधिकता तनावग्रस्त दुनिया में अगर मैं आंतरिक सुंदरता के प्रति संवेदनशील हो सकता हूं कि हम तेजी से खो रहे हैं, तो मेरा उद्देश्य पूरा हो जाएगा।''

उनकी कृतियां आंतरिक और बाहरी दोनों तरह की सुंदरता पर कब्जा करती हैं और आकर्षक सौंदर्यशास्त्र की गतिशीलता को विकसित करती हैं। रंग पैलेट जीवंत दीप्तिमान हैं। पीले, हरे, नारंगी को सोने की समृद्धि से चुम्मा। फिर यह नाटकीय रूप से नीले फिरोजा एट अल में बदल जाता है। बहुस्तरीय श्रमसाध्य कौशल में एक्रेलिक के माध्यम को नियोजित करते हुए वह जीवन में बड़े कार्यों के साथ–साथ छोटे रचनाएं भी बनाता है। समृद्ध रंग, सावधानीपूर्वक चुने गए रंग द्रव्य, वह जो कुछ भी प्रकट करता है, वह स्थाई कला बनाने में एक लंबा सफर तय करता है। इस भौतिकतावादी दुनिया में तत्तवीमांसा तत्वों के साथ सांझा करते हुए वह जोर देकर कहते हैं कि हम शब्दों के माध्यम से पहचानते हैं, विचारों का तन बना। इसलिए हाल ही में उन्होनें सुलेख प्रतीकों का उपयोग करना शुरू कर दिया है।

मदनलाल काम की श्रृंखला के रूप में वह लगातार अपनी कला के माध्यम से व्यक्त करने के नए तरीके तलाशते हैं और ड्राइंग में मदनलाल पहले ही जुनून पैदा करते हैं, क्योंकि वह सौ स्केच

बनाते हैं, किताबें जिसमें कविता भी शामिल है और कई कहानियां सुनाते हैं, क्योंकि वह नई कलात्मक यात्रा शुरू करते हैं।

चित्रों में प्रयुक्त सामग्री

प्रत्येक कलाकार अपनी कार्यक्षमता के अनुसार कार्य सामग्री का प्रयोग करता है। यह कैनवस पर रंगों के द्वारा जीवन के विभिन्न चरणों को व्यक्त करती हैं। कई बार ब्रश के माध्यम से ऐसे रंग का प्रयोग करते हैं कि वह दूर से ही बहुत आकर्षक लगता है। कभी पेस्टल से, कभी जल रंग से, कभी एक्रिलिक रंग से चित्रकारी करते हैं। मदनलाल ने कला क्षेत्र में अपनी राह बहुत मेहनत और दृढ़ता से बनाई है और आज एक उच्च स्थान प्राप्त किया है।

रेखांकन /स्कैच

किसी भी चित्र का मुख्य तत्व रेखा द्वारा किया गया अंकन होता है। यह धरातल पर किसी रंग छोड़ने वाले पदार्थ से किया जाता है। यही अंकल रेखांकन कहलाता है। लेखांकन की हर एक चित्र में अहम भूमिका होती है। कोई भी चित्र यदि बनाया जाए तो किसी न किसी प्रकार से रेखाओं का ही प्रयोग होता है, चाहे वह किसी भी रुप में हो।

जल रंग

जल रंग पारदर्शी होता है। उसका महत्व उसकी पारदर्शिता में ही है। इन्होनें एक्रेलिक रंगों का अधिक प्रयोग किया है। उन्हें अपनी श्रेष्ठता जल रंगों में ही प्राप्त है जितनी कि ऐक्रेलिक में है। इन्होंने जल–रंग पेपर पर भी प्रयोग किए हैं। जो पेपर जल रंगों के लिए निश्चित रूप से निर्मित किए गए हैं उनका ही प्रयोग करते हैं। वे आज भी जल रंगों द्वारा कार्य करते हैं। मदन लाल अपनी सूझबूझ से रंग लगाकर चित्रकारी समाप्त करते हैं।

एक्रेलिक रंग

मदन लाल एक्रेलिक रंगों में ही ज्यादातर काम करते हैं। उनके चित्रों में प्राकृतिक चित्र, सामाजिक चित्र का दर्शन मिलता है। यह सभी चित्रों को एक्रेलिक माध्यम से भी दर्शाती हैं। एक्रेलिक रंग भी देखने में चमकीले लगते हैं और मन को बहुत आकर्षित करते हैं। चित्रकार अपनी कला में ऐसा समा बांध देते हैं कि कोई भी व्यक्ति देखने को विचलित हो जाता है, कि इन्होंने चित्रकला में क्या दर्शाया है। मदनलाल एक महान कलाकार हैं जिन्होंने समय के साथ–साथ अपनी चित्रकला में भिन्न–भिन्न पद्धतियों को प्रस्तुत किया है। उनकी कुछ पेंटिंग आज भी म्यूजियम में देखने को मिलती हैं। जिन्होंने आज उन्हें उस स्थान तक पहुंचाया है। वह किसी भी बंधन में बंधकर कार्य नहीं करते। उनकी मेहनत उनके चित्रों में झलकती है। इसके अतिरिक्त उनके चित्रों में कलात्मकता, सृजनात्मकता, लय और सौंदर्य सभी भावों का मिश्रण व्यक्त होता है। आज भी वह परिश्रम करके अपनी कला को निकाल रहे हैं। इसका परिणाम उनके चित्रों में स्वतः ही स्पष्ट होता है।

चतुर्थ अध्याय

(मदन लाल से साक्षात्कार)

मदन लाल से साक्षात्कार

प्रश्न 01 :– आपको पहली बार कब एहसास हुआ कि आप एक कलाकार बनना चाहते हैं ? क्या आप के परिवार या दोस्तों के मंडली में कोई ऐसा व्यक्ति था, जिसने आप को प्रभावित किया या कला के प्रति आप के रुझान को प्रोत्साहित किया ?

उत्तर :– मैं शायद कक्षा 9 या 10 में था, जब मैंने फैसला किया कि मुझे ललित कला में अपना करियर बनाना है। मैं फिरोजपुर के छोटे से गांव तलवंडी भाई से हूं। स्कूल में मेरे ड्राइंग मास्टर ने मुझे खेतों में काम करने वाली ग्रामीण महिलाओं को पेंट करने के लिए प्रेरित किया। घर पर मुझे मेरे बड़े भाई श्री रोशनलाल से प्रेरणा मिली, जिन्होंने ग्राफ तकनीक और बारीक पेंसिल छायांकन के साथ चित्र और रेखा चित्र बनाएं। वास्तव में मेरे भाई ने ही मुझे ललित कला में डिग्री के लिए कॉलेज ऑफ आर्ट चंडीगढ़ में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

प्रश्न 02:– आपके काम को देखते हुए मैंने देखा कि वह रंगों का दंगा है, आप जीवित रंगों जैसे मोर नीला, तोता हरा, क्रिमसन, गेरू, मैजेंटा आदि का उपयोग करते हैं। यह रंग ऐसा लगता है जैसे आप जीवन का जश्न मना रहे हैं।

उत्तर :– जीवंत तरंग पैलेट मेरे जीवन के तरीके को दर्शाता है। यह रंग पंजाब के पारंपरिक कढ़ाई के काम में पाए जा सकते हैं, जिसे फुलकारी कहा जाता है। यह रंग वास्तव में मेरी संस्कृति और लोकाचार को दर्शाते हैं। मोर नीला मेरे राज्य पंजाब की पांच नदियों का प्रतीक है, यानी 'पंज' का अर्थ है पांच और आप का अर्थ है नदी। इस तरह तोता हरा रंग कृषि के सार का प्रतीक है। क्रिमसन और मैजेंटा उत्सव के रंगों को दर्शाता है और गेरू सोना, गेहूं और चावल के पके हुए सोने के खेतों का संकेत है। मैं इन्हीं रंगों के बीच पला बढ़ा हूं। इसलिए यह स्वाभाविक है कि मेरे काम में ऐसे रंग दिखाई देते हैं, जिन्हें मैंने अनजाने में एक बच्चे के रूप में आत्मसात कर लिया है।

प्रश्न 03 :– आपकी रचनाओं में बैल, तोता, मोर जैसी पशु पक्षियों की ढेर सारी आकृतियां हैं। क्या इन आंकड़ों से जुड़ा कोई विशिष्ट प्रतीकवाद है जो आप के रचनात्मक लोकाचार में केंद्रीय गति पाता है, और एंथ्रोपोमोर्फिक आंकड़े क्यों ? क्या वे मनुष्य में पशु–मानव द्वंद्व का सुझाव देते हैं ?

उत्तर :– हां, बिल्कुल सही, लेकिन समय के साथ अर्थ बदल जाते हैं। मेरे चित्रों में पक्षी और जानवर अनायास ही विकसित हो जाते हैं। उदाहरण के लिए समय के साथ तोता और बैल मुख्य व्यक्ति के साथी बन गए। मेरे लिए तोता मानव प्रेम का प्रतीक है। इसलिए मैंने इसे अपनी शहरी भावना श्रृंखला में उस भावना के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया है। लेकिन तोता कैफेफनी भी बनाता है और इसलिए मेरी शहरी शोर श्रृंखला में शहरी शोर का प्रतीक बन गया।

इसी तरह मेरे कुछ कामों में बैल एक साधक का प्रतीक बन जाता है, क्योंकि वह अतीत से वर्तमान की यात्रा करता है। दूसरों में यह ऊर्जा, शक्ति, मानवीय करुणा और ज्ञान का प्रतिबिंब है। मानव रूपी आंकड़ों पर आधारित मेरी पेंटिंग प्रकाश की ओर यात्रा को दर्शाती है। जैसा कि आत्मज्ञान में आपने ठीक ही कहा है कि पशु और मानव आकृतियों का मिलन मनुष्य में मानव और पशु प्रवृत्ति के मिश्रण का द्योतक है। मूल पशु से मनुष्य के विकास में कई शताब्दियां लगी लेकिन मनुष्य में अभी भी पशु प्रवृत्ति है।

प्रश्न 04 :– आपकी बहुत सी पेंटिंग एक श्रृंखला का हिस्सा लगती है। आपके पास अर्बन इमोशन सीरीज, अर्बन मिराज सीरीज, सेलिब्रेशन सीरीज आदि हैं। ये सुझाव देते हैं कि आप भावनात्मक पैटर्न में काम करना पसदं करते हैं। क्या आपकी पेंटिंग आपकी भावनाओ ं की सहज अभिव्यक्ति है या यह सृजन की एक सुविचार प्रक्रिया है?

उत्तर :– मेरी श्रृंखला मेरी रचनात्मकता की एक सहज अभिव्यक्ति है। मेरा मानना है कि एक विचार केवल सीमित संख्या में चित्रों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। कभी–कभी एक श्रृंखला में मेरी भागीदारी 2 साल से अधिक समय के लिए होती है।

मेरी पहली सीरीज माया थी और मैंने 2000 से 2003 तक इस सीरीज पर काम किया। इसी तरह सूफी संगीत से प्रेरित होकर मैंने 2004 से 2005 तक 'जर्नी इन ब्लू' 2006 से 2007 तक रास, 2007 से 2008 तक सेलिब्रेशन, 2008 से 2009 तक डांस इन, जर्नी विद द बुल एंड अर्बन इमोशन इन 2011, अर्बन नाम एक श्रृंखला की। 2012 में पौराणिक कथा, 2014 से 2015 तक अर्बन मिराज, 2015 से 2017 तक अर्बन फुलकारी, 2017 से 2019 तक रंगों और झूलों के कोड। मेरी रचनात्म प्रक्रिया है।

प्रश्न 05:– मैंने देखा है कि आपकी अर्बन नॉइज सीरीज में आपने बहुत सारे तत्वों का इस्तेमाल किया है। एक तोता आपके लिए शहरी शौर का प्रतीक कैसे बन जाता है, यह देखते हुए कि यह पक्षी ग्रामीण परिवेश का एक हिस्सा है ?

उत्तर :– मैंने इस श्रृंखला को 2015 में चित्रित किया था। यह श्रृंखला शहर के शोर, मानवीय संबंधों के शोर, हमारे स्वयं के शोर को सम्मानित करते हैं। यह हमेशा अहंकारी रूप में दोहराते हैं कि मैं हूं, मैं.... .... हूं। तर्क, शिकायतें। हमारा दिमाग तोते की तरह है जो हम अंदर और बाहर सुनते हैं, उसे लगातार दोहराते रहते हैं। ग्रामीण परिवेश में पक्षी मधुर संगीत, प्रार्थना, और प्रेम का प्रतीक था, लेकिन शहर के माहौल ने रूहानी गानों को पकड़ शोर में बदल दिया है।

प्रश्न 06 :– आपके प्रारंभिक चित्र अधिक प्रभावकारी थे, जबकि आप के हाल के कार्यों में आंकड़े और तत्व जैसे वृत्त, त्रिकोण, ग्रिड आदि हैं। आपकी फुलकारी श्रृंखला एक उदाहरण है। क्या यह ले

कॉर्बूसियर द्वारा चंडीगढ़ के भवनों और लेआउट में प्रयुक्त ग्रिड का प्रभाव है, या पिकासो जैसे पश्चिमी गुरु द्वारा प्रभावित ज्यामितीय तत्वों का उपयोग है ?

उत्तरः— मेरा प्रारंभिक कार्य बहुत प्रभावकारी था क्योंकि मेरी आंखें अंदर की ओर मुड़ने और मेरे मन और परमात्मा के भीतर क्या हो रहा था, इसकी जांच करने की आदी थी। मैंने सार को रंगों और रूपों में स्थानांतरित कर दिया जो वास्तव में मेरे अवचेतन और मेरी आत्मा की ध्वनि की सच्ची अभिव्यक्ति थी। हालांकि 2000 में चंडीगढ़ और दिल्ली में कुछ एकल प्रदर्शनीयों के बाद और अन्य शानदार कलाकारों के कामों से अवगत होने के बाद मेरी आंखें बाहर की ओर खुल गई और ले कॉबूसियर की वस्तु कला को इसके वर्गो, आयातो, ग्रिडों आदि के साथ आत्मसात करना शुरू कर दिया। शहर तब बन गया मेरी प्रेरणा। जहां तक आप पिकासो के प्रभाव की बात कर रहे हैं, मैं अपनी रचनाओं में स्थान को संतुलित करने का प्रयास करूंगा। यही वजह है कि शायद दर्शक मेरे काम में पिकासो से जुड़ाव देखते हैं।

प्रश्न 07ः— आपके कुछ कार्यों में 'प्रार्थना', 'प्रकाश की ओर यात्रा', 'परी के साथ यात्रा' जैसे शिर्षक हैं, जो कुछ आध्यात्मिक प्रभाव का सुझाव देते हैं। यह प्रभाव आपके काम में कैसे आए ?

उत्तरः— मैं एक मॉनिंग पेंटर हूं और मैं सुबह बहुत जल्दी पेंटिंग कर रहा हूं। सुबह का वह समय प्रार्थना का समय होता है। यह वह समय होता है जब संपूर्ण ब्रह्मांड, मनुष्य, पशु—पक्षी, एक और सुंदर दिन की कृपा के लिए परोपकारी प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

प्रश्न 08ः— रचनात्मक दुनिया में कोरोना लॉकडाउन व अलगाव ने उनकी रचनात्मकता को जन्म दिया। मैंने देखा है कि आपके पास एक लॉकडाउन श्रृंखला है, इस कठिन समय में आपकी रचनात्मकता ने कैसे प्रतिक्रिया दी ?

उत्तर :— लोकडाउन अलगाव ने हमें एक महत्वपूर्ण सबक सिखाया। यदि हम प्रकृति की प्रक्रियाओं में हस्तक्षेप करते हैं तो हम बदले में प्रकृति से बंधे होंगे। मुझे लगता है कि भले ही लोकडाउन ने हमें शारीरिक रूप से बांध दिया हो, लेकिन यह हमारी रचनात्मकता को कम नहीं कर सका। मैंने स्केच किया और बहुत कुछ चित्रित किया। मैंने एक कलाकार के रूप में खुद को फिर से खोजा और मेरी रचनात्मक यात्रा अपने आप से जुड़ने के बारे में अधिक थी।

प्रश्न 09ः— आपके पसंदीदा समकालीन कलाकार तैयब मेहता हैं। उनके काम के बारे में ऐसा क्या है जिसने आपको प्रभावित किया? क्या कला का कोई पारंपरिक रूप भी था जिसने आप को प्रभावित किया?

उत्तर :— हा, 2008—2009 मे, मैं तैयब मेहता की रचनाओं और रंग योजनाओं से आकर्षित हुआ, जो मुझे लगा कि मेरी नई श्रृंखला 'द जर्नी विद बुल' से मेल खाती हैं। मुझे अपने काम में एक ही तरह की

ऊर्जा महसूस हुई। उसी तरह की दृश्य, शब्दावली और रचनात्मक प्रतिक्रिया मुझे विशेष रूप से पसंद आयी, जिस तरह से तैयब सर ने भैंस को शैतान के रूप में एक उत्कृष्ट बहुत प्रभावशाली अंदाज में लिखा है।

प्रश्न 10:– आप परंपरा और आधुनिकता को मिलाते हैं। फुलकारी श्रृंखला में अपने पारंपरिक कला रूप को आधुनिक स्थापत्य तत्वों के साथ जुड़ा है। आपने इस फ्यूजन को कैसे और क्यों चुना ?

उत्तर :– फुलकारी सीरीज मेरे सफर में एक क्रांतिकारी बदलाव था। संयोग से मुझे इस कार्य के लिए 2017 में ललित कला अकादमी नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। मैंने हस्तशिल्प पंजाब के लिए डिजाइन संस्थान के साथ 20 वर्षों तक काम किया है और पंजाब के शिल्पकार से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ था, जो फुलकारी टीला और जूट, प्लास्टिक, जड़ना, लकड़ी के शिल्प आदि बनाते थे। इसलिए यह स्वाभाविक है कि मेरा काम इन पारंपरिक चीजों को दर्शाता है। साथ ही मैं ले कॉर्बूसियर की आधुनिक वस्तु कला से प्रभावित था। यह दोनों प्रभाव मेरे काम में मिल गए। फुलकारी की फूल आकृति विशेषता की ज्यामितिय रचना और इसके ग्रिड और सर्कल के साथ कॉबूसियर वास्तुकला आधुनिक शहरी फुलकारी के रूप में एक साथ आए।

प्रश्न 11:–एक प्रसिद्ध कलाकार का सामान्य कार्य दिवस कैसा दिखता है ?

उत्तर :– मेरी सामान्य दिनचर्या पूरी तरह से मुझे और मेरी कला को समर्पित हैं। सबसे पहले मैं अपने स्टूडियो जाने के बाद की तारीख और समय के साथ अपनी स्केच बुक में एक स्केच बनाता हूं, जैसा कि मैंने पहले कहा। मैं सुबह पेंट करता हूं, पिछले 30 सालो ं से ऐसा कर रहा हूं। मैं नियमित रूप से टहलता भी हूं और योग भी करता हूं, क्योंकि मैं चंडीगढ़ ललित अकादमी और पंजाब ललित अकादमी के सचिव या उपाध्यक्ष के रूप में जुड़ रहा हूं, इसलिए मैं कला वार्ता, प्रदर्शनीयों, कला शिवरों आदि के आयोजन में भी काफी समय बिताता हूं। मैं राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान मोहाली के साथ अतिथि संकाय भी हूं। तो, यह सभी गतिविधियां मुझे एक एक गंतव्य से दूसरे गंतव्य तक उड़ान भरने के लिए पंख देती है।

प्रश्न 12:– अब, जब आप एक समर्पित कलाकार होने के लगभग 3 दशक पीछे मुड़कर देखते हैं, तो आप अपने जीवन को कैसे परिभाषित करेगें? क्या एक कलाकार होने के नाते आपका जीवन आसान या कठिन हो जाता है? (मैं सामग्री, रचनात्मक और साथ ही आध्यात्मिक पहलुओं का उल्लेख करती हू)।

उत्तर :– अच्छा सवाल। मैं पूरी तरह से कला की दुनिया में डूबा हुआ हूं। मैं ड्रॉ करता हूं, पेंट करता हूं, दोस्तों और छात्रों के साथ बातचीत करता हूं। जब मैं विभिन्न कला शिवरों की यात्रा करता हूं, तो मेरी ऊर्जा का स्तर हमेशा ऊंचा रहता है। मैंने सौ से अधिक कला शिविरों और कला संगगोष्ठियों में भाग लिया है। यह तीन दशक मेरी रचनात्मक यात्रा का उत्सव रहे हैं। एक कलाकार के रूप में जीवन

अद्‌भुत और रोमांच से भरा होता है। जीवन एक कोरे कैनवास की तरह है और यह कलाकार पर निर्भर है कि वह जीवन के हर चरण में एक अच्छी रचना तैयार करें। वर्तमान हमेशा चुनौतीपूर्ण होता है, लेकिन आपको क्षमता और आत्मविश्वास के साथ प्रदर्शन करना होता है।

प्रश्न 13:– नवोदित और महत्वकांक्षी कलाकारों को आप क्या सलाह देगें ?

उत्तर :– नवोदित कलाकारों के लिए मेरी पहली सलाह यह है कि वह प्रतिदिन अनुशासन के साथ चित्र और रेखा चित्र बनाएं। ड्राइंग हमेशा हमारी कल्पना के पंख जोड़ता है। उन्हें अपने शहर और उसके आसपास आयोजित होने वाली प्रत्येक कला प्रदर्शनी का भी दौरा करना चाहिए, क्योंकि इससे उनकी दृश्य, शब्दावली और रचनात्मक शब्दकोष को एक नया आयाम मिलेगा। वरिष्ठ कलाकारों के बारे में पढ़ना और काम करते हुए देखना भी सीखने का एक बेहतरीन अनुभव है। कला शिवरा और कला कार्यशाला में मैंने हमेशा अपने वरिष्ठों से बहुत कुछ सीखा है। कला के काम को कैसे देखना है, पेंटिंग का आनंद कैसे लेना हैं, यह सीखना भी महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 14:– क्या कोई विशेष या कोई नया प्रोजेक्ट है जिस पर आप काम कर रहे हैं, हम आपकी अगली एकल प्रदर्शनी कब और कहां देखेगें ?

उत्तर :– मुझे मेरी परियोजना 'बारहमासा' और 'गुरुबानी' के लिए संस्कृत विभाग, संस्कृत मंत्रालय भारत सरकार के तत्वाधान में सेंटर फॉर कल्चर रिसोर्सेज एंड ट्रेनिंग (सीसीआरटी) द्वारा एक वरिष्ठ फेलोशिप से सम्मानित किया गया है। मैं इस पर काम कर रहा हूं और उम्मीद है कि अक्टूबर 2022 में चंडीगढ़, दिल्ली और मुंबई में प्रदर्शन करूगां।

प्रश्न 15:– रचनात्मक दुनिया आज बहुत व्यवसायिक हो गई है। आज बहुत सारे कलाकार बाजार को ध्यान में रखकर कला का निर्माण करते हैं। कला अब केवल रचनात्मकता को संतुष्ट करने के बारे में नहीं लगती, क्योंकि यह कई दशक पहले थी। आप इस बदलते लोकाचार के बारे में क्या सोचते हैं?

उत्तर :– सच। अगर आप एक 'सेंलिंग आर्टिस्ट' है तो गैलरी आप को बढ़ावा देती है अन्यथा आपको अपना खुद का बाजार बनाना होगा। कई कलाकारों के पास कला के प्रति कोई सौंदर्यवादी, वैचारिक और रचनात्मक दृष्टिकोण नहीं है। उन्होंने बाजार या ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा करने का सबसे आसान तरीका चुना है। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए कलाकार बहुआयामी कलाओं में हाथ आजमा रहे हैं। तो कलाकार, एक चित्रकार, एक मूर्तिकार, फोटोग्राफर, एक डिजिटल कलाकार और एक स्थापना विशेषज्ञ हैं, जो सभी एक में लुढ़क गए हैं।

प्रश्न 16:– पेंटिंग के अलावा भी आप किसी और माध्यम में काम करना चाहते हैं?

उत्तर :– हां, मैं पेंटिंग के अलावा छापा कला में अपना एक काम करना चाहता हूं, लेकिन अभी मुझे इस काम के लिए समय नहीं मिल रहा। यह मेरी दिल की इच्छा है कि मैं छापा कला में भी काम करूं।

प्रश्न 17:– आपकी नजर में संपूर्ण कलाकार कैसा हो सकता है ?

उत्तर :– जो कला को शुद्धता से अभिव्यक्त कर रहा हो, जो अपनी भावनाओं को किसी भी कला के द्वारा सही माध्यम से व्यक्त कर सकता है। वही एक संपूर्ण कलाकार होगा।

पंचम अध्याय

(कलाकृतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन)

कलाकृतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

चित्र न0. 01 :–

इसका शीर्षक “The Yog Sutre” (जीवन का योग) है। इस कलाकृति का आकार 48 X 60 इंच है और 2008 में यह चित्रित की गई है। इसका माध्यम एक्रेलिक रंगों से कैनवस पर चित्रित है। यह पेंटिंग शहरी संबंधों के आधुनिक सहचर्य से संबंधित है। इसमें पीला और लाल रंग का प्रयोग हुआ है।

चित्र न0. 02 :–

इस चित्र का शीर्षक “The Goddess” (देवी) है। यह कागज पर बनाई गई आकृति है और इसका आकार 11 X 18 इंच है। यह स्केचबुक से लिया गया चित्र है। इसमें दिखाया गया है कि देवी को शैतान से लड़ाई की अवस्था में कई हाथों द्वारा चित्रित किया गया। इसमें जल रंगों का उपयोग किया गया है। इस चित्र मे ं पीला और जामुनी रंग प्रयोग हुए हैं और ज्यामितीय लाइनों में आकृति चित्रित है।

चित्र न0. 3 :–

चित्र नं0. 3 का शीर्षक “Budha” (बुद्धा) है। यह पेंटिंग कैनवस पर चित्रित है। इसका आकार 36 X 60 इंच है। यह चित्र 2019 में चित्रित है। इस चित्र का उद्देश्य है कि बुद्धि वृक्ष के नीचे ज्ञानोदय के बाद यह पेंटिंग भुद्वतीव पर है और जब ब्रह्मांड एक उत्सव बन जाता है। इसमें लेमन, पीला और नारंगी रंग उपयोग किए गए हैं। और बुद्वा को लेटे हुए अवस्था में ध्यान की स्थिति में दिखाया गया है।

चित्र न0. 04 :–

चित्र न0. 4 का शीर्षक “Urban Phulkari” है। यह कैनवस पर चित्रित है। इसमें एक्रेलिक रंगों का प्रयोग किया गया है। इसमें नारंगी, गुलाबी, लाल, चमकीले रंगों का प्रयोग किया गया है। इसका आकार 25 X 25 इंच है। यह 2022 में बनाई गई है। इसमें शहरी कोलाहल और तोते को मानवीय शोर का प्रतीक दर्शाया गया है।

चित्र न0. 05 :–

चित्र नंबर 5 का शीर्षक “The Bull” है। यह चित्र कैनवस पर एक्रेलिक रंगों से बनाया गया है। इसका 36 X 48 इंच आकार है। इसको सन् 2018 में बनाया गया है। इसमें गोल्डन, पीला, लाइट

जामुनी रंग का प्रयोग है। हरा रंग भी दिखाई भी पड़ता है। Bull को जामुनी और शिव के नंदी को के संबंध को दर्शाया गया है।

चित्र नं0. 06 :–

चित्र संख्या 06 का शीर्षक "The Music with in" है। यह चित्र एक्रेलिक रंगों से कैनवस पर चित्रित किया गया है। इसका आकार 36 X 36 इंच है। यह पेंटिंग 2016 में चित्रित की गई है। इस चित्र में नारंगी और सफेद रंग का प्रयोग हुआ है और एक व्यक्ति को दिखाया गया है। इसमें उस व्यक्ति को मुरली बजाते दिखाया गया है और वह इस समाज में अपनी मुरली की शरगम में मग्न है।

चित्र नं0. 07 :–

चित्र नंबर 07 का शीर्षक "The Jurney with Angela – II" है। इसका आकार 40 X 40 इंच है। यह चित्र एक्रेलिक रंगो से कैनवस पर बनाया गया है। यह पेंटिंग मानव के सफर को दर्शाती है। एक ऐंजल के साथ उसकी क्या जिंदगी रही है। इसमें एक व्यक्ति और बकरी को दिखाया गया है। उसमे ं क्रीम, पीला, भुरा हल्का रंग प्रयोग किए गए हैं।

चित्र नं0. 08:–

चित्र नंबर 8 का शीर्षक "The Goddess- II" है। इसका आकार 11 X 18 इंच है। यह चित्र कैनवस पर एक्रेलिक रंगों में चित्रित है। इसमें गुलाबी और जामुनी रंगों का प्रयोग किया है। देवी माता के काफी सारे हाथ दिखाए गए हैं। इसमें शेर भी दिखाया गया है। देवी मां को खुले बालों में दिखाया गया है।

चित्र नं0. 09:–

इस चित्र 09 का शीर्षक "Urban Migration " है। इसको 2021 में बनाया गया है। इसका आकार 24 X 24 इंच है। इसमें बगुलों को स्थानांतरण करने वाले लोगों के रूप में दिखाया गया है। इसमें फुलों को भी दिखाया गया है। सफेद, नीले रंग का प्रयोग किया गया है।

चित्र नं0. 10:–

चित्र नं0. 10 का शीर्षक "Urban Noise" है। इसका आकार 30 X 30 इचं है। यह कैनवस पर एक्रेलिक रंगो द्वारा बनाई गई है। यह चित्र 2016 में बनाया गया है। इसमें हरे रंग के तोते को 'मैं'

के रूप में दिखाया गया है, कि सभी व्यक्ति अपनी अपनी बात को सही बोलने में लगे रहते हैं। इसमें वर्गाकार आकृतियों को भी दिखाया गया है।

चित्र नं0. 11:–

चित्र नं0. 11 का शीर्षक "The Spring" है। इसका आकार 30 X 30 इचं है। इसे कैनवस पर एक्रेलिक रंगों से बनाया गया है। इसमें बसंत ऋतु के आगमन को पतंग द्वारा दिखाया गया है। यह पूरी पेंटिंग ज्यामितीय रेखाओं में बनी है। इसमें लाल, पीला, नीला व हरे रंगों का उपयोग हुआ है।

चित्र नं0. 12:–

इसका शीर्षक "The Journey with Angela" है। इसमें जिंदगी के सफर को दिखाया गया है कि हमारा Angeles के साथ क्या संबंध रहता है। इसमें हिरण को गोल्डन रंग में दिखाया गया है। सफेद रंग में हंस दिखाया गया है। इसका आकार 48 X 70 इंच है। यह पेंटिंग एक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवस पर बनाई गई है।

चित्र नं0. 13:–

इसका शीर्षक "The Swings-V" है। इसका आकार 48 X 48 इंच है। यह चित्र एक्रेलिक रंगों द्वारा कैनवस पर 2021 में चित्रित किया गया है। इसमें साइकिल के चक्के व मानवीय स्त्री पुरुष दिखाए गए हैं। इसमें फीके के रंगों का प्रयोग जैसे हल्का क्रीम, ग्रे, भूरा रंग दिखाये गए हैं।

चित्र नं0. 14 :–

इसका शीर्षक "The Attitude" है। इसमें लड़कियों को जो विदेशी हैं उनके एटीट्यूड को दिखाया गया है। उनकी साज–सज्जा को दिखाया है। इसका आकार 6 X 6 फीट है। इसमें चार लड़कियां दिखाई गई हैं। सफेद रंग, नारंगी, लाल, पीला, नीला आदि का प्रयोग किया गया है।

चित्र नं0. 15:–

इसका शीर्षक "Untitled" है। इसका आकार 24 X 24 इंच है। यह गोलाई में बनाई गई है। यह एक्रेलिक रंग से कैनवस पर चित्रित है। इसमें जामुनी रंग का प्रयोग और दो बगुलों को सफेद रंग में दिखाया गया है।

चित्र नं0. 16:—

इसका शीर्षक “The Pariyar” है। इसका आकार 40 X 40 इंच है। यह चित्र 2016 में चित्रित है। यह पेंटिंग कैनवस पर एक्रेलिक रंगो द्वारा बनाई गई है। इसमें स्त्री व पुरुष को एक जैसी अवस्था, दोनों के हाथ एक ही स्थिति और आंखें एक ही दिशा में ध्यान केंद्रित है। इसमें नारंगी, पीला रंगों का प्रयोग किया है।

चित्र नं0. 17:—

इसका शीर्षक “The Ark” है। इसका आकार 4 X 5 फीट है। यह चित्र 2021 में चित्रित है। इसका माध्यम एक्रेलिक रंगों से कैनवस पर रहा है। इसमें हरे रंग और सफेद नीले रंग का प्रयोग किया है। इस चित्र में मानवीय क्रियाएं और जिंदगी को एक गाड़ी (ऑटो रिक्शा) के रूप में दिखाया गया है।

चित्र नं0. 18:—

इसका शीर्षक “The Journey Towards Light” है। इसका आकार 3 X 5 फीट है। यह चित्र कैनवस पर एक्रेलिक रंगो द्वारा बनाया गया है। इसमें दिखाया गया है, प्रकाश की ओर जाने वाली यात्रा को। इसमें पीले रंग से चमक बनाई गई है और बकरी को चमकदार आकृति के ऊपर दिखाया गया है।

चित्र नं0. 19:—

इसका शीर्षक ‘‘मृगतृष्णा’’ है। यह चित्र 3 X 4 फीट का है। इसका माध्यमिक एक्रेलिक रंग और कैनवस रहा है। यह चित्र म्यूजिक की धुन को लके र बनाया गया है। एक व्यक्ति म्यूजिक में मग्न है। इसमें सफेद दाढ़ी वाला व्यक्ति और एक सुंदर स्त्री को दिखाया है। हरे रंग का प्रयोग किया है। मृगतृष्णा जो, वह जो कड़ी मेहनत के समय प्राप्त होती है।

चित्र नं0. 20:—

इसका शीर्षक “The Journey with Chaes” है। इसका आकार 36 X 36 इंच है। इसको एक्रेलिक रंगों से कैनवस पर बनाया गया है। इसमें अराजकता वाली यात्रा को दिखाया गया है। इसमें सभी पशु—पक्षियों, मनुष्यों को दिखाया है जैसे— सफेद बगुला, हरा तोता, त्रिभुज आदि।

चित्र नं0. 21:–

इसका शीर्षक "The Krishna (Commission) है। यह चित्र 2020 में चित्रित किया गया है। इसमें श्री कृष्ण जी को ध्यान मुद्रा में दिखाया गया है। कमल के फूल भी चित्र हैं। पीला, नारंगी, लाल रंग का प्रयोग है। इसका माध्यम एक्रेलिक रंगों से कैनवस पर रहा है।

चित्र नं0. 22:–

इसका शीर्षक "The Spring- 3" है। इसका आकार 24 इंच गोलाई में है। यह पेंटिंग 2022 में चित्रित है। इसमें बसंत ऋतु पर पक्षियों की चहल–पहल को दिखाया है। इसमें सफेद रंग, पीला, लाल, नीला आदि रंग और फूलों को भी खिलती हुई अवस्था में दिखाया गया है। इसका माध्यम कैनवस पर एक्रेलिक रंगों से रहा है।

चित्र नं0. 23:–

इसका शीर्षक "Madonna Mother will save Human Spices" है। इसका माध्यम पेंसिल रंग द्वारा पेपर पर रहा है। यह पेंटिगं करोना काल में बनाई गई है। इसमें दिखाया गया है कि कैसे एक मां अपने बच्चे को चमगादड़ों से बचा रही है।

चित्र नं0. 24 :–

इसका शीर्षक "The Krishna" है। इसका आकार 3 X 4 फीट है। यह चित्र एक्रेलिक रंगों से कैनवस पर बनाया गया है। यह चित्र 2020 में चित्रित है। इसमें Bull दिखाया गया है। राधा कृष्ण जी को मुरली की धुन में सम्मोहित दिखाया गया है। पीले, भूरे रंग का प्रयोग किया है। राधा–कृष्ण का बड़ा ही मनोरम दृश्य चित्रण चित्रित है।

चित्र नं0. 25:–

इसका शीर्षक "The Pink Dialogue" है। इसका शीर्षक 4 X 4 फीट है। यह एक्रेलिक रंगों से कैनवस पर बनाया गया है। इसमें स्त्री पुरुष को एक दूसरे की तरफ उनका जो आकर्षण है उसको चित्रित किया है। इसमें गुलाबी और नीले रंग का प्रयोग किया गया है।

चित्र नं0. 26:–

इसका शीर्षक ''बुद्धो हम, शुद्धो हम, मुक्तो हम'' है। इसका आकार 54 X 60 इंच है। यह एक्रेलिक रंगों से कैनवस पर बनाया गया है। इसमें हमें बुद्ध की तरह ध्यान लगाकर अपने मन की शुद्धि

करके हर रोग या व्यवस्था से मुक्त रहना चाहिए। इसमें जामुनी रंग और हरे रंग के तोते चित्रित किए गए हैं। बुद्धा को लेटे हुए ध्यानाकर्षण की स्थिति में दिखाया गया है।

चित्र नं0. 27 :–

इसका शीर्षक “The Mirror” है। यह चित्र एक्रेलिक रंगों से कैनवस पर चित्रित है। इसमें बैकग्राउंड में नीला और एक श्रृंगार से एक स्त्री को चित्रित किया है। श्रृंगार करने के बाद स्त्री के मन में जो भी विचार उत्पन्न होते हैं उनको दिखाया गया है। स्त्री सौंदर्य को परिपूर्ण चित्रित किया गया है।

चित्र नं0. 28:–

इसका शीर्षक “Urbon Emotion” है। यह चित्र एक्रेलिक रंगो द्वारा कैनवस पर चित्रित है। इसका आकार 3 X 4 फीट है। इसमें दो आकृतियों को आपस में समाहित दिखाया गया है। यह पूरा चित्र ज्यामितीय और लाइन वर्क में है। इसमें एक ही रंग की तान को दिखाया गया है। त्रिभुज और वर्गाकार लाइन चित्रित है।

चित्र नं0. 29:–

इसका शीर्षक “Urban Music है। इसका आकार 24 इंच है। यह एक्रेलिक रंगों से कैनवस पर राउंड पेंटिंग में बनाया गया है। इसमें तोते ही तोते बनाए गए हैं और इसमें शहरी धुन को चित्रित किया गया है।

चित्र नं0. 30:–

इसका शीर्षक “A Dialogure with in” है। इसका आकार 4 X 5 फीट है। इसमें एक सुंदर स्त्री को कुछ सोचते हुए चित्रित किया गया है। हरे रंग का ज्यादातर मिश्रण है। यह चित्र स्त्री के भीतर के संवाद को दर्शाता है।

उपसंहार

कला जीवन में कदम रखना बहुत आसान है, परंतु जीवन में उस राह पर चलना कठिन है। 20वीं शताब्दी का आरंभ जहां कला जगत में आधुनिक युग की सुबह का प्रकाश लेकर आया।

किसी भी देश की संस्कृति का मूल्य उसके प्राचीन चित्र कला और साहित्य के द्वारा आंका जाता है। प्रकृति और समाज में निरंतर बदलते स्वरूप के साथ रोज नए अनुभवों व संवेगनाहों के बीच में कला सदैव गुजर रही है। चित्रकला में चित्रकार रंगो ं के माध्यम से आकृतियों की सहायता से अपने विचारों को व्यक्त करता है। प्रत्येक कलाकार अपने जीवन से प्राप्त सभी अनुभवों को एक स्थान पर एकत्रित कर अपने चित्रों में समय–समय पर उसे स्थापित करता है।

इनका जीवन मार्गदर्शन है, जिनमें कुछ न कुछ सीखने की प्रवृति रहती है। इनके अनुसार एक कलाकार के लिए संवेदनशील होना बहुत आवश्यक हैं, जो दूसरों को देख कर दुखी हो और सुख में मुस्कुराए वही एक सम्पूर्ण कलाकार हैं। ये प्रकृति की गोद में रहकर कार्य करते है। इनका कार्य करने का तरीका बहुत अनोखा है।

कला के क्षेत्र में अनुभव के कारण कला तथा प्रदर्शन के प्रति इनके विचार अत्यंत स्पष्ट हैं। उनके पास मार्गदर्शन के लिए आए छात्र सदैव ही उनसे लाभान्वित होते हैं। इन्होंने कई श्रृंखलाओं को आधार बनाकर काफी कार्य किया है तथा निरंतर इस प्रयास में है कि इसमें आगे और भी नवीनता लाई जा सके।

इस शोध कार्य के अंतर्गत मैंने मदन लाल के कला के महत्वपूर्ण पहलुओं, एक कलाकार के रूप में उनके व्यक्तित्व व उनकी कलाकृतियों के पीछे छिपी उनकी कल्पना एवं भावनाओं को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है। मदनलाल अपनी भावनाओं एवं अनुभवों को ही अपना विषय बनाकर अपनी कलाकृतियों को नया आयाम दिया है। इन्होनें कला जीवन में डट कर कार्य किया है और अभी भी कला पथ पर चलते जा रहे हैं। देश तथा विदेश में इन्होंने अपनी पेंटिगं की प्रदर्शनी एवं शिविरों में भाग लेकर कला में अपनी अलग पहचान बनाई है। बेशक मदनलाल के चित्र व कविताओं को समझने के लिए हम मदनलाल के व्यक्तित्व के अलग–अलग रूप मान सकते अन्यथा मूल्यतः तो एक ही चित्रकार ही हैं। अगर हम उनको एक कवि चित्रकार कहे तो यह कहना बिल्कुल भी गलत नहीं होगा।

उनकी कविताएं देखे तो ऐसे लगता है, मानव शब्द चित्रित कर दिए हैं। बुनियादी तौर पर वे एक चित्रकार हैं और बात करते वक्त वह शब्दों के चित्र बना देते हैं। मदन लाल जी के शब्दों में ब्रश के पहले स्ट्रोक से पहले उनका दिमाग अक्सर कैनवस की तरह खाली होता है, जो उनमें कुछ गहरी जड़ें जमाता है। जो चमकीले रंगों के आकर्षक उपयोग में आती है। मदनलाल जो भी परिस्थिति या शोर–कोलाहल अपने आसपास महसूस करते हैं, उसी को अपनी कलाकृतियों में एक नया ज्यामीतिय रूप दे देते हैं। यह सहज, सरल और कार्य में लीन रहने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी चित्रकार हैं, जिन्होंने अपनी कला को असीमित विस्तार देकर समकालीन जगत में अलग पहचान बनाई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- ☞ वर्मा, डॉ0. अविनाश बहादुर और अमित वर्मा, कला एवं तकनीक, बरेली: बड़ा बाजार, 1998.
- ☞ शर्मा, लोकेश चन्द्र, भारत की चित्रकला, इण्डियाः कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 1970.
- ☞ साखलकर, र0 वि0 : कला कोश, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2016.
- ☞ चतुर्वेदी, डॉ0. ममता, भारत की समकालीन भारतीय कला, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2016.
- ☞ मागो, प्राण नाथ, भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्षय, इण्ड़ियाः नेशनल बुक ट्रस्ट, नेहरू भवन, 2006.
- ☞ अग्रवाल, डॉ0. गिर्राज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, आगराः संजय पब्लिकेशन्स, 2006.
- ☞ गोस्वामी, डॉ0. प्रेम चंद, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार सतम्भ, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 1995
- ☞ भारद्वाज, विनोद, बृद्व आधुनिक कला कोश, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2006.
- ☞ विरजन, डॉ0. राम, समकालीन भारतीय कला, निर्मल बुक, 2003.
- ☞ द्विवेदी, डॉ0. प्रेमशंकर, भारतीय चित्रकला को बनाने की पद्वति, बी.एच.यू. , वाराणासी : कला प्रकाशन, 2011.
- ☞ सिंह, डॉ0. राकेश कुमार, चित्रण के सिद्वांत, इलाहाबादः साहित्य संगम, 2015.
- ☞ चतुर्वेदी, डॉ0. ममता, पाश्चात्य कला, जयपुर – राजस्थान : हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2009.
- ☞ वीरेश्वर प्रकाश, शर्मानुपूर, कला दर्शन, कृष्णा, ऐजुकेशन पठिलशर, 2005.
- ☞ वालावलकार मणिक, भारतीय चित्रकला की कहानी प्रथम संस्करण, 2007.
- ☞ प्रदीप किरण, भारतीय कला, प्रथम संस्करण, 2007.
- ☞ प्रताप डॉ0. रीता, भारतीय चित्रकला का इतिहास, छठा संस्करण, 2009.
- ☞ www.indianortideas.in
- ☞ www.asianartgallery.org
- ☞ www.artcollective.com
- ☞ www.artzoco.com
- ☞ www.saatchinart.com
- ☞ www.majarto.com/artist/madan-lal-10190.amp
- ☞ www.pinterest.com
- ☞ www.madanartist.com
- ☞ https://www.theiseowl.art/interviews.

चित्र संग्रह सूची

संख्या–	'शीर्षक'	-	माध्यम
01 –	The Yog Sutra	-	एक्रेलिक रंग
02 –	The Goddess	-	जल रंग
03 –	The Connection of Budha	-	एक्रेलिक रंग
04 –	Urban Phulkari	-	एक्रेलिक रंग
05 –	The Bull	-	एक्रेलिक रंग
06 –	The Music with in	-	एक्रेलिक रंग
07 –	Journey with Angela-II	-	एक्रेलिक रंग
08 –	The Goddess	-	एक्रेलिक रंग
09 –	Urban Migration	-	एक्रेलिक रंग
10 –	Urban Noise	-	एक्रेलिक रंग
11 –	The spring	-	एक्रेलिक रंग
12 –	The Journey with Angel	-	एक्रेलिक रंग
13 –	The Swings	-	एक्रेलिक रंग
14 –	Attitude	-	एक्रेलिक रंग
15 –	Untitled	-	एक्रेलिक रंग
16 –	The Prayer	-	एक्रेलिक रंग
17 –	The Art	-	एक्रेलिक रंग
18 –	The Journey Towards life	-	एक्रेलिक रंग
19 –	मृग तृष्णा	–	एक्रेलिक रंग
20 –	The Journy with in chaas	-	एक्रेलिक रंग
21 –	The Krishna (Commison)	-	एक्रेलिक रंग
22 –	The Spring – 3	-	एक्रेलिक रंग
23 –	Madonna Mother will save Human spices	-	पेंसिल रंग
24 –	The Krishna	-	एक्रेलिक रंग
25 –	The Pink Dialogue	-	एक्रेलिक रंग
26 –	Budha Hum, Shudha Hum, Mukhta Hum	-	एक्रेलिक रंग

27 – The Mirror - एक्रेलिक रंग

28 – Urban Emotions - एक्रेलिक रंग

29 – Urban Music - एक्रेलिक रंग

30 – A Dialogue with in - एक्रेलिक रंग

The Yog Sutra

The Goddess

The Connection of Budha

Urban Phulkari

The Bull

The Music with in

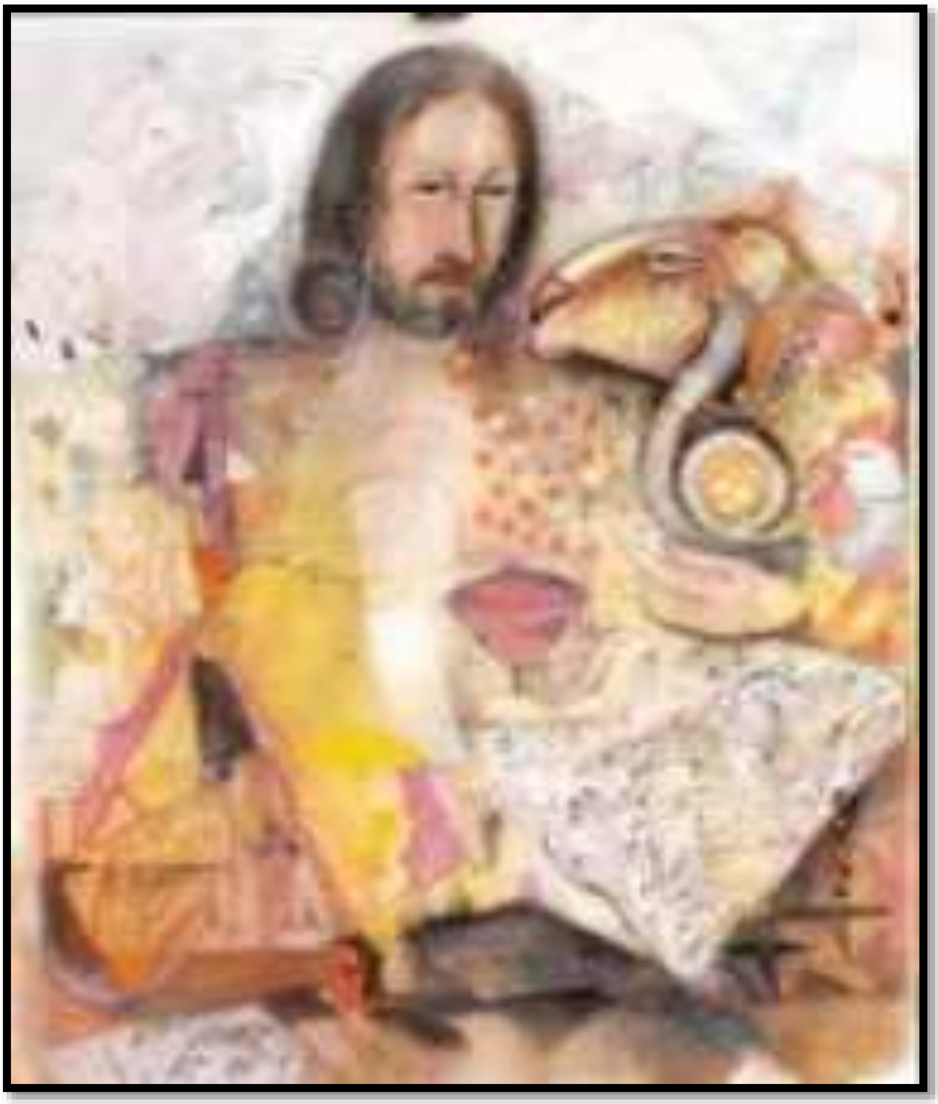

Journey with Angela-II

The Goddess

Urban Migration

Urban Noise

The spring

The Journey with Angel

The Swings

Attitude

Untitled

The Prayer

The Art

The Journey Towards life

मृग तृष्णा

The Journey with in chase

The Krishna

The Spring – 3

Madonna Mother will save Human spices

The Krishna

The Pink Dialogue

Budha Hum, Shudha Hum, Mukhta Hum

The Mirror

Urban Emotions

Urban Music

A Dialogue with in